BIHN301CCT

मध्यकालीन एवं आधुनिक हिंदी काव्य

(MIL-Hindi)

बी. ए.

(तृतीय सेमेस्टर के लिए)

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

© Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad
Course : Madhyakaleen evam Adhunik Hindi Kavya
ISBN: 978-93-95203-03-6
First Edition : 2022

प्रकाशक	:	रजिस्ट्रार, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद
संस्करण	:	2022
प्रतियाँ	:	500
डिजाइनिंग एंड सेटिंग	:	डॉ. एल. अनिल, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू, हैदराबाद
आवरण	:	डॉ. मो. अकमल ख़ान, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू, हैदराबाद
मुद्रक	:	अरिहंत ऑफसेट, नई दिल्ली

Copy Editor
Dr. Aftab Alam Baig

B.A. Hindi
Madhyakaleen evam Adhunik Hindi Kavya
3rd Semester

On behalf of the Registrar, Published by:
Directorate of Distance Education
Maulana Azad National Urdu University
Gachibowli, Hyderabad-500032 (TS), Bharat
Director: dir.dde@manuu.edu.in *Publication:* ddepublication@manuu.edu.in
Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in

© All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing from the publisher (registrar@manuu.edu.in)

संपादक

डॉ. आफ़ताब आलम बेग

सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Editor

Dr. Aftab Alam Baig

Assistant Registrar
DDE, MANUU

संपादक-मंडल

(Editorial Board)

प्रो. ऋषभदेव शर्मा

पूर्व अध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद
परामर्शी (हिंदी), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Prof. Rishabhadeo Sharma

Former Head, Higher Education and Research Centre, Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha, Hyderabad
Consultant (Hindi), DDE, MANUU

प्रो. श्याम राव राठोड़

अध्यक्ष, हिंदी विभाग
अंग्रेज़ी और विदेशी भाषा वि.वि.,हैदराबाद

Prof. Shyamrao Rathod

Head, Department of Hindi
EFL University, Hyderabad

डॉ. गंगाधर वानोडे

क्षेत्रीय निदेशक
केंद्रीय हिंदी संस्थान, सिकंदराबाद, हैदराबाद

Dr. Gangadhar Wanode

Regional Director
Central Institute of Hindi
Hyderabad Centre, Secunderabad, Hyd

डॉ. आफताब आलम बेग

सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. Aftab Alam Baig

Assistant Registrar, DDE, MANUU

डॉ. वाजदा इशरत

अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (संविदा)
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. Wajada Ishrat

Guest Faculty/Assistant Professor (Cont.)
DDE, MANUU

पाठ्यक्रम-समन्वयक

डॉ. आफ़ताब आलम बेग

सहायक कुल सचिव, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

लेखक	**इकाई संख्या**
• **डॉ. वाजदा इशरत,** अतिथि प्राध्यापक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू	1, 2
• **डॉ. अबू होरैरा,** अतिथि प्राध्यापक, मानू, हैदराबाद	3, 4
• **डॉ. मोबिन जोहोरोद्दीन,** स्वतंत्र लेखक, नांदेड, महाराष्ट्र	**5, 6**
• **डॉ. जीतेन्द्र,** अतिथि प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा.	**7, 8**
• **डॉ. सुषमा देवी,** सहायक व्याख्याता, हिंदी विभाग, भवन्स विवेकानंद कॉलेज, सैनिकपुरी, हैदराबाद	9, 10, 19, 20
• **डॉ. इबरार खान**, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मिर्जा ग़ालिब कॉलेज, गया	11, 12
• **डॉ. अनुज कुमार**, असिस्टेंट प्रोफेसर, नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा	13, 14
• **डॉ. आदित्य विक्रम सिंह**, प्राध्यापक (हिंदी), क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, भोपाल	15, 16
• **डॉ. सुपर्णा मुखर्जी,** हिंदी विभाग, सेंट एंस जूनियर एंड डिग्री कॉलेज फॉर गर्ल्स एंड वूमेंस, हैदराबाद	17, 18
• **प्रो. गोपाल शर्मा**, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषा विज्ञान विभाग, अरबा मींच विश्वविद्यालय, इथोपिया	21, 22
• **प्रो. देवराज**, पूर्व अधिष्ठाता, अनुवाद विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा	23, 24

विषयानुक्रमणिका

संदेश	:	कुलपति	7
संदेश	:	निदेशक	8
भूमिका	:	पाठ्यक्रम –समन्वयक	9
खंड/इकाई		**विषय**	**पृष्ठ**
खंड 1	**:**	**विषय प्रवेश और कबीर**	
इकाई 1	:	मध्यकालीन काव्य : एक परिचय	13
इकाई 2	:	आधुनिक काव्य : एक परिचय	33
इकाई 3	:	कबीरदास : एक परिचय	46
इकाई 4	:	कबीरदास की साखियाँ	58
खंड 2	**:**	**रैदास और तुलसीदास**	
इकाई 5	:	रैदास : एक परिचय	71
इकाई 6	:	रैदास के पद	84
इकाई 7	:	तुलसीदास : एक परिचय	96
इकाई 8	:	अयोध्या में आनंद	111
खंड 3	**:**	**सूरदास और बिहारी**	
इकाई 9	:	सूरदास : एक परिचय	127
इकाई 10	:	भ्रमरगीत	142
इकाई 11	:	बिहारी : एक परिचय	155
इकाई 12	:	बिहारी के दोहे	170

खंड 4	**:**	**सुभद्रा कुमारी और महादेवी**	
इकाई 13	:	सुभद्रा कुमारी चौहान : एक परिचय	184
इकाई 14	:	जलियाँवाला बाग़ में बसंत	206
इकाई 15	:	महादेवी वर्मा : एक परिचय	226
इकाई 16	:	गीति काव्य	240
खंड 5	**:**	**दिनकर और बच्चन**	
इकाई 17	:	रामधारी सिंह दिनकर : एक परिचय	252
इकाई 18	:	रश्मिरथी	272
इकाई 19	:	हरिवंशराय बच्चन : एक परिचय	286
इकाई 20	:	रवि और रात	298
खंड 6	**:**	**केदारनाथ अग्रवाल और शमशेर**	
इकाई 21	:	केदारनाथ अग्रवाल : एक परिचय	310
इकाई 22	:	बसंती हवा	326
इकाई 23	:	शमशेर बहादुर सिंह : एक परिचय	341
इकाई 24	:	बात बोलेगी	363
		परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना	**382**

प्रूफ रीडर:

प्रथम	:	डॉ. वाजदा इशरत, अतिथि प्राध्यापक, दू. शि. नि., मानू
द्वितीय	:	डॉ. एल. अनिल, अतिथि प्राध्यापक, दू. शि. नि., मानू
अंतिम	:	डॉ. आफताब आलम बेग, सहायक कुल सचिव, दू. शि. नि., मानू

संदेश

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी की स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह NAAC मान्यत प्राप्त एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय का अधिदेश है: (1) उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार और विकास (2) उर्दू माध्यम से व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा (3) पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना, और (4) महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। यही वे बिंदु हैं जो इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग करते हैं और इसे एक अनूठी विशेषता प्रदान करते हैं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा के प्रावधान पर जोर दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार का एकमात्र उद्देश्य उर्दू भाषी समुदाय के लिए समकालीन ज्ञान और विषयों की पहुंच को सुविधाजनक बनाना है। लंबे समय से उर्दू में पाठ्यक्रम सामग्री का अभाव रहा है। इस लिए उर्दू भाषा में पुस्तकों की अनुपलब्धता चिंता का विषय रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण के अनुसार उर्दू विश्वविद्यालय का मातृभाषा/घरेलू भाषा में पाठ्यक्रम सामग्री प्रदान करने की राष्ट्रीय प्रक्रिया का हिस्सा बनना अपना सौभाग्य मानता है। इसके अतिरिक्त उर्दू में पठन सामग्री की अनुपलब्धता के कारण उभरते क्षेत्रों में अद्यतन ज्ञान और जानकारी प्राप्त करने या मौजूदा क्षेत्रों में नए ज्ञान प्राप्त करने में उर्दू भाषी समुदाय सुविधाहीन रहा है। ज्ञान के उपरोक्त कार्य-क्षेत्र से संबंधित सामग्री की अनुपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति उदासीनता का वातावरण बनाया है जो उर्दू भाषी समुदाय की बौद्धिक क्षमताओं को मुख्य रूप से प्रभावित कर सकता है। ये वह चुनौतियां हैं जिनका सामना उर्दू विश्वविद्यालय कर रहा है। स्व-अध्ययन सामग्री का परिदृश्य भी बहुत अलग नहीं है। प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष के प्रारंभ में स्कूल/कॉलेज स्तर पर भी उर्दू में पाठ्य पुस्तकों की अनुपलब्धता पर चर्चा होती है। चूंकि उर्दू विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम केवल उर्दू है और यह विश्वविद्यालय लगभग सभी महत्वपूर्ण विषयों के पाठ्यक्रम प्रदान करता है, इसलिए इन सभी विषयों की पुस्तकों को उर्दू में तैयार करना विश्वविद्यालय की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय अपने दूरस्थ शिक्षा के छात्रों को स्व-अध्ययन सामग्री अथवा सेल्फ लर्निंग मैटेरियल (SLM) के रूप में पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराता है। वहीं अन्य विषयों में भी उर्दू माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए भी यह सामग्री उपलब्ध है। अधिकाधिक लोग इससे

लाभान्वित हो सकें, इसके लिए उर्दू में इलेक्ट्रॉनिक पाठ्य सामग्री अथवा eSLM विश्वविद्यालय की वेबसाइट से मुफ्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि संबंधित शिक्षकों की कड़ी मेहनत और लेखकों के पूर्ण सहयोग के कारण पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य उच्च-स्तर पर प्रारंभ हो चुका है। दूरस्थ शिक्षा के छात्रों की सुविधा के लिए, स्व-अध्ययन सामग्री की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए सर्वोपरि है। मुझे विश्वास है कि हम अपनी स्व-शिक्षण सामग्री के माध्यम से एक बड़े उर्दू भाषी समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होंगे और इस विश्वविद्यालय के अधिदेश को पूरा कर सकेंगे।

एक ऐसे समय जब हमारा विश्वविद्यालय अपनी स्थापना की 25वीं वर्षगांठ मना रहा है, मुझे इस बात का उल्लेख करते हुए हर्ष हो रहा है कि विश्वविद्यालय का दूरस्थ शिक्षा निदेशालय कम समय में स्व-अध्ययन सामग्री तथा पुस्तकें तैयार कर विद्यार्थियों को पहुंचा रहा है। देश के कोने कोने में छात्र विभिन्न दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों से लाभान्वित हो रहे हैं। यद्यपि पिछले दो वर्षों के दौरान कोविड-19 की विनाशकारी स्थिति के कारण प्रशासनिक मामले और संचार चलन भी काफी कठिन रहे हैं लेकिन विश्वविद्यालय द्वारा दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए सर्वोत्तम प्रयास किया जा रहा है। मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस विश्वविद्यालय का अंग बनने के लिए ह्रदय से बधाई देता हूं और यह विश्वास दिलाता हूँ कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके के लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन

कुलपति

संदेश

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को पूरी दुनिया में अत्यधिक कारगर और लाभप्रद शिक्षा प्रणाली की हैसियत से स्वीकार किया जा चुका है और इस शिक्षा प्रणाली से बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी ने भी अपनी स्थापना के आरंभिक दिनों से ही उर्दू तबके की शिक्षा की स्थिति को महसूस करते हुए इस शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी का बाकायदा प्रारम्भ 1998 में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली और ट्रांसलेशन डिविजन से हुआ था और इस के बाद 2004 में बाकायदा पारंपरिक शिक्षा का आगाज़ हुआ। पारंपरिक शिक्षा के विभिन्न विभाग स्थापित किए गए। नए स्थापित विभागों और ट्रांसलेशन डिविजन में नियुक्तियाँ हुईं। उस वक़्त के शिक्षा प्रेमियों के भरपूर सहयोग से स्व-अधिगम सामग्री को अनुवाद व लेखन के द्वारा तैयार कराया गया।
पिछले कई वर्षों से यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) इस बात पर ज़ोर देता रहा है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था को पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था से लगभग जोड़कर दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के मेयार को बुलंद किया जाय। चूंकि मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी दूरस्थ शिक्षा और पारंपरिक शिक्षा का विश्वविद्यालय है, अतः इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) के दिशा निर्देशों के मुताबिक दूरस्थ शिक्षा प्रणाली और पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम को जोड़कर और गुणवततापूर्ण करके स्व-अधिगम सामग्री को पुनः क्रमवार यू.जी. और पी.जी. के विद्यार्थियों के लिए क्रमशः 6 खंड-24 इकाइयों और 4 खंड – 16 इकाइयों पर आधारित नए तर्ज़ की रूपरेखा पर तैयार किया गया है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय यू.जी., पी.जी., बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्सेज पर आधारित कुल 15 पाठ्यक्रम चला रहा है। बहुत जल्द ही तकनीकी हुनर पर आधारित पाठ्यक्रम शुरू किए जाएंगे। अधिगमकर्ताओं की सरलता के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बंगलुरु, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पटना, रांची और श्रीनगर) और 6 उपक्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह, वाराणसी और अमरावती) का एक बहुत बड़ा नेटवर्क तैयार किया है। इन केन्द्रों के अंतर्गत एक साथ लगभग 150 अधिगम सहायक केंद्र (लर्निंग सपोर्ट सेंटर) तथा 20 प्रोग्राम सेंटर काम कर रहे हैं। जो अधिगमकर्ताओं को शैक्षिक और प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध कराते हैं। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय (डी. डी. ई.) ने अपनी शैक्षिक और व्यवस्था से संबन्धित कार्यों में आई.सी.टी. का इस्तेमाल शुरू कर दिया है। इसके अलावा अपने सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश सिर्फ ऑनलाइन तरीके से ही दे रहा है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की वेबसाइट पर अधिगमकर्ता को स्व-अधिगम सामग्री की सॉफ्ट कॉपियाँ भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसके अतिरिक्त शीघ्र ही ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग का लिंक भी वैबसाइट पर उपलब्ध कराया जाएगा। इसके साथ-साथ अध्ययन व अधिगम के बीच एसएमएस (SMS) की सुविधा उपलब्ध की जा रही है। जिसके द्वारा अधिगमकर्ताओं को पाठ्यक्रमों के विभिन्न पहलुओं जैसे- कोर्स के रजिस्ट्रेशन, दत्तकार्य, काउंसलिंग, परीक्षा के बारे में सूचित किया जाता है।

आशा है कि देश में शैक्षिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई उर्दू आबादी को मुख्यधारा में शामिल करने में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की भी मुख्य भूमिका होगी।

प्रो. मो. रज़ाउल्लाह ख़ान
निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

भूमिका

''मध्यकालीन एवं आधुनिक हिंदी काव्य' शीर्षक यह पुस्तक मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के बी.ए. (हिंदी) तृतीय सत्र के आधुनिक भारतीय भाषा (एमआईएल) के दूरस्थ शिक्षा माध्यम के छात्रों के लिए तैयार की गई है। इसकी संपूर्ण योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू जी सी) के निर्देशों के अनुसार नियमित माध्यम के पाठ्यक्रम के अनुरूप रखी गई है।

हिंदी साहित्य के इतिहास को अध्ययन की सुविधा के लिए तीन कालों में बाँटा जाता है - आदि, मध्य और आधुनिक। आदिकाल एक तरह से अपभ्रंश से हिंदी की ओर प्रस्थान का काल है, जबकि मध्यकाल हिंदी के चहुँदिश विस्तार और प्रसार का काल है और आधुनिक काल मध्यकालीन रूढ़ियों से मुक्त होकर व्यापक जन-गण के साथ जुड़ाव का काल। मध्यकाल को दो भागों में बाँटा जाता है - पूर्व मध्य और उत्तर मध्य। पूर्व मध्यकाल को भक्ति काल भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन के प्रभाववश ईश्वर भक्ति की प्रवृत्ति केंद्र में रही। इसी प्रकार उत्तर मध्यकाल को रीतिकाल भी कहा जाता है, क्योंकि इस काल में दरबारी संस्कृति के प्रभाववश शास्त्रीय पद्धति अथवा रीति पर आधारित काव्य केंद्र में रहा। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में पूरे भारत में नवजागरण के परिणामस्वरूप आधुनिक बोध का उदय हुआ। यह आधुनिक बोध ही आधुनिक काल के केंद्र में है। प्रस्तुत पुस्तक में मध्यकाल और आधुनिक काल के मुख्य कवियों और उनकी कविताओं का अध्ययन अभिप्रेत है।

प्रस्तुत पुस्तक छह खंडों के तहत कुल 24 इकाइयों में सोपानबद्ध ढंग से नियोजित है। पहले खंड में विषय प्रवेश के रूप में मध्यकालीन और आधुनिक काव्य का सामान्य परिचय दिया गया है। इसके बाद निर्गुण भक्ति काव्य के उन्नायक संत कबीर के परिचय और काव्य विषयक इकाइयाँ रखी गई हैं। इसी प्रकार दूसरे खंड में संत रैदास और रामभक्त कवि तुलसी, तीसरे खंड में कृष्णभक्त कवि सूरदास और रीतिसिद्ध कवि बिहारी, चौथे खंड में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा की प्रमुख कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान तथा छायावादी काव्यधारा की आधुनिक मीरा कही जाने वाली कवयित्री महादेवी वर्मा और पाँचवे खंड में राष्ट्रकवि डॉ. रामधारी सिंह दिनकर और हालावाद के प्रवर्तक कवि डॉ. हरिवंशराय बच्चन तथा छठे खंड में प्रगतिवाद और नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर केदारनाथ अग्रवाल और शमशेर बहादुर सिंह के व्यक्तित्व और काव्य पर समीक्षात्मक और व्याख्यात्मक इकाइयाँ शामिल की गई हैं।

इस सामग्री के अध्ययन से छात्रों को चौदहवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी तक के हिंदी काव्य के विकास को समझने की योग्यता प्राप्त होगी। साथ ही, वे यह भी जान सकेंगे कि इस पूरे समय में हिंदी कविता और समाज का आपसी रिश्ता कैसा रहा। इसके अलावा, वे इन इकाइयों को पढ़कर हिंदी भाषा के विविध रूपों, बोलियों, शैलियों और काव्यात्मक प्रयोगों की विविधता को भी भली प्रकार आत्मसात कर सकेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक की सारी सामग्री मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए सरल, सहज और सुबोध भाषा में तैयार की गई है। इस सारी पाठ सामग्री को तैयार करने में हमें जिन विद्वान इकाई लेखकों, संपादकों, ग्रंथों और ग्रंथकारों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञ हैं।

डॉ. आफताब आलम बेग

पाठ्यक्रम समन्वयक

मध्यकालीन एवं आधुनिक
हिंदी काव्य

इकाई 1 : मध्यकालीन काव्य : एक परिचय

रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 मूल पाठ : मध्यकालीन काव्य : एक परिचय

1.3.1 भक्तिकाल का परिचय

1.3.1.1 काव्य प्रवृत्तियाँ

1.3.1.2 प्रमुख कवि

1.3.2 रीतिकाल का परिचय

1.3.2.1 काव्य प्रवृत्तियाँ

1.3.2.2 काव्यधाराएँ

1.3.2.3 प्रमुख कवि

1.4 पाठ सार

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

1.6 शब्द संपदा

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

1.8 पठनीय पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! हिंदी साहित्य के इतिहास के विकासात्मक वर्गीकरण में द्वितीय चरण को 'मध्यकाल' कहते हैं। मध्यकाल को दो भागों में बाँटा जाता है - पूर्व मध्यकाल एवं उत्तर मध्यकाल। पूर्व मध्यकाल को भक्तिकाल एवं उत्तर मध्यकाल को रीतिकाल कहा जाता है। भक्तिकाल की समयावधि संवत् 1375 से संवत् 1700 तक मानी जाती है। साहित्य के श्रेष्ठ कवि तथा श्रेष्ठ रचनाएँ इसी काल में पाई जाती हैं। अतः इसी कारण इसे साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है। दूसरी ओर उत्तर मध्यकाल जिसे रीतिकाल भी कहा जाता है, इसकी समय सीमा संवत् 1700 से 1900 तक मानी जाती है। रीतिकालीन कवियों ने अपनी रचनाएँ रीति के साँचे में ढालकर प्रस्तुत करते थे। इस इकाई में आप मध्यकालीन काव्य के बारे में जानकारी प्राप्त

करेंगे।

1.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- भक्तिकाल का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- भक्तिकालीन काव्य की प्रवृत्तियों को जान सकेंगे।
- भक्तिकाल की काव्यधाराओं से अवगत हो सकेंगे।
- भक्तिकाल के प्रमुख कवियों के बारे में जान सकेंगे।
- रीतिकाल का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- रीतिकालीन परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगे।
- रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त काव्यधाराओं के भेद से अवगत हो सकेंगे।
- रीतिकाल के मुख्य कवियों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

1.3 मूल पाठ : मध्यकालीन काव्य : एक परिचय

1.3.1 भक्तिकाल का परिचय

हिंदी साहित्य के इतिहास का द्वितीय चरण भक्तिकाल है। अतः इस काल में भागवत् धर्म के प्रसार के परिणामस्वरूप भक्ति आंदोलन का सूत्रपात हुआ था। भक्ति का सर्वप्रथम उल्लेख उपनिषद् में मिलता है। पूजा को भक्ति का साधन माना गया है। भक्ति भावना मूलतः दक्षिण भारत से उत्पन्न हुई। रामानुजाचार्य ने सगुण भक्ति का आरंभ किया। भक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार करने में कुछ आचार्यों का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। जैसे मध्वाचार्य, रामानंद, वल्लभाचार्य, नामदेव, जयदेव आदि। इन आचार्यों ने बहुत सारे संप्रदायों की स्थापना की।

अब हम भक्ति आंदोलन के उदय के संबंध में विभिन्न विद्वानों के मत देखेंगे -

आचार्य रामचंद्र शुक्ल भक्ति आंदोलन के लिए तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों को जिम्मेदार मानते हैं। उनके अनुसार देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिंदू जनता के हृदय में गौरव से जीने के लिए कोई रास्ता नहीं बचा और अपने पौरुष से हताश होकर उन्हें भगवान की शक्ति और करुणा की ओर अपना ध्यान लगाना पड़ा।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी भक्ति आंदोलन का प्रारंभ हिंदुओं की पराजित मनोवृत्ति को

नहीं माना है। वे कहते हैं कि “मुसलमानों के अत्याचार से यदि भक्ति की भावधारा उमड़ना था, तो पहले उसे सिंध में और फिर उत्तर भारत में प्रकट होना चाहिए था, पर हुई दक्षिण में।”

जॉर्ज ग्रियर्सन भक्ति आंदोलन को ईसाईयत की देन मानते हैं। ग्रियर्सन भक्तिकाल को 15 वीं शती का धार्मिक पूनर्जागरण कहते हैं। इस काल में भक्ति की प्रधानता थी, जिस वजह से इसे भक्तिकाल की संज्ञा दी गई। भक्तिकाल का समय संवत् 1375 से 1700 विक्रम तक माना जाता है।

अतः हम निष्कर्ष के तौर पर कह सकते हैं कि भक्ति का प्रारंभ दक्षिण भारत से हुआ तथा यहीं से इसका प्रचार-प्रसार उत्तर भारत में हुआ।

बोध प्रश्न

- भक्ति आंदोलन के प्रारंभ का मूल कारण क्या है?
- ग्रियर्सन ने भक्तिकाल को क्या कहा है?
- पूर्व मध्यकाल को ‘भक्तिकाल’ कहना उचित क्यों है?

1.3.1.1 काव्य प्रवृत्तियाँ

काव्यगत विशेषता की दृष्टि से देखा जाए तो भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का ‘स्वर्ण युग’ माना जाता है। हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में भक्ति की दो धाराएँ निर्गुण तथा सगुण मुख्य हैं और इन्हें ही भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ मानी जाती हैं। भक्तिकाल की चार प्रवृत्तियाँ मानी जाती हैं, जिन्हें भक्तिधाराओं और शाखाओं के नाम से जाना जाता है। इसका वर्गीकरण इस प्रकार किया जाता है -

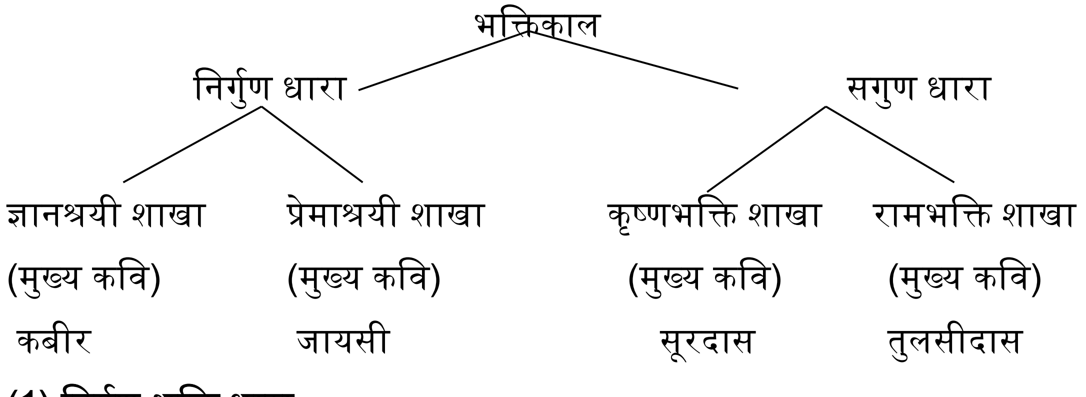

(1) निर्गुण-भक्ति धारा

निर्गुण-भक्ति धारा के अंतर्गत दो प्रवृत्तियाँ या शाखाएँ विकसित हुईं - (1) ज्ञानाश्रयी शाखा तथा (2) प्रेमाश्रयी शाखा। ज्ञानाश्रयी शाखा नामदेव एवं कबीर जैसे संतों द्वारा प्रवर्तित

थी, इसलिए इसे 'संत काव्य-परंपरा' के नाम से भी पुकारा जाता है।

(क) संत काव्य की सामान्य विशेषताएँ

1. सदगुरु का महत्व

स्वामी रामानंद कबीर के गुरु थे। गुरु को भगवान से अधिक महत्व देना संत कवियों की एक सर्वमान्य विशेषता है -

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाइ।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दियो बताइ॥

बोध प्रश्न

- सद्‌गुरु की महिमा के संबंध में संत कवियों की क्या मान्यता है?

2. ईश्वर के निर्गुण रूप में विश्वास

भारत में निर्गुण ब्रह्म और सगुण ब्रह्म की उपासना की जाती रही है। संतों ने निर्गुण ईश्वर की भक्ति का मार्ग अपनाया। इसके पीछे इस्लाम का प्रभाव भी देखा जा सकता है। सभी वर्णों और तमाम जातियों के लिए वह निर्गुण ईश्वर एकमात्र ज्ञानमय है। वह अविगत है। वेद, पुराण तथा स्मृतियाँ उस तक नहीं पहुँच सकते -

निर्गुण राम जपहु रे भाई, अविगत की गति लखी न जाई।

बोध प्रश्न

- भारत में ईश्वर के कितने रूपों की उपासना की जाती है?

3. बहुदेववाद तथा अवतारवाद का विरोध

संत कवियों ने हिंदू-मुस्लिम दोनों जातियों में द्वेष को शांत करने के लिए इस्लाम धर्म से प्रेरित एकेश्वरवाद का संदेश सुनाया और बहुदेववाद का घोर विरोध किया - यह सिर नवे न राम कूँ, नाहीं गिरियो टूट।

आन देव नहिं परसिए, यह तन जाए छूट॥

4. जाति-पाँति का विरोध

हिंदू धर्म में वर्ण व्यवस्था एवं जाति-पाँति के नियम कड़े थे। उच्च कुल के लोगों के पास से गुजरना तक निम्न जाति के लोगों के लिए दंडनीय अपराध था। अतः संत कवियों ने एक सार्वभौम मानव धर्म की स्थापना करनी चाही। भक्ति आंदोलन भी जाति-भेद एवं वर्ग-भेद को तुच्छ समझता था। इसलिए इनके अनुसार व्यक्ति की पहचान उसके ज्ञान से होना चाहिए -

जाति पाँति पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरे का होई।

जाति न पूछो साधु की पूछ लीजियो ज्ञान।

बोध प्रश्न

- जाति भेद के बारे में आपका का विचार है?

5. रूढ़ियों और आडंबरों का विरोध

संत समाज-सुधारक थे। अतः वे रूढ़ियों, मिथ्या आडंबरों तथा अंधविश्वासों का डटकर विरोध किया था। वे मूर्तिपूजा, छुआछूत, तीर्थ, व्रत आदि विधि-विधानों और जाति-पाँति आदि का खंडन किया। उदाहरणार्थ, कबीर ने एक ओर मूर्तिपूजकों पर व्यंग्य किया- पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहाड़ तथा दूसरी ओर मुसलमानों को भी फटकार लगाई - यह तो खून वह बंदगी, कैसे खुशी खुदाय!

6. रहस्यवाद

निर्गुण संत काव्य के प्रमुख कबीर रहस्यवादी हैं। रहस्यवाद के मूल में अज्ञात शक्ति की जिज्ञासा काम करती है। इनके काव्य में मुख्यतः अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना हुई जिसे रहस्यवाद की संज्ञा दी गई है। कबीर के शब्दों में -

मो को कहाँ ढूँढ़े बंदे मैं तो तेरे पास में।

ना मैं देवल, ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में॥

7. भजन एवं नाम-स्मरण की महिमा

संतों ने ईश्वर प्राप्ति के लिए प्रेम और नाम-स्मरण को प्रमुख माना है। वेद-शास्त्र इस संबंध में निरर्थक हैं-

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोई।

ढाई आखर प्रेम के, पढ़ै सो पंडित होइ॥

8. लोक संग्रह की भावना

इस वर्ग के अधिकतर कवि पारिवारिक जीवन व्यतीत करने वाले थे। यही कारण है कि इनकी वाणी में जीवन के विभिन्न अनुभवों की धारा बहती है तथा साधना में वैयक्तिकता की अपेक्षा सामाजिकता अधिक है।

बोध प्रश्न

- संत कवियों की साधना सामाजिक क्यों है?

9. नारी के प्रति दृष्टिकोण

संत कवियों ने नारी को माया का प्रतीक माना है तो दूसरी ओर सती और पतिव्रता के आदर्श की प्रशंसा भी की है। उदाहरण के तौर पर -

नारी की झाईं परत, अंधा होत भुजंग।
कबिरा तिनकी कहा गति, नित नारी के संग॥

10. साधारणीकरण

काव्य के माध्यम से संतों ने अपनी अनुभूति को जनता तक पहुँचाने का प्रयास किया है, इस कारण रस की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता 'साधारणीकरण' इनके काव्य में विद्यमान है।

11. भाषा एवं काव्य शैली

संत काव्य की भाषा जनसामान्य की भाषा है। तत्कालीन परिवेश के अनुरूप संतों की वाणी मुख्यतः जनता के अशिक्षित, उपेक्षित और पिछड़े हुए वर्गों के लिए थी। संत घुमक्कड़ जीवन बिताते थे, अतः उनकी रचनाओं में उन विभिन्न प्रदेशों की बोलियों के शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं, जहाँ उन्होंने भ्रमण किया था। फलतः इनके काव्य में ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी, पंजाबी तथा राजस्थानी का अधिक प्रयोग मिलता है। इस कारण इनकी भाषा को सधुक्कड़ी भाषा भी कहा जाता है।

संत कवियों ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति मुख्यतः 'साखी' और 'सबद' के माध्यम से की है। साखियों की रचना दोहा, छंद में हुई है और सबद से तात्पर्य गेय पदों से है। इनके काव्य में मुख्यतः गेय मुक्तक शैली का प्रयोग हुआ है। गीति काव्य के सभी तत्व - भावात्मकता, संगीतात्मकता, सूक्ष्मता, वैयक्तिकता और भाषा की कोमलता, इनकी वाणी में मिलते हैं। उपदेशात्मक पदों में गीति-माधुर्य के स्थान पर बौद्धिकता आ गई है।

बोध प्रश्न

- संत काव्य की कुछ विशेषताएँ बताइए।

(ख) प्रेममार्गी (सूफी) काव्य की विशेषताएँ

निर्गुण भक्तिधारा की दूसरी शाखा प्रेममार्गी शाखा या सूफी काव्य परंपरा के नाम से जानी जाती है। इसके प्रतिनिधि कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं, जो हिंदी के प्रमुख कवि हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने माना था कि इस शाखा के अधिकांश कवि सूफी थे जो इस्लाम धर्म के अनुयायी थे। इन्होंने ईश्वर प्राप्ति का मुख्य साधन प्रेम को माना इसलिए निर्गुणधारा की यह

शाखा प्रेममार्गी शाखा कहलाई। हिंदी प्रेमाख्यानक काव्य परंपरा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण काव्य इस प्रकार हैं - (1) हंसावली (1370) - असाइत, (2) चंदायन (1379) - मुल्लादाउद, (3) मृगावती (1503) - कुतुबन, (4) पद्मावत (1540) मलिक मुहम्मद जायसी, (5) मधुमालती (1545) मंझन, (6) प्रेमविलास (1556) - जैन श्रावक जटमल, (7) रूपमंजरी (1568) - नंददास, (8) माधवानल काम कंदला (1584) आलमकवि, (9) चित्रावली (1613) उस्मान, (10) रसरतन (1618) पुहकर कवि। प्रेममार्गी शाखा के काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं-

(i) प्रेमभावना

प्रेमाख्यानकों का मुख्य उद्देश्य प्रेम का प्रतिपादन करना है। प्रेम के वियोग पक्ष को इन्होंने अत्यधिक महत्व दिया है। इनके अनुसार प्रेम का असली रूप विरह में ही मिलता है, मिलन में नहीं। विरह अवस्था का वर्णन करते हुए उन्होंने बारहमासा के वर्णन को भी बहुत महत्व दिया है और इस संबंध में भारतीय पद्धति का ही व्यवहार किया है। हिंदी प्रेमाख्यानकों अथवा सूफी काव्यकृतियों की एक बड़ी विशेषता है प्रेम को जीवन का सर्वोपरि तत्व मानना। इसलिए यहाँ प्रेम के प्रति एक उच्च दृष्टि का परिचय मिलता है। यह प्रेम सभी सामाजिक, नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक बाधाओं और कुंठाओं से परे है।

बोध प्रश्न

- सूफी कवियों ने प्रेम के किस पक्ष को अधिक महत्व दिया है?

(ii) प्रबंधात्मकता

इस परंपरा के काव्य प्रबंधात्मक शैली में रचित हैं, अतः उनमें कथात्मक तत्वों की प्रमुखता का होना स्वाभाविक है। इन कवियों ने पौराणिक आख्यानों के रोमांटिक तत्वों को विस्तार देते हुए उनकी आधारभूत भावना एवं धार्मिक मर्यादा को सुरक्षित रखा है। काव्यतत्व की दृष्टि से इनकी कथावस्तु में स्वाभाविकता की अपेक्षा वैचित्र्य की ही प्रमुखता है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए यहाँ इन्हें नए-नए दृश्य, पात्र, प्रसंग, वातावरण तथा घटनाओं की नवीन सृष्टि करनी पड़ी है, वहीं अंतर्कथाओं का नियोजन भी किया है।

(iii) चरित्र चित्रण

सूफी प्रेमाख्यानकों की कथाएँ किसी न किसी दंतकथा या लोक प्रचलित गाथा पर आधारित हैं। इनमें मानव पात्रों के साथ ही मानवेतर पात्र भी मिलते हैं। मानव पात्रों में प्रायः

राजकुमार (नायक), राजकुमारी (नायिका) आते हैं तो मानवेतर पात्रों में नायिका के संरक्षक के रूप में एवं उनसे संबंधित राक्षस, असुर या नायक के सहयोगी के रूप में बैताल, हंस, तोता, नायक को सोते हुए उठा ले जाने वाली अप्सराएँ, पारियाँ आदि आती हैं। मानवेतर पात्र स्थिति के अनुसार कथानक को आगे बढ़ाने में अपना योगदान देते हैं तथा उसी के अनुरूप इनमें प्रवृत्ति विशेष का विकास दिखाया जाता है, लेकिन इनके पूरे व्यक्तित्व का निरूपण नहीं होता है।

(iv) लोक पक्ष

सूफी प्रेम काव्यों में लोक जीवन का चित्रण मिलता है। जैसे - अंधविश्वास, मनौतियाँ, तंत्र-मंत्र, जादू-टोना, लोकोत्सव, तीर्थ, व्रत आदि। इनसे तत्कालीन जीवन को समझने में सहायता मिलती है।

(v) शैतान व माया

सूफी प्रेमकाव्यों में साधक को अपने मार्ग से भ्रमित करने वाले व्यवधान को शैतान अथवा माया बताया गया है।

(vi) मंडनात्मक शैली

संतों के स्वर में खंडनात्मकता की चुभने वाली कर्कशता थी, जबकि सूफियों ने किसी संप्रदाय विशेष का खंडन नहीं किया। उन्होंने अपने कोमल स्वभाव से दोनों जातियों की एकता स्थापित करने में अधिक सफलता प्राप्त की। इसके पीछे थी उनकी मनोवैज्ञानिक पद्धति। इस नीति के कारण अनेक हिंदू सहज ही सूफी मत की ओर आकर्षित हुए।

(vii) रस एवं भाव-व्यंजना

प्रेमाख्यान काव्यों में प्रेम के सामने सामाजिक मर्यादाओं और परंपराओं का कोई मूल्य नहीं है। इस कारण इनकी प्रेम भावना साहस एवं संघर्ष की भावना से अनुप्राणित है। इसे स्वच्छ रोमांटिक प्रेम कहा जा सकता है। उद्दीपन विभाव के अंतर्गत सूफियों ने सखा-सखी, वन, उपवन, ऋतु परिवर्तन आदि अन्य उपकरणों का सहारा लिया जाता है। भाव की अभिव्यक्ति के लिए सांकेतिक विधान या प्रतीकों का उपयोग किया गए है। ये प्रेमपरक रचनाएँ महाकाव्य की कोटि में तो आती हैं लेकिन इनमें भारतीय महाकाव्यों जैसी सर्गबद्धता नहीं है। हिंदी के अधिकांश विद्वानों ने इनकी शैली को 'मसनवी' कहा है। मसनवी पद्धति के आधार पर कथा-आरंभ के पहले ईश्वर की वंदना, मुहम्मद साहब की स्तुति, तत्कालीन बादशाह की प्रशंसा तथा आत्मापरिचय आदि दिया जाता है। गणपतिचंद्र गुप्त ने इनके काव्य रूप को 'कथा काव्य' माना है। उसे ही

प्रेमाख्यानक कहा गया है क्योंकि इनमें महाकाव्य आदर्शवादी प्रयोजन के स्थान पर स्वच्छ प्रेम की कथात्मक अभिव्यक्ति मिलती है।

बोध प्रश्न

- मसनवी शैली किसे कहते हैं?

(ix) भाषा-शैली

सूफी कवियों की भाषा अवधी है। कुछ सूफी कवियों पर भोजपुरी का तो कुछ ब्रजभाषा का भी प्रभाव है। अवधी भाषा में तद्भव शब्दों के अलावा मुहावरों तथा लोकोक्तियों का भी अच्छा प्रयोग मिलता है। शैली की दृष्टि से अन्योक्ति व समासोक्ति के साथ अतिशयोक्ति पर प्रायः इनका अधिक बल रहा है। समासोक्ति के सबसे सफल प्रयोक्ता जायसी हैं। यों तो प्रेमाख्यानकों में सभी अलंकारों के उदाहरण उपलब्ध हो जाते हैं, फिर भी उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक और अतिशयोक्ति के विभिन्न भेद व उपभेदों की इनमें प्रमुखता देखी जा सकती है।

कुल मिलाकर, मध्ययुग में रचित सूफी एवं असूफी प्रेमगाथाओं में विस्मय, दैवी और अलौकिक तत्व समान रूप में मिलते हैं। रोमांस प्रधानता के कारण साहसिकता और शौर्य का भी सम्मिश्रण है।

2. सगुणभक्ति धारा

(क) कृष्णभक्ति शाखा की विशेषताएँ

कृष्णभक्ति शाखा के कवियों ने अपने आराध्य कृष्ण की लीलाओं का भाव विभोर होकर गायन किया। कृष्ण साक्षात् परब्रह्म है। सूरदास इस काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। इस शाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं-

(i) कृष्ण की लीलाएँ

हिंदी में कृष्णभक्त कवियों की दृष्टि कृष्ण की लीलाओं में विशेष रूप से कृष्ण के बाल और किशोर जीवन की ओर गई है। वस्तुतः इस शाखा में वात्सल्य, सख्य एवं माधुर्य भाव की भक्ति का प्राधान्य है। वात्सल्य भाव के अंतर्गत कृष्ण की बाल क्रीड़ाओं, चेष्टाओं एवं यशोदा माँ के हृदय की मधुरिम भावनाओं को देखा जा सकता है। सख्य भाव में कृष्ण और ग्वालों के जीवन की रमणीय आकर्षक एवं मनोरंजक घटनाएँ उपलब्ध होती हैं और माधुर्य भाव के अंतर्गत गोपीलीला की प्रस्तुति है।

(ii) भक्ति-भावना

कृष्ण काव्य में चार भक्ति रूप मिलते हैं - निर्वेद, रति, वात्सल्य और भक्ति।निर्वेदजन्य भाव की अभिव्यक्ति आत्मग्लानि एवं दैन्य की अभिव्यक्ति करने वाले पदों में हुई है। सूरदास वात्सल्य रस के एकमात्र सम्राट हैं। रति भाव के दो रूप हैं - संयोग और वियोग। कृष्ण भक्त कवियों ने कृष्ण की आराधना दास्य भाव के स्थान पर माधुर्य भाव से की। साथ ही सख्या भाव और वात्सल्य भाव को भी स्वीकार किया। इन सभी भावों का विलय भक्ति रूप के महाभाव में होता है।

(iii) प्रेम-वर्णन

सूरदास और अन्य कृष्ण-कवियों ने प्रेम के स्वच्छ तथा परिमार्जित रूप का वर्णन मार्मिक शब्दों में किया है। कृष्ण भक्त कवियों के प्रेम में आत्मसमर्पण का भाव निहित है।

(iv) प्रकृति-चित्रण

इन कवियों ने प्रकृति चित्रण में अपनी सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति का परिचय दिया है। सूरदास ने 'भ्रमर गीत' में प्रकृति और गोपियों में बिंब-प्रतिबिंब संबंध दर्शाया है।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि कृष्ण भक्त कवियों ने हिंदी साहित्य भंडार को समृद्ध किया है।

बोध प्रश्न

- कृष्ण भक्ति शाखा की कुछ प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

(ख) रामभक्ति शाखा की विशेषताएँ

रामभक्ति शाखा सगुण उपासना का बेहद महत्वपूर्ण अंग है। इस शाखा के भक्त कवियों के आराध्य देव राम हैं। इस रामभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि तुलसीदास हैं। इस शाखा की सामान्य प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं -

(i) समन्वय की भावना

राम काव्य में राम के साथ कृष्ण, शिव, गणेश आदि देवताओं की भी स्तुति की गई है। उदाहरण के तौर पर 'रामचरितमानस' में तुलसी ने सेतुबंध के अवसर पर राम द्वारा शिव की पूजा करवाई है। स्मरण रहे कि समूचा भक्ति आंदोलन अपने आप में समन्वय की विराट चेष्टा ही थी जिसका नेतृत्व स्वामी रामानंद ने किया। इस समन्वय भावना के कारण ही तुलसी को महात्मा बुद्ध के बाद सबसे बड़ा लोक नायक माना जाता है।

(ii) राम : विष्णु के अवतार

रामभक्तों के लिए राम विष्णु के अवतार और ब्रह्म के रूप हैं। वे पाप के विनाश और धर्मोद्धार के लिए भिन्न-भिन्न योगों में अवतार लेते हैं। इनके राम में शील, शक्ति और सौंदर्य का समन्वय है।

(iii) लोक मंगल की भावना

राम भक्त कवियों ने गृहस्थ जीवन की उपेक्षा नहीं की। इनके अनुसार लोकसेवा की भावना सर्वोपरि है। इनका आदर्श राम है। राम आदर्श पुत्र के साथ-साथ आदर्श राजा हैं। सीता आदर्श पत्नी है, कौशल्या आदर्श माँ, लक्ष्मण और भरत आदर्श भाई हैं, हनुमान आदर्श सेवक तथा सुग्रीव आदर्श सखा। तुलसी का राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।

(iv) भक्ति का स्वरूप

राम भक्ति के केंद्र में भी शराणागति का भाव सबसे ऊपर है। इस शाखा के कवियों ने दास्य भाव की भक्ति को स्वीकार किया है। अपने और आराध्य के बीच सेवक-सेव्य भाव को स्वीकार किया है।

'सेवक सेव्य भाव बिनु, भव न तरिय, उरगारि।'

इन कवियों ने ज्ञान और कर्म की महत्ता को अलग-अलग स्वीकार किया है। नवधा भक्ति को स्वीकार करते हैं। राम साहित्य के केंद्र में राम का 'लोकरक्षक' रूप प्रतिष्ठित है।

(v) रस

राम काव्य में सभी रसों का समावेश है, लेकिन सेवक-सेव्य की भाव के कारण इसमें शांत रस की प्रधानता है। 'रांचारित मानस' के युद्ध वर्णन में वीर और रौद्र रस का समावेश है। राम के विलाप तथा लक्ष्मण की मूर्च्छा प्रसंगों में करुण रस है तो राम के मिलन और विरह के प्रसंगों में क्रमशः संयोग और वियोग शृंगार का सुंदर चित्रण है।

(vi) भाषा-शैली

रामकाव्य की मुख्य भाषा अवधी है। हालांकि तुलसी ने ब्रजभाषा का भी सफल प्रयोग किया है। तुलसीदास को लोक और शास्त्र दोनों का बहुत व्यापक ज्ञान था। उनके काव्यों ग्रंथों में लोकविधियों के सूक्ष्म अध्ययन का प्रमाण मिलता है। साथ ही शास्त्र के गंभीर अध्ययन का भी परिचय मिलता है। उपमा और रूपक अलंकार के प्रयोग में वे सिद्धहस्त हैं। दोहा, चौपाई,

सवैया आदि छंदों का प्रयोग राम काव्य में प्रचुरता से मिलता है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि संत कवियों की साखियों और पदों, जायसी के 'पद्मावत', सूरदास के 'सूरसागर', तुलसीदास का 'रामचरितमानस' आदि हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की अनुपम देन हैं। इस समय के काव्य ने ज्ञान और भक्ति के संदेश द्वारा मध्यकालीन समाज के मनोबल का निर्माण किया।

बोध प्रश्न

- ज्ञानाश्रयी शाखा को संत काव्य-परंपरा क्या कहा जाता है?
- निर्गुण काव्यधारा की दो प्रवृत्तियाँ के नाम बताइए।
- सगुण काव्यधारा की दो प्रवृत्तियाँ के नाम बताइए।

1.3.3.2 भक्तिकाल के प्रमुख कवि

(i) कबीरदास

कबीर (1398 ई.-1518 ई.) भक्तिकाल के निर्गुण भक्ति के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। कबीर वर्णाश्रम व्यवस्था को नकारते हैं और कर्म करने का संदेश देते हैं। उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों दोनों के बाह्य आडंबरों का आजीवन विरोध किया। उनके गुरु रामानंद थे। कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' नाम से प्रसिद्ध है जिसके तीन भाग हैं- साखी, सबद और रमैनी। कबीर की भाषा आम बोलचाल की ठेठ भाषा है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है।

(ii) मलिक मुहम्मद जायसी

सूफी कवियों में मलिक मुहम्मद जायसी को सबसे प्रमुख माना जाता है। वे कहीं बाहर से आकर जायस में बसे थे और इसी स्थान को अपना निवास स्थान बना लिया था। इसीलिए वे जायसी कहलाए। जायसी का जन्म 1467 ई. तथा निधन 1542 ई. में हुआ। इनकी प्रसिद्ध काव्य रचना 'पद्मावत' (1540) है। कान्हावत, अखरावट और आखरी कलाम इनकी अन्य रचनाएँ हैं। इनके काव्यों की भाषा अवधी है।

(iii) सूरदास

सूरदास कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। इनके जन्मकाल तथा जीवन के बारे में कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं है। फिर भी अधिक मान्य धारणा यह है कि सूरदास का जन्म 1535 वि. की बैसाख शुक्ल पंचमी को बल्लभगढ़ (गुड़गाँव) के निकट सीही नामक गाँव में हुआ था।

वल्लभाचार्य के शिष्य बनने के बाद उनके आदेश से सूरदास ने सख्य, वात्सल्य और माधुर्य भाव से पूर्ण कृष्ण भक्ति के पदों की रचना आरंभ की। स्वयं वल्लभाचार्य ने उन्हें 'पुष्टिमार्ग का जहाज' कहा था। 'सूरसागर' को सूरदास का प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है।

(iv) गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास सही अर्थों में लोकनायक हैं। इनके द्वारा रचित अनेक ग्रंथ उपलब्ध हैं, जिनमें 'रामचरितमानस', 'कवितावली', 'विनयपत्रिका', 'दोहावली' आदि मुख्य हैं। तुलसीदास पहले भक्त हैं, बाद में कवि।

बोध प्रश्न

- कबीर को वाणी का डिक्टेटर किसने कहा?
- सूर को 'पुष्टिमार्ग का जहाज' किसने कहा?

1.3.2 रीतिकाल का परिचय

सत्रहवीं शताब्दी के मध्य से उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक लगभग 1643 ई. से 1843 ई. तक के समय को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'रीतिकाल' नाम से पुकारा है। उनके अनुसार इस समय के काव्य में रीति तत्व की प्रधानता पाई जाती थी अतः इसका ध्यान रखते हुए इस काल का नाम 'रीतिकाल' रखा गया है। इस समय के कविगण अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के लिए लक्षण ग्रंथ लिखना अनिवार्य समझते थे। इन कवियों ने आचार्यत्व का निर्वाह करते हुए लक्षण ग्रंथ की परिपाटी पर रीति ग्रंथों की रचना की, जिनमें अलंकार, रस, नायिका भेद आदि काव्य अंगों का बहुत ही विस्तार से वर्णन किया गया है। वे काव्यांग की चर्चा में बहुत गौरव का अनुभव करते थे। अतः काव्यांग की अधिकता के कारण इस काल में रीति तत्व की प्रधानता दिखाई देती है और इसी कारण इस काल का नाम 'रीतिकाल' रखा गया है। रीतिकाल को भिन्न-भिन्न विद्वानों ने अलग-अलग नामों से पुकारा है। उनमें प्रमुख हैं- अलंकृत काल (मिश्र बंधु), शृंगार काल (विश्वनाथ प्रसाद मिश्र), कलाकाल, उत्तर मध्यकाल आदि। लेकिन इनमें 'रीतिकाल' को ही व्यापक स्वीकृति प्राप्त है।

बोध प्रश्न

- रीतिकाल की समय सीमा कब से कब तक मानी गई है?
- 'रीतिकाल' नाम किस आचार्य के द्वारा रखा गया था?
- रीतिकाल में कवि अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के ग्रंथों की रचना करते थे?

1.3.2.1 काव्य प्रवृत्तियाँ

रीतिकाल की काव्य रचना पर सामंती युग का प्रभाव है। अतः इसमें दरबारी काव्य की सभी विशेषताएँ पाई जाती हैं। इन कवियों के काव्य में अलंकरण की प्रधानता, चमत्कार प्रदर्शन की प्रवृत्ति एवं शृंगारिकता का पुट प्रधान है। इस समय के काव्य के केंद्र में नारी थी। इस काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं-

1. रीति निरूपण

रीतिकालीन कवियों की मुख्य प्रवृत्तियों में से एक है 'रीति निरूपण' अर्थात ग्रंथों की रचना करना। इसी प्रवृत्ति के कारण आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काल का नाम 'रीतिकाल' रखा है। इस समय के कवियों को काव्यशास्त्र का बहुत अच्छा ज्ञान था। इन कवियों का मुख्य उद्देश्य था काव्य शास्त्र का ज्ञान आम पाठकों तक पहुँचाना।

2. शृंगारिकता

शृंगारिकता को रीतिकालीन काव्य का केंद्रबिंदु माना जाता है। इस समय के काव्य में शृंगार को प्रमुखता दी जाती थी। लक्षित शृंगार चित्रण के अंतर्गत नायिका के रूप सौंदर्य का वर्णन किया जाता है। काव्य में राधा कृष्ण की प्रेम लीलाओं का विविध रूपों में चित्रण हुआ है।

3. आलंकारिकता

रीतिकालीन काव्य में आलंकारिकता की प्रधानता पाई जाती है। दरबारी काव्य होने के कारण इसमें अलंकरण शैली का बहुत उपयोग होता था।

4. आश्रयदाताओं की प्रशंसा

रीतिकाल में अधिकांश कवि गण दरबारों के आश्रय में रहते थे; जैसे बिहारी, देव, भूषण आदि। स्वाभाविक था कि वे अपने आश्रयदाता राजा की प्रशंसा में कविता लिखा करते थे।

5. भक्ति एवं नीति

रीतिकालीन काव्य का मुख्य तत्व तो शृंगार है, किंतु कुछ कवियों ने इस समय में भी भक्ति और नीति से परिपूर्ण काव्य रचे।

6. नारी के प्रति दृष्टिकोण

रीतिकालीन कवियों ने अपने काव्य में नारी के रूप चित्रण को बहुत अधिक महत्व दिया है। इस समय के काव्य का केंद्रबिंदु नारी चित्रण ही रहा है।

7. बहुज्ञता का प्रदर्शन

रीतिकालीन कवियों ने अपने काव्य में विभिन्न विषयों में संबंधित ज्ञान को खुलकर दिखाया है। ये कवि नायक-नायिका के प्रेम को दर्शाने में जितने कुशल थे, उतने ही अन्य विषयों में भी।

8. संकुचित जीवन दृष्टि

रीतिकालीन कवियों की जीवन दृष्टि का बहुत विस्तार नहीं हुआ था। वे कुछ ही विषयों को लेकर कविता करते थे।

9. मुक्तक काव्य की रचना

रीतिकाल के अधिकांश कवि मुक्तक काव्य की रचना करते थे। प्रबंध काव्य उस समय कम रचे जाते थे।

10. ब्रजभाषा का प्रयोग

रीतिकाल में पूरे 200 वर्षों तक ब्रजभाषा काव्य-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही, जबकि भक्ति काल में यह भाषा केवल कृष्ण काव्य तक ही सीमित थी।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि रीतिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ अधिकतर भौतिकवाद से प्रभावित थीं। इन रचनाओं का प्रमुख रस शृंगार है। रीतिकाल में प्रत्यक्ष रूप में प्रकृति का चित्रण बहुत कम हुआ है, जबकि आलंकारिक रूप में प्रकृति चित्रण काफी मिलता है।

बोध प्रश्न

- रीतिकालीन काव्य में किस रस की प्रधानता पाई जाती है?
- रीतिकालीन कवि किसकी प्रशंसा में कविता लिखते थे?
- रीतिकालीन काव्य का मुख्य उद्देश्य क्या था?

1.3.2.2 काव्यधाराएँ

रीतिकालीन काव्य को मुख्यतः तीन वर्गों में बाँटा जाता है, जिन्हें हम रीतिकाल की काव्यधाराएँ भी कह सकते हैं। ये तीन धाराएँ हैं- रीतिबद्ध काव्यधारा, रीतिसिद्ध काव्यधारा, और रीतिमुक्त काव्यधारा।

1. रीतिबद्ध काव्यधारा

रीतिकाल के कवि जिन्होंने लक्षण ग्रंथों के अनुकरण पर काव्य अंगों का लक्षण एवं

उदाहरण देते हुए रीति ग्रंथों की रचना की, वे 'रीतिबद्ध कवि' कहलाए। इन कवियों का प्रमुख उद्देश्य अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय देना था। रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं केशवदास, देव, चिंतामणि त्रिपाठी, भिखारीदास, मतिराम, पद्माकर आदि।

2. रीतिसिद्ध काव्यधारा

रीतिसिद्ध कवियों के अंतर्गत उन कवियों को लिया जाता है, जिन्होंने कोई रीति ग्रंथ नहीं लिखा, जबकि उन्हें रीति की पूरी जानकारी थी। इस काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं - बिहारी, बेनी वाजपेयी, कृष्णकवि, सेनापति, वृंद आदि।

3. रीतिमुक्त काव्यधारा

रीतिमुक्त काव्यधारा के अंतर्गत वे कवि आते हैं जो रीति के बंधनों से पूर्णतः मुक्त थे। इन्होंने अपने काव्य में रीति का प्रयोग नहीं किया और न ही लक्षण ग्रंथ ही लिखे। इन कवियों में मुख्य हैं - घनानंद, बोधा, आलम और ठाकुर।

बोध प्रश्न

- रीतिकालीन काव्यधाराओं का नाम बताइए।

1.3.2.3 प्रमुख कवि

1. केशवदास

केशवदास हिंदी के प्रमुख अलंकारवादी आचार्य माने जाते हैं। समय की दृष्टि से इन्हें भक्तिकाल का कवि माना जाता है, किंतु प्रवृत्ति की दृष्टि से ये रीतिकाल के अंतर्गत आते हैं। ऐसा माना जाता है कि केशवदास से हिंदी की रीति परंपरा प्रारंभ होती है। ये ओरछा नरेश रामसिंह के भाई इंद्रजीत के आश्रय में रहते थे। इन्होंने कुल 9 ग्रंथों की रचना की, जिनमें से प्रमुख हैं - रसिकप्रिया (1591), रामचंद्रिका (1601)।

2. बिहारी

रीतिकालीन कवियों में बिहारी (1606 ई.-1663 ई.) का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। ये जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे। इनका एकमात्र ग्रंथ है - बिहारी सतसई।

3. देव

देव (1673-1767) रीतिकाल के श्रेष्ठ कवियों में माने जाते हैं। इनका पूरा नाम देवदत्त था। इनकी तुलना बिहारी से की जाती है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - रसविलास, भावविलास, अष्टयाम, सुजानविनोद आदि।

4. भूषण

भूषण (1613-1715) रीतिकाल में वीर रस के प्रमुख कवि माने जाते हैं। ये 'छत्रपति शिवाजी' और राजा 'छत्रसाल' के आश्रय में रहे। चित्रकुल के राजा रुद्र सोलंकी ने इन्हें 'भूषण' की उपाधि दी थी। तभी से ये भूषण के नाम से प्रसिद्ध हो गए। इन्होंने रीति काव्य की परंपरा में एक अलंकार ग्रंथ 'शिवराज भूषण' रचा। इनके अन्य प्रमुख काव्य हैं - 'शिवा बावनी' और 'छत्रसाल दशक'। कुछ लोग इनके तीन और ग्रंथ मानते हैं - 'भूषण उल्लास', 'दूषण उल्लास', 'भूषण हजारा'।

5. घनानंद

घनानंद (1689-1739) रीतिमुक्त काव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। ये दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह रंगीले के यहाँ मीर मुंशी थे तथा सुजान नामक नर्तकी से प्रेम करते थे। बादशाह की आज्ञा की अवमानना के अपराध में इन्हें देश निकाला दिया गया था। उन्होंने सुजान को साथ चलने को कहा, किंतु उसने मना कर दिया। इस कारण उन्हें वैराग्य हो गया और वे वृंदावन जाकर निम्बार्क संप्रदाय में दीक्षित हो गए। घनानंद ने लगभग 41 ग्रंथों की रचना की जो ज्यादातर मुक्तक हैं। इनकी कुछ मुख्य रचनाएँ हैं - 'सुजानहित', 'कृपाकंद', 'वियोगबेलि', 'इश्कलता', 'प्रेम सरोवर' आदि।

6. मतिराम

मतिराम (1617-1701) भी रीतिकालीन कवियों में मुख्य स्थान के अधिकारी माने जाते हैं। ये प्रसिद्ध कवियों भूषण और चिंतामणि के भाई थे। ये बहुत सारे राजाओं के आश्रय में रहे और बहुत सारे ग्रंथों की रचना की। इनके मुख्य ग्रंथों में रसराज, ललित ललाम आदि शामिल हैं।

बोध प्रश्न

- हिंदी की रीति परंपरा का प्रारंभ किस कवि से माना जाता है?
- केशवदास ने कविता में किस चीज को महत्व दिया है?
- बिहारी की ख्याति किस ग्रंथ के कारण हुई?
- भूषण किस रस के कवि हैं?

1.4 पाठ सार

हिंदी साहित्य के इतिहास में द्वितीय चरण को 'मध्यकाल' कहते हैं। मध्यकाल को दो भागों में बाँटा गया है - पूर्व मध्यकाल या भक्तिकाल एवं उत्तर मध्यकाल या रीतिकाल। हिंदी साहित्य के भक्तिकाल को स्वर्ण युग कहा जाता है। उसे यह सम्मान दिलाने में निर्गुण और सगुण दोनों ही धाराओं के कवियों का महत्वपूर्ण योगदान है। इन कवियों ने बहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायक काव्यों की रचना की।

रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के निर्माण में दरबारी परिवेश की अहम भूमिका थी। तत्कालीन दरबारी परिवेश ने ही रीतिकाव्य के विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। रीतिकाल के साहित्य की मुख्य प्रवृत्ति रीति निरूपण है। इसके सहारे कविता की रचना की जाती थी। रीतिकाल की तीन शैलियाँ हैं - रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त। इन्हीं शैलियों का अनुसरण करते हुए आचार्य एवं कवि अपने काव्यों की रचना करते थे।

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. हिंदी साहित्य के मध्यकाल को दो भागों में बाँटा जाता है - पूर्वमध्य (भक्ति) काल और उत्तर मध्य (रीति) काल।
2. भक्ति काव्य मुख्यतः दो प्रकार के हैं- निर्गुण भक्ति काव्य और सगुण भक्ति काव्य।
3. निर्गुण भक्ति काव्य के अंतर्गत संत काव्य और सूफी काव्य शामिल हैं। इन्हें क्रमशः ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी काव्य कहा जाता है।
4. सगुण भक्ति काव्य की भी दो मुख्य शाखाएँ हैं - कृष्ण भक्ति शाखा और राम भक्ति शाखा।
5. रीतिकाल के कवियों ने राधा और कृष्ण के प्रेम का वर्णन भक्ति की अपेक्षा दैहिक शृंगार के आलंबन के रूप में किया है।

1.6 शब्द संपदा

1. आराध्य = पूज्य, आराधना के लायक
2. धर्मान्धिता = धर्म में अंध श्रद्धा या विश्वास
3. निरंकुशता = मनमाना आचरण, तानाशाही
4. परिपाटी = परंपरा, पद्धति

5. ब्रह्मवाद = एक सिद्धांत जिसके अनुसार सारा जगत ब्रह्म से निकला है, उसीकी शक्ति से चल रहा है

6. रहस्यवाद = चिंतन मनन के द्वारा ईश्वर से संपर्क स्थापित करने की प्रवृत्ति

7. रीति = कार्य करने का तरीका

8. वियोग = अलग

9. संयोग = मिलना

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. संतकाव्य की सामान्य विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।
2. रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
3. भक्तिकालीन काव्य प्रवृत्तियों की चर्चा कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. भक्तिकाल का परिचय दीजिए।
2. निर्गुण भक्ति के अंतर्गत सूफी मत का परिचय दीजिए।
3. रीतिकालीन काव्यधाराओं का परिचय दीजिए।
4. केशवदास और बिहारी का परिचय दीजिए।
5. कृष्ण भक्ति शाखा की विशेषताएँ बताइए।
6. राम भक्ति शाखा की विशेषताएँ बताइए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. सूरदास का जन्म कहाँ हुआ था? ( )

(अ) पारसौली (आ) सीही (इ) गऊधार (ई) अयोध्या

2. 'रसिकप्रिया' किस कवि की रचना है? ( )

(अ) केशवदास (आ) बिहारी (इ) देव (ई) भूषण

3. 'पद्मावत' किस कवि की रचना है? ( )

(अ) मंझन (आ) कुतुबन (इ) जायसी (ई) उस्मान

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. .... ने सूरदास को 'पुष्टिमार्ग का जहाज़' कहा था।
2. सूफी कवियों ने प्रेम के .... पक्ष को अत्यधिक महत्व दिया है।
3. सूरदास का प्रामाणिक ग्रंथ .... है।

III. सुमेल कीजिए -

1. कबीरदास	(अ) शिवा बावनी
2. जायसी	(आ) बीजक
3. घनानंद	(इ) अखरावट
4. भूषण	(ई) इश्कलता

1.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र, हरदयाल
3. रीतिकालीन साहित्य का पूनर्मूल्यांकन : रामकुमार वर्मा
4. हिंदी साहित्य का नवीन इतिहास : लाल साहब सिंह

इकाई 2 : आधुनिक काव्य : एक परिचय

रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 मूल पाठ: आधुनिक काव्य : एक परिचय
2.3.1 आधुनिक काव्य : सामान्य परिचय
2.3.2 पुनर्जागरण काल (भारतेंदु युग) और उसके मुख्य कवि
2.3.3 जागरण-सुधारकाल (द्विवेदी युग) और उसके मुख्य कवि
2.3.4 छायावाद युग
2.3.5 छायावादोत्तर काल
2.3.5.1 प्रगतिवाद और उसके मुख्य कवि
2.3.5.2 प्रयोगवाद और उसके मुख्य कवि
2.3.6 नवलेखन काल : स्वातंत्र्योत्तर काल
2.4 पाठ सार
2.5 पाठ की उपलब्धियाँ
2.6 शब्द संपदा
2.7 परीक्षार्थ प्रश्न
2.8 पठनीय पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आधुनिक हिंदी काव्य का आरंभ 19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ था। यह वह समय था जब भारतेंदु हरिश्चंद्र सक्रिय थे। इस समय बंगाल, महाराष्ट्र और पंजाब में सामाजिक सांस्कृतिक सुधार-आंदोलन की गूँज चारों दिशाओं में फैल रही थी। भारतेंदु हरिश्चंद्र से लेकर समकालीन कविता तक की विकास यात्रा विभिन्न चरणों से गुज़री है। नवजागरण, छायावादी, छायावोत्तर प्रगतिशील, नई कविता के दौर से गुज़रते हुए हिंदी कविता ने परिपक्वता की नई मंजिले तय की है। हर युग, हिंदी कविता के बदलते मिजाज़, संप्रेषण की नई-नई विधियाँ, भाव-

भाषा-संरचना के नए-नए प्रयोग के साथ, अपनी विशिष्ट पहचान को बनाए हुए थे। इस युग में हिंदी पद्य के साथ-साथ गद्य का भी विकास देखा गया। इस इकाई में आप आधुनिक काव्य का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करेंगे।

2.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- आधुनिक काव्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- भारतेंदु युग की काव्य प्रवृत्तियों एवं मुख्य कवियों से परिचित हो सकेंगे।
- द्विवेदी युग से परिचित होंगे।
- छायावाद युग के मुख्य कवियों को जान सकेंगे।
- प्रगतिवादी और प्रयोगवादी कवियों के काव्य से परिचित हो सकेंगे।
- नवलेखन काल के कवियों के बारें में जान सकेंगे।

2.3 मूल पाठ : आधुनिक काव्य : एक परिचय

2.3.1 आधुनिक काव्य : सामान्य परिचय

आधुनिक काल नई चेतना, नई परंपराओं व नई प्रवृत्तियों का युग है। इसी दृष्टि से इसे मध्यकाल से अलग किया जाता है। प्राचीन के गर्भ से ही नवीन का विकास होता है। आधुनिक काल में समाज, संस्कृति एवं साहित्य के क्षेत्र में जिस नए आदर्शवादी आंदोलन का प्रारंभ हुआ, वह मध्यकालीन आंदोलनों से थोड़ा अलग था। हम देखते हैं कि मध्यकालीन आंदोलनों का मुख्य केंद्र धर्म था, जबकि आधुनिक काल का केंद्र समाज रहा। मध्यकालीन काव्य का प्रेरणा-स्त्रोत मुख्यतः संस्कृत का पौराणिक एवं दार्शनिक साहित्य रहा और इसका संबंध वेदांत-दर्शन, ऐतिहासिक जीवन-चरित एवं पाश्चात्य विचारों से रहा है।

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल 19वीं शताब्दी से प्रारंभ होता है। अर्थात इसकी समय सीमा 1980 वि. अर्थात् सन् 1843 ई. से 1923 ई. तक माना जाता है। आधुनिक काल को भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न नाम दिया है। जैसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने आधुनिक काल को 'गद्यकाल', डॉ. रामकुमार वर्मा ने 'आधुनिक काल', नाम दिया है। इस समय का साहित्य रीतिकालीन दरबारी परिवेश से निकलकर सामान्य जन-जीवन के निकट आया। इसी काल में ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली में कविताएँ भी लिखी जाने लगीं। इस काल को 'राष्ट्रीय

चेतना का काल’ भी कहा जाता है।

बोध प्रश्न

- आधुनिक काल की समय सीमा क्या है?
- आधुनिक काल को ‘गद्य काल’ किसने कहा है?

2.3.2 पूनर्जागरण काल (भारतेंदु युग) और उसके मुख्य कवि

आधुनिक काल का प्रथम चरण भारतेंदु युग अथवा पुनर्जागरण काल के नाम से जाना जाता है। भारतेंदु युग का समय 1868 से 1900 ई. तक माना जाता है। भारतेंदु युग असल में पुनर्जागरण का युग था। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक सभी क्षेत्रों में कुछ नयापन दिखाई पड़ रहा था। इस समय के काव्य में मुख्यतः राजभक्ति, देश प्रेम, की कविताओं के साथ-साथ आर्थिक अवनति के प्रति क्षोभ, बाल-विवाह आदि रूढ़ियों का खंडन करते हुए कविताएँ लिखी जाती थीं। उस समय साहित्य नई चाल में ढ़ल रही थी। कवियों का ध्यान नवीन विषयों की ओर आकृष्ट हो रहा था। अतः इसे नई धारा या प्रथम उत्थान कहा गया। अतः कुछ विद्वानों ने इसे ‘विचारों में परिवर्तन का युग’ भी माना है।

भारतेंदु युगीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ

भारतेंदु युगीन कवियों का काव्य-फलक अत्यंत विस्तृत था। उनकी रचना-प्रवृत्तियाँ एक ओर भक्तिकाल और रीतिकाल से अनुबद्ध थीं, तो दूसरी ओर समकालीन परिवेश के प्रति। उस काल की कविता की कुछ मुख्य प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं -

1. देश-भक्ति

भारतेंदु युगीन साहित्य की सबसे मुख्य प्रवृत्ति राष्ट्रीय चेतना है। इस काल के कवियों ने आंचलिकता से ऊपर उठकर संपूर्ण राष्ट्र की महिमा का गान किया है। इस युग में देश-प्रेम तथा राज-भक्ति की दोनों धाराएँ साथ-साथ बह रही थीं। काव्य में व्यक्ति विशेष को केंद्र न मानकर, समग्र देशवासियों में नवजागरण उत्पन्न करने की चेष्टा की गई।

2. भक्ति भावना

भारतेंदु युग में परंपरागत धार्मिकता और भक्ति भावना को अपेक्षाकृत कम स्थान मिला है।

3. सामाजिक चेतना

भारतेंदु युगीन कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीय समाज में व्याप्त

कुरीतियों तथा बुराइयों को दूर करने की प्रेरणा दी।

4. स्वेदशीकरण की प्रवृत्ति

इस युग के कवियों ने स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहित करने का काम किया तथा स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग के लिए भी लोगों को प्रेरित किया।

5. शृंगारिकता की प्रवृत्ति

भारतेंदु और उनके समकालीन कवियों ने रस को काव्य की आत्मा मानकर अपनी रचनाओं में विविध रसानुभूतियों को अभिव्यक्त किया है, जिनमें शृंगार रस प्रमुख है।

6. हास्य-व्यंग्य की प्रवृत्ति

इस युग में हास्य-व्यंग्य संबंधी काव्य की प्रचुर रचनाएँ पाई जाती हैं। उस समय के कवियों ने पश्चिमी सभ्यता, विदेशी शासन तथा सामाजिक रूढ़ियों पर व्यंग्यात्मक एवं हास्यपरक रचनाएँ लिखी हैं।

7. समस्यापूर्ति की प्रवृत्ति

भारतेंदु युग में कवियों की प्रतिभा और रचना कौशल को परखने के लिए कवि गोष्ठियों और कठिन विषयों पर समस्यापूर्ति कराई जाती थी।

8. प्रकृति चित्रण की प्रवृत्ति

भारतेंदु युगीन काव्य में प्राकृतिक सौंदर्य का बड़ा ही सुंदर वर्णन मिलता है। सौंदर्य बोध में सहायक स्वतंत्र प्रकृति का चित्रण करने वाले कवियों में ठाकुर जगमोहन सिंह का नाम प्रसिद्ध है।

9. काव्यानुवादों की प्रवृत्ति

इस युग में मौलिक रचनाओं के अतिरिक्त संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषा की काव्य कृतियों के भी सुंदर अनुवाद हुए हैं।

10. मुक्तक काव्य की प्रधानता

काव्य-रूप की दृष्टि से इस काल के कवियों ने मुख्यतः मुक्तक काव्य की रचना की है।

11. भाषा

इस युग के साहित्य में भाषायी चेतना का मुख्य स्थान है। इस समय खड़ीबोली का प्रयोग गद्य में होने लगा था, किंतु काव्य के क्षेत्र में ब्रजभाषा को लोकप्रियता मिली।

12. छंद

इस युग के काव्य में दोहा, चौपाई, सोरठा, रोला, गीतिका, हरिगीतिका आदि छंदो का पर्याप्त प्रयोग हुआ है।

निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि भारतेंदु युगीन साहित्य में राष्ट्रीयता, समाजसुधार एवं बौद्धिक चेतना को देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- आधुनिक काल विचारों में परिवर्तन का युग क्यों कहा जाता है?
- भारतेंदु युगीन कविता की कुछ प्रमुख प्रवृत्तियों के नाम बताइए।

भारतेंदु युगीन कवि व उनकी कृतियाँ

भारतेंदु युग में यों तो अधिकतर कवियों ने भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों के अंतर्गत काव्य रचना की है, किंतु उनमें भारतेंदु हरिश्चंद्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', प्रतापनारायण मिश्र, जगमोहन सिंह, अंबिकादत्त व्यास और राधाकृष्णदास आदि प्रमुख हैं।

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885 ई.)

भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म काशी के एक संपन्न परिवार में हुआ। इनके पिता श्री गोपालचंद्र 'गिरिधरदास' एक कवि थे। भारतेंदु को साहित्यिक प्रतिभा विरासत में अपने पिता से प्राप्त हुई थी। ये कवि के अतिरिक्त नाटककार-निबंधकार-पत्रकार आदि भी थे। इन्होंने 'कवि वचन सुधा' और 'हरिश्चंद्र मैगज़ीन' का संपादन भी किया था। इन्होंने लगभग 70 कृतियों की रचना की जिनमें 'प्रेममालिक', 'प्रेमसरोवर', 'प्रेम विलाप', 'प्रेमफुलवारी' आदि प्रमुख हैं। इनकी अधिकतर कविताओं में देशभक्ति, प्राकृतिक चित्रण, शृंगारिकता, सामाजिक चेतना के भाव पाए जाते हैं। इन्होंने ब्रजभाषा के साथ-साथ खड़ीबोली में भी कविताएँ लिखी हैं।

2. बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' (1855-1923 ई.)

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' भारतेंदु युग के मुख्य साहित्यकारों में से एक हैं। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों में साहित्य लिखा। इन्होंने बहुत सी पत्रिका का संपादन किया। इनकी प्रसिद्ध काव्य-कृतियों में 'जीर्ण जनपद', 'आनंद-अरुणोदय', 'हार्दिक हर्षादर्श' आदि उल्लेखनीय हैं। इन्होंने मुख्य रूप से ब्रजभाषा में ही रचना की किंतु खड़ीबोली से भी इन्हें लगाव था।

3. प्रतापनारायण मिश्र (1856-1894 ई.)

भारतेंदु युगीन साहित्यकारों में प्रतापनारायण मिश्र का प्रमुख स्थान है। इन्होंने 'ब्राह्मण'

नामक पत्र का संपादन किया। इनकी प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियाँ निम्नलिखित हैं - ‘ प्रेम पुष्पावली’, ‘मन की लहर’, ‘शृंगार विलास’ आदि। इन्होंने भी भारतेंदु की तरह विभिन्न विषयों को लेकर काव्य रचना की है।

अन्य कवि

समसामयिक सामाजिक, राजनीतिक परिवेश के प्रति भारतेंदु युग में जिस जागरूकता का उदय हुआ था, उसका निर्वाह प्रायः सभी कवियों ने किया। ठाकुर जगमोहन सिंह, अंबिकादत्त व्यास, राधाकृष्णदास आदि इस काल के महत्वपूर्ण रचनाकार हैं।

बोध प्रश्न

- भारतेंदु युग के कुछ प्रमुख रचनाकारों का नाम बताइए।
- ‘ब्राह्मण’ पत्र के संपादक का नाम बताइए?

2.3.3 जागरण-सुधारकाल (द्विवेदी युग) और उसके मुख्य कवि

हिंदी साहित्य के उत्थान को द्विवेदी-युग अथवा जागरण-सुधार काल कहा जाता है। द्विवेदी युग का समय सन 1900 ई. से 1918 ई. तक माना जाता है। हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल एक तरह से जागरण का संदेश लेकर आया था। ‘सरस्वती’ पत्रिका का प्रकाशन 1900 ई. से प्रारंभ हुआ। सन् 1903 ई. में महावीर प्रसाद द्विवेदी इसके संपादक बने। इस पत्रिका के माध्यम से नवजागरण की लहर को आगे बढ़ाया गया। इस समय नए विषयों पर कविता लिखी जाने लगी। काव्य भाषा के रूप में ब्रजभाषा को छोड़कर खड़ीबोली का प्रयोग किया जाने लगा।

इस युग की प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं -

(1) देशप्रेम की भावना (2) सामाजिक समस्याओं का चित्रण (3) नैतिकता एवं आदर्शवाद (4) सामान्य मानवता (5) विषय वस्तु का विस्तार (6) भाषा परिवर्तन (7) स्त्री के प्रति दृष्टिकोण

द्विवेदी युग के प्रमुख कवि एवं उनकी कृतियाँ

1. श्रीधर पाठक (1859 ई.-1928 ई.)

श्रीधर पाठक खड़ी बोली के प्रथम कवि हैं। पहले वे ब्रजभाषा में कविता करते थे, लेकिन महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा ‘सरस्वती’ का संपादन संभालने से पूर्व ही उन्होंने खड़ीबोली में कविता लिखकर अपनी स्वच्छंद वृत्ति का परिचय दिया। इनकी कविताओं का मुख्य विषय

देशप्रेम, समाजसुधार तथा प्रकृति चित्रण है। इनकी मौलिक कृतियों में ‘वनाष्टक’, ‘कश्मीर सुषमा’ (1904), ‘देहरादून’ (1915) और ‘भारतगीत’ (1928) आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

2. महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864 ई.-1938 ई.)

द्विवेदी युग के प्रवर्तक कवि महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म रायबरेली के दौलतपुर गाँव में 1864 ई. में हुआ। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों तरह की रचनाएँ की हैं। इनकी रचनाओं की कुल संख्या लगभग 80 हैं। इनकी मुख्य रचनाएँ हैं - काव्यमंजूषा, सुमन, कुमारसंभवसार आदि। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को हिंदी साहित्य में एक विचारक तथा दिशा निर्देशक के रूप में जाना जाता है।

3. अयोध्या सिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’ (1865 ई.-1947 ई.)

हरिऔध जी द्विवेदी युग के प्रख्यात कवि होने के साथ-साथ उपन्यासकार, आलोचक एवं इतिहासकार भी थे। उन्हें ‘खड़ीबोली के प्रथम महाकवि’ होने का गौरव प्राप्त है। श्रीधर पाठक के बाद हरिऔध जी ही हैं जिन्होंने खड़ीबोली में मधुर रचनाएँ रचीं। इन्होंने ब्रजभाषा और खड़ीबोली दोनों में ही रचनाएँ लिखीं। इनकी मुख्य रचनाएँ हैं - ‘प्रियप्रवास’ (1914), ‘चुभते-चौपदे’, ‘चोखे चौपदे’ (1932), ‘वैदेही वनवास’ (1940) आदि। इनके द्वारा रचित ‘प्रियप्रवास’ खड़ी बोली का पहला महाकाव्य है।

4. मैथिलीशरण गुप्त (1886 ई.-1964 ई.)

मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। इनका जन्म चिरगाँव झाँसी में सन् 1886 ई. में हुआ था। इनकी रचनाएँ सरस्वती में प्रकाशित होती थी। द्विवेदी जी गुप्त जी के गुरू के समान थे आधुनिक भारत के ‘राष्ट्रीय कवि’ भी थे। गुप्त जी के प्रमुख काव्यग्रंथ हैं - जयद्रथ वद्य, भारत भारती, पंचवटी साकेत, यशोधरा, द्वापर, जय भारत, विष्णुप्रिया आदि।

5. रामनरेश त्रिपाठी (1889 ई.-1962 ई.)

रामनरेश त्रिपाठी का जन्म जिला जौनपुर के कोइरीपुर ग्राम में हुआ था। इनके काव्य में श्रीधर पाठक की तरह स्वच्छंदता की प्रवृत्ति मिलती है। त्रिपाठी जी के प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ हैं - मिलन, पथिक (1920), मानसी (1927) और स्वप्न (1929)। वे ग्राम गीतों (लोक गीतों) का संकलन करने वाले हिंदी के प्रथम कवि थे।

बोध प्रश्न

- महावीर प्रसाद द्विवेदी किस पत्रिका के संपादक थे?

- द्विवेदी युग में काव्यभाषा के रूप में किस भाषा का प्रयोग किया जाता था?
- हिंदी ग्राम गीतों के संकलन के प्रथम कवि कौन हैं?

2.3.4 छायावाद युग

छायावाद युग की समय सीमा 1918 ई. से 1936 ई. तक मानी जाती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ उसका संबंध काव्यवस्तु से होता है अर्थात जहाँ कवि उस अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलंबन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम को अनेक प्रकार से अभिव्यक्त करता है। छायावाद का दूसरा प्रयोग काव्य शैली है। छायावाद को द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता अर्थात स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह भी कहा जाता है।

छायावादी काव्य की विशेषताएँ

1. आत्माभिव्यक्ति 2. सौंदर्य चित्रण 3. नारी सौंदर्य 4. प्रकृति चित्रण 5. दुःख और वेदना की अभिव्यक्ति 6. रहस्यवाद 7. कल्पनाशीलता 8. बिंब योजना 9. प्रतीक योजना।

छायावाद के प्रमुख कवि छायावाद चतुष्टय

1. जयशंकर प्रसाद (1890 ई.-1937 ई.)

जयशंकर प्रसाद 'छायावाद' युग के प्रवर्तक माने जाते हैं। 'कामायनी' इनकी अमर कृति है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'उर्वशी', 'वनमिलन', 'अयोध्या का उद्धार', 'करुणालय', 'कामायनी', 'आँसू', 'झरना', 'लहर' आदि।

2. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1897 ई.- 1962 ई.)

निराला को ओज और औदात्य का कवि कहा जाता है। इनकी मुख्य रचनाएँ हैं - 'तुलसीदास', 'सरोज स्मृति', 'राम की शक्तिपूजा', 'अनामिका' (1923), 'परिमल' (1930), 'गीतिका' (1936), 'कुकुरमुत्ता', 'अणिमा' आदि।

3. सुमित्रानंदन पंत (1900 ई.-1977 ई.)

पंत को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है। पंत जी की प्रथम कविता 'गिरजे का घंटा' है। उनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं - 'वीणा', 'ग्रंथि', 'पल्लव' और 'गुंजन', 'युगांत', 'युगवाणी', 'ग्राम्या', 'उत्तरा', 'लोकायतन' आदि।

4. महादेवी वर्मा (1907 ई.-1987 ई.)

महादेवी को 'आधुनिक युग की मीराँ' कहा जाता है। इनके मुख्य काव्य संग्रह हैं - 'निहार',

'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'यामा' और 'दीपशिखा'।

छायावादी काव्यधारा के साथ एक ऐसी काव्यधारा चल रही थी जिसमें राष्ट्रीय भावना मुख्य थी। राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधाराओं के कवियों में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह 'दिनकर', माखनलाल चतुर्वेदी और सुभद्राकुमारी चौहान प्रमुख हैं।

बोध प्रश्न

- छायावाद की समय सीमा क्या है?
- छायावाद के प्रमुख कवियों का नाम बताइए।
- ओज और औदात्य का कवि कौन हैं?
- महादेवी को क्या कहकर संबोधित किया जाता है?

2.3.5.1 प्रगतिवाद और उसके मुख्य कवि

प्रगतिवाद का संबंध मार्क्सवादी आंदोलन से है। 1936 ई. में लखनऊ में 'भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ' का पहला अधिवेशन हुआ जिसकी अध्यक्षता प्रेमचंद ने की। प्रेमचंद ने अपने भाषण में कहा कि "साहित्य केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं, उसका लक्ष्य समाज का हित होना चाहिए।" राजनीति के क्षेत्र में जो मार्क्सवादी है, वही साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद है। अतः प्रगतिवादी साहित्य का लक्ष्य 'साम्यवादी' विचारधारा का प्रचार करना तथा शोषित वर्ग को क्रांति के लिए शोषक वर्ग के विरुद्ध उकसाना है।

प्रगतिवादी काव्य की प्रवृत्तियाँ - 1. शोषण का विरोध, 2. समतामूलक समाज का निर्माण, 3. शोषित वर्ग की दयनीय स्थिति का वर्णन, 4. नारी विषयक नया दृष्टिकोण, 5. यथार्थवाद, 6. उपयोगितावाद, 7. साम्यवादी प्रतीक, 8. सहज भाषा-शैली।

प्रमुख प्रगतिवादी कवि

1. रांगेय राघव (1923 ई.-1962 ई.)

रांगेय राघव बहुमुखी प्रतिभा संपन्न प्रगतिवादी कवि थे। इन्होंने कविता के साथ-साथ कहानियाँ, उपन्यास और आलोचनाएँ भी लिखीं। इनके मुख्य काव्य संग्रह हैं - पिघलते पत्थर, श्यामला, मेधावी, अजेय, खंडहर, राह के दीपक तथा पांचाली।

2. रामविलास शर्मा (1912 ई.-2000 ई.)

प्रगतिशील विचारधारा के कवि और आलोचक के रूप में हिंदी साहित्य के विकास में रामविलास शर्मा का योगदान महत्वपूर्ण है। इनकी मुख्य काव्यकृतियाँ हैं- रूप तरंग, सदियों से

सोए जाग उठे, चाँदनी, परिणति।

3. नागार्जुन (1911 ई.-1998 ई.)

नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था। मैथिली में यह 'यात्री' नाम से काव्य रचना करते थे। बौद्ध धर्म में दीक्षा लेने के बाद इन्होंने अपना नाम नागार्जुन रखा। प्रगतिवादी कवियों में ये बहुत महत्वपूर्ण जनकवि माने जाते हैं। इनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं - युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आँखें, तुमने कहा था, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, पुरानी जूतियों का कोरस आदि।

प्रगतिवाद के अन्य प्रमुख कवि हैं नरेंद्र शर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन', केदारनाथ अग्रवाल, भारतभूषण अग्रवाल, नेमिचंद्र जैन, त्रिलोचन शास्त्री आदि।

बोध प्रश्न

- प्रगतिवाद का संबंध किस आंदोलन से है?
- 'भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ' के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?

2.3.5.2 प्रयोगवाद और उसके मुख्य कवि

प्रयोगवाद का प्रारंभ 1943 ई. में अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' के प्रकाशन से माना जाता है। प्रयोगवादी कवि प्रयोग करने में विश्वास रखते हैं। उन्होंने अपने व्यक्तिगत सुख-दुःख को, अपनी संवेदनाओं को नए-नए माध्यमों से व्यक्त किया और उस यथार्थ को अभिव्यक्ति प्रदान की, जिसके वे भोक्ता हैं। प्रयोगवाद का ही विकास कालांतर में 'नई कविता' के रूप में हुआ। 'तार सप्तक' के कवि हैं गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचंद्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर, रामविलास शर्मा एवं अज्ञेय।

बोध प्रश्न

- प्रयोगवाद का प्रारंभ कब से माना जाता है?
- प्रयोगवाद के कुछ प्रमुख कवियों के नाम बताइए।

2.3.6 नवलेखन काल : स्वातंत्र्योत्तर काल

'दूसरा सप्तक' (1953) के प्रकाशन के साथ 'नई कविता' का प्रवर्तन हुआ। अन्य विधाओं में भी विशेष रूप से 1960 के बाद समकालीनता बोध का विकास हुआ। इस समय के बहुत सारे कवि प्रयोगवाद और नई कविता दोनों धाराओं से जुड़े हुए हैं। जैसे - सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', गजानन माधव मुक्तिबोध, शमशेरबहादुर सिंह, केदारनाथ सिंह, धर्मवीर

भारती, धूमिल, भवानी प्रसाद मिश्र, मुक्तिबोध।

नई कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. नवीनता, 2. बौद्धिकता, 3. अतिशय वैयक्तिकता, 4. क्षणवादिता, 5. भोगवाद एवं वासना, 6. यथार्थवाद, 7. आधुनिक युग बोध, 8. व्यंग्य की प्रवृत्ति, 9. अलंकार के प्रयोग में नवीनता।

2.4 पाठ सार

हिंदी साहित्य का 'आधुनिक काल' साहित्यिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस काल में काव्य के साथ-साथ गद्य की प्रधानता पाई जाती है। आधुनिक काल को कई उपविभागों में बाँटा गया है - पुनर्जागरण काल (भारतेंदु युग), जागरण-सुधार काल (द्विवेदी युग), छायावादी युग, छायावदोत्तर काल (अ) प्रगति-प्रयोगकाल (ब) नवलेखन काल। आधुनिक कला में जो काव्य रचे गए थे उनमें राजभक्ति, देशप्रेम, सामाजिक कुरीतियों का खंडन आदि विषय होते थे। इस काल में नए विषयों पर कविता लिखी जाने लगी। ब्रजभाषा को छोड़कर खड़ीबोली का प्रयोग अधिक किया जाने लगा। आधुनिक काल में प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता का विकास हुआ।

2.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. आधुनिकता भारतेंदु युग की मुख्य प्रवृत्ति है जो उसे मध्यकाल से अलग करती है।
2. भारतेंदु काल में हिंदी साहित्य दरबारीपन से मुक्त होकर व्यापक समाज के सुख दुःख के साथ जुड़ा।
3. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने खड़ीबोली का परिमार्जन किया तथा साहित्य में राष्ट्रीयता और नैतिकता से युक्त होकर व्यापक समाज के समावेश पर बल दिया।
4. द्विवेदी युग के गद्य में सामाजिक, राष्ट्रीय, राजनैतिक और आर्थिक जागरूकता दिखाई देती है।
5. छायावादी युग में वैयक्तिकता का आग्रह प्रमुख रहा।
6. प्रगतिवादी साहित्य का मूल स्वर शोषण के विरोध का रहा।
7. प्रयोगवाद का मुख्य बल नई राहों की खोज पर था।
8. आजादी के बाद नवलेखन के केंद्र में समकालीनता बोध की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

2.6 शब्द संपदा

1. परिवेश = वातावरण, माहौल
2. मौलिक = असली, वास्तविक
3. रहस्यवाद = चिंतन-मनन के द्वारा ईश्वर से संपर्क स्थापित करने की प्रवृत्ति
4. शोषक = शोषण करने वाला व्यक्ति
5. शोषित = जिसका शोषण किया गया हो
6. साम्यवादी = साम्यवाद का पक्षधर या समर्थक

2.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. आधुनिक काल के उदय की पृष्ठभूमि और उसके नामकरण की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।
2. द्विवेदी युग का संक्षिप्त परिचय देते हुए महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान की चर्चा कीजिए।
3. छायावाद युग का परिचय दीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. हिंदी साहित्य में भारतेंदु के योगदान की चर्चा कीजिए।
2. प्रगतिवाद के अर्थ को समझाते हुए इस युग के प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए।
3. नवलेखन काल की साहित्यिक उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. हिंदी कविता के आधुनिक युग का प्रवर्तक किसे माना जाता है? ( )

   (अ) बालकृष्ण भट्ट (आ) जयशंकर प्रसाद (इ) महादेवी वर्मा (ई) भारतेंदु

2. हिंदी कविता में राष्ट्रीयता की तान सबसे पहले किसने छेड़ी? ( )

(अ) मैथिलीशरण गुप्त (आ) भारतनलाल चतुर्वेदी

(इ) रामधारी सिंह दिनकर (ई) भारतेंदु हरिश्चंद्र

3. मैथिलीशरण गुप्त किस युग के कवि हैं? ( )

(अ) छायावादी युग (आ) भारतेंदु युग (इ) द्विवेदी युग (ई) प्रगतिवादी युग

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. भारतेंदु काल में साहित्य .... से मुक्त होकर समाज से जुड़ा।
2. खड़ीबोली का पहला महाकाव्य .... है।
3. 'दूसरा सप्तक' के प्रकाशन के साथ .... का प्रवर्तन हुआ। हैं।

III. सुमेल कीजिए -

1. प्रियप्रवास	(अ) मैथिलीशरण गुप्त
2. उर्वशी	(आ) प्रतापनारायण मिश्र
3. मन की लहर	(इ) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
4. पंचवटी	(ई) जयशंकर प्रसाद

2.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास : (सं) नगेंद्र, हरदयाल
3. हिंदी साहित्य का सरल इतिहास : विश्वनाथ त्रिपाठी
4. हिंदी साहित्य का नवीन इतिहास : लाल साहब सिंह
5. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : गणपतिचंद्र गुप्त

इकाई 3 : कबीरदास : एक परिचय

रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 मूल पाठ : कबीरदास : एक परिचय

3.3.1 जीवन परिचय

3.3.2 रचना यात्रा

3.3.3 कबीर के काव्य की विशेषता

3.3.4 हिंदी साहित्य में कबीर का स्थान एवं महत्व

3.4 पाठ सार

3.5 पाठ की उपलब्धियाँ

3.6 शब्द संपदा

3.7 परीक्षार्थ प्रश्न

3.8 पठनीय पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल को स्वर्ण युग की संज्ञा दी गई है। भक्ति इस युग के काव्य की प्रमुख विशेषता रही है। निर्गुण और सगुण काव्यधाराओं में क्रमशः ज्ञानाश्रयी-प्रेमाश्रयी और कृष्णभक्ति-रामभक्ति प्रवाहित हुई। कबीरदास निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे। उनके काव्य में एकेश्वरवाद की छवि प्रस्फुटित हुई है। कबीरदास कवि के साथ-साथ समाज सुधारक भी हैं। उनका काव्य समकालीन समाज की कुप्रथाओं, अंधविश्वासों, धार्मिक आडंबरों-पाखंडों पर गहरा प्रहार करता है।

3.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- कबीरदास के व्यक्तित्व और कृतित्व को समझ पाएँगे।
- कबीरदास की काव्यगत विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- कबीरदास की सुधारवादी दृष्टि को समझ सकेंगे।

- कबीरदास की भाषा-शैली को समझ सकेंगे।
- कबीर के काव्य की विशेषताओं को समझ सकेंगे।

3.3 मूल पाठ : कबीरदास : एक परिचय

3.3.1 जीवन परिचय

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के ज्ञानाश्रयी काव्यधारा के प्रवर्तक संत कबीरदास समाज सुधारक और सजग कवि के रूप में जाने जाते हैं। वे अनाथ थे, किंतु सारा समाज उनकी छत्र-छाया की अपेक्षा करता था। कबीर का जन्म 1398 ई. में हुआ था। कुछ विद्वानों का यह मत है कि कबीर किसी विधवा ब्राह्मणी के पुत्र थे, जिसने लोक-लाज के भय से जन्म देते ही इन्हें त्याग दिया था। कबीरदास के जन्म के संबंध में अनेक जनश्रुतियाँ हैं। उन जनश्रुतियों में जो सबसे अधिक प्रचलित है, वह यह है कि उनका जन्म बनारस में लहरतारा तालाब के पास हुआ। वहाँ से गुजर रहे दो दंपत्ति नीरू और नीमा ने उन्हें देखा और घर उठा लाए। कबीरदास का पालन-पोषण भी उन्होंने ही किया। अल्प आयु में ही कबीरदास का विवाह हो गया था। विवाह होने के बाद कबीर संसारी बनकर रहने से उनकी आत्मा घुटती सी लगती थी। उनकी पत्नी का नाम लोई था और उनसे दो संतानें थीं - कमाल और कमाली। कमाल अपने पिता से विपरीत धन-लोलुप और व्यवसायी प्रवृत्ति का था। कबीर अपने पुत्र से खुश नहीं रहते थे। कहावत है कि - बूड़ा वंश कबीर को उपजे पूत कमाल। कुछ विद्वानों का मत है कि कमाल कबीर के पुत्र नहीं थे, क्योंकि कमाल नामी एक रचनाकार भी थे, जो कबीर के विचारों से संतुष्ट नहीं थे। कबीर स्वयं को जुलाहा के रूप में भी मानते थे। जुलाहे होने के संबंध में वे कहते हैं कि -

जाति जुलाहा नाम कबीरा,
बनि बनि फिरो उदासी॥

कुछ लोगों का कहना है कि कबीर जन्म से मुस्लिम थे और युवावस्था में स्वामी रामानंद के प्रभाव से उन्हें हिंदू धर्म की जानकारी हुई। एक दिन कबीर पंचगंगा घाट की सीढ़ियों पर गिर गए थे। स्वामी रामानंद जी गंगा स्नान के लिए सीढ़ियों से उतर रहे थे, तभी उनके पैर कबीर के शरीर पर पड़ा और उनके मुँह से राम-राम शब्द निकल पड़ा। उसी राम को दीक्षा-मंत्र के रूप में मानकर कबीर ने स्वामी रामानंद को अपना गुरु स्वीकार कर लिया। कबीर कहते हैं कि -

हम कासी में प्रकट भए हैं,

रामानंद चेताए॥

सतगुरु स्वामी रामानंद के बारह शिष्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण शिष्य कबीर ही थे। कबीर जानते थे कि संसार में बहुत से गुरु जो लोभी और बनावटी होंगे। परंतु ऐसे लोगों को 'गुरु' की संज्ञा देना उचित नहीं है, पर कबीर कहते हैं कि जो जीव को निर्मल कर दे उसी को गुरु मानना चाहिए।

कबीर मूलतः भक्त थे। उन्होंने कहीं भी स्वयं को कवि घोषित नहीं किया है। कबीर के सतगुरु ने उन्हें साखी कहने के लिए इसलिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया, जिससे वे धर्मांधता के पंक में पगी हुई भोली-भाली जनता का पथ-प्रदर्शन कर उन्हें सन्मार्ग की ओर उन्मुख करके भवसागर से मुक्ति दिला सके। इसी संदर्भ में कबीर कहते हैं-

हरि जी यहै बिचारिया, साषी कहौ कबीर।
भौसागर मैं जीव हैं, जे कोई पकडैं तीर॥

कबीर को सतगुरु (ईश्वर) के यहाँ से अवतार प्राप्त हुआ जिसका निर्वाह उन्होंने स्वयं को परिशोधित करके किया है।

कबीरदास के शिष्य धर्मदास थे। धर्मदास ने ही कबीर के दोहों को 'बीजक' के नाम से प्रस्तुत किया था।

बोध प्रश्न

- कबीर किस काव्यधारा के कवि थे?
- कबीर के गुरु का नाम लिखिए।
- गुरु के संबंध में कबीर की क्या मान्यता है?

संत कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। साधु-संतों और फकीरों की संगति में बैठकर उन्होंने वेदांत, उपनिषद और योग का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लिया था। सूफी फकीरों की संगति में बैठकर इन्होंने इस्लाम धर्म के सिद्धांतों की भी काफी जानकारी प्राप्त कर ली थी। उन्होंने अपने न पढ़े-लिखे होने के संबंध में स्वयं 'बीजक' की एक साखी में बताया है, जिसमें उन्होंने कहा है कि मैंने तो कभी कागज़ और कलम का प्रयोग ही नहीं किया और न ही कभी लेखन का कार्य किया है, लेकिन चारों युगों की बातों को केवल अपने मुँह द्वारा जता दिया है -

मसि कागद छूयो नहीं, कलम गही नहिं हाथ।
चारिक जुग को महातम, मुखहिं जनाई बात॥

अधिकांश विद्वानों के अनुसार कबीर 1575 वि. (सन् 1518 ई.) में स्वर्गवासी हो गए थे। कुछ विद्वानों का मत है कि इन्होंने स्वेच्छा से मगहर में जाकर अपने प्राण त्याग कर दिए थे। अपनी मृत्यु के समय में भी उन्होंने जन-मानस में व्याप्त उस अंधविश्वास को आधार विहीन सिद्ध करने का प्रयत्न किया, जिसके आधार पर यह माना जाता है कि काशी में मरने पर स्वर्ग प्राप्त होता है और मगहर में मरने पर नरक।

बोध प्रश्न

- कबीर अपने अनपढ़ होने के संबंध में क्या कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।
- कबीर मगहर में क्यों गए थे?

कबीर भावना की प्रबल अनुभूति से युक्त उत्कृष्ट रहस्यवादी, समाज-सुधारक, पाखंड के आलोचक, मानवतावादी और समानतावादी कवि थे। इनके काव्य में दो प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। एक में गुरु एवं प्रभु भक्ति, विश्वास, धैर्य, दया, विचार, क्षमा, संतोष आदि विषयों पर रचनात्मक अभिव्यक्ति का परिचय मिलता है। जैसे गुरु भक्ति पर कबीर का यह दोहा देखिए-

सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघारिया, अनँत दिखावनहार॥

कबीर का जन्म ऐसे समय में हुआ था, जब समाज में आडंबर एवं पाखंड का बोलबाला था, हिंदू-मुसलमान में पारस्परिक द्वेष एवं वैमनस्य की भावना थी और समाज में जाति प्रथा का विष व्याप्त था। कबीर ने इन सब पर एक साथ प्रहार किया।

कबीर के काव्य की दूसरी प्रवृत्ति में धर्म, पाखंड, अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों आदि के विरुद्ध आलोचनात्मक अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। इन काव्यों में कबीर की अद्भुत प्रतिभा का परिचय मिलता है। कबीर मूर्ति पूजा का विरोध करते हैं और कहते हैं कि यदि पत्थरों को पूजने से भगवान मिल जाए तो मैं पहाड़ों को पूज सकता हूँ। इससे अच्छा है कि चक्की की पूजा करें-

पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार।
घर की चाकी कोई न पूजै पीसि खाय संसार॥

3.3.2 रचना यात्रा

कबीर की कविता के तीन रूप हैं - साखी, सबद और रमैनी। इन तीनों प्रकार की बानियों में मध्यकालीन धर्म साधनाओं, भारतीय दर्शन, इस्लाम तथा सूफीमत के पारिभाषिक शब्दों की

भरमार है। कबीर की रचना में मुख्य रूप से जनता को जागरूक करने की प्रवृत्ति, समाज सुधार, अखंडता एवं गुरु की महिमा की अभिव्यक्ति मिलती है।

कबीर की वाणियों का संग्रह 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है, जिसके तीन भाग है-

(1) **साखी** - कबीर की शिक्षा और उनके सिद्धांतों का निरूपण अधिकांशतः 'साखी' में हुआ है। इसमें दोहा छंद का प्रयोग हुआ है। साखी संग्रह में गुरु की महिमा का वर्णन और समाज सुधार की भावनाओं को व्यक्त किया है।

(2) **सबद** - इसमें कबीर के गेय-पद संगृहीत हैं। गेय-पद होने के कारण इनमें संगीतात्मकता पूर्ण रूप से विद्यमान है। इन पदों में कबीर के अलौकिक प्रेम और उनकी साधना-पद्धति की अभिव्यक्ति हुई है।

(3) **रमैनी** - इसमें कबीर के रहस्यवादी और दार्शनिक विचार व्यक्त हुए हैं। रमैनी में चौरासी पद हैं और प्रत्येक पद स्वतंत्र विचार सम्मिलित हैं। इसकी रचना चौपाई छंद में हुई है। कबीर ने रमैनी द्वारा हिंदू एवं मुस्लिम दोनों को समान रूप में धार्मिक शिक्षा दी और अपने विचारों को निर्भयतापूर्वक समाज के समक्ष रखा।

बोध प्रश्न

- कबीर की वाणियों का संग्रह किस नाम से प्रसिद्ध है?
- कबीर के बीजक संग्रह के कितने भाग थे?

3.3.3 कबीर के काव्य की विशेषता

कबीर के काव्य-कला की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

कबीर निर्गुण एवं निराकार परमात्मा के उपासक थे। यद्यपि परमात्मा के लिए उन्होंने 'राम' शब्द का प्रयोग किया है, तथापि उनके राम दशरथ के पुत्र न होकर निराकार ब्रह्म हैं। यथा-

दसरथ सुत तिहुँ लोक बखाना,
राम नाम का मरम है आना।
निरगुन राम, निरगुन राम जपहु रे भाई।

कबीर गुरु द्वारा मिले ज्ञान के माध्यम से समाज में एकजुटता कायम करना चाहते थे। उन्होंने ज्ञान का उपदेश देकर जनता को जागृत किया है। उनके अनुसार ज्ञान और योग की साधना से ही उस महान ब्रह्म का साक्षात्कार संभव है। अतः उन्होंने बाह्य आडंबरों का विरोध

करते हुए मन से परमात्मा का ध्यान करने का उपदेश दिया है।

कबीर ने प्रभु के स्मरण को सर्वाधिक महत्व दिया है। उनके विचार है कि मनुष्य को केवल प्रभु-नाम की ही चिंता होनी चाहिए। अन्य चिंताएँ तो व्यर्थ हैं, क्योंकि राम (प्रभु) के बिना जो कुछ दिखाई देता है, वह सब मृत्यु के फंदे के समान ही है-

चिंता तो हरि नाँव की, और न चिंता दास।
जे कुछ चितवै राम बिन, सोई काल की पास॥

बोध प्रश्न

- कबीर किस परमात्मा के उपासक थे?
- कबीर किस उपदेश से जनता को जाग्रत किया था?
- कबीर ने किसके स्मरण को सर्वाधिक महत्व दिया है?

ज्ञान और नाम-स्मरण को प्रधानता देते हुए कबीर ने प्रभु-प्रेम की महत्ता प्रतिपादित की है। कबीर का विचार है कि परमात्मा के प्रति जितना गहन एवं अनन्य प्रेम होगा, उनका मिलन उतना ही शीघ्र होगा। कबीर की दृष्टि में तो वही पंडित है, जिसे प्रेम के ढाई अक्षर का ज्ञान हो गया है-

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥

कबीर ने प्रभु-भक्ति का संदेश देने के साथ-साथ नीतिगत तत्वों का भी उद्घाटन किया है। उन्होंने सत्य और अहिंसा को जीवन का आधार-तत्व मानते हुए सत्य को सबसे बड़ा तप माना-

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताकै हृदय आप॥

इसके अतिरिक्त कबीर ने अपने उपदेशों में करुणा, दया, संतोष आदि विविध मानवीय भावों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

कबीर समाज-सुधारक थे। कबीर के समय में समाज अनेक विकृतियों एवं कुरीतियों से आक्रांत था। ऐसे समय में समाज सुधार की आवश्यकता थी। उनके समकालीन समाज में अनेक अंधविश्वासों, आडम्बरों, कुरीतियों एवं विविध धर्मों का बोलबाला था। कबीर ने इन सबका विरोध करते हुए समाज को एक नवीन दिशा देने का पूर्ण प्रयास किया। उन्होंने जाति-पाँति के भेदभाव को दूर करते हुए शोषित जनों के उद्धार का प्रयत्न किया तथा हिंदू-मुस्लिम एकता पर

बल दिया। उनका मत था-

जाति-पाँति पूछै नहिं कोई।
हरि को भजै सो हरि का होई॥
जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥

बोध प्रश्न

- कबीर ने किसके प्रेम की महत्ता को प्रतिपादित किया है?
- कबीर किसको जीवन का आधार-तत्व मानते हैं?
- कबीर किसका विरोध करते थे?

कबीर का रहस्यवाद साधनात्मक एवं भावात्मक दोनों कोटियों का है। साधनात्मक रहस्यवाद में वे हठयोगियों से प्रभावित हैं।

भावात्मक रहस्यवाद पर आधारित रचनाओं में कबीर ने आत्मा-परमात्मा के विविध प्रेम-संबंधों का चित्रण किया है तथा विरह अथवा मिलन के अनेक चित्र अंकित किए हैं। ऐसे स्थलों पर उन्होंने स्वयं को आत्मा (स्त्री-रूप में) और परम पुरुष-परमात्मा को पति-रूप में चित्रित किया है। यथा-

राम मोरे पिउ, मैं राम की बहुरिया।
राम बड़े मैं छुटक लहुरिया॥

कबीर स्वयं को बालक और ईश्वर को माता रूप में स्वीकारते हुए कहते हैं-

हरि जननी मैं बालक तेरा।
काहे न औगुण बकसहु मेरा॥

कबीर का काव्य और ज्ञान भक्ति से ओत-प्रोत है। इसलिए उनके काव्य में शांत रस की प्रधानता है। आत्मा और परमात्मा के विरह अथवा मिलन के चित्रण में शृंगार के दोनों पक्ष (वियोग तथा संयोग) उपलब्ध हैं, किंतु कबीर द्वारा प्रयुक्त शृंगार रस शांत रस का सहयोगी बनकर ही उपस्थित हुआ है।

कबीर के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता समन्वय की साधना है। कबीर ने हिंदू-मुस्लिम समन्वय पर बल दिया है। इन दोनों वर्गों के आडम्बरों का विरोध करते हुए उन्होंने दोनों को मिलकर रहने का उपदेश दिया है।

कबीर ने गुरु की महिमा का वर्णन किया है। उन्होंने गुरु को सर्वोपरि माना है। उनके अनुसार सद्गुरु के महान उपदेश ही भक्त को परमात्मा के द्वार तक पहुँचा सकते हैं। वे कहते हैं, उन्होंने मुझको दिव्यदृष्टि प्रदान की और अनंत ब्रह्म के दर्शन कराए हैं; अर्थात भगवान की अनंत सत्ता (विश्व ब्रह्मांड) के विराट स्वरूप से परिचित कराया है। इसलिए गुरु को परमात्मा से भी पहले पूजनीय है।

बोध प्रश्न

- कबीर का साधनात्मक रहस्यवाद किससे प्रभावित है?
- कबीर के काव्य में किस रस की प्रधानता है?
- कबीर गुरु की महिमा का वर्णन किस प्रकार करते हैं? स्पष्ट कीजिए।
- कबीर के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?

भाषा

कबीर की भाषा को लेकर विद्वानों में भी मतभेद है क्योंकि कबीर की भाषा वस्तुतः कई बोलियों या भाषाओं का मिश्रित रूप है। कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। परंतु उन्होंने तो संतों के सत्संग से ही सब कुछ सीखा था। कबीर ने बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग किया है। इसीलिए उनकी भाषा साहित्यिक नहीं हो सकी। कबीर अपने दोहों में अनेक भाषाओं का प्रयोग किया है। उन्होंने व्यवहार में प्रयुक्त होने वाली सीधी-सादी भाषा में ही अपने उपदेश दिए। उनकी भाषा में अनेक भाषाओं यथा - अरबी, फारसी, अवधी, भोजपुरी, पंजाबी, बुंदेलखंडी, ब्रजभाषा, खड़ीबोली आदि के शब्द मिलते हैं। इसी कारण इनकी भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' या 'सधुक्कड़ी' कहा जाता है। भाषा पर कबीर का पूरा अधिकार था। इसीलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें 'वाणी का डिक्टेटर' कहा।

शैली

जिस प्रकार कबीर की भाषा सर्वथा उनके भावों एवं विचारों के अनुकूल है, ठीक उसी प्रकार उनकी शैली भी। कबीर की शैली में उनके व्यक्तित्व की छाप को बखूबी देखा जा सकता है। कबीर ने सहज, सरल और सरस शैली में उपदेश दिया है। इसलिए उनकी उपदेशात्मक शैली क्लिष्ट अथवा बोझिल नहीं है। उसमें स्वाभाविकता एवं प्रवाह है। व्यंग्यात्मकता एवं भावात्मकता उनकी शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं। कबीर की शैली अत्यंत सरल तथा प्रभावशाली है। शैली की इस सरलता के कारण ही कबीर की साखियों तथा पदों का जन-

साधारण में पर्याप्त प्रचार हुआ और वे आज भी जन-जन की जीभ पर नाचते हैं। गुरु की महिमा का वे कितने सरल ढंग से प्रभावशाली चित्रण करते हैं -

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट॥

रस

काव्य की दृष्टि से कबीर ने दोहों में अनेक रसों को चिह्निनत किया जा सकता है। कबीर के पदों में शांत रस, शृंगार रस और हास्य की प्रधानता है। कबीर के दोहों में शांत रस का प्रयोग अधिक हुआ है।

अलंकार

कबीर के काव्य-भाषा में सहज ढंग से अलंकारों का प्रयोग हुआ है। उनके काव्य में सायास अलंकारों का प्रयोग नहीं हुआ है। श्यामसुंदर दास ने लिखा है कि "कबीर ने अपनी उक्तियों पर बाहर से अलंकारों का मुलम्मा नहीं चढ़ाया है। जो अलंकार उनमें मिलते भी हैं वे उन्हें खोज-खोज कर नहीं बैठाए हैं। मानसिक कलाबाजी और कारीगरी के अर्थ में कला का सर्वथा अभाव है।" कबीर ने अलंकारों को कहीं भी थोपा नहीं है। कबीर के काव्य में रूपक, उपमा, अनुप्रास, दृष्टांत, अतिश्योक्ति आदि अलंकारों के प्रयोग अधिक हुए हैं।

छंद

कबीर को दोहा और पद अधिक प्रिय रहे। कबीर को दोहों के माध्यम से अधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई है इसलिए उन्होंने साखियों में दोहा तथा सबद व रमैनी में गेय पदों का प्रयोग किया है। कबीर दोहे और गेय पदों में अपने समय के अनेक पहलुओं पर विचार विमर्श किए हैं।

बोध प्रश्न

- कबीर की भाषा को क्या कहा जाता है?
- कबीर को हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'वाणी का डिक्टेटर' क्यों कहा?
- कबीर की शैली की प्रमुख विशेषताओं के बारे में बताइए।

3.3.4 हिंदी साहित्य में कबीर का स्थान एवं महत्व

हिंदी साहित्य के भक्ति काल के निर्गुण काव्यधारा के संत काव्य के प्रवर्तक हैं कबीरदास। वास्तव में कबीर महान कवि, विचारक, श्रेष्ठ समाज-सुधारक, परम योगी और ब्रह्म के सच्चे साधक हैं। वे स्पष्टवादी थे। इतना ही नहीं वे कठोर और अक्खड़ थे। उनके उपदेश आज भी

प्रासंगिक ओर प्रेरित करने वाले हैं। उनके द्वारा प्रवाहित की गई ज्ञान-गंगा आज भी सबको पावन करने वाली है।

कबीर में एक सफल कवि के सभी लक्षण विद्यमान हैं। वे हिंदी साहित्य के श्रेष्ठतम विभूति थे। उन्हें भक्तिकाल की ज्ञानाश्रयी या संत काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। उनका दृष्टिकोण सर्वग्राही है। 'अपनी राह तु चलै कबीरा' ही उनका आदर्श था। इसमें संदेह नहीं कि संत काव्य के प्रवर्तक के रूप में कबीर का नाम सदैव स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा।

3.4 पाठ सार

संत कबीरदास भक्तिकाल के निर्गुण काव्यधारा के अंतर्गत ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रवर्तक एवं प्रमुख कवि हैं। कबीरदास संत और कवि के साथ-साथ उत्कृष्ट रहस्यवादी, समाज-सुधारक, पाखंड के आलोचक, मानवतावादी और समानतावादी थे। कबीर के काव्य में दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ मिलती हैं- पहली प्रवृत्ति में गुरु एवं प्रभु भक्ति, विश्वास, धैर्य, दया, विचार, क्षमा, संतोष आदि सम्मिलित हैं और दूसरी प्रवृत्ति में धर्म, पाखंड, सामाजिक कुरीतियों का खंडन-मंडन। इनकी वाणियों का संग्रह है 'बीजक'। 'बीजक' के भी तीन भाग हैं। कबीर प्रमुख रूप से गुरु की महिमा का वर्णन करते हैं, क्योंकि कबीर मानते थे कि गुरु के ज्ञान से ही सब कुछ मिल सकता है। इसलिए वे अपने आपको गुरु के प्रति न्योछावर या समर्पित करने में कोई संकोच नहीं करते। कबीर भेद-भाव से घृणा करते थे और चाहते थे कि समाज में सभी लोग समान और एकजुट होकर रहें। कबीर की भाषा मिश्रित थी परंतु उनके काव्य में शांत रस की अभिव्यक्ति अधिक मुखर है।

3.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. कबीर भक्तिकाल की निर्गुण काव्यधारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रवर्तक कवि हैं।
2. कबीर के काव्य में गुरु की महिमा और समाज-सुधार का चित्रण अधिक हुआ है।
3. कबीर की भाषा पंचमेल खिचड़ी एवं सधुक्कड़ी है।
4. कबीर शांत एवं भक्ति रस के कवि हैं।
5. कबीर पाखंड एवं अंधविश्वासों का घोर विरोध करते हैं।

3.6 शब्द संपदा

1. आखर = अक्षर
2. चेताए = ज्ञानमूलक मनोवृत्ति, बुद्धि, समझ
3. जपहु = जपना
4. जुलाहा = कपड़ा बुनने वाला कारीगर, बुनकर
5. तप = तपस्या
6. तिहुँ = तीन
7. नाँव = नाम
8. बहुरिया = नई दुल्हन
9. साँच = सच
10. सुत= पुत्र, आत्मज, बेटा
11. हरि = ईश्वर, भगवान
12. हिय = मन, हृदय

3.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. कबीरदास की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
2. कबीर की निर्गुण भक्ति को स्पष्ट कीजिए।
3. कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' कहा जाता है। उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. संत कबीर के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
2. साखी, सबद और रमैनी का परिचय दीजिए।
3. कबीर गुरु की महिमा का वर्णन किस प्रकार करते हैं? स्पष्ट कीजिए।
4. कबीर समाज को किस प्रकार से देखना चाहते थे? उनके समाज सुधारक रूप पर प्रकाश

डालिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. कबीर का जन्म कहाँ हुआ था? ( )

(अ) काशी (आ) लखनऊ (इ) दिल्ली (ई) प्रयाग

2. कबीर के गुरु का क्या नाम था? ( )

(अ) वल्लभाचार्य (आ) धर्मदास (इ) स्वामी रामानंद (ई) तुलसीदास

3. कबीर का साधनात्मक रहस्यवाद किससे प्रभावित है? ( )

(अ) योगियों से (आ) हठयोगियों से (इ) पाखंडियों से (ई) जनता से

4. कबीरदास को 'वाणी का डिक्टेटर' किसने कहा? ( )

(अ) महावीर प्रसाद द्विवेदी (आ) हजारी प्रसाद द्विवेदी (इ) रामानंद (ई) तुलसीदास

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

1. कबीर की भाषा को .... कहा जाता है।

2. कबीर के दोहों का संग्रह का नाम .... है।

3. कबीर के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता .... की साधना है।

4. कबीर के काव्य में .... भक्ति है।

III. सुमेल कीजिए -

1. बीजक	(अ) पुत्री
2. धर्मदास	(आ) कबीर
3. कमाली	(इ) निराकार
4. निर्गुण	(ई) शिष्य

3.8 पठनीय पुस्तकें

1. कबीर ग्रंथावली : सं. श्यामसुंदर दास

2. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेदी

3. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र

4. हिंदी साहित्य का इतिहास : विश्वनाथ त्रिपाठी

इकाई 4 कबीरदास की साखियाँ

रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 मूल पाठ : कबीरदास की साखियाँ
4.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय
4.3.2 अध्येय कविता
4.3.3 विस्तृत व्याख्या
4.4 पाठ सार
4.5 पाठ की उपलब्धियाँ
4.6 शब्द संपदा
4.7 परीक्षार्थ प्रश्न
4.8 पठनीय पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के इतिहास के भक्तिकाल (पूर्व मध्यकाल) को स्वर्ण युग कहा जाता है। इस काल में भक्ति की दो शाखाएँ - निर्गुण और सगुण काव्यधारा प्रवाहित हुईं। निर्गुण काव्यधारा के ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवि कबीरदास हैं। कबीरदास ने तत्कालीन समाज में व्याप्त रूढ़ि, आडंबर, अंधविश्वास आदि का खुलकर विरोध किया। इनके काव्य में निर्गुण ब्रह्म की उपासना का संदेश साकार होता है, क्योंकि कबीरदास निराकार ब्रह्म की उपासना में विश्वास करते थे। उनके काव्य में राम के कई रूप दृष्टिगोचर होते हैं। यथा- माता, गुरु इत्यादि। प्रस्तुत इकाई में आप कबीरदास की निर्धारित साखियों का अध्ययन करेंगे।

4.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- कबीरदास के काव्य और उनकी वाणी से अवगत होंगे।
- कबीरदास की निर्गुण उपासना समझ सकेंगे।
- कबीरदास की चयनित साखियों की व्याख्या कर सकेंगे।

- कबीरदास की सधुक्कड़ी भाषा से परिचित हो सकेंगे।

4.3 मूल पाठ : कबीरदास की साखियाँ

4.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

कबीरदास के काव्य में साखियाँ महत्वपूर्ण हैं। दरअसल साखी शब्द साक्षी से संबंधित है। विभिन्न शब्दकोशों के आधार पर 'साक्षी' शब्द का मूल अर्थ गवाह के रूप में किया जाता है। आदिकालीन काव्य से ही साखी की परंपरा आरंभ मानी जाती है। कबीर ने सद्गुरु की महिमा का वर्णन किया है। उनके अनुसार सद्गुरु की अनंत कृपा से ही जागरूकता मिलती है।

4.3.2 अध्येय कविता

कबीरदास की साखियाँ

1. गुरुदेव कौ अंग

सतगुर सवाँन को सगा, सोधी सईं न दाति।
हरिजी सवाँन को हितू, हरिजन सईं न जाति॥
बलिहारी गुर आपणैं द्यौं हाड़ी कै बार।
जिनि मानिष तैं देवता, करत न लागी बार॥
सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार॥
राम नाम के पटतरे, देबे कौं कछु नाहि।
क्या ले गुरु संतोषिए, हौस रही मन मांहि ॥
सतगुर के सदकै करूँ, दिल अपणी का साछ।
सतगुर हम स्यूँ लड़ि पड़ा महकम मेरा बाछ॥

2. चितावणी कौ अंग

'कबीर' नौबत आपणी, दिन दस लेहु बजाइ
ए पुर पाटन, ए गली, बहुरि न देखै आइ॥

जिनके नौबति बाजती, मैंगल बंधते बारि।
एकै हरि के नाव बिन, गए जनम सब हारि॥

इक दिन ऐसा होइगा, सब सूं पड़ै बिछोह।
राजा राणा छत्रपति, सावधान किन होइ॥

'कबीर' कहा गरबियौ, काल गहै कर केस।
ना जाणै कहाँ मारिसी, कै घरि कै परदेस॥

बिन रखवाले बाहिरा, चिड़िया खाया खेत।
आधा-परधा ऊबरे, चेति सकै तो चेति॥

निर्देश: प्रस्तुत साखियों का सस्वर वाचन कीजिए।
प्रस्तुत साखियों का मौन वाचन कीजिए।

4.3.3 विस्तृत व्याख्या

[1]

सतगुर सवाँन को सगा, सोधी सईं न दाति।
हरिजी सवाँन को हितू, हरिजन सईं न जाति॥

शब्दार्थ : सवाँन = समान। सोधी = शुद्धि। हितू = कल्याण। सईं = समान। दाति = दान। हरिजन = भक्त।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'कबीर ग्रंथावली' से उद्धृत है। इसके कवि कबीरदास है।

प्रसंग : सतगुरु और ईश्वर की महिमा का वर्णन किया गया है।

व्याख्या : कबीरदास इस दोहे में कहते हैं कि संसार में सतगुरु अर्थात सच्चे गुरु के समान कोई सगा या मनाने वाला नहीं है और शुद्धि के समान कोई दान नहीं है। इसलिए गुरु अपना ज्ञान अपने शिष्य पर उड़ेल देता है। हरि के समान कोई कल्याणकारी या हितकारी नहीं है और ऐसे दयालु प्रभु-भक्तों के समान कोई जाति नहीं है।

विशेष :

1. संदेश - सतगुरु और ईश्वर का अनुसरण करने से जीवन को सफल बनाया जा सकता है।
2. भाषा - सधुक्कड़ी भाषा
3. अलंकार- अनुप्रास अलंकार
4. शांत रस
5. छंद - दोहा

बोध प्रश्न

- कबीरदास द्वारा गुरु की महिमा का वर्णन कीजिए।
- 'सोधी सईं' का क्या अर्थ है?
- "हरिजी सवाँन को हितू, हरिजन सईं न जाति" का अर्थ बताइए।

[2]

बलिहारी गुरु आपणैं द्यौं हाड़ी कै बार।

जिनि मानिष तैं देवता, करत न लागी बार॥

शब्दार्थ : आपणैं = आपने। द्यौं = दूँ। हाड़ी = देह, शरीर। कै बार = कितनी बार। मानिष = मानुस, मनुष्य। तैं = से। बार = देर।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'कबीर ग्रंथावली' के साखी शीर्षक के अंतर्गत संगृहित है। यह कबीरदास द्वारा रचित है।

प्रसंग : कबीरदास ने गुरु की महत्ता का प्रतिपादन किया है।

व्याख्या : कबीरदास कहते हैं कि मैं अपने उस गुरु पर न्योछावर हूँ और अपना शरीर बार-बार उनको अर्पित कर देना चाहता हूँ, जिन्होंने मुझे अविलंब मनुष्य से देवता बना दिया। अर्थात् अपने ज्ञान द्वारा मुझको मनुष्य से देवता बनाने में कुछ भी देर नहीं लगी।

विशेष :

1. काव्यगत सौंदर्य: गुरु की महत्ता को प्रतिपादित किया गया है।
2. अलंकार : यमक अलंकार
3. शांत रस
4. छंद : दोहा

बोध प्रश्न

- गुरु के प्रति कबीर के विचारों को स्पष्ट कीजिए।
- कबीरदास गुरु पर अपना शरीर क्यों न्योछावर करना चाहते हैं?
- मनुष्य से देवता कैसे बन सकते हैं? स्पष्ट कीजिए।

[3]

सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।

लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार॥

शब्दार्थ : अनंत = जिसका कोई अंत न हो, अपार। उपगार = उपकार। लोचन अनंत = दिव्य दृष्टि। उघाडिया = खोल दिया।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'कबीर ग्रंथावली' में 'साखी' शीर्षक के अंतर्गत संगृहीत है। यह कबीरदास द्वारा रचित है।

प्रसंग : कबीरदास ने प्रस्तुत 'साखी' में गुरु की महिमा का वर्णन किया है।

व्याख्या : कबीरदास उपर्युक्त दोहे में सतगुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि सच्चे गुरु की महिमा का कोई अंत नहीं है। अर्थात् उसकी महिमा अपार है। उन्होंने अनेक उपकार किए हैं। उन्होंने दिव्यदृष्टि प्रदान की है और अनंत ब्रह्म के दर्शन कराए हैं। अर्थात् भगवान की अपार सत्ता से परिचित कराया है।

विशेष :

1. काव्यगत सौंदर्य : कबीर ने गुरु को ईश्वर से भी पहले पूजनीय मानते हैं क्योंकि सद्गुरु के ज्ञान से ही परमात्मा का दर्शन संभव है।
2. अलंकार : यमक अलंकार
3. शांत रस

छंद : दोहा

बोध प्रश्न

- कबीर गुरु को किस रूप में मानते हैं?
- कबीरदास भगवान से पहले किसे पूजनीय मानते हैं?
- "लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार" का क्या अर्थ है?

[4]

राम नाम के पटतरे, देबे कौं कछु नाहि।
क्या ले गुरु संतोषिए, हौस रही मन मांहि॥

शब्दार्थ : पटतरे = बदले में, समान वस्तु। संतोषिए = संतुष्ट करूँ। हौंस = प्रबल इच्छा।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'कबीर ग्रंथावली' में 'साखी' शीर्षक के अंतर्गत संगृहीत है। यह कबीरदास द्वारा रचित है।

प्रसंग : कबीरदास इस दोहे में गुरु द्वारा प्रदान किए गए अमूल्य ज्ञान का वर्णन करते हैं।

व्याख्या : कबीरदास कहते हैं कि गुरु जी ने राम नाम रूपी अमूल्य मंत्र कृपावश मुझ अज्ञानी को दान में दे दिया है। इस मंत्र के समान देने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है, क्योंकि उस राम-नाम के सम्मुख सभी वस्तुएँ तुच्छ हैं। मुझ जैसे निर्धन व्यक्ति के पास बदले में देने के लिए उतना मूल्यवान कुछ भी नहीं है। इतने अमूल्य ज्ञान के लिए मैं अपने गुरु का सदैव आभारी रहूँगा।

विशेष :

1. काव्यगत सौंदर्य : अनमोल ज्ञान का वर्णन किया गया है।
2. शांत रस
3. छंद : दोहा

बोध प्रश्न

- कबीर गुरु को क्या दक्षिणा देना चाहते हैं?
- कबीर स्वयं को निर्धन क्यों समझते हैं?
- कबीर गुरु के द्वारा दिए गए अमूल्य ज्ञान के विषय में क्या बताते हैं?

[5]

सतगुर के सदकै करूँ, दिल अपणी का साछ।
कलयुग हम स्यूँ लड़ि पड़ा महकम मेरा बाछ॥

शब्दार्थ : सदकै = न्योछावर होना, समर्पित होना। अपणी = अपनी। साछ = साक्षी, सच्चा। स्यूँ= से। महकम = दृढ़। बाछ = रक्षक, शक्ति।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'कबीर ग्रंथावली' में 'साखी' शीर्षक के अंतर्गत संगृहीत है। यह कबीरदास द्वारा रचित है।

प्रसंग : कबीरदास प्रस्तुत दोहे में गुरु की महत्ता को रेखांकित करते हुए बताते हैं कि मैं जब गुरु पर समर्पित हो गया तो कलियुग मुझसे लड़ पड़ा।

व्याख्या : कबीरदास इस दोहे में कहते हैं कि मैं गुरु के लिए स्वयं को न्योछावर करता हूँ। मेरे मन में गुरु के प्रति कोई विकार और कपट नहीं है और मैं पूर्ण रूप से गुरु के प्रति समर्पित हूँ। मेरी शक्ति को देखकर कलियुग मुझसे लड़ रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरे गुरु शक्तिशाली हैं और वे मेरी रक्षा कर रहे हैं। गुरु का ज्ञान ही कलियुग के प्रहारों से मुझे बचाएगा।

विशेष :

1. काव्यगत सौंदर्य : इस दोहे में गुरु की महिमा का वर्णन किया गया है।
2. शांत रस
3. छंद : दोहा

बोध प्रश्न

- कबीरदास गुरु के प्रति समर्पित क्यों हो गए?
- कबीर अपनी शक्ति को देखकर कलियुग से क्यों लड़ रहे हैं? स्पष्ट कीजिए।
- कबीर को गुरु के ज्ञान से किस प्रकार की मुक्ति मिलेगी?

[6]

'कबीर' नौबत आपणी, दिन दस लेहु बजाइ।

ए पुर पाटन, ए गली, बहुरि न देखै आइ॥

शब्दार्थ : नौबत = पारी, बारी। पाटन = पटाव, पाटने की क्रिया। ए गली = यह गली (जिस जगह रहते हो)। बहुरि = दोबारा, फिर, पुनः।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'कबीर ग्रंथावली' में 'साखी' शीर्षक के अंतर्गत संगृहीत है। यह कबीरदास द्वारा रचित है।

प्रसंग : इस दोहे में दुःख की भावना को प्रकट किया गया है।

व्याख्या : कबीरदास कहते हैं कि अपनी इस बारी को दस दिन और आनंद के साथ बजा लो तुम क्योंकि फिर यह नगर, यह पट्टन और ये गलियाँ देखने को नहीं मिलेंगी? कहाँ मिलेगा ऐसा सुयोग, ऐसा संयोग, जीवन सफल करने का, बिगड़ी बात को बना लेने का।

विशेष :

1. काव्य सौंदर्य- प्रस्तुत दोहे में अपनी संवेदना को व्यक्त किए हैं।
2. शांत रस
3. छंद : दोहा

बोध प्रश्न

- कबीर ने दस दिन के आनंद से क्या कहना चाहते हैं?
- 'ए पुर पाटन' का अर्थ क्या है?

- ‘बहुरि’ शब्द से क्या अभिप्राय है?

[7]

जिनके नौबति बाजती, मैंगल बंधते बारि।

एकै हरि के नाव बिन, गए जनम सब हारि॥

शब्दार्थ : एकै = एक। हरि = ईश्वर। नाव = नाम।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा ‘कबीर ग्रंथावली’ में ‘साखी’ शीर्षक के अंतर्गत संगृहीत है। यह कबीरदास द्वारा रचित है।

प्रसंग : हरि के नाम के बिना संसार में सब निरर्थक है।

व्याख्या : कबीरदास इस दोहे में कहते हैं कि पहर-पहर पर नौबत बजा करती थी जिनके द्वार पर और मस्त हाथी जहाँ बँधे हुए झूमते थे। वे अपने जीवन की बाजी हरि के नाम के अभाव में सब कुछ हार गए हैं। इसलिए कि उन्होंने हरि का नाम-स्मरण नहीं किया।

विशेष

1. काव्यगत सौंदर्य : ईश्वर के प्रति अनुराग की भावना को प्रकट किया गया है।
2. शांत रस
3. छंद : दोहा

बोध प्रश्न

- ‘जिनके नौबत बाजती’ से क्या तात्पर्य है?
- संत कबीर किस नाम के बिना सब कुछ हार गए?
- कबीर किस प्रकार की प्रसन्नता की आशा करते हैं?

[8]

इक दिन ऐसा होइगा, सब स्युं पड़ै बिछोह।

राजा, राणा, छत्रपति, सावधान किन होइ॥

शब्दार्थ : इक = एक। होइगा = होगा। सब स्युं = सबसे। किन = क्यों नहीं।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा ‘कबीर ग्रंथावली’ में ‘साखी’ शीर्षक के अंतर्गत संगृहीत है। यह कबीरदास द्वारा रचित है।

प्रसंग : प्रस्तुत दोहे में कबीर ने चेताया है कि समय रहते सावधान हो जाइए।

व्याख्या : कबीरदास इस दोहे में चेतावनी देते हैं कि एक दिन ऐसा आएगा जब सबसे बिछुड़ जाना और सब कुछ त्याग करके इस लोक से जाना होगा। बड़े-बड़े राजा और छत्र-धारी राणा क्यों सचेत नहीं हो जाते? इसलिए कबीर कहते हैं कि समय रहते हुए भी सावधान क्यों नहीं हो जाते? कभी-न-कभी अचानक आ जाने वाले उस दिन को वे क्यों याद नहीं कर रहे?

विशेष

1. काव्यगत सौंदर्य : कबीर इस दोहे में मनुष्य को चेतावनी देते हुए अपने भावों को प्रकट किया है।
2. अनुप्रास अलंकार
3. शांत रस
4. छंद : दोहा

बोध प्रश्न

- कबीरदास इस दोहे में किससे बिछड़ जाने को कहते हैं?
- उपर्यक्त दोहे में कौन सा अलंकार है?
- कबीर सावधान क्यों करना चाहतें हैं?

[9]

`कबीर' कहा गरबियौ, काल गहै कर केस।
ना जाणै कहाँ मारिसी, कै घरि कै परदेस॥

शब्दार्थ : गरबियो = गर्व, घमंड। काल = समय, मृत्यु। मारिसी = मार देगा। घरि = घर।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'कबीर ग्रंथावली' में 'साखी' शीर्षक के अंतर्गत संगृहीत है। यह कबीरदास द्वारा रचित है।

प्रसंग : कबीर इस दोहे में घमंड न करने की बात करते हैं क्योंकि इस जीवन का कब कहाँ अंत हो जाए कोई भरोसा नहीं है।

व्याख्या : कबीरदास कहते हैं कि काल ने तुम्हारी चोटी को पकड़ रखा है। इसलिए तुम व्यर्थ में गर्व क्यों करते हो? वह तुम्हें कहाँ और कब मार देगा! पता नहीं कि तुम्हारे घर में ही या कहीं परदेश में।

विशेष :

1. काव्यगत सौंदर्य : इस दोहे में मृत्यु के सत्य से अवगत कराया है।

2. अनुप्रास अलंकार

3. शांत रस

4. छंद : दोहा

बोध प्रश्न

- 'गरबियौ' शब्द का क्या अर्थ है?
- कबीर किस काल का वर्णन करते हैं?
- "ना जाणै कहाँ मारिसी, कै घरि कै परदेस" पंक्ति का उद्देश्य बताइए।

[10]

बिन रखवाले बाहिरा, चिड़िया खाया खेत ।

आधा-परधा ऊबरे, चेति सकै तो चेति ॥

शब्दार्थ : बाहिर = चमकदार, शानदार। चेति = सचेत होना, सतर्क होना।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'कबीर ग्रंथावली' में 'साखी' शीर्षक के अंतर्गत संगृहीत है। यह कबीरदास द्वारा रचित है।

प्रसंग : जीवन में असावधानी के कारण इंसान बहुत कुछ गँवा देता है।

व्याख्या : संत कबीरदास कहते हैं कि एक शानदार खेत एकदम खुला पड़ा है और उसका रखवाला कोई भी नहीं है। पशु-पक्षियों ने उस खेत से बहुत कुछ चुग लिया है। चेत सके तो अब भी चेत जा, जाग जा, जिससे कि आधा-परधा जो भी रह गया हो, वह बच जाय।

विशेष :

1. काव्यगत सौंदर्य : जीवन दर्शन को प्रस्तुत किया गया है।

2. शांत रस

3. छंद : दोहा

बोध प्रश्न

- उपर्युक्त दोहे में कबीर ने सचेत क्यों किया है?
- कबीर ने किस प्रकार के जीवन दर्शन को प्रस्तुत किया है?

- कबीर खेत के रखवाले के प्रति किस प्रकार की भावना का वर्णन किया है? स्पष्ट कीजिए।

4.4 पाठ-सार

कबीर अपने समय के समाज सुधारक के साथ-साथ हिंदी साहित्य में अद्वितीय स्थान रखते हैं। निर्धारित पाठांश के अंतर्गत हमने कबीरदास की गुरु की महिमा और जीवन दर्शन से संबंधित दोहों का पाठ किया। इन दोहों में कहीं गुरु को ईश्वर के समान बताया गया है तो कहीं जीवन दर्शन भी लक्षित किया गया है। इन दोहे में पंचमेल भाषाओं का प्रयोग हुआ है। कबीर कभी स्वयं को बहुत पढ़े-लिखे होने का दावा नहीं करते, बल्कि एक साधारण व्यक्ति के समान गुरु से प्राप्त ज्ञान के माध्यम से संसार को एक नई दिशा प्रदान करते हैं। कबीर गुरु के प्रति अपना शरीर तक न्योछावर करने में संकोच नहीं करते और गुरु के मार्गदर्शन से वे समाज में एकता कायम करना चाहते थे।

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. कबीर भक्तिकाल की संत काव्यधारा के कवि हैं।
2. कबीर निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे।
3. कबीर के काव्य में दोहों और गेय पद सम्मिलित हैं।
4. कबीर गुरु को भगवान से भी पहले पूजनीय मानते हैं।
5. कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' कहा जाता है।
6. कबीर की भक्ति अपने आराध्य के प्रति अनन्य प्रेम का पर्याय है।

4.6 शब्द संपदा

1. कछु = कुछ
2. गरबियौ = गर्व, घमंड
3. नौबत = पारी, बारी
4. पाटन = पटाव, पाटने की क्रिया
5. बजाइ = बजाना, ख़ुशी मनाना
6. बलिहारी = कुर्बान होना
7. बहुरि = दोबारा, पुनः, फिर से

8. बाहिर = चमकदार, शानदार

9. बिछोह = बिछड़ना

10. होइगा = होगा

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए-

1. कबीर के काव्य में सामाजिक तत्व को बताइए।
2. कबीर के पठित दोहों एक आधार पर गुरु की महिमा को स्पष्ट कीजिए।
3. कबीर अपनी रचना में किस प्रकार की मुक्ति चाहते थे?

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए-

1. जिनके नौबति बाजती, मैंगल बंधते बारि।/ एकै हरि के नाव बिन, गए जनम सब हारि॥ इस दोहों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
2. सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।/ लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार॥ इस दोहे की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
3. राम नाम के पटतरे, देबे कौं कछु नाहि।/ क्या ले गुरु संतोषिए, हौस रही मन मांहि॥ इस दोहे की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
4. कबीर की भक्ति का वर्णन कीजिए।
5. संत कवियों में कबीर के स्थान को बताइए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. कबीर भक्तिकाल की किस शाखा के कवि थे? ( )

(अ) ज्ञानाश्रयी (आ) प्रेममार्गीय (इ) कृष्ण भक्ति (ई) राम भक्ति

2. 'कबीर वाणी के डिक्टेटर थे।' यह कथन किसका है? ( )

(अ) हजारी प्रसाद द्विवेदी (आ) रामचंद शुक्ल (इ) रामविलास शर्मा (ई) बच्चन सिंह

3. 'साखी' किस रचना में सम्मिलित है? ( )

(अ) प्रेम वाटिका (आ) बीजक (इ) साहित्य लहरी (ई) गीतावली

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. जिनके नौबति ...., मैंगल बंधते बारि।
2. कबीर के गुरु .... थे।
3. .... संत काव्यधारा के प्रमुख कवि थे।
4. कबीर की रचना का नाम .... था।

III. सुमेल कीजिए -

(i)	कबीर	(अ)	रचना
(ii)	भक्ति	(आ)	कवि
(iii)	बीजक	(इ)	निर्गुण उपासक

4.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का सरल इतिहास : विश्वनाथ त्रिपाठी
3. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र
4. कबीर ग्रंथावली : सं. बाबू श्याम सुंदरदास

इकाई 5 : रैदास : एक परिचय

रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 मूल पाठ : रैदास : एक परिचय

5.3.1 जीवन परिचय

5.3.2 रचना यात्रा

5.3.3 रचनाओं का परिचय

5.3.4 हिंदी साहित्य में रैदास का स्थान एवं महत्व

5.4 पाठ सार

5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

5.6 शब्द संपदा

5.7 परीक्षार्थ प्रश्न

5.8 पठनीय पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन का प्रचार-प्रसार 14वीं-15वीं शताब्दी में हुआ। इससे पूर्व एक सामाजिक चेतना के रूप में सिद्धों और नाथों की परंपरा से यहाँ इसका विकास होता आ रहा था। दक्षिण भारत में भी भक्ति आंदोलन सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में अपना प्रभाव लगभग 10वीं शताब्दी से ही स्थापित कर चुका था। इन दोनों पूर्व प्राप्त परंपराओं का यथोचित समन्वय स्थापित करते हुए उत्तर भारत में निर्गुण भक्ति संप्रदाय का उदय हुआ, जिसमें कबीर, रैदास, नानक, नामदेव, दादूदयाल आदि संत कवियों ने अपनी वाणी एवं काव्य के माध्यम से समाज में चेतना एवं परिवर्तन की ज्योति जगाने का प्रयास किया। इन निर्गुण कवियों का भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन पर इसलिए भी दूरगामी प्रभाव हुआ, क्योंकि ये कवि शास्त्र के बजाए अनुभूति एवं प्रेम भक्ति का प्रसार करते थे। इनमें से संत कवियों में अधिकांश कवि सामाजिक दृष्टि से निम्न कही जाने वाली जातियों से संबद्ध थे और समाज में अपनी आध्यात्मिक एवं सामाजिक स्थिति के प्रति चेतना को भी कविताओं में प्रेषित कर रहे थे।

इन कवियों में रैदास का महत्वपूर्ण स्थान है। इस इकाई में रैदास के जीवन से संबंधित पहलुओं का अध्ययन करेंगे।

5.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- संत रैदास के जीवन की मुख्य घटनाओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- संत रैदास की रचना यात्रा एवं उसकी मुख्य विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।
- संत रैदास से जुड़ी लोक-मान्यताओं को जान सकेंगे।
- संत रैदास की प्रसिद्ध रचनाओं से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी साहित्य में संत रैदास के स्थान एवं महत्व को जान सकेंगे।

5.3 मूल पाठ : रैदास : एक परिचय

5.3.1 जीवन परिचय

मध्यकालीन अधिकांश कवियों की जन्म तिथि, पूर्वज आदि के संदर्भ में निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं होती। रैदास के जन्म के संबंध में भी है। जन्म तिथि के संबंध में मतभेद है। एक मत के अनुसार रैदास का जन्म विक्रम संवत माघ सुदी 15, 1433 अर्थात 1377 ई. माना जाता है तो एक दूसरे मत के अनुसार रैदास का जन्म 1440 ई. माना जाता है। इसके अतिरिक्त 1399 ई. को भी कुछ लोग रैदास का जन्म वर्ष मानते हैं। इन सभी मतों को मिलाकर यह अनुमान लगाया जाता है कि रैदास का जीवन-काल संभवतः सन 1400 ई. से 1520 ई. के बीच रहा होगा।

निर्गुण संत परंपरा के रचनाकारों का आश्रय लोक था और लोक की उच्चारण पद्धति, बोली, भाषा, संस्कृति में विविधता के कारण उनके एकाधिक नाम या एक ही नाम के विविध रूप प्रचलित हैं। 'रैदास' नाम साहित्य के क्षेत्र में भले ही सर्वमान्य हो चुका हो, किंतु अब भी उन्हें आध्यात्मिक क्षेत्र में संत रविदास के नाम से जाना जाता है। विशेषतः पंजाबी भाषी क्षेत्र में उन्हें बाबा रविदास जी के नाम से पहचाना जाता है। 'आदिग्रंथ' में उनके पद संकलित हैं। इसमें 'रविदास' नाम का प्रयोग मिलता है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं राजस्थान तक रैदास का प्रभाव रहा है। इन क्षेत्रों में उन्हें रैदास या गुरु रैदास के नाम से जाना जाता है। महाराष्ट्र के लोग उन्हें रोहिदास के नाम से अभिहित करते हैं। बंगाल में रैदास को रुइदास के नाम से सम्मानित

किया जाता है। कई मध्यकालीन ग्रंथों और रैदास की कविताओं की प्राचीन हस्तलिखित पोथियों में रायादास, रौदास, रेदास, रमणदास, रविदास नाम भी लिखे मिलते हैं। अतः कहा जा सकता है कि अपने समय में अत्यधिक प्रसिद्ध होने के कारण विभिन्न भाषियों ने रैदास को अलग-अलग रूप में आत्मसात किया है।

बोध प्रश्न

- अधिकांश मध्यकालीन कवियों एवं रैदास के बीच क्या समानता है?
- रैदास के जीवन-काल का समय क्या था?

रैदास की माता जी का नाम कलसा देवी और पिता जी का नाम बाबा संतोख दास था। वे वर्तमान उत्तर प्रदेश राज्य के शहर वाराणसी के पास सीर गोवर्धनपुर नामक गाँव में रहते थे। कहा जाता है कि रैदास के पिता जी बाबा संतोख दास मल साम्राज्य के राजा के नगर में सरपंच के रूप में कार्यरत थे। उनका अपना जूते बनाने और जूतों के मरम्मत करने का कारखाना था। रैदास ने अपने कई पदों में अपने को 'नीचे से प्रभु आँच कियो है कह रैदास चमारा' कहते हुए अपनी जाति की पुष्टि की है। अपने माता-पिता के जीवन संघर्ष को रैदास ने अपनी कविताओं में भी अंकित किया है।

बोध प्रश्न

- रैदास के माता-पिता का क्या नाम था?
- रैदास का जन्म कहाँ हुआ?

मध्यकालीन समय में शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार जाति पर निर्भर करता था। कहा जाता है कि औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए रैदास के पिता जी ने उन्हें गुरु पंडित शारदा नंद के गुरुकुल ले गए थे, किंतु कुछ लोगों ने गुरुकुल में प्रवेश करने नहीं दिए। जब यह बात पंडित शारदा नंद जी को पता चली तो उन्होंने ऐसा करने वाले लोगों के समझाया कि रैदास ईश्वर प्रदत्त मेधा प्राप्त विशेष बालक है। पंडित शारदा नंद रैदास के व्यक्तित्व एवं व्यवहार से अत्यंत प्रभावित थे और उनका मानना था कि बालक रैदास बड़े होकर आध्यात्मिक एवं सांसारिक रूप से एक सफल व्यक्ति बनेंगे।

रैदास के संबंध में कई किंवदंतियाँ हैं। कहा जाता है कि अपने मृत बाल-सखा को उन्होंने केवल यह कहकर पुनः जीवित कर दिया कि 'यह सोने का समय नहीं है, यह समय है कि उठो और लुकाछिपी का खेल खेलो।' ऐसी चमत्कारिक घटनाओं के प्रसार के कारण गुरु पंडित शारदा

नंद जी ने उन्हें प्रारंभिक शिक्षा देना स्वीकार किया था। इससे भी आगे जाकर रैदास ने साधु-संतों की संगति में आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति की, जो उनकी कविताओं या पदों में स्थान-स्थान पर देखा जा सकता है। इतना होते हुए भी रैदास निरक्षर या अनपढ़ कहे जाते हैं।

रैदास को अपनी पुश्तैनी व्यवसाय का प्रशिक्षण स्वतः ही प्राप्त हुआ है। उन्होंने श्रम करते हुए जीवन-यापन करना सीखा। रैदास ने प्रायः प्रत्येक निर्गुण संत कवि की तरह भक्ति में वैराग्य की अपेक्षा श्रम करते हुए भक्ति करने का कार्य किया। समाज की नजरों में उनकी जाति 'चमार' थी, लेकिन उन्होंने इस जाति सूचक उलाहना को अपनी भक्ति एवं कर्म से एक नया अर्थ प्रदान किया और 'भक्त' का पर्याय बनकर उभरे। उन्होंने भक्ति में ही नहीं, कर्मक्षेत्र में भी अपनी जाति को छिपाया नहीं, बल्कि आत्महीनता का शिकार होने से बचकर आत्मगौरव के साथ अपनी जाति का खुलकर उल्लेख करते हुए लिखा - ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा। राजा राम की सेव ना कीनी कहि रविदास चमारा॥

बोध प्रश्न

- कुछ लोगों ने रैदास को गुरुकुल में प्रवेश क्यों नहीं दिया?
- रैदास को आरंभिक औपचारिक शिक्षा किसने दी?

साधु-संतों की संगति से रैदास ने न केवल आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया, अपितु भौतिक संसार में अपने काम को पूरा करने की प्रेरणा भी हासिल की। रैदास के अनुसार कोई काम बड़ा या छोटा नहीं होता। इसी बात को ध्यान में रख कर उन्होंने जूते बनाने के अपने पैतृक व्यवसाय को अपनाया। हालाँकि, आरंभ में वे इस काम को स्वीकार नहीं करते थे और केवल साधु-संतों की संगति में रहकर आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति करने को ही जीवन का लक्ष्य मानते थे और विरक्त जीवन जीने लगे थे। ऐसे में उनके माता-पिता अपने पुत्र के विवाह को लेकर चिंतित थे। उस समय बाल-विवाह की प्रथा भी थी और सांसारिक विरक्ति से मुक्ति दिलाने के लिए उनका विवाह काफी कम आयु में श्रीमती लोना देवी से करवाया गया। रैदास के घर एक पुत्र ने जन्म लिया विजयदास। रैदास अधिक व्यावहारिक या सटीक शब्दों में कहा जाए तो अपने व्यवसाय में चालाकी नहीं दिखाते थे। किंतु समय के साथ उन्होंने भक्ति में व्यावहारिकता और व्यवहार में भक्ति रहस्य को अपने अनुभवों के माध्यम से जान लिया।

बोध प्रश्न

- रैदास के पुत्र का नाम क्या था?
- लोना देवी कौन थीं?
- रैदास का पारिवारिक जीवन कैसा था?

एक बड़े भूभाग पर रैदास की भक्ति एवं कविताओं का प्रभाव देख जा सकता है, जो उनके अपने समय से ही होना आरंभ हो गया था। रैदास के संदर्भ में कहा जाता है कि वे रामानंद के बारह शिष्यों में से एक थे। इसके अतिरिक्त स्वयं रैदास के भी कई शिष्य बने जिनमें सबसे प्रसिद्ध कवयित्री मीराँबाई हैं। मीराँबाई चित्तौड़, के राजा की पुत्रवधु थीं। वैधव्य के पश्चात वे भक्ति में लीन होने के लिए मुक्त हुई थीं और उन्होंने कविताएँ सुनकर ही रैदास को अपना गुरु स्वीकार कर लिया था। मीराँबाई अपने गुरु रैदास से अत्यधिक प्रभावित थीं और वे उनकी अनुयायी बन गई थीं। मीराँबाई ने अपनी कई कविताओं में इस बात की पुष्टि की है - 'गुरु मिलया रविदास जी..।' कहा जाता है कि मीराँबाई के दादा जी, जिनका नाम दुदा था, वे भी रैदास जी के शिष्य थे।

कहा जाता है कि मुगल बादशाह बाबर भी गुरु रैदास की आध्यात्मिक शक्तियों से परिचित थे और अपने पुत्र हुमायूँ के साथ उनके दर्शनार्थ भी आया करते थे तथा उनका पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त करते थे। यह भी कहा जाता है कि रैदास के विचारों एवं आध्यात्मिक शिक्षा से प्रभावित होकर बाबर भी उनके शिष्य बन गए। 'आदिग्रंथ' में रैदास की रचनाएँ संकलित होने के कारण उन्हें कई लोग 'गुरु रविदास' मानते हैं।

बोध प्रश्न

- रैदास के गुरु का नाम क्या था?
- रैदास के कुछ शिष्यों के नाम बताइए।

मध्यकालीन समाज अनेक प्रकार की रूढ़ियों से ग्रस्त था। भक्ति आंदोलन ने इन रूढ़ियों को चुनौती देने का भी काम किया। वर्ण और जाति ऐसी ही मानव-विरोधी रूढ़ियाँ रही हैं। इनका दुरुपयोग करते हुए धर्म-कर्म के ठेकेदारों ने अस्पृश्य कही जाने वाली जातियों के लिए शास्त्रों के अध्ययन से लेकर मंदिर में पूजा पाठ तक का निषेध कर दिया था। इसी के विरोध में भक्ति आंदोलन 'जात-पाँत पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई' का नया समाज-दर्शन लेकर प्रस्तुत हुआ। लेकिन इस नए समाज-दर्शन की स्थापना आसान न थी। रूढ़िवादी तत्वों ने

सदा इसका विरोध किया। रैदास को भी अपनी जाति के कारण यह विरोध झेलना पड़ा।

ऐसे वातावरण के बावजूद रैदास ने समर्पित भाव से ईश्वर भक्ति करते हुए साधु-संगत की और अपनी रचनाओं में समकालीन परिवेश का भी संकेत किया। इससे शास्त्रीय ज्ञान को ही सर्वोपरि मानने वाले कुछ विशिष्ट लोगों के व्यवसाय को धक्का लगना स्वाभाविक था। कहा जाता है कि रैदास के इन विरोधियों ने उनकी हत्या करने की योजना बनाई। उन्हें एक गाँव में संगत के लिए आमंत्रित किया। रैदास उस सभा में गए और सभा का शुभारंभ किया। एकांत और अँधेरे का लाभ उठाकर विरोधियों ने रैदास की हत्या का प्रयास किया। लेकिन गलती से उनके स्थान पर उनके साथी भल्ला नाथ मारे गए। माना जाता है कि रैदास का निधन 120 वर्ष से अधिक की आयु में 1520 ई. में उनकी जन्मभूमि बनारस में हुआ।

बोध प्रश्न

- मध्यकालीन समाज कैसी रूढ़ियों से ग्रस्त था?
- रैदास को किस कारण गाँव बुलाया गया?
- रैदास का निधन कब हुआ?

5.3.2 रचना यात्रा

अन्य सभी निर्गुण संत कवियों की तरह रैदास का भी काव्य उनके लिए साधना का एक मार्ग था। कविता उनके लिए साध्य नहीं है। कविता के माध्यम से अपने भक्ति भाव को अभिव्यक्त करना एवं समाज को विवेकपूर्ण सत्य का मार्ग दिखाना उनकी वाणी एवं काव्य का उद्देश्य था। डॉ. शुकदेव सिंह के संपादन में रैदास की संपूर्ण रचनाओं का संकलन 'रैदास बानी' शीर्षक से प्रकाशित हो चुका है। 'गुरु ग्रंथ साहब' में भी रैदास की रचनाएँ सम्मिलित की गई थीं। इसके अतिरिक्त राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में रैदास की रचनाएँ हस्तलिखित पांडुलिपियों में बिखरी हुई हैं। रैदास ने अपनी रचनाएँ साखी, सबद, रमैनी, अंगु, गुरुदेव को अंग, विभिन्न राग जैसे - सोरठा, आसावरी, महला, बीजक आदि में लिखी हैं।

व्यापक स्तर पर देखा जाए तो रैदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के भीतर निर्गुण संत काव्यधारा के प्रमुख कवियों में गिने जाते हैं। उनकी रचना यात्रा में वे सभी पड़ाव देखे जा सकते हैं, जो निर्गुण संत कवियों की कविताओं में होते हैं। रैदास की रचनाओं में गुरु के प्रति अगाध भक्ति, जाति-व्यवस्था की सौम्य आलोचना, किसी भी प्रकार के भेदभाव के प्रति नकार का भाव, ईश्वर भक्ति, सांसारिक सुखों के प्रति निवृत्तिमूलक दृष्टिकोण, सामान्य जन एवं अपने शिष्यों के

लिए नीति एवं शिक्षापूर्ण वचन लिखे हैं।

बोध प्रश्न

- 'रैदास बानी' का संपादन किसने किया?
- रैदास के लिए काव्य रचना का क्या उद्देश्य था?
- रैदास की रचनाओं के विषय क्या हैं?

5.3.3 रचनाओं का परिचय

रैदास अपनी रचनाओं में एक संत की दृष्टि से भौतिक जगत को देखते हैं और सभ्यता-समीक्षक के रूप में अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करते हैं। सहजता उनकी कविताओं की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। अन्य कई निर्गुण संत कवियों की भाँति रैदास ने अपनी कविताओं में न तो योग की दुरूह शब्दावली का प्रयोग किया है और न ही हठयोग साधना की अत्यंत कठिन पारिभाषिक शब्दावली का उपयोग किया है। इस कारण पहले से ही अत्यंत सरल संत साहित्य में भी रैदास की रचनाएँ और भी स्वाभाविक रूप लिए हुए हैं।

रैदास की रचनाओं में अध्यात्म के माध्यम से सामाजिक-सांस्कृतिक एकता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उदारता एवं सेवाभाव को वे सामाजिक-सांस्कृतिक एकता के लिए आवश्यक तत्व मानते हैं। उन्होंने ईश्वर के निर्गुण निराकार रूप को भक्ति का आलंबन अवश्य बनाया किंतु सगुण भक्ति की अन्य निर्गुण संतों की तरह निर्मम आलोचना नहीं की है।

ऊपर उल्लेख किया जा चुका है कि रैदास ने अपनी जाति का उल्लेख कई पदों में आत्मगौरव के साथ किया है। इन पदों में आए उल्लेख से स्पष्ट होता है कि रैदास जितनी भी बार अपनी कविताओं में अपनी जाति का वर्णन करते हैं, वह भक्त हृदय से भावविभोर होकर करते हैं, अन्य निर्गुण संतों की भाँति विद्रोह का भाव वहाँ नहीं दिखाई देता है। एक पद में उन्होंने लिखा है - 'हम अपराधी नीच घरि जनमे, कुटुंब लोग करै हाँसी रे। कहै रैदास राम जपि रसना, काटै जम की फांसी रे॥' रैदास अपने आराध्य के प्रति संपूर्ण समर्पण भाव को अपनी कविताओं में खुलकर अभिव्यक्त करते हैं, जहाँ आत्म-विवेक एवं सामाजिक चेतना का मिला-जुला रूप देखा जा सकता है। रैदास अपने अस्तित्व को आराध्य में एकाकार करने के भाव को बड़े ही ठहराव के साथ अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं - 'प्रभुजी तुम चंदन हम पानी'। रैदास की यह कविता पढ़कर लगता है कि उनके इस अनन्य एवं एकाकार भाव के किसी और उपमा के सहारे अभिव्यक्त किया ही नहीं जा सकता था। उनकी यही भक्ति-भाव उन्हें अपनी कविताओं में

संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त हुई है।

रैदास अपनी जाति का उल्लेख सप्रयास या सायास नहीं करते, अपितु एक प्रवाह में करते चले जाते हैं। अपने ईश्वर से वे जितना अधिक समीप होते जाते हैं, अपनी कविताओं में खुलकर अपनी स्थिति और जाति का उल्लेख करते हैं। रैदास जितना अधिक अपने भक्ति भाव को अभिव्यक्त करते हैं, उतनी ही विनम्रता भावनाओं में आती चली जाती है। कई निर्गुण संत भक्त कवियों की सभी विशेषताएँ रैदास की कविताओं में भी देखने को मिलती हैं, किंतु उनमें रैदास की अपनी निजी विशेषताएँ भी देखी जा सकती हैं। इसी विनम्रता और भक्ति भाव में वे कहते हैं - 'कहै रैदास सुनिं केसवे अंतहकरन बिचार। तुम्हारी भगति कै कारनैं फिरि ह्वै हौं चमार॥'

बोध प्रश्न

- रैदास की कविताओं की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता क्या है?
- रैदास ने किस प्रकार के ईश्वर को अपनी भक्ति का आलंबन बनाया?
- किन कवियों की काव्य-विशेषताएँ रैदास की कविताओं मिल जाती हैं?

5.3.4 हिंदी साहित्य में रैदास का स्थान एवं महत्व

हिंदी साहित्य में रैदास के महत्व को इस बात से समझा जा सकता है कि वे तमाम क्षेत्रीय सीमाओं से परे जाकर पंजाब से लेकर राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, बंगाल, बिहार तक जाने, पहचाने जाते हैं। आम तौर पर संत साहित्य के अध्ययन को कबीर तक सीमित करके देखा जाता है और उसी के आधार पर संत काव्य में धार्मिक आडंबर एवं व्यवस्था के प्रति आक्रोश को रेखांकित किया जाता है। रैदास के काव्य में भी धार्मिक आडंबरों एवं जाति व्यवस्था के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण देखने को मिलता है, किंतु वह न तो नामदेव-कबीर जैसा तीव्रता और क्रोध लिए हुए है और न ही गुरु नानक देव जितना विद्रोही तेवर लिए हुए है।

रैदास ने अपने काव्य में धर्म एवं जाति व्यवस्था को समीक्षात्मक दृष्टिकोण से देखते हुए संयत पद्धति से आलोचना की है। उन्होंने व्यावहारिक रूप में जाति के बंधनों को तोड़ने का प्रयास किया है। यही कारण है कि एक ओर वे रामानंद के शिष्य बने तो दूसरी ओर मीराँबाई जैसी तथाकथित उच्च कुलीन स्त्री को अपना शिष्य बनाया।

हिंदी के निर्गुण संत साहित्य में रैदास का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने अन्य निर्गुण संत कवियों की भाँति हठयोग की शब्दावली और उलटबाँसियों से परहेज किया है। उनकी भाषा में

अधिकाधिक जन-भाषा की शब्दावली को देखा जा सकता है। तत्कालीन बनारस की भाषा को उन्होंने अपने काव्य में प्रयुक्त किया। साधारण जन ने अपने क्षेत्रों के अनुसार उसमें अपनी-अपनी बोली का मिश्रण किया है। जैसे आदिग्रंथ में प्राप्त पदों पर पंजाबियत का प्रभाव है। राजस्थानी परंपरा से प्राप्त पदों पर पश्चिमी राजस्थानी बोलियों का प्रभाव है।

बोध प्रश्न

- रैदास ने किससे परहेज किया?

समीक्षात्मक टिप्पणी

रैदास ने भक्ति और कविता दोनों की सिद्धि अपने जीवन के संघर्षों से प्राप्त की थी। इसीलिए कबीर जैसे संत भी उनका सम्मान करते थे। जैसा की 'हिंदी साहित्य की भूमिका' में डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है -

> "रैदास कबीर से अवस्था में कदाचित बड़े थे और बहुत निरीह भक्त थे। जीवन की बहुविध कठिनाइयों को झेल चुके थे। एक बार ब्रह्मज्ञान के विषय में कबीर से जब पूछा गया तो, कहते हैं, उन्होंने बताया कि - मैं बच्चा था, माँ गोदी में चढ़कर रास्ता पार कर आया हूँ, रैदास से पूछो, वे बड़े थे और माँ ने उनके सिर पर कुछ गट्ठर भी रख दिया था। वे ही रास्ते का मर्म बता सकते हैं।" (हिंदी साहित्य की भूमिका, पृ.56)

इससे स्पष्ट है कि रैदास का ब्रह्मज्ञान उनके जीवन के गहन अनुभवों के समांतर विकसित हुआ है। यही कारण है कि -

> "जिस समय रैदास व्यावहारिक रूप में जगत की बात करते हैं, उसको एक दुख का आगार, कष्ट का कारण तथा भ्रम रूप मानते हुए भी स्पष्टतः एक सत्कर्म-क्षेत्र भी मानते हैं; विभिन्न सामाजिक गुणों को जीवन में ग्रहण करने का उपदेश देते हैं और कर्म की पवित्रता का आग्रह करते हैं; कर्म की पवित्रता के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रेरणा, मोक्ष एवं दुष्कर्म के विरुद्ध दंड की अवस्था, कर्म और पुनर्जन्म का ज्ञान देते हैं। उनका कथन है कि मानव-जीवन इस रूप में एक दुर्लभ उपलब्धि है। और इसी मानव शरीर से हम सत्कर्म करते हुए अपने को पुनर्जन्म से मुक्त करा सकते हैं। वे मनुष्य शरीर को कच्चे घड़े के समान नष्ट प्राय बताते हुए यह चेतावनी देते हैं कि इस जन्म को वृथा न खोकर उसका सदुपयोग किया जाना चाहिए।

अनेक स्थलों पर तो वे पूरे मानव जीवन को विभिन्न (चार) खंडों में बाँटते हुए प्रत्येक जीवनांश या आयु का उपयोग हरि-स्मरण में कर दुष्कर्मों से बचे रहने का उपदेश देते हैं और कहते हैं कि अबकी बार तो यह अवसर (मानव शरीर) मिला है, दुबारा नहीं मिलेगा। अतः इसका सदुपयोग सत्कर्म (हरि-स्मरण) में ही होना चाहिए।" (योगेंद्र सिंह, संत रैदास)

बोध प्रश्न

- रैदास ने भक्ति और कविता दोनों की सिद्धि कैसे प्राप्त की?
- रैदास ने मानव जीवन के बारे में क्या कहा है?

5.4 पाठ सार

इस संबंध में कई मतभेद हैं, किंतु रैदास का जन्म विक्रम संवत-माघ सुदी 15, 1433 अर्थात 1377 ई. माना जाता है। अपने समय में अत्यधिक प्रसिद्ध होने के कारण विभिन्न क्षेत्रों में रैदास अलग-अलग नाम प्रचलित हैं। रैदास की माता जी का नाम कलसा देवी और पिता जी का नाम बाबा संतोख दास था। पंडित शारदा नंद ने रैदास को आरंभिक शिक्षा दी। इसके अतिरिक्त उन्हें अपना पुश्तैनी व्यवसाय करना तथा श्रम करते हुए अपना जीवन-यापन करना सिखाया गया। उस समय बाल-विवाह की प्रथा भी थी और सांसारिक विरक्ति से मुक्ति दिलाने के लिए उनका विवाह काफी कम आयु में श्रीमती लोना देवी से करवाया गया। रैदास के घर एक पुत्र ने जन्म लिया, जिसका नाम विजयदास था। वे रामानंद के बारह शिष्यों में से एक थे। इसके अतिरिक्त स्वयं रैदास के भी कई शिष्य बने जिनमें सबसे प्रसिद्ध कवयित्री मीराँबाई हैं।

रैदास की संपूर्ण रचनाओं का संकलन 'रैदास बानी' शीर्षक से प्रकाशित हो चुका है। इसका संपादन डॉ. शुकदेव सिंह ने किया। 'गुरु ग्रंथ साहब' में भी रैदास की रचनाएँ सम्मिलित की गई थीं। रैदास की रचनाओं में गुरु के प्रति अगाध भक्ति, जाति-व्यवस्था की सौम्य आलोचना, किसी भी प्रकार के भेदभाव के प्रति नकार का भाव, ईश्वर के प्रति अगाध भक्ति, वैयक्तिक भक्ति की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति, सांसारिक सुखों के प्रति निवृत्तिमूलक दृष्टिकोण, सामान्य जन एवं अपने शिष्यों के लिए नीति आदि को देखा जा सकता है।

अपनी जाति का उल्लेख रैदास सप्रयास नहीं अपितु एक प्रवाह में करते चले जाते हैं। अपने ईश्वर से वे जितना अधिक समीप होते जाते हैं, अपनी कविताओं में खुलकर अपनी स्थिति और जाति का उल्लेख करते हैं। रैदास जितना अधिक अपने भक्ति भाव को अभिव्यक्त करते हैं,

उतनी ही विनम्रता भावनाओं में आती चली जाती है। हिंदी के निर्गुण संत साहित्य में रैदास की विशिष्ट पहचान इस कारण भी है कि उन्होंने अन्य निर्गुण संत कवियों की भाँति हठयोग की शब्दावली और उलटबाँसियों से प्रायः परहेज किया है। उनकी भाषा में अधिकाधिक जन की भाषा की शब्दावली को देखा जा सकता है।

यह माना जाता है कि जब सन 1520 ई. में रैदास की मृत्यु हुई तब उनकी आयु 120 वर्षों से अधिक थी।

5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. संत रैदास निर्गुण भक्ति शाखा के अग्रणी कवियों में सम्मिलित हैं।
2. संत रैदास के भजनों में अत्यंत शांत और निरीह भक्त हृदय का परिचय मिलता है।
3. उनमें किसी प्रकार की वक्रता या अटपटापन नहीं है, और न ज्ञान के दिखावे का आडंबर ही है।
4. संत रैदास के पदों में आत्मनिवेदन और परमात्म विरह की पीड़ा का वर्णन है।
5. संत रैदास का काव्य आडंबरहीनता, सहज शैली और निरीह आत्मसमर्पण का उत्तम उदाहरण माना जाता है।

5.6 शब्द संपदा

1. उलटबाँसी	= उल्टी बात कहना, प्रतीकों में बात कहना
2. कठौती	= एक प्रकार का पात्र, भिक्षापात्र
3. निर्गुण	= गुणों से परे, निराकार
4. निवृत्ति	= संसार को त्यागने का विचार
5. परहेज़	= त्याग, छोड़ना
6. पैतृक व्यवसाय	= पिता से प्राप्त व्यवसाय
7. भौतिक संसार	= वस्तु जगत, दिखाई देने वाला संसार
8. विक्रम-संवत्	= वर्ष गणना की भारतीय पद्धति
9. विरक्त जीवन	= सन्यास जीवन
10. संगत	= सभा

11.हठयोग = योग का तांत्रिक प्रकार

5.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों दीजिए।

1. हिंदी साहित्य में रैदास के महत्व पर प्रकाश डालिए।
2. रैदास की शिक्षा पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए?
3. रैदास के जीवन पर प्रकाश डालिए।

खंड (आ)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखिए।

1. मानव जीवन के बारे में रैदास के विचारों को स्पष्ट कीजिए।
2. रैदास के परिवार का परिचय दीजिए।

खंड (इ)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. रैदास की पत्नी का नाम क्या था? ( )
   (अ) सरस्वती देवी (आ) कलसा देवी (इ) लोना देवी (ई) बावरी साहब
2. निम्नलिखित में से किस ग्रंथ में रैदास की रचनाएँ संकलित हैं? ( )
   (अ) आदिग्रंथ (आ) बुद्धचरित (इ) हिंदी साहित्य का इतिहास (ई) काव्याधार
3. रैदास ने किस शहर में जन्म लिया था? ( )
   (अ) इंदौर (आ) बनारस (इ) चितौड़ (ई) दिल्ली
4. रैदास के पिता जी का नाम क्या था? ( )
   (अ) संतोष दास (आ) संतोख दास (इ) दद्दा दास (ई) सुनील कुमार

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. रैदास के पुत्र का नाम ....था।
2. रैदास अपनी जाति का नाम अत्यंत ....से लेते हैं।
3. रैदास ने अपना शरीर ....नामक शहर में त्यागा था।

4. रैदास ने अपने काव्य में .... शब्दावली का प्रयोग नहीं किया।

5. रैदास का संबंध भक्ति काल की .... काव्य-धारा से है।

III. सुमेल कीजिए -

1. डॉ. शुकदेव सिंह	(अ) रैदास की शिष्या
2. रामानंद	(आ) रैदास की माताजी
3. मीराबाई	(इ) 'रैदास बानी' के संपादक
4. कलसा देवी	(ई) रैदास के गुरु

5.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह
3. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र
4. भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य : शिव कुमार मिश्र
5. संत शिरोमणि रैदास - वाणी और विचार : एन. सिंह
6. संत रैदास : योगेंद्र सिंह

इकाई 6 : रैदास के पद

रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 मूल पाठ : रैदास के पद

6.3.1 अध्येय कविताओं का सामान्य परिचय

6.3.2 अध्येय कविताएँ

6.3.3 विस्तृत व्याख्या

6.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

6.4 पाठ-सार

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

6.6 शब्द संपदा

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

6.8 पठनीय पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में हिंदी के भक्ति साहित्य को निर्गुण और सगुण नामक दो भागों में विभाजित किया था। इन दो भागों को भी क्रमशः संत साहित्य (ज्ञानाश्रयी शाखा) और सूफी साहित्य (प्रेमाश्रयी शाखा) और कृष्णभक्ति शाखा और रामभक्ति शाखा के रूप में उप-विभागों में विभाजित किया था। विवेच्य कवि रैदास संत साहित्य धारा के प्रमुख कवि हैं। इस काव्य-धारा के अन्य कवियों में कबीर, नामदेव, गुरु नानक देव, दादूदयाल, धन्ना, पीपा आदि प्रमुख हैं।

रैदास ने अपने जीवन-अनुभवों, आदर्शों, भक्ति भावना, जाति-दंश और अपने भावनात्मक प्रतिरोध को अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है। इस इकाई में हम रैदास की 'अब हम खूब बतन घर पाया' और 'अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी' इन दो प्रतिनिधि कविताओं का अध्ययन करेंगे।

6.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- रैदास की कविताओं की सामान्य विशेषताओं को जान सकेंगे।
- रैदास की भक्ति भावना से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी कविता में रैदास के महत्व को समझ सकेंगे।
- प्रस्तुत कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे।
- कविता में आए शब्दों के सविस्तार अर्थ जान सकेंगे।

6.3 मूल पाठ : रैदास के पद

6.3.1 अध्येय कविताओं का सामान्य परिचय

'अब हम खूब बतन घर पाया' और 'अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी' शीर्षक दोनों कविताएँ हिंदी साहित्य के भक्ति कालीन निर्गुण संत काव्यधारा के कवि रैदास द्वारा लिखी गई हैं। पहली कविता में रैदास अपनी प्रसिद्ध 'बेगमपुर' की अवधारणा को प्रस्तुत करते हुए उसे अपना घर और वतन बताते हैं, जिसे उन्होंने अपने 'माबूद' की कृपा से प्राप्त किया है। इसके बाद वे इस बेगमपुर नगरी की विशेषताएँ बताते हैं।

'अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी' शीर्षक दूसरी कविता में रैदास अपने अनन्य भक्ति भाव का चित्रण कई उदाहरणों के माध्यम से करते हैं। यह भक्ति की एक विशिष्ट स्थिति है, जिसे निर्भरता या पूर्ण समर्पण कहा जाता है। इस कविता में संत काव्य की एक विशेषता नाम-स्मरण के महत्व को भी देख सकते हैं।

6.3.2 अध्येय कविताएँ

अब हम खूब बतन घर पाया।

अब हम खूब बतन घर पाया।
उहाँ खैर सदा मेरे भाया।।
बेगमपुर सहर का नांउं, फिकर अंदेस नहीं तिहि ठॉव।।
नहीं तहॉ सीस खलात न मार, है फन खता न तरस जवाल।।
आंवन जांन रहम महसूर, जहॉ गनियाव बसै माबूँद।।
जोई सैल करै सोई भावै, मरहम महल मैं को अटकावै।।

कहै रैदास खलास चमारा, सो उस सहरि सो मीत हमारा।।

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग अंग बास समानी।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।

प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

निर्देश : 1. इस कविताओं का सस्वर वाचन कीजिए।
2. इस कविताओं का मौन वाचन कीजिए।

6.3.3 विस्तृत व्याख्या

अब हम खूब बतन घर पाया ..... सो उस सहरि सो मीत हमारा॥

शब्दार्थ : बतन = वतन या देश। पाया = प्राप्त किया। उहॉ = वहाँ। खैर = कल्याण। सदा = हमेशा, हर समय। भाया = भाई। बेगमपुर = समताओं पर आधारित समाज। सहर = शहर। नांउं = नाम। फिकर = चिंता। अंदेस = गुंजाइश, अंदाजा। तिहि ठॉव = उस स्थान पर। खलात = बुरे लोग, बुरे कर्म। फन = हुनर, कला। खता = गलती। तरस = करुणा, दया। रहम = कृपा। गनियाव = स्पष्ट रूप से। माबूँद = ईश्वर। हरम = जनानखाना, स्त्रियों के रहने का ठिकाना। खलास = मात्र, केवल। सैल = सैर, जाना। जोई = जो। सोई = वही। सहरि = शहर में साथ रहने वाले, साथी। मीत = प्रियतम।

संदर्भ : 'अब हम खूब बतन घर पाया' शीर्षक यह पद डेरा सच्चखंड बल्लां, जालंधर के संत सुरिंदर दास द्वारा संग्रहित 'अमृतवाणी सतगुरु रविदास महाराज जी' से लिया गया है।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश में रैदास अपने काल्पनिक शहर बेगमपुर के माध्यम से आदर्श समाज के गुणों के प्रस्तुत करते हैं।

व्याख्या : इस कविता में रैदास ने लिखा है कि अब हमको अपने देश का बहुत अच्छा घर मिल गया है। यह ऊँचा गाँव मेरे मन को बहुत पसंद आया है। इस शहर का नाम बेगमपुर है। बेगम अर्थात जहाँ कोई गम नहीं। पुर अर्थात स्थान। अतः बेगमपुर ऐसा स्थान है, जहाँ न कोई दुःख है और न कोई शंका। न यहाँ किसी प्रकार की चिंता है, न ही कोई कर देना पड़ता है। यहाँ न भय

है, न अपराध है, न अभाव है और न पतन। यह सदा आबाद रहता है। यह दया व करुणा का आगार है। यहाँ सुसंपन्न उपास्य देव (माबूँद) स्वयं रहता है। यहाँ सब एक समान हैं। दूसरे-तीसरे (दोम सोम) दर्जे का कोई भेद नहीं है। जिनको हरम महल अटकाते हैं, उन्हें इस देश की सैर पसंद आती है। संत कवि रैदास विनम्रतापूर्वक कहते हैं कि केवल वही हमारा मित्र हो सकता है जो इस बेगमपुर नामक नगर का सह-नागरिक है।

काव्यगत विशेषताएँ

1. अपने समय की आलोचना की गई है, किंतु इसमें किसी भी प्रकार क्रोध नहीं दिखाया गया है।
2. अत्यंत कम शब्दों में एक विशाल कल्पना-लोक को प्रस्तुत किया गया है।
3. ईश्वर से संबंध जोड़ने का एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।
4. मध्यकाल में आधुनिक समाज निर्माण का सपना देखने वाले संत साहित्य की विशेषता यहाँ दिखाई देती है।
5. पद में भजन की भाँति गीतात्मकता के गुण दिखाई देते हैं।

बोध प्रश्न

- प्रस्तुत कविता कहाँ से ली गई है?
- प्रस्तुत कविता में कवि ने अपने आप को ईश्वर से किस संबंध से जोड़ा है?
- 'माबूँद' शब्द का क्या अर्थ होता है?
- बेगमपुर क्या है?

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ...... ऐसी भक्ति करै रैदासा॥

शब्दार्थ : छूटै = छूटना। रट = बार-बार नाम-स्मरण करना। जाकी = जिसकी। अंग-अंग = प्रत्येक अंग में। बास = सुगंध। समानी = समाहित होना। घन = सघन। बन = वन। मोरा = मोर। चितवन = चित्त, हृदय। चंद = चंद्रमा। चकोरा = चकोर पक्षी। बाती = दीये में लगा सूत का धागा जिसे आग लगाई जाती है। जोति = ज्योति। बरै = बढ़ना, वृद्धि होना। राती = रात्रि, रात। सोनहिं = सोने से ही, सोना। सुहागा = सुहाग, स्त्री का पति।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश रैदास के 'अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी' पद से लिया गया है।

प्रसंग : यह पद एक भजन के रूप में लिखा गया है। यहाँ रैदास अपने आराध्य से विभिन्न प्रकार से अपनी एकात्मता का बखान कर रहे हैं। अपने भक्ति भाव को अभिव्यक्त कर रहे हैं।

व्याख्या : हे प्रभु! मेरे मन में जो आपके नाम की रट लगी है, वह किस प्रकार छूट सकती है? चंदन के मात्र पानी के पास आ जाने पर ही पानी में उसका सुगंध फैल जाता है। आप चंदन हो और मैं पानी। आप आकाश में छाए हुए बादलों के समान हैं और मैं घने वन में नाचने वाले मोर के समान हूँ। जैसे वर्षा से पूर्व आने वाले बादलों को देखकर मोर खुशी से नाच उठता है, उसी प्रकार मैं आपके दर्शन मात्र से झूम उठता हूँ। जैसे चकोर पक्षी चंद्रमा को आशा की दृष्टि से देखते रहता है, उसी प्रकार आपकी अनुशंसा पाने के लिए मैं आपकी ओर दृष्टि लगाए रहता हूँ। आप मेरे लिए दीपक भाँति हैं और मैं उस दीपक की बाती हूँ। आपसे मिलन के लिए ही जलता रहता हूँ। हे प्रभु! आप उज्ज्वल, पवित्र मोती के समान हैं और मैं तो उस मोती से बनने वाली माला का धागा हूँ। आपका और मेरा मिलन उसी प्रकार पवित्र होगा जैसे सोने और सुहाग का मिलन होता है। हे प्रभु, आप मेरे स्वामी हैं और मैं आपका दास हूँ। इसी संबंध को कायम रखते हुए मैं आपकी आराधना करता हूँ।

काव्यगत विशेषताएँ

1. ईश्वर से तादात्म्य स्थापित करने का प्रयास।
2. ईश्वर से एकात्मता दर्शाने का प्रयास।
3. जहाँ प्रस्तुत और अप्रस्तुत दोनों में एकता दिखाई जाती है, वहाँ दीपक अलंकार होता है। इस पद में जिन स्थानों पर ईश्वर और आराध्य में एकता दिखाई गई है, वहाँ दीपक अलंकार है।
4. रैदास के भक्त हृदय की संवेदनाओं को प्रस्तुत पद में अभिव्यक्ति मिली है।
5. निर्गुण संत साहित्य की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं में से निर्गुण भक्ति, आराध्य के प्रति समर्पित प्रेम-भावना, नाम स्मरण आदि विशेषताएँ इस पद में देखी जा सकती हैं।
6. अपनी भक्ति भावना को अभिव्यक्त करने के लिए प्राकृतिक उपादानों का सुंदर उपयोग किया गया है।

बोध प्रश्न

- दीपक अलंकार किसे कहते हैं? उदाहरण दीजिए।
- प्रस्तुत पद में किन-किन पक्षियों का उल्लेख किया गया है?
- प्रस्तुत पद में रैदास किसकी अनुशंसा प्राप्त करना चाहते हैं?

समीक्षात्मक अध्ययन

रैदास ने एक यूटोपिया या काल्पनिक संसार अथवा बेगमपुर शहर की रचना करते हुए उसमें रहने के लिए स्वयं को भाग्यशाली मानते हैं। उन्होंने इस शहर की सारी विशेषताएँ बताते हुए उसे स्वर्ग के समकक्ष रखने का प्रयास किया है। उनके अनुसार उनके मन को यह बेगमपुर बहुत पसंद आया है, क्योंकि यहाँ किसी भी प्रकार का दुख, शोक और शंकाएँ नहीं हैं। इस शहर में चिंताओं का कोई स्थान नहीं है और यहाँ किसी भी प्रकार का शोषण नहीं होता है। बेगम का अर्थ है बिना कोई गम के और पुर का अर्थ है स्थान। अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि बेगमपुर एक ऐसा स्थान है जहाँ दुख-दर्द का कोई स्थान नहीं है।

इस शहर की एक अनन्य विशेषता यह भी है कि वहाँ सभी समान हैं। अर्थात मानव-मानव के बीच जाति, धर्म, लिंग या भाषा का कोई भी भेद नहीं होता। यहाँ इतनी समानता है कि कोई भी दूसरे या तीसरे दर्जे के नहीं होते। रैदास कहते हैं कि यहाँ हमेशा के लिए उस सर्वोच्च सत्ता ईश्वर का राज्य होता है। संत कवि रैदास विनम्रतापूर्वक कहते हैं कि केवल वही हमारा मित्र हो सकता है जो इस बेगमपुर नामक नगर का सह-नागरिक है।

ब्रिटिश लेखक संत थॉमस मूर ने सन 1516 ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'यूटोपिया' में एक ऐसे काल्पनिक द्वीप का उल्लेख किया है, जहाँ मानव का मानव द्वारा शोषण नहीं होता है। सभी मानव किसी भी दृष्टि से एक समान हो, जहाँ कोई सरकार या कोई नौकर न हो, किसी भी प्रकार का टैक्स नहीं दिया जाता हो, जहाँ सभी को समान काम के लिए समान मेहनताना मिलता हो। इस काल्पनिक द्वीप को थॉमस मूर ने 'यूटोपिया' नाम दिया था। रैदास ने अपने समय की सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था से मुक्ति के प्रयास में एक शोषण-मुक्त और दुःखविहीन समाज या स्थान की कल्पना की है, जिसे उन्होंने बेगमपुर नाम दिया। आप समझ सकते हैं कि किस प्रकार उनकी कल्पना में एक सुखी, शोषण-मुक्त, समानताओं पर आधारित समाज की कल्पना मुख्य रूप में उपस्थित है। यहाँ ईश्वर के साथ वैयक्तिक संबंधों पर जोर है। वह कोई स्वामी या मालिक नहीं, बल्कि मित्र या साथी है।

संत साहित्य की विशेषताओं में से एक विशेषता है तत्कालीन परिस्थितियों, सामाजिक कुरीतियों और धार्मिक दिखावे की निर्मम आलोचना करना। रैदास यहाँ केवल आलोचना नहीं करते, बल्कि एक समानांतर व्यवस्था की कल्पना कर आदर्श समाज को उद्घाटित करते हैं। इसी कारण संत साहित्य की विशेषता बतलाते हुए पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने सन 1933 में प्रकाशित

'हिंदी काव्य की निर्गुण धारा' शीर्षक पुस्तक में लिखा है, "समाज की शृंखला को संत तोड़ना नहीं चाहता। समाज में प्रचलित अन्यायों और बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाने में वह बेशक नहीं हिचकता। विशेषकर ऐसे अवसर पर जब युग की आवश्यकताओं को देखते हुए सामाजिक नियम अधूरे और निकम्मे पड़ जाते हैं, उस समय वह समाज के नियमों को आवश्यकता के अनुकूल ढालने में सहायता करता है। किंतु वह समाज को विशृंखल करना बिल्कुल नहीं चाहता।"

'अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी' शीर्षक पद में रैदास ने कई प्राकृतिक एवं रोजमर्रा जीवन के उदाहरणों द्वारा अपने आराध्य से अपनी एकात्मता दिखाने का प्रयास किया है। निर्गुण संत साहित्य में नाम स्मरण को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। भक्त अपने आराध्य का नाम स्मरण करने को ही भक्ति का पर्याय मानता है। यहाँ नवधा भक्ति या दास्य भक्ति जैसी भक्ति की प्रक्रियाएँ इसलिए संभव नहीं होती क्योंकि निर्गुण भक्त किसी भी प्रकार की मूर्ति अथवा व्यक्ति की पूजा नहीं करते। उनका ईश्वर तो सभी जगह व्याप्त हैं। प्रत्येक वस्तु से लेकर प्रत्येक व्यक्ति तक में वे वास करते हैं। इसे ही शास्त्रीय भाषा में सर्वदेववाद कहा जाता है। रैदास भी इसी प्रकार के भक्त हैं, जहाँ वे नाम-स्मरण के महत्व को मानते हैं और चराचर में ईश्वर के वास को महसूस करते हैं।

अधिकांश निर्गुण संत उपेक्षित जातियों से संबद्ध थे। अतः उन्हें सामाजिक रूढ़ियों के कारण भक्ति और ज्ञानार्जन का अधिकार नहीं था और दूसरी बात वे यदि दिन-रात पारंपरिक पद्धति से भक्ति करते तो उनके घर चूल्हा नहीं जल पाता। क्योंकि वे लगभग सभी श्रमिक, कलाकार या दिहाड़ी पर काम करने वाले मजदूर-किसान थे। यदि वे पारंपरिक रूप से प्रचलित भक्ति में लीन हो जाते, तो उनके परिवार को भूख से तड़पना पड जाता। ऐसे में उन्होंने अपने रोजगार के मार्ग से साथ व्यावहारिक रूप से जुड़ने वाली भक्ति पद्धति निर्गुण को चुना। यहाँ न किसी विशिष्ट स्थान पर जाना पड़ता है, न माला-पुष्प-जल चढ़ाना पड़ता है, न किसी पुजारी-पुरोहित की आवश्यकता होती है, न किसी तीर्थ पर जाना पड़ता है, न किसी समय विशेष की आवश्यकता होती है। अपना काम करते जाओ और नाम-स्मरण से अपने आराध्य की आराधना करो। ऐसे में भक्ति को सरल बनाने का कार्य निर्गुण संत कवियों द्वारा व्यावहारिक रूप से किया गया।

नाम-स्मरण के लिए निर्गुण संत भक्त कवियों ने अपने आप को आराध्य ईश्वर से विभिन्न

प्रकार से जोड़ने और उसने अपना संबंध स्थापित करने का प्रयास करते हैं। चूंकि वे अधिक पढ़े-लिखे और काव्यशास्त्र के क्षेत्र में शिक्षित नहीं थे, तो अपने संबंधों को अभिव्यक्त करने के लिए अपने आस-पास की वस्तुओं, प्राकृतिक उपादानों, व्यावहारिक वस्तुओं, अपने व्यवसाय से जुड़ी शब्दावली का उपयोग अपने संबंध स्थापित करने के लिए उपयोग में लाया करते थे। इसी तरह यहाँ भी रैदास अपने आप को ईश्वर से अपनी एकात्मता को सिद्ध करने तथा ईश्वर के गुणों से एकाकार होने के लिए विविध प्राकृतिक उपादानों का प्रयोग करते हैं।

बोध प्रश्न

- पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने अपनी पुस्तक 'हिंदी काव्य की निर्गुण धारा' किस पर प्रकाश डाला?
- संत थॉमस मूर ने किस पुस्तक में रैदास की भाँति एक काल्पनिक लोक का वर्णन किया है?
- सर्वदेववाद किसे कहा जाता है?
- रैदास किस प्रकार के भक्त थे?
- अपनी भक्ति भावना को अभिव्यक्त करने के लिए रैदास ने किन-किन प्राकृतिक उपादानों का उपयोग किया है?

सहजता, अहंकारहीनता, मोहमाया से दूर - ये सभी रैदास के व्यक्तित्व के अंग हैं। श्रम, कर्म और स्वाधीनता की चेतना इनके नस-नस में बसी हुई है। वे जाति-पाँत के भेदभाव का खंडन करते हैं। उनके अनुसार मनुष्य इन भेदभावों के कारण ही अपने नैसर्गिक गुणों से दूर हो जाता है। जात जन-चेतन को नष्ट कर देता है। जनकल्याणकारी भावनाओं को कुचल देता है। लोगों में दया, प्रेम, सहानुभूति और अपनत्व की भावनाएँ नाम मात्र के लिए भी नहीं होंगी। आपसी प्रेम और भाईचारे के नष्ट होने के कारण मनुष्य मनुष्य से जुड़ नहीं पा रहा है। मनुष्यता का नाश हो रहा है। अतः वे कहते हैं -

जात-पाँत के फेर मंहिं।
उरीझ रहै सभ लोग।
मानुषता को खात हइ।
रविदास जात कर रोग।
रविदास जन्म के काटनै।
होत न कोऊ नीच।

नर कूँ नीच कटि डारि है,

ओछे कर्म कौ कीच।

रैदास के अनुसार श्रम व कर्मठता की प्रतिष्ठा मुक्ति का मार्ग है। इसीलिए वे श्रमजनीत आर्थिक स्वतंत्रता पर बल दिया है। श्रम को एक ओर स्वकर्म से जोड़ते हैं तो दूसरी ओर ईश्वर से-

सम कऊ ईसर जानि कैं, जउ पूजति दिन-रैन।

रविदास तिन्हहि संसार मंह, सदा मिलति सुख-चैन।

बोध प्रश्न

- रैदास के व्यक्तित्व के अंग क्या हैं?
- रैदास के अनुसार मुक्ति का मार्ग क्या है?
- रैदास श्रम को किस से जोड़ते हैं?
- रैदास के अनुसार मनुष्यता कैसे नष्ट हो रही है?

अंततः डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में यह कहा जा सकता है कि -

> "अनाडंबर, सहज शैली और निरीह आत्म-समर्पण के क्षेत्र में रैदास के साथ कम संतों की तुलना की जा सकती है। यदि हार्दिक भावों की प्रेषणीयता काव्य का उत्तम गुण हो तो निस्संदेह रैदास के भजन इस गुण से समृद्ध हैं। सीधे-सादे पदों में संत कवि के हृदभाव बड़ी सफाई से प्रकट हुए हैं और वे अनायास सहृदय को प्रभावित करते हैं। उनका आत्म-निवेदन, दैन्य भाव और सहज भक्ति पाठक के हृदय में इसी श्रेणी के भाव संचारित करते हैं। इसी को काव्य में प्रेषणीयता का गुण कहते हैं।" (हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास, पृ. 84)

6.4 पाठ-सार

भक्ति कालीन निर्गुण संत कवि रैदास ने अपने पदों में अपनी अनन्य भक्ति भावना को अभिव्यक्त किया है। उन्होंने अपने आराध्य से कई प्रकार से संबंध स्थापित किए हैं। इसके लिए उन्होंने एक ऐसे स्थान या समाज की कल्पना की है, जहाँ ईश्वर उनके साथी हैं और उस स्थान पर दुख, असमानता, स्वार्थ का नामो-निशान नहीं होता, अपितु दया,करुणा, समानता और पर-दुखकातरता रहता है। रैदास अपनी निर्गुण भक्ति पद्धति के अनुसार नाम-स्मरण को महत्व देते हैं और अपने आराध्य के नाम की रट लगाते हैं। अर्थात बार-बार नाम-स्मरण करते रहते हैं। इन

दोनों पदों में तत्कालीन सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। इनमें रैदास अपने आस-पास के प्राकृतिक उपादानों का प्रयोग करते हुए अपने आराध्य से अपनी एकात्मता को स्थापित करने का प्रयास किया है, यह एकात्मता अद्वितीयता का रूप न ले पाए इस पर भी रैदास का ध्यान बना रहता है। यह दोनों पद रैदास की भक्ति को अभिव्यक्त करने वाले महत्वपूर्ण पद हैं।

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. संत कवि रैदास ने बेगमपुर के माध्यम से एक शोषण-मुक्त और दुख-मुक्त समाज की विराट कल्पना प्रस्तुत की है।
2. संत कवि रैदास ने तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं की क्रोध किए बिना आलोचना की है।
3. संत रैदास अपने आराध्य को एक ओर तो अपना स्वामी मानते हैं तथा दूसरी ओर उन्हें अपना मित्र बताते हैं। अर्थात उनकी भक्ति में दास्य और सख्य दोनों भाव शामिल हैं।
4. संत रैदास ने अपने आराध्य से अपनी एकात्मता और अभिन्नता दिखाने के लिए कई प्राकृतिक और व्यावहारिक उपादानों का प्रयोग किया है।

6.6 शब्द संपदा

1. उपास्य देव = जिस ईश्वर की उपासना की जाती है
2. एकात्मता = एकता
3. तत्कालीन = उस समय का
4. दास्य भक्ति = अपने आप को ईश्वर का दास/नौकर मानकर भक्ति करना
5. दिहाड़ी = दिन भर के काम के बदले मजदूरी
6. नवधा भक्ति = नौ चरणों में भक्ति करना (उदा. मीरा की भक्ति को देखें)
7. पद = गाने योग्य कविता का प्रकार
8. पर-दुखकातरता = दूसरों के दुख पर करुणा व्यक्त करना
9. प्राकृतिक उपादान = प्रकृति में पाई जाने वाली वस्तुएँ, जैसे चकोर, चंद्रमा आदि

10. सर्वदेववाद = प्रत्येक वस्तु एवं व्यक्ति में ईश्वर को देखना या मानना

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों दीजिए।

1. रैदास की बेगमपुर की अवधारणा को अपने शब्दों में समझाइए।
2. रैदास ने किन-किन प्राकृतिक उपादानों से अपने आराध्य से संबंध स्थापित किए हैं?
3. पठित पदों के आधार पर रैदास की भक्ति भावना को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

खंड (आ)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखिए।

1. निर्गुण संत भक्तों ने किन कारणों से नाम-स्मरण को अपनाया था?
2. मनुष्यता के बारे में रैदास की भावनाओं पर प्रकाश डालिए।
3. "प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।" - इस पंक्ति की व्याख्या कीजिए।
4. संत थॉमस मूर और रैदास की कल्पनाओं का साधर्म्य स्पष्ट कीजिए।
5. अब हम खूब बतन घर पाया ..... सो उस सहरि सो मीत हमारा॥ - इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. कौन-सा पक्षी चन्द्रमा को आशा की दृष्टि से देखता है? ( )

    (अ) मोर (आ) कबूतर (इ) चकोर (ई) चातक

2. 'अमृतवाणी सतगुरु रविदास महाराज जी' को किसने संग्रहित किया? ( )

    (अ) सुरिंदर दास (आ) रैदास (इ) कबीरदास (ई) तुलसीदास

3. रैदास अपने आप को किस जाति का कहते हैं? ( )

(अ) बुनकर (आ) धुनिया (इ) जाट (ई) चमार

4. रैदास को निम्नलिखित में से क्या मन को बहुत पसंद आया? ( )

(अ) चंद्रमा (आ) ऊँचा गाँव (इ) शहर (ई) मोर

5. संत थॉमस मूर किस देश के रहने वाले थे? ( )

(अ) बेगमपुर (आ) यूटोपिया (इ) भारत (ई) इंग्लैड

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. भक्ति को सरल बनाने कार्य ....कवियों द्वारा व्यावहारिक रूप से किया गया।
2. निर्गुण संत साहित्य में ....को अत्यधिक महत्व दिया जाता है
3. चंदन के मात्र पास आ जाने पर भी .... में उसकी सुगंधी मिल जाती है।
4. उनके अनुसार उनके .... को यह बेगमपुर बहुत पसंद आया है।
5. समाज की .... को संत तोड़ना नहीं चाहता।

6.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह
3. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र
4. भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य : शिव कुमार मिश्र

इकाई 7 : तुलसी : एक परिचय

रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 मूल पाठ : तुलसी : एक परिचय

7.3.1 जीवन परिचय

7.3.2 रचना यात्रा

7.3.3 रचनाओं का परिचय

7.3.4 हिंदी साहित्य में तुलसी का स्थान एवं महत्व

7.4 पाठ सार

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

7.6 शब्द संपदा

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

7.8 पठनीय पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

हिंदी काव्य परंपरा में भक्ति आंदोलन एक महत्वपूर्ण आंदोलन था। इसने अपने समय और समाज को विभिन्न रूपों में प्रभावित किया था। इसकी सगुण भक्ति काव्य-धारा की रामाश्रयी शाखा या रामभक्ति परंपरा के प्रवर्तक थे तुलसीदास। तुलसी राम के अनन्य भक्त हैं-

माँगत तुलसीदास कर जोरे। बसहिं रामसिय मानस मोरे ॥

उन्हें कृष्ण में भी राम दिखाई देते हैं-

कित मुरली कित चंद्रिका, कित गोपिन के साथ ।
अपने जन के कारणे, कृष्ण भये रघुनाथ। ।

यद्यापि, तुलसी के पूर्व आदिकवि वाल्मीकि संस्कृत में 'रामायण' की रचना कर चुके थे, फिर भी उन्हें लोक से परिचित कराने का कार्य तुलसीदास ने किया। उन्होंने राम को लोक-नायक बनाया है। तुलसीदास अपने समय के लोकनायक हैं, जो तत्कालीन समाज की बुराइयों

को दूर करने की बात करते हैं। इसके लिए भी वे रामकथा का ही माध्यम चुनते हैं।

7.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- तुलसीदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में जान सकेंगे।
- तुलसीदास के जीवन से जुड़ी प्रमुख घटनाओं से अवगत हो सकेंगे।
- तुलसीदास की प्रमुख कृतियों से परिचित हो सकेंगे।
- तुलसीदास की काव्य-भाषा की विशेषताओं को जान सकेंगे।
- तुलसीदास की रचना यात्रा के विकास क्रम को जान सकेंगे।
- हिंदी साहित्य में तुलसीदास के स्थान एवं महत्व को समझ सकेंगे।

7.3 मूल पाठ : तुलसी : एक परिचय

7.3.1 जीवन परिचय

तुलसीदास के जन्म के संबंध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। इसका कारण है तुलसीदास के जीवन से संबंधित प्रामाणिक सामग्री का अभाव। डॉ. नगेंद्र 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं, "बेनीमाधवदास प्रणीत 'मूल गोसाईं चरित' तथा रघुवरदास रचित 'तुलसी चरित' में तुलसीदास जी का जन्म संवत् 1554 वि. (सन् 1497 ई.) दिया गया है।" इस संबंध में अधोलिखित दोहा भी प्रसिद्ध है-

पंद्रह सौ चौवन बिसै, कारलिंदी के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धर्यौ सरीर॥

'शिवसिंह सरोज' में तुलसीदास का जन्म संवत् 1583 वि. (सन् 1526 ई.) माना गया है। पं. रामगुलाम द्विवेदी एवं प्रसिद्ध भाषाविद् ग्रियर्सन मानते हैं कि इनका जन्म संवत् 1589 वि. (सन् 1532 ई.) है। इस रूप में, निष्कर्षतः जनश्रुतियों एवं सर्वमान्य तथ्यों के अनुसार तुलसीदास का जन्म संवत् 1589 वि. (सन् 1532 ई.) स्वीकार किया जाता है।

बोध प्रश्न

- तुलसीदास की जन्मतिथि के बारे में क्या मान्यताएँ प्रचलित हैं?

जन्मस्थान

तुलसीदास के जन्म संवत् की ही भाँति उनके जन्मस्थान को लेकर भी विद्वानों में पर्याप्त

मतभेद है। 'तुलसी चरित' में राजापुर को तुलसी का जन्म स्थान माना गया है। यह उत्तर प्रदेश के बाँदा जनपद का एक गाँव (ग्राम) है। तुलसीदास द्वारा रचित पंक्ति "मैं पुनि निज गुरु सन सुनि, कथा सो सूकरखेत" के आधार पर कुछ लोग इनका जन्मस्थान एटा जिले के सोरो नामक स्थान को मानते हैं। इसके विपरीत, कुछ विद्वान आजमगढ़ के 'सूकरखेत' को तुलसीदास का जन्मस्थान मानते हैं और तर्क देते हैं कि 'सूकरखेत' को भ्रमवश 'सोरो' मान लिया गया है। उपर्युक्त इन तीनों मतों में राजापुर को ही तुलसीदास के जन्मस्थल होने की मान्यता सर्वाधिक है।

बोध प्रश्न

- तुलसी के जन्मस्थान के रूप में किस स्थान को सर्वाधिक मान्यता प्राप्त है?

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

गोस्वामी तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। इनके जन्म के समय इनका परिवार गहरे अर्थ संकट से गुजर रहा था। जनश्रुतियों के आधार पर माना जाता है कि तुलसीदास के अभुक्तमूल अशुभ नक्षत्र में पैदा होने के कारण इनके माता-पिता ने बाल्यावस्था में ही इनका परित्याग कर दिया था। तुलसीदास 'कवितावली' में स्वयं इसका उल्लेख करते हैं -

मातु-पिता जग जायि तज्यो, विधिहूँ न लिखी कछु भाल भलाई।

इस रूप में स्पष्ट है कि इनका आरंभिक जीवन अत्याधिक कष्टमय था। माता-पिता द्वारा त्याग दिए जाने के बाद आरंभ में इनका पालन-पोषण मुनिया नामक दासी ने किया, किंतु अधिक समय तक वह इनका पालन-पोषण नहीं कर सकी। जनश्रुतियों के अनुसार तुलसीदास मुनिया दासी के श्रीधाम गमन करने के बाद भटकते हुए किसी प्रकार बाबा नरहरिदास के पास पहुँचते हैं। बाबा इसने इनके बारे में जानते हैं। बाबा इन्हें अनाथ जानकार अपने आश्रय में रख लेते हैं। इस प्रकार तुलसीदास के बाबा नरहरिदास के संपर्क में आते हैं। वही ज्ञान और भक्ति की शिक्षा प्राप्त करते हैं। जनश्रुतियों के अनुसार तुलसीदास ने पहली बार रामकथा भी बाबा नरहरिदास से ही सुनी थी। तुलसीदास बाबा नरहरिदास के बारे में 'मानस' में गुरु वंदना करने के क्रम में लिखते हैं-

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।

बाद में तुलसीदासजी ने काशी में परम विद्वान महात्मा शेष सनातन जी से वेद-वेदांग,

दर्शन, इतिहास, पुराण आदि का ज्ञान प्राप्त किया।

विवाह, वैराग्य और मृत्यु

तुलसीदास का विवाह दीनबंधु पाठक की पुत्री रत्नावली के साथ हुआ था। तुलसीदास अपनी पत्नी से अगाध प्रेम करते थे। जनश्रुतियों के अनुसार एक दिन उनकी पत्नी मायके चली गईं और जब इनसे पत्नी का विछोह सहा न गया, वह आँधी-तूफान का सामना करते हुए आधी रात को ससुराल पहुँच गए, किंतु इस तरह तुलसीदास का आधी रात को ससुराल पहुँचना इनकी पत्नी को अच्छा नहीं लगा। रत्नावली ने लोक-लाज और मर्यादा के कारण बहुत ही शर्मिंदगी का अनुभव किया और तुलसीदास के इस कृत्य की कड़ी भर्त्सना की। रत्नावली ने इनकी भर्त्सना करते हुए कहा -

लाज न आवत आपको, दौरे आयउ साथ।
धिक-धिक ऐसे प्रेम को, कहाँ कहौं मैं नाथ॥
अस्थि चर्म मय देह मम, तामें ऐसी प्रीती।
तैसी जो श्रीराम महँ, होती न तौ भवभीति॥

विद्वानों का मानना है कि पत्नी के द्वारा इस प्रकार तिरस्कृत किए जाने के पर तुलसीदास को भौतिक वैराग्य हुआ और वे प्रभु राम की भक्ति की ओर उन्मुख हो जाते हैं। भगवान राम की भक्ति की ओर उन्मुख होने के बाद तुलसीदास घर त्यागकर कुछ दिन काशी में रहे। इसके बाद अयोध्या चले गए। बहुत दिनों तक ये चित्रकूट में भी रहे। जनश्रुतियों के अनुसार यहीं चित्रकूट में ही उनको राम लक्ष्मण के दर्शन भी हुए। इस संबंध में यह दोहा प्रसिद्ध है-

चित्रकूट के घाट पर, भई संतन की भीर।
तुलसीदास चंदन घिसे, तिलक करे रघुवीर॥

प्रभु की भक्ति में लीन तुलसीदास अंत में काशी लौट आते हैं और अपने जीवन का अधिकांश समय यहीं बिताते हैं। काशी में ही ये अपनी अंतिम कृति 'विनय पत्रिका' रचते हैं। तुलसीदास काशी में ही संवत् 1680 (सन् 1623 ई.) में अपना शरीर त्यागकर श्रीपुर धाम गमन कर जाते हैं। इस संबंध में निम्नलिखित दोहा को उक्ति के रूप में प्रयोग किया जाता है-

संवत सोरह सै असी, असी गंग के तीर।
श्रावण कृष्णा तीज शनि, तुलसी तज्यौ शरीर। ।

तुलसीदास की मृत्यु के संबंध प्रसिद्ध इस दोहे में 'श्रावण कृष्णा तीज शनि' के स्थान पर

कहीं-कहीं 'श्रावण शुक्ला सप्तमी' का भी प्रयोग देखने को मिलता है।

बोध प्रश्न

- तुलसीदास राम भक्ति की ओर उन्मुख कैसे हुए?

7.3.2 रचना यात्रा

तुलसीदास : तत्कालीन समाज और उनका काव्य

तुलसीदास का साहित्य सृजन भौतिक वैराग्य होने पर गृह त्याग कर काशी निवास करने और राम की भक्ति की ओर उन्मुख होने के बाद शुरू होता है। यहाँ ध्यान देने योग्य है कि काशी में ही इन्होंने वेद-वेदांगों, उपनिषदों, इतिहास और दर्शन की शिक्षा शेष सनातन जी से ग्रहण की थी।

तुलसीदास लोकचेता और लोकनायक हैं और उनकी रचना यात्रा लोकहितकारी एवं सर्वकालिक धरोहर है। वह अपनी रचनाओं में लोक का ध्यान रखते हैं और राम की भक्ति में की गई रचनाओं में लोक के हित की कविताएँ और स्वस्थ समाज की कल्पना करते हैं। तुलसीदास संस्कृत, प्राकृत, अवधी और ब्रज आदि भाषाओं में निष्णात थे, लेकिन वह कविता लोक की भाषा में करते हैं। माना जाता है कि तुलसीदास ऐसा भगवान शंकर के आदेश पर और पूर्व में प्राकृत-अपभ्रंश भाषा में रचे गए ग्रंथों, कथाओं या कविताओं से प्रेरणा पाकर करते हैं। लोकभाषा में की गई कविताओं और रामकथा के बल पर ही तुलसीदास राम को पूजा-अलमारी से निकालकर उन्हें लोक का बना पाते हैं, लोकचेता, मर्यादापुरुष और लोकनायक के रूप में स्थापित कर पाते हैं। ऐसा नहीं है कि तत्कालीन समय में तुलसी के लिए ऐसा करना आसान था और उनके समकालीनों ने उन्हें और उनकी भाषा को सहज ही स्वीकार कर लिया था; उन्होंने इसके लिए अपने समय और समकालिकों के विरोध का भी सामना किया। वह इस विरोध का विनम्र उत्तर भी देते हैं-

कवित विवेक एक नहिं मोरे। सत्य कहउँ लिखि कागद कोरे॥
सब गुन रहित कुकबि कृत बानी। राम नाम जस अंकित जानी॥
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुनग्राही॥

काव्य के उद्देश्य के संबंध में तुलसीदास का दृष्टिकोण पूरी तरह समाज के लोक कल्याण का था। इनके काव्य का आदर्श जनमानस के समक्ष सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन का उत्तम आदर्श रखना था। इनकी कविताओं में लोक कल्याण की पवित्र भावनाएँ, भक्ति-भावना,

सामाजिक यथार्थ व आदर्श, धार्मिक समन्वय, दासता से मुक्ति एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना जैसे उत्कृष्ट विचारों की घोषणा होती है। इनके विचार से वही कीर्ति, कविता और संपत्ति उत्तम है जो गंगा के समान सबका हित करने वाली हो। इस संबंध में वह लिखते हैं -

कीरति भनति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सबकर हित कोई॥

तुलसीदास भारतीय समाज और संस्कृति के जहाँ एक ओर सजग उन्नायक हैं, वहीं दूसरी ओर रूढ़ियों और बंधनों को तोड़ने और काटने वाले सुधारक भी हैं। उन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त विसंगतियों, कुरीतियों, ऊँच-नीच, छुआछूत जाति-पाति के भेदभाव को दूर करने एवं एक स्वस्थ समाज की स्थापना के लिए कविताएँ की। इस संबंध में वह राम के शबरी से भेंट और उसकी भक्ति के बारे में लिखते हैं-

केहि विधि अस्तुति करौ तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़मति भारी॥
कह रघुपति सुनु भामिनी बाता। मानउँ एक भगति कर नाता॥
जाति पाति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई॥
भगति हीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा॥

तुलसीदास का समय मुगल काल था। उस समय राजा अपनी प्रजाओं पर राजकोष के लिए विभिन्न प्रकार के कर लगा रहे थे। तुलसी का मानना था कि राजा को कर उचित ढंग से लगाना चाहिए। इसके लिए वह 'मानस' में ही राम के माध्यम से आयकर नीति का उल्लेख करते हैं -

बरसत हरसत सब लखें, करसत लखे न कोय।
तुलसी प्रजा सुभाग से, भूप भानु सो होय॥
मणि-माणिक महंगे किए, सहजे तृण, जल, नाज।
तुलसी सोइ जानिए राम गरीब नवाज॥

तुलसीदास ने अपनी कविताओं में सामाजिक यथार्थ प्रस्तुत किया है। वह राम को राजा के रूप में नहीं, बल्कि उन्हें मर्यादा पुरुष के रूप में प्रस्तुत करते हैं। तुलसी के युग में राजा का प्रजा के प्रति जो अत्याचारी व्यवहार था, उसे वह राम के माध्यम से तोड़ते हैं। उनका मानना है कि राजा को निज स्वार्थ को त्याग कर प्रजा के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। परिवार और सगे संबंधियों से ऊपर राज्य का सम्मान करना चाहिए क्योंकि जो राजा प्रजा के प्रति ईमानदार नहीं है, उसका कभी भला नहीं हो सकता। वह कहते हैं-

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृपु अवसि नरक अधिकारी॥

यद्यपि तुलसीदास स्वयं कहते हैं कि वह स्वांतःसुखाय की भावना से काव्य की रचना कर रहे हैं, लेकिन उन्हें केवल इसी सीमा में देखना गलत होगा। उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि वह लोकचेता और लोकनायक थे, जो लोक जागृति के लिए, उसके कल्याण के लिए अपने इष्ट राम का सहारा लेता है और लोक को राम से परिचित कराता है।

बोध प्रश्न

- काव्य के संबंध में तुलसी की क्या दृष्टि थी?
- तुलसी का राम कौन हैं?
- तुलसी को लोकनायक क्यों कहा जाता है?

तुलसीदास की भाषा

तुलसीदास संस्कृत, प्राकृत, अवधी और ब्रज में निष्णात थे, लेकिन रामकथा के लिए वह लोकभाषा अवधी और ब्रज को ही चुनते हैं। यद्यपि शास्त्र को ध्यान में रखते हुए वह जगह-जगह पर सुविचारित ढंग से संस्कृत का प्रयोग भी करते हैं। मान्यता है कि ऐसा करने की प्रेरणा और बल उन्हें प्राकृत-अपभ्रंश की लोकभाषा परंपरा से ही मिली थी। वह यह जानते थे कि लोकभाषा में राम काव्य रचने पर उन्हें संस्कृत भाषा प्रेमी दोष देंगे, फिर भी उन्हें विश्वास था कि रामकथा को लोकभाषा में ही लिखने से राम लोक के होंगे। वह कहते हैं-

भनिति मोरि सब गुन रहित बिस्व बिदित गुन एक।
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति जिन्ह कें बिमल बिबेक॥
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी। राम कथा जग मंगल करनी॥

तुलसीदास के अध्येता उनकी भाषा को श्रेष्ठ मानते हैं। विद्वानों का मानना है कि उनका शब्द भंडार अत्यंत विशाल है। उन्होंने अपने समय की प्रचलित अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं में समान अधिकार से काव्य रचना की है। तुलसी की भाषा के संबंध में वियोगीहरि का मत है, “भाषा के ऊपर गोस्वामी जी का पूरा अधिकार था। वे भाषा के पीछे-पीछे नहीं चलते थे, वरन् भाषाएँ उनका अनुकरण किया करती थीं।”

शैली

तुलसी ने जिन शैलियों में काव्य रचना की है, वे अधोलिखित हैं -

1. भाटों की कवित्त-सवैया शैली

2. रहीम की बरवै शैली

3. जायसी की दोहा-चौपाई शैली

4. सूर का गेय पद- गीतिकाव्य शैली

5. वीरगाथाकाल की छप्पय शैली

तुलसीदास की अलंकार योजना में अनुप्रास, रूपक, उत्प्रेक्षा का सहज प्रयोग है। छंदों में दोहा और चौपाई का प्रयोग विशिष्ट है तथा रस के संबंध में वह शृंगार, करुण रस के साथ आवश्यकतानुसार सभी रसों का प्रयोग करते हैं।

7.3.3 रचनाओं का परिचय

माना जाता है कि तुलसीदास ने बहुत-सी रचनाएँ की, लेकिन विद्वान प्रामाणिक तौर पर सिर्फ 12 कृतियों को ही तुलसीदास की कृतियों के रूप में स्वीकारते हैं। इन 12 ग्रंथों को भाषा के आधार पर समान्यतः दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

(i) अवधी भाषा में रचित कृतियाँ -

1. रामचरितमानस
2. रामलला नहछु
3. बरवै रामायण
4. पार्वती मंगल
5. जानकी मंगल
6. रामाज्ञा प्रश्न

(ii) ब्रज भाषा में रचित कृतियाँ -

7. गीतावली
8. दोहावली
9. विनय पत्रिका
10. कृष्ण गीतावली
11. कवितावली
12. वैराग्य संदीपनी

1. रामचरितमानस - अवधी भाषा में रचित इस ग्रंथ को हिंदी साहित्य एवं लोक में महाकाव्य का स्थान प्राप्त है। इसका उल्लेख विश्व साहित्य के प्रमुख ग्रंथों में किया जाता है। इसमें

तुलसीदास जी ने मर्यादापुरुषोत्तम भगवान राम के चरित्र का व्यापक वर्णन किया है। इसके छंद विधान में चौपाई, दोहा, सोरठा, रोला, छप्पय, हरिगीतिका, त्रिभंगी, अनुष्टुम, इंद्रवज्रा, त्रोटक और भुजंगप्रयात शामिल हैं। इन छंद विधानों में उन्होंने शास्त्रीय नियमों को न अपनाकर व्यवहार सिद्ध प्रयोगों को अपनाया है, इसलिए वह इनका कड़ाई से पालन नहीं करते हैं। रामचरितमानस को कुल सात कांडों में वर्गीकृत किया किया गया - बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किन्धाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड, उत्तरकांड।

कुछ विद्वान मानते हैं कि तुलसीदास ने मूलतः बालकांड से लेकर लंकाकांड तक ही लिखा है। उत्तरकांड का प्रसंग बाद में क्षेपक के रूप में जोड़ा गया है, किंतु अधिकांश विद्वान इसका खंडन करते हैं।

'रामचरितमानस' के माध्यम से तुलसीदास ने दिशाहीन भारतीय समाज को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ऐसा जीवनादर्श मार्ग दिखाया जो वास्तविक अर्थ में संसार के प्रत्येक मनुष्य और समाज के लिए आदर्श हो सकता है। रामचरितमानस ही वह ग्रंथ है, जो राम को लोक का बनाता है। तुलसीदास ने इसे 2 वर्ष 7 महीने और 26 दिन में पूरा किया था और इसके बारे में मान्यता है कि सबसे पहले तुलसीदास ने इसे रसखान को सुनाया था।

बोध प्रश्न

- 'रामचरितमानस' के माध्यम से तुलसी क्या प्रतिपादित करना चाहते हैं?

2. रामलला नहछु - इसके बारे में मान्यता है कि यह तुलसीदास की प्रारंभिक रचनाओं में से एक है। यह राम का नहछु - विवाह के अवसर पर महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले गीत हैं। इसमें विवाह के अवसर पर आई हुई प्रजाजनों की स्त्रियों के हाव-भाव व कटाक्ष का सजीव वर्णन है। तुलसीदास ने इसकी रचना लोकगीत के रूप में मांगलिक अवसरों पर स्त्रियों द्वारा गाए जाने के लिए 'सोहर' शैली में की थी। यह प्रबंधकाव्य व गेय शैली में होने के कारण लोकजीवन का सशक्त व सजीव चित्रण करती है।

3. बरवै रामायण - इसमें 69 बरवै छंदों एवं सात कांडों के माध्यम से 'रामचरितमानस' की पूरी कथा वर्णित है। यह रीतिकाव्य प्रेमियों के लिए है। माना जाता है कि तुलसीदास ने रहीम के अनुरोध पर इस मुक्तक काव्य को रचा था।

4. पार्वती मंगल - कुल 164 (148 अरुण या मंगल छंद और 16 हरिगीतिका छंद) छंदों के इस ग्रंथ में शिव-पार्वती के विवाह का वर्णन है। काव्य सौंदर्य और प्रौढ़ता की दृष्टि से यह एक श्रेष्ठ

रचना मानी जाती है। यह मंगल-काव्य है, जिसे मांगलिक अवसरों पर स्त्रियों द्वारा गाया जाता है। गेय पद होने के कारण इसमें संगीतत्व का गुण है। इसका उद्देश्य 'शिव-पार्वती विवाह' का वर्णन करना है। इस कृति का आधार कालिदास का कुमारसंभव है।

5. जानकी मंगल - यह 192 मंगल छंदों एवं 24 हरिगीतिका छंदों सहित कुल 216 छंदों में राम-सीता के विवाह पर लिखा ग्रंथ है। ये छंद गेय हैं, जिन्हें मांगलिक अवसरों पर महिलाएँ गाती हैं। इसमें तुलसीदास ने राम और सीता के विवाहोत्सव का वर्णन मंगल छंदों के माध्यम से किया है। मान्यता है कि रामलला नहछु, पार्वती मंगल और जानकी मंगल इन तीनों ग्रंथों की रचना तुलसीदास ने मिथिला यात्रा पर की थी।

6. रामाज्ञा प्रश्न - सात सर्गों में विभाजित रामाज्ञा प्रश्न के प्रत्येक सर्ग में सात सप्तक और प्रत्येक सप्तक में 7 दोहे हैं। इस प्रकार इसमें कुल 343 दोहे हैं। यह अवधी भाषा में तुलसीदास का मुक्तक काव्य है। इसकी रचना शुभ-अशुभ के विचार के लिए की गई थी। इस रूप में यह मूलतः एक ज्योतिष ग्रंथ है, जिसे तुलसीदास ने अपने मित्र गंगाराम ज्योतिष के आग्रह पर लिखा था। तुलसीदास ने इसमें शुभ-अशुभ शकुनों का विचार रामकथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

7. गीतावली - गीतिकाव्य शैली में रचित इस ग्रंथ में कुल 328 पद हैं। इसमें राम के चरित्र का वर्णन है। इस ग्रंथ का आरंभ राम के जन्मोत्सव से होता है। कथ्य के आधार पर इसे सात कांडों में विभाजित किया गया है। इसकी रचना गेय पदों में राग-रागिनियों में गाने के लिए की गई है। इसमें कुल 21 रागों का प्रयोग किया गया। बेनीमाधवदास प्रणीत 'मूल गोसाईं चरित' में इसे तुलसीदास की प्रथम कृति माना गया है।

8. दोहावली - इसकी रचना तुलसीदास ने नीति-विशारदों के लिए की थी। इसमें तुलसीदास की सूक्ति शैली देखने को मिलती है। इसमें दोहा छंदों के माध्यम से नीति, धर्म, भक्ति, प्रेम, राम महिमा, खलनिंदा, सज्जन प्रशंसा आदि विषय वर्णित किए गए हैं। इसमें कुल 573 दोहे हैं, जिनमें रामचरित मानस के 85 एवं रामाज्ञा प्रश्न के 35 दोहे भी हैं।

9. विनय पत्रिका - इसमें ब्रज भाषा में 279 विनय के पद हैं। यह तुलसी के आध्यात्मिक जीवन को परिलक्षित करती है। इसमें तुलसीदास का सर्वोत्कृष्ट भक्त रूप मुखरित हुआ है और वह दार्शनिक के रूप में भी दिखाई देते हैं। भक्त के रूप में तुलसीदास ने अपने ह्रदय की ग्लानि, दैन्य, विरक्ति, निराशा, कुंठा, पीड़ा, एकनिष्ठता और विश्वास का परिचय दिया है। इसी में तुलसी ने चित्रकूट में राम की भेंट हेतु राम का धन्यवाद ज्ञापन भी किया है। उन्होंने इसकी रचना राम के

दरबार में भेजने के लिए की थी, जिसका उद्देश्य कलियुग से मुक्ति प्राप्त करना था। इसको विभिन्न राग-रागनियों में गाने हेतु गेय पदों में रची गई है। इसमें कुल 21 रागों का प्रयोग हुआ है। विनय पत्रिका का प्रमुख रस 'शांत रस' है। विनय पत्रिका के संबंध में विद्वानों का मत है कि जिस प्रकार तुलसी के राम को जानने के लिए रामचरितमानस पढ़ना चाहिए, उसी प्रकार स्वयं तुलसी को जानने के लिए विनय पत्रिका पढ़नी चाहिए।

10. कृष्ण गीतावली - तुलसीदास ने इसकी रचना ब्रजभाषा में वृंदावन की यात्रा पर की थी। इसमें सूरदास की भ्रमरगीत शैली का पालन करते हुए तुलसीदास ने केवल 61 पदों में पूरी श्रीकृष्ण कथा मनोहारी ढंग से वर्णित की है।

11. कवितावली - तुलसी ने इसे चारण-भाटों को ध्यान में रखकर ब्रजभाषा में कवित्त और सवैया शैली में रचा था। इसमें रामकथा का 7 कांडों में वर्णन है। भावानुरूप भाषा ही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। इसमें राम के शौर्य का वर्णन एवं हनुमान द्वारा लंकादहन का वर्णन श्रेष्ठतम् है। वीर, रौद्र और भयानक रस इसके प्रधान रस हैं। कवितावली के उत्तरकांड में तत्कालीन समय में काशी में फैली महामारी का भी वर्णन किया गया है।

12. वैराग्य संदीपनी - इसमें ब्रजभाषा में कुल 62 छंद हैं। ये छंद तीन प्रकार के हैं- दोहा, सोरठा और चौपाई। यह रचना तीन भागों में वर्गीकृत है - पहले भाग में 'मंगलाचरण', दूसरे में 'संत महिमा वर्णन' और तीसरे में 'शांतिभाव वर्णन' है।

बोध प्रश्न

- तुलसी की कुछ प्रमुख रचनाओं के नाम बताइए।
- 'विनय पत्रिका' का प्रमुख रस क्या है?

7.3.4 हिंदी साहित्य में तुलसीदास का स्थान एवं महत्व

तुलसीदास हिंदी साहित्य की एक महान विभूति हैं। वह लोकभाषा के माध्यम से राम को लोक तक और लोक में ले जाते हैं। तुलसीदास लोकभाषा में कुछ रचने-गढ़ने का कार्य तब कर रहे थे, जब लोकभाषा का व्यवहार करने वालों के प्रति संस्कृत भाषियों की दृष्टि बहुत अच्छी नहीं थी। वह इसके लिए विरोध का भी सामना करते हैं। रामकथा के माध्यम से वह तत्कालीन समाज की बुराइयों को दूर करते हैं।

तुलसीदास का काव्य रस, भाषा, छंद, अलंकार, नाटकीयता, संवाद कौशल आदि सभी दृष्टियों से अद्वितीय है। इनके साहित्य में राम गुणगान, भक्ति-भाव, समन्वय, लोक कल्याण की

भावना आदि अनेक ऐसी विशेषताएँ मिलती हैं, जो इन्हें महाकवि के आसन पर प्रतिष्ठित करती हैं। माना जाता है कि हिंदी काव्य में प्रौढ़ता का युग तुलसीदास के साथ शुरू होता है। अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हिंदी साहित्य में इनके स्थान और महत्व को रेखांकित करते हुए कहते हैं :

कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला।

भिखारीदास इन्हें कवियों के सरदार के रूप में देखते हैं-

तुलसी गंग दुजौ भए सुकविन के सरदार।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल इनके बारे में कहते हैं, "तुलसीदासजी उत्तर भारत की समग्र जनता के हृदय में पूर्ण प्रेम-प्रतिष्ठा के साथ विराजमान हैं।" आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी तुलसी को 'लोकनायक', मानते हुए कहते हैं कि तुलसी का संपूर्ण काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है... उस युग में किसी को तुलसी के समान सूक्ष्मदर्शिनी और सारग्राहिणी दृष्टि नहीं मिली।" इस रूप में स्पष्ट है कि हिंदी साहित्य में तुलसी का स्थान अद्वितीय है।

7.4 पाठ सार

तुलसीदास हिंदी साहित्याकाश के देदिव्यमान नक्षत्र हैं। इनका जन्म संवत् 1589 वि. को उत्तर प्रदेश के बाँदा जनपद के राजापुर गाँव में हुआ था। अभुक्तमूल अशुभ नक्षत्र में पैदा होने के कारण इनके माता-पिता (हुलसी एवं आत्माराम दुबे) ने इनका परित्याग कर दिया था। इसके बाद इनका पालन-पोषण मुनिया नामक दासी ने किया। मुनिया दासी के गोलोकवासी होने के बाद बाबा नरहरिदास ने इनका पालन-पोषण किया और शिक्षा दीक्षा दी। इसके बाद काशी में इन्होंने बाबा शेष सनातन से वेद-वेदांग, उपनिषद, दर्शन, इतिहास आदि का ज्ञान प्राप्त किया। दांपत्य जीवन में प्रवेश करने के उपरांत पत्नी के द्वारा तिरस्कृत किए जाने से इन्हें भौतिक वैराग्य हुआ और ये प्रभु राम की भक्ति की ओर उन्मुख हो गए। इसके बाद इन्होंने भगवान की भक्ति में कभी काशी, कभी अयोध्या और कभी चित्रकूट निवास करते रहे, लेकिन जीवन का अधिकांश और अंतिम समय इन्होंने काशी में ही बिताया। तुलसीदास की भक्ति नवधा भक्ति या सेवक या दास की है। इसी अवधि में इन्होंने राम को आधार बनाकर लोकभाषा में काव्य रचा, जिसका तत्कालीन समय में विभिन्न कारणों से विरोध हुआ, किंतु लोक राम को स्वीकार करता है। इसका कारण लोक की भाषा ही है। वह संस्कृत, प्राकृत, अवधी और ब्रज में निष्णात हैं। तुलसीदास एक सुकवि होने के साथ ही लोकचेता और लोकनायक भी हैं। वह अपने समय के

समाज की बुराइयों को दूर करने के उपाय रामकथा को आधार बनाकर अपनी रचनाओं में ही बताते हैं। वह संवत् 1680 वि. को अपना नश्वर शरीर त्यागकर वैकुंठवासी हो जाते हैं।

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. तुलसीदास राम के अनन्य भक्त थे। उनकी भक्ति दास्य भाव की भक्ति थी।
2. तुलसीदास ने रामकथा को जन-जन तक पहुँचाने के लिए तत्कालीन लोक भाषा अवधी को अपनाया।
3. तुलसी के साहित्य में राम गुणगान, भक्ति-भाव, समन्वय, लोक कल्याण की भावना आदि अनेक ऐसी विशेषताएँ मिलती हैं, जो इन्हें महाकवि के आसन पर प्रतिष्ठित करती हैं।
4. तुलसीदास संस्कृत, प्राकृत, अवधी और ब्रज में निष्णात थे, लेकिन वह लोक की बात लोक की भाषा में करते हैं।
5. तुलसीदास लोकचेता हैं और उनकी साहित्य रचना यात्रा लोकहितकारी एवं सार्वकालिक धरोहर है। वे स्वांतःसुखाय के साथ ही लोक का कल्याण का रास्ता भी अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करते हैं।
6. तुलसी अपने समय के लोकनायक हैं। तत्कालीन समाज में व्याप्त मूढ़ता के निराकरण के लिए उन्होंने राम के मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरूप को प्रतिष्ठित किया।
7. तुलसीदास को लोकभाषा में कविता करने का बल प्राकृत-अपभ्रंश की लोक परंपरा से मिला।
8. हिंदी काव्य में प्रौढ़ता का युग तुलसीदास के शुरू होता है।

7.6 शब्द संपदा

1. असमानता	=	गैर बराबरी, विषमता
2. कटाक्ष	=	किसी के संदर्भ में कही जाने वाली व्यंग्योक्ति, ताना, तंज
3. कीर्ति	=	यश, प्रताप
4. ग्लानि	=	पश्चाताप, खेद, दुख
5. निष्णात	=	पारंगत, प्रवीण, दक्ष, कुशल निपुण
6. परित्याग	=	त्याग करना, छोड़ देना
7. प्रौढ़ता	=	प्रौढ़ होने का गुण या भाव

8. मंगलाचरण	=	कार्यारंभ के पूर्व की जाने वाली मंगल स्तुति, मांगलिक मंत्र, ग्रंथ के आरंभ में लिखा जाने वाला मांगलिक पद
9. लोकनायक	=	लोक का नायक, जन सामान्य का नेता
10. लोकभाषा	=	जन सामान्य की भाषा, लोक की भाषा
11. वैराग्य	=	सांसारिक बंधनों से विमुखता

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. तुलसीदास के जीवन से संबंधित प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डालिए।
2. तुलसीदास की रचना यात्रा को बताइए।
3. तुलसीदास की प्रमुख कृतियों पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. तुलसी की काव्य भाषा पर टिप्पणी लिखिए।
2. तुलसी की रामभक्ति पर टिप्पणी लिखिए।
3. हिंदी साहित्य में तुलसीदास के स्थान एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. बरवै रामायण की भाषा है- ( )

   (अ) अवधी (आ) संस्कृत (इ) ब्रज (ई) इनमें से कोई नहीं

2. तुलसीदास द्वारा रचित प्रामाणिक ग्रंथों की संख्या है- ( )

   (अ) 10 (आ) 12 (इ) 13 (ई) 6

3. तुलसीदास ने शुभ-अशुभ शकुनों पर विचार के लिए रचा है- ( )

   (अ) रामचरितमानस (आ) कवितावली (इ) दोहावली (ई) रामाज्ञा प्रश्न

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

1. रामचरितमानस .... भाषा में है।

2. तुलसीदास ने दोहावली की रचना .... के लिए की थी।

3. पार्वती मंगल का आधार कालिदास कृत .... है।

4. कवितावली में रामकथा .... कांडों में वर्णित है।

5. 'विनय पत्रिका' का प्रमुख रस ...... है।

III. सुमेल कीजिए-

1. तुलसी के गुरु	(अ) ब्रजभाषा
2. तुलसी की भक्ति	(आ) नरहरिदास
3. गीतावली	(इ) दास्य

7.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र और हरदयाल

2. तुलसीदास : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

3. लोकवादी तुलसीदास : विश्वनाथ त्रिपाठी

4. कविता के पक्ष में : ऋषभदेव शर्मा

5. गोस्वामी तुलसीदास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल

इकाई 8 : अयोध्या में आनंद

रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 मूल पाठ : अयोध्या में आनंद

8.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

8.3.2 अध्येय कविता

8.3.3 विस्तृत व्याख्या

8.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

8.4 पाठ सार

8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

8.6 शब्द संपदा

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

8.8 पठनीय पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में भक्ति आंदोलन का स्थान महत्वपूर्ण है। यह वस्तुतः एक महत्वपूर्ण जन आंदोलन था। इसने तत्कालीन समय की विसंगतियों, असमानताओं, अनाचारों और रूढ़ियों को दूर कर समाज को ठीक दिशा में बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इसके लिए इस युग के कवियों ने भक्ति का मार्ग चुना और उसी भाव से रचे गए छंदों या काव्य के माध्यम से समाज को शिक्षित किया। यह आंदोलन मुख्यतः दो धाराओं में बँटा हुआ था - सगुण धारा और निर्गुण धारा। भक्ति आंदोलन की इन दो धाराओं की दो-दो उप-धाराएँ हैं। सगुण धारा में रामाश्रयी और कृष्णाश्रयी शाखाएँ हैं तथा निर्गुण धारा में ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी शाखाएँ हैं। भक्ति आंदोलन की दोनों धाराओं और चारों शाखाओं के सभी कवियों का उद्देश्य समाज को उसकी जड़ता, रूढ़ि और बंधन से मुक्त कराना था।

भक्ति आंदोलन की सगुण धारा की रामाश्रयी शाखा का प्रवर्तन तुलसीदास ने किया और वह इस शाखा के सिरमौर और सबसे सशक्त हस्ताक्षर हैं। राम भक्ति के माध्यम से तुलसीदास ने

समाज को जगाने का काम किया है। वह राम को लोकनायक के रूप में स्थापित करते हैं। तुलसीदास मानते हैं कि समाज की मुक्ति का मार्ग राम का जीवन है। वे राम के अनन्य भक्त हैं। उन्होंने रामकथा के माध्यम से नीति, प्रेम, सद्भाव, भक्ति, भाईचारा, कर्तव्य, धर्म, राजा-प्रजा आदि के बारे में तत्कालीन समाज को चेताते हैं तथा कुरीतियों, असमानताओं, अराजक व्यवस्थाओं को चुनौती देते हैं। तुलसी अपने इष्ट प्रभु राम के जन्म से लेकर संपूर्ण जीवन की घटनाओं को अपने काव्य के माध्यम से लोकभाषा में प्रस्तुत करते हैं, जिनका आज भी भारतीय समाज में विभिन्न अवसरों पर वाचन, गायन और श्रवण किया जाता है।

8.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- तुलसीदास की रामभक्ति से परिचित हो सकेंगे।
- अध्येय काव्यांश 'अयोध्या में आनंद' की सप्रसंग व्याख्या कर सकेंगे।
- राम के विवाह के उपरांत के हर्षोल्लास को जान सकेंगे।
- तुलसी की भक्ति-भावना और काव्य-भाषा के बारे में जान सकेंगे
- लोक में राम की लोकप्रियता और राम के प्रति समाज के परस्पर प्रेम को जान सकेंगे।

8.3 मूल पाठ : अयोध्या में आनंद

8.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

भगवान राम के अनन्य भक्त तुलसीदास राम को लोक में लाने, उन्हें लोक का बनाने के लिए और स्वांतःसुखाय के लिए लोकभाषा में 'रामचरितमानस' की रचना करते हैं और प्रभु श्रीराम के जीवन की घटनाओं के कथ्य को आधार बनाकर इसे 7 कांडों में विभाजित करते हैं, राम के संपूर्ण जीवन की उन घटनाओं, जो उन्हें लोक का राम बनती हैं, को बड़े ही मनोहारी ढंग से वर्णित करते हैं। 'अयोध्या में आनंद' कविता 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकांड' से उद्धृत है। राम की शिक्षा-दीक्षा पूरी हो चुकी है तथा राम का राजा जनक की पुत्री जानकी से विवाह संपन्न हो चुका है और वह विवाहोत्सवोपरांत अयोध्या आ चुके हैं। यहीं से अयोध्याकांड आरंभ होता है और यहीं से अध्येय कविता भी।

तुलसी के राम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष; इन चारों फलों को देने वाले हैं, इसलिए वह दास्य भक्ति-भाव से राम की वंदना या पूजा करते हैं। इनके राम लोकनायक हैं, लोक का कल्याण करने वाले हैं। इस कारण विवाह के बाद उनके अयोध्या में आने से वहाँ नित मंगलकार्य

हो रहे हैं। पुरवासी मुदित और भाव-विभोर हैं, बादल आनंददाई सुखद वर्षा कर रहे हैं और अब सभी लोग राम को युवराज के रूप में देखना चाहते हैं।

8.3.2 अध्येय कविता

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि॥
जब तें रामु ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए॥
भुवन चारिदस भूधर भारी। सुकृत मेघ बरषहि सुख बारी॥
रिधि सिधि संपति नदीं सुहाई। उमगि अवध अंबुधि कहुँ आई॥
मनिगन पुर नर नारि सुजाती। सुचि अमोल सुंदर सब भाँती॥
कहि न जाइ कछु नगर बिभूती। जनु एतनिअ बिरंचि करतूती॥
सब बिधि सब पुर लोग सुखारी। रामचंद मुख चंदु निहारी॥
मुदित मातु सब सखीं सहेली। फलित बिलोकि मनोरथ बेली॥
राम रूपु गुनसीलु सुभाऊ। प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ॥
सब कें उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु।
आप अछत जुबराज पद रामहि देउ नरेसु॥1॥

निर्देश : इस कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

8.3.3 विस्तृत व्याख्या

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि॥

शब्दार्थ : चरन = चरण। सरोज = कमल। रज = धूल। मनु = मन। मुकुरु = दर्पण। सुधारि = साफ करके। बरनउँ = वर्णन करना। बिमल = निर्मल। जसु = यश, कीर्ति। दायकु = देने वाला। फल चारि = चारों फलों को (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष शास्त्र सम्मत चार फल या पुरुषार्थ हैं, जिन्हें प्राप्त करना मानव का ध्येय होना चाहिए)।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश तुलसीदास की कविता 'अयोध्या में आनंद' से उद्धृत है।

प्रसंग : सुकवि सरदार तुलसीदास प्रभु राम की वंदना और उनके यश का गान करते हैं। वे मानते हैं कि राम गरीबनवाज हैं और संसार का कल्याण राम की भक्ति और उनके मार्ग पर चलकर ही

हो सकता है। इस पद में वह राम के निर्मल यश का वर्णन करते हुए कहते हैं-

व्याख्या : श्रीगुरु जी के चरण कमलों की रज से मैं अपने मन रूपी दर्पण को साफ करके श्रीरघुनाथ जी के उस निर्मल (दोषरहित) यश का वर्णन करता हूँ, जो चारों फलों - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्रदान करने वाला है। तुलसी मानते हैं कि कल्याण चाहे वह लोक का हो या कविता का हो, वह राम की भक्ति व अनुराग और उनके प्रताप से ही हो सकता है। इसीलिए तुलसी अपने और लोक के कल्याण के लिए लोक उन्नायक प्रभु राम के निर्मल यश का गान करते हैं।

काव्यगत विशेषता

1. यह दोहा छंद है, जो मात्रिक छंद का एक प्रकार है। यह अर्ध सम मात्रिक छंद है। दो पंक्तियों के इस छंद में चार चरण होते हैं। इसके पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ और दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अंत में एक गुरु और एक लघु मात्रा का होना आवश्यक है।
2. इसमें भगवान श्रीराम की महिमा एवं प्रताप का वर्णन है।
3. इस दोहे का उल्लेख तुलसीदास हनुमान चालीसा में भी करते हैं।
4. 'निज मनु मुकुरु सुधारि' - अनुप्रास एवं रूपक अलंकार

बोध प्रश्न

- राम के पावन यश का गान करने से कौन से चार फल मिलते हैं?
- तुलसीदास श्रीगुरु के चरण सरोज रज से क्या साफ करने की बात करते हैं?
- 'बरनउँ रघुबर बिमल जसु' का क्या अर्थ है?

जब तें रामु ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए॥
भुवन चारिदस भूधर भारी। सुकृत मेघ बरषहि सुख बारी॥

शब्दार्थ : ब्याहि = विवाह। नित = रोज, प्रत्येक दिन। नव = नया, नवीन। मोद = हर्ष, आनंद। बधाए = बाजा बाजना। भुवन = लोक। चारिदस = चौदह। भूधर = पर्वत, पहाड़। सुकृत = पुण्य, सत्कर्म, शुभ कार्य, पवित्र कर्म। मेघ = बादल। बरषहि = बरसना, वर्षा होना।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ तुलसीदास की कविता 'अयोध्या में आनंद' शीर्षक से उद्धृत हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत काव्य पंक्तियों के माध्यम से तुलसीदास प्रभु श्रीराम के विवाहोपरांत अयोध्या की स्थिति, उसके उत्सवधर्मी समाज और वातावरण के बारे में बता रहे हैं। वह राम के विवाह के

प्रभाव को रेखांकित करते हुए कहते हैं कि -

व्याख्या : जब से भगवान रामचंद्रजी विवाह करके घर आए हैं, तब से अयोध्या में नित्य नए मंगल (कार्य) हो रहे हैं और आनंद के बधावे बज रहे हैं। भगवान राम के विवाह के हर्ष का यह प्रभाव केवल अयोध्यावासियों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव प्रकृति और वातावरण पर भी है। गोस्वामी जी आगे कहते हैं कि चौदहों लोक रूपी विशाल और विस्तृत पर्वतों पर पुण्य रूपी मेघ सुख रूपी जल की वर्षा कर रहे हैं। इस रूप में, राम-जानकी विवाह से अयोध्यावासियों के साथ ही प्रकृति भी हर्षित और मुदित है।

काव्यगत विशेषता

1. यह चौपाई छंद है, जो मात्रिक सम छंद का एक भेद है। यह प्राकृत और अपभ्रंश के 16 मात्रा के वर्णनात्मक छंदों के आधार पर विकसित हुआ। इसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ तथा अंत में गुरु होता है।
2. इसमें तुलसीदास श्रीराम के विवाह से हर्षित अयोध्यावासियों के साथ मुदित प्रकृति के बारे में बता रहें हैं।
3. नित नव मंगल मोद बधाए, भुवन चारिदस भूधर भारी- अनुप्रास एवं रूपक अलंकार।

बोध प्रश्न

- 'नित नव मंगल' कहाँ हो रहा है?
- राम विवाह के बाद कहाँ आते हैं?
- विशाल और विस्तृत पर्वतों को किस रूप में वर्णित किया गया है?
- सुख रूपी जल की वर्षा कौन कर रहा है?

रिधि सिधि संपति नदीं सुहाई। उमगि अवध अंबुधि कहुँ आई॥
मनिगन पुर नर नारि सुजाती। सुचि अमोल सुंदर सब भाँती॥

शब्दार्थ : रिधि सिधि = समृद्धि और वैभव, गणेश की दोनों पत्नियों के नाम। संपति = संपत्ति, धन-धान्य। सुहाई = सुहावनी, मनभावन, मन को भाने वाली। उमगि = उमड़ कर। अंबुधि = सागर, समुद्र। मनिगन = मणियों की तरह, रत्नों की तरह। सुजाती = अच्छी जाति की। शुभ्र वर्ण की। सुचि = पवित्र। अमोल = अमूल्य। भाँती = के प्रकार से, की तरह से।

संदर्भ : उपर्युक्त उद्धरण तुलसीदास की कविता 'अयोध्या में आनंद' से उद्धरित है।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश में तुलसी विवाहोपरांत घर आने पर अयोध्या की स्थिति को बता रहे हैं।

राम की महिमा और प्रताप का बखान (वर्णन) करते हुए तुलसी बताते हैं कि अवध में सब मंगल है और बादल भी सुख रूपी वर्षा कर रहा है। यह सब राम की सुकीर्ति के कारण है। यहाँ अयोध्या में किसी के भी चेहरे पर मलिनता या दुख का भाव नहीं है, इसलिए सब सुंदर हैं, सुखी हैं। वह कहते हैं कि-

व्याख्या : माता जानकी संग विवाहोपरांत घर आने के बाद से अयोध्या की समृद्धि और वैभव में नित विकास हो रहा है। ऋद्धि-सिद्धि (समृद्धि व वैभव) और संपत्ति या धन-धान्य रूपी सुहावनी/मनभावन नदियाँ उमड़-उमड़ कर अयोध्या रूपी समुद्र में आ मिलीं हैं।

गोस्वामी जी पुरवासियों के बारे में कहते हैं कि नगर के स्त्री-पुरुष शुभ्र वर्ण या अच्छी जाति के मणि समूहों के समान हैं, जो सभी प्रकार से पवित्र, अमूल्य और सुंदर हैं।

काव्यगत विशेषता

1. चौपाई छंद।
2. 'मनिगन पुर नर नारि सुजाती। सुचि अमोल सुंदर सब भाँती' - अनुप्रास और रूपक अलंकार।
3. इसमें तुलसी अयोध्या की ऋद्धी-सिद्धि को बताते हुए और पुरवासियों को अच्छी जाति की मणियों के रूप में बताते हैं।

बोध प्रश्न

- कौन-सी नदियाँ उमड़-उमड़ कर अयोध्या रूपी सागर में आ मिली हैं?
- ऋद्धि-सिद्धि किस रूप में वर्णित हैं?
- पुरवासी किस रूप में वर्णित हैं?

सभी प्रकार से पवित्र, अमूल्य और सुंदर कौन हैं?

कहि न जाइ कछु नगर बिभूती। जनु एतनिअ बिरंचि करतूती॥
सब बिधि सब पुर लोग सुखारी। रामचंद मुख चंदु निहारी॥

शब्दार्थ : बिभूती = ऐश्वर्य, वैभव। बिरंचि = रचने वाला, सृजनकर्ता, सर्जक, विश्वकर्मा, ब्रह्मा जी। करतूती = कारीगरी, कला, हुनर, कौशल। सुखारी = सुखी। मुख = चेहरा। चंदु = चंद्रमा। निहारी = देखकर, निहार कर।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश गोस्वामी तुलसीदास की कविता 'अवध में आनंद' से उद्धरित है।

प्रसंग : उपर्युक्त पंक्तियों में तुलसीदास जी उत्सवित अयोध्या के वैभव का वर्णन करते हुए पुरवासियों की स्थिति और राम की महिमा के बारे में बता रहे हैं। तुलसीदास कहते हैं कि -

व्याख्या : भगवान राम के विवाहोपरांत जानकी संग घर आने पर चारों ओर उत्सव हो रहे हैं। यह उत्सव लौकिक ही नहीं पारलौकिक भी है, इसमें सिर्फ मानव ही नहीं, अपितु प्रकृति भी शामिल है। इस उत्सव में उत्सवित सज्जित अयोध्या नगरी के ऐश्वर्य ऐसा है कि उसका वर्णन ही नहीं किया जा सकता है। ऐसा जान पड़ता है, मानो ब्रह्मा जी ने अपनी पूरी कला इसी में लगा दी है। अर्थात इसे सजाने और बनाने में भगवान विश्वकर्मा ने अपने संपूर्ण कला-कौशल को प्रस्तुत कर दिया है। गोस्वामी जी आगे कहते हैं कि राम के मुखचंद्र की छटा देखकर सभी पुरवासी सब प्रकार से सुख की अनुभूति कर रहे हैं। पुरवासियों का यह सुख लौकिक ही नहीं पारलौकिक भी है।

काव्यगत विशेषता

1. यह एक चौपाई छंद है। इसकी विशेषताओं के बारे में ऊपर बताया जा चुका है। इसको जानने के लिए कृपया ऊपर देखें।
2. 'जनु एतनिअ बिरंचि करतूती' - उत्प्रेक्षा अलंकार
3. 'रामचंद मुख चंदु निहारी' – रूपक अलंकार

बोध प्रश्न

- किसका वर्णन नहीं किया जा सकता है?
- 'बिरंचि करतूती' का क्या अर्थ है?
- राम के मुखचंद को देखकर पुरवासी क्या कर रहे हैं?
- ब्रह्मा जी ने अयोध्या को सजाने और बनाने में क्या प्रस्तुत कर दिया है?

मुदित मातु सब सखीं सहेली। फलित बिलोकि मनोरथ बेली॥

राम रूपु गुनसीलु सुभाऊ। प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ॥

शब्दार्थ : मुदित = प्रसन्न, प्रफुल्लित, हर्षित, खुश, संतुष्ट, आनंदित। फलित = फलीभूत, वांछित परिणाम। बिलोकि = देखकर। मनोरथ = अभिलाषा, इच्छा, मनोकामना, लालसा, आकांक्षा। बेली = बेल, लता। रूपु = रूप। गुन = गुण। सीलु = शील। सुभाऊ = स्वभाव। प्रमुदित = आनंदित। राऊ = नरेश, राजा (यहाँ राजा दशरथ के लिए प्रयुक्त हुआ है)।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास कृत 'अयोध्या में आनंद' कविता से उद्धृत है।

प्रसंग : प्रस्तुत काव्य पंक्तियों के माध्यम से तुलसीदास राम के रूप का बखान कर रहे हैं। वह बताते हैं कि राम को देखकर पुरवासियों को लगता है कि उनकी मनोकामना पूर्ण हो गई है।

इसी प्रसंग को आगे बढ़ते हुए तुलसीदास कहते हैं कि-

व्याख्या : सब माताएँ और सखी-सहेलियाँ अपनी आकांक्षा रूपी बेल को फलित हुई या वांछित परिणाम प्राप्ति को देखकर हर्षित और प्रभुल्लित हो रही हैं। राजा दशरथ भी अपने सुत राम के रूप, गुण, शील और स्वभाव को देख व सुनकर अत्यधिक आनंदित और संतुष्ट हो रहे हैं।

काव्यगत विशेषता

1. यह एक चौपाई छंद है। इसकी विशेषताओं के बारे में ऊपर बताया जा चुका है। इसे जानने के लिए कृपया ऊपर देखें।
2. 'मुदित मातु सब सखीं सहेली' - अनुप्रास अलंकार
3. 'फलित बिलोकि मनोरथ बेली' - रूपक अलंकार

बोध प्रश्न

- सभी माताएँ और सखी-सहेलियाँ कैसी हैं?
- सभी माताओं और सखी-सहेलियों का क्या फलित हुआ है?
- राजा दशरथ अधिक आनंदित क्यों हैं?
- 'राऊ' का अर्थ बताते हुए बताइए कि यह किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

सब कें उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु।
आप अछत जुबराज पद रामहि देउ नरेसु॥

शब्दार्थ : उर = हृदय। अभिलाषु = अभिलाषा, इच्छा, कामना, आकांक्षा। अस = ऐसी। कहहिं = कहते हैं। मनाइ = मनाकर, प्रार्थना कर, रिझाकर। महेसु = भगवान शंकर। अछत = जीवन रहते, जीते जी। जुबराज = युवराज। नरेसु = राजा, नृप, महीप।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश तुलसीदास कृत 'अयोध्या में आनंद' कविता से उद्धृत है।

प्रसंग : तुलसीदास राम के विवाहोत्सवोपरांत उनके घर आने और नगर के सजने और मंगल उत्सव, प्रकृति द्वारा सुखद वर्षा करने का वर्णन करने और राम के रूप, गुण, शील और स्वभाव को देखकर पुरवासियों के मुदित और दशरथ के प्रमुदित होने को बताकर आगे कहते हैं कि -

व्याख्या : सबके हृदय में ऐसी अभिलाषा है और सब राम के आराध्य भगवान शंकर को रिझाकर/प्रसन्न कर और उन्हें मनाकर (प्रार्थना करके) कहते हैं कि राजा दशरथ को अपने जीते जी राम को युवराज पद दे देना चाहिए।

काव्यगत विशेषता

1. यह दोहा छंद है। इसकी विशेषताओं के बारे में ऊपर बताया जा चुका है। दोहा की विशेषताओं को जानने के लिए कृपया ऊपर देखें।
2. 'सब कें उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु' - अनुप्रास अलंकार
3. इसमें राम को युवराज के रूप में देखने की पुरवासियों की अभिलाषा को बताया गया है, जिसके लिए वे राम के आराध्य भगवान शंकर को रिझाते या मनाते हैं। ।

बोध प्रश्न

- सबके हृदय की क्या अभिलाषा है?
- सब किसे मनाते हैं?
- राजा को अपने जीते जी राम को क्या दे देना चाहिए?
- काव्यांश में प्रयुक्त 'अछत' शब्द का अर्थ बताइए।

8.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

रामभक्त

सगुण धारा की रामाश्रयी शाखा या राम भक्ति परंपरा में तुलसी सिरमौर हैं। राम में उनकी अटूट निष्ठा और श्रद्धा है। वह अपने इष्ट राम को स्वाति नक्षत्र का जल और स्वयं को चातक पक्षी बताते हुए दोहवाली में लिखते हैं -

एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास। एक राम घन स्याम हित चातक तुलसीदास॥

दास्य भक्ति

भागवत में साधना की दृष्टि से भक्ति के नौ भेद बताए गए हैं - श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्म निवेदन। इसे ही नवधा भक्ति की संज्ञा से संबोधित किया जाता है। तुलसी की भक्ति इसमें से दास्य की है। वह स्वयं को दास और राम को स्वामी के रूप में प्रस्तुत करते हैं -

रामसों बड़ो है कौन, मोसों कौन छोटो।
राम सों खरो है कौन, मोसों कौन खोटो॥

इसी भाव को मानस में भी व्यक्त करते हैं -

सेव्य-सेवक भाव बिनु, भवन तरिय उरगारि।
भजहु राम पद पंकज, अस सिद्धांत विचारि॥

तुलसीदास का भक्ति-मार्ग सरल, सहज और स्वाभाविक है, उसमें सदाचार है। उनका मानना है कि भक्ति में मन, वचन और कर्म की शुद्धता होनी चाहिए, दिखावा नहीं होना चाहिए। वह दिखावा करने वाले लोगों पर कड़ी टिप्पणी करते हैं-

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरे मुख माहीं।
मनुआ तो चहूँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं॥

इसके साथ ही वह भक्ति में ज्ञान बघारने वालों पर ज्ञान की कठिनता के संबंध में टिप्पणी करते हैं-

कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक।
होइ घुनाच्छर न्याय जौं पुनि प्रत्यूह अनेक॥

लोकमंगल की भावना

तुलसी राम को लोक में ले जाने और लोक के कल्याण के लिए रामचरितमानस की रचना करते हैं। उनका मानना है कि इस लौकिक जगत में सांसारिक दुखों, विघ्न-बाधाओं को दूर करने, दैहिक, दैविक और भौतिक तापों का शमन और लोक का कल्याण राम की भक्ति से ही हो सकता है और इसे वह रामचरितमानस के बालकांड में कहते हैं-

मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की।

किष्किंधाकांड में इसे पुनः दुहराते हैं -

जग कारन तारन भव भंजन धरनी भार।
की तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार॥

तथा अंत में स्पष्ट करते हैं-

कलिमल हरनि विषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की॥
दलनि रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब विधि तुलसी की॥

सामंती व्यवस्था का विरोध

तुलसी वास्तविक अर्थों में मानव का कल्याण चाहते हैं। वह अपनी कविता में मानवता के हित हेतु, उसके कल्याण हेतु मानव-मूल्य प्रस्तुत करते हैं। वह सामंतवाद के विरोधी हैं, जातिवाद के विरोधी, पंथ, कुल, वर्ण, गोत्र के विरोधी हैं। समाज के एकीकरण को नष्ट करने वाली, उसे तोड़ने और बाँटने वाले विचार के कटु आलोचक हैं। वह ऐसे लोगों को अपनी कविता में खुली चुनौती देते हैं-

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहूकी बेटीसो बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ॥
तुलसी सरनाम गुलामु है रामको, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।
माँगि कै खैबौ, मसीतको सोइबो, लैबोको एकु न दैबेको दोऊ॥

तुलसी की इस प्रकार की कड़ी टिप्पणियों के कारण दृढ़ सामंतवादी व्यवस्था जर्जर एवं कमजोर हुई। यह सवैया तुलसी की प्रगतिशीलता को भी सूचित करती है।

सामाजिक यथार्थ

तुलसी अपने समय के प्रतिनिधि कवि हैं। वह अपनी कविताओं में अपने समय को रेखांकित करते हैं। अपने समय के समाज की वास्तविक स्थिति को बड़ी मुखरता से अपने काव्य में प्रस्तुत करते हैं। कवितावली के उत्तरकांड का यह उद्धरण देखिए -

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों, 'कहाँ जाई, का करी?'

तुलसी समाज की दुर्दशा से पीड़ित हैं। वह निर्भयता से कुशासन को प्रश्नांकित करते हैं। वह कहते हैं-

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृपु अवसि नरक अधिकारी॥

और उत्तरकांड में रामराज्य के रूप में वह आदर्श राज्य का प्रतिमान प्रस्तुत करते हैं-

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना॥

तुलसीदास के सामाजिक यथार्थ पर डॉ. राम विलास शर्मा का विचार है, "तुलसीदास का स्वप्न श्रमिक जनता के लिए धरोहर है, जिससे प्रेरित होकर वह समाजवाद के लिए मंजिल-दर-मंजिल बढ़ती जाएगी। तुलसी का मानवप्रेम उनकी कविता का स्रोत है। उनके लिए साहित्य न तो सामंतों के मनोरंजन का साधन है, न निरुद्देश्य प्रयोग है। तुलसीदास की स्थापना साहित्य के प्रति सामंती विचारधाराओं से ही लड़ने में मदद नहीं देती, वह पूंजीवादी साहित्य सिद्धांतों से भी लड़ने में मार्ग दर्शन कराती है।" (परंपरा का मूल्यांकन, पृष्ठ 83)

समन्वय भाव

सगुण और निर्गुण का समन्वय

तुलसी भक्ति के सहज और सरल मार्ग पर व्यक्ति को चलने की सलाह देते हैं। उनका मानना है कि ऐसी भक्ति जो मन, वचन और कर्म से शुद्ध हो, उसे दिखावे की जरूरत नहीं है। ऐसी भक्ति में हमें बुद्धि की भी आवश्यकता नहीं है। वह अपने तत्कालीन समाज को भक्ति की सगुण और निर्गुण धारा में बँटा हुआ और लोगों को भक्ति मार्ग चुनने में संशय की स्थिति में पाते हैं, तो वह कहते हैं कि सगुण और निर्गुण में वस्तुतः कोई भेद नहीं हैं, इसलिए हमें शुद्ध भाव से भक्ति का मार्ग चुनना चाहिए -

सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा॥
अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई॥
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें। जलु हिम उपल बिलग नहीं जैसे॥
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा। तेहि किमि कहिअ बिमोह प्रसंगा॥

ज्ञान और भक्ति का समन्वय

तुलसीदास यद्यपि भक्ति मार्ग में पांडित्य को दुरूह मानते हैं और लोगों को भक्ति के सरल और सहज मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। उनका विश्वास भी कर्मकांडों में नहीं है। वह स्वयं उसका पालन नहीं करते हैं। किंतु, इसका आशय यह नहीं है कि वह ज्ञान के विरोधी थे, वह वास्तव में ज्ञान और भक्ति में कोई भेद नहीं करते हैं -

भगतहिं ज्ञानहिं नहीं कछु भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा॥

उनका मानना है कि इस लौकिक संसार से मनुष्य को दो ही रास्ते मुक्ति दिला सकते हैं- ज्ञान और भक्ति। वह इन दोनों मार्गों को समान महत्व देते हैं, लेकिन फिर भी ज्ञान का मार्ग थोड़ा दुष्कर है। ज्ञान के मार्ग में थोड़ी सी चूक घातक हो सकती है और मानव पथभ्रमित हो सकता है, किंतु भक्ति का मार्ग सहज और सरल है; इसलिए वह भक्ति के मार्ग को ज्ञान के मार्ग की तुलना में श्रेयस्कर मानते हैं और लोगों को उसी पर चलने की सलाह देते हैं।

इस रूप में स्पष्ट है कि तुलसी सगुण और निर्गुण भक्ति तथा ज्ञान व भक्ति के संबंध में समन्वयवादी दृष्टि रखते थे।

तुलसी की काव्य-भाषा

तुलसीदास संस्कृत, प्राकृत, अवधी और ब्रज में निष्णात थे, लेकिन वह लोक तक पहुँचने

के लिए लोकभाषा का प्रयोग करते हैं। उनके समय के साहित्य की भाषा शास्त्रीय भाषा थी। तुलसी जानते थे कि वह अपने रामकथा काव्य के लिए जिस भाषा का चयन कर रहे हैं, उनके समय के साहित्यकार उसे स्वीकार नहीं करेंगे। वह रामचरितमानस में लिखते भी हैं-

भाषा भनिति भोरि मति मोरी। हँसिबे जो हँसें नहिं खोरी॥

लेकिन, फिर भी वह लोकभाषा का चयन इसलिए करते हैं कि लोक का कल्याण इसी से होगा। तुलसी को यह ताकत और बल भी प्राकृत-अपभ्रंश की भाषा परंपरा से ही मिला था। ऐसा नहीं है कि तुलसी पूरी तरह से संस्कृत का निषेध कर अवधी और ब्रज में रचते हैं, जहाँ भी उन्हें शास्त्र की आवश्यकता होती है वह सहज ही संस्कृत का प्रयोग करते हैं।

तुलसी अपने रामकथा काव्य के माध्यम से अपने तत्कालीन समाज और उत्तर समाज को अभूतपूर्व ढंग से प्रभावित करते हैं। इनके ग्रंथों का महत्व आज भी इतना है कि लोग मांगलिक अवसरों या सहज ही समय-समय पर इनका मंगल गान करते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य में तुलसी के अवदान और महत्व को प्रतिपादित करते हुए लिखा है, "गोस्वामी जी के प्रादुर्भाव को हिंदी काव्य के क्षेत्र में एक चमत्कार समझना चाहिए। हिंदी काव्य की शक्ति का पूर्ण प्रसार इनकी रचनाओं में पहले-पहल दिखाई पड़ा। इनकी भक्ति रस भरी वाणी जैसी मंगलकारिणी मानी गई वैसी और किसी की नहीं। आज राजा से रंक तक के घर में गोस्वामी जी का रामचरितमानस विराज रहा है और प्रत्येक प्रसंग पर इनकी चौपाइयाँ कही जाती हैं।"

बोध प्रश्न

- तुलसी की कैसी भक्ति थी?
- राम काव्य के माध्यम से तुलसी क्या प्रतिपादित करना चाहते थे?

8.4 पाठ-सार

तुलसीदास प्रभु राम के एक मात्र इष्ट हैं और तुलसी का मानना है कि राम ने जगत का कल्याण करने के लिए ही मानव रूप में इस लौकिक संसार में आए थे। इस रूप में, राम लोक के उद्धारक हैं। इसे समझते हुए सभी को वह राम की भक्ति के लिए प्रेरित करते हैं। तुलसी राम की भक्ति में दास हैं और राम स्वामी हैं। तुलसी का यह भक्ति भाव साधना की दृष्टि से नवधा भक्ति की दास्य भक्ति का रूप है। तुलसी इसको बड़ी ही मुखरता से स्वीकार भी करते हैं।

राम के विवाहोपरांत तुलसी अत्यंत भाव-विभोर होकर उत्सवित और सज्जित अयोध्या नगरी, पुरवासियों की स्थिति, प्रकृति के हर्ष और राम को युवराज के रूप में पुरवासियों की

इच्छाओं को बड़े ही मनोहारी ढंग से चित्रित करते हैं। इसके लिए वह काव्याभूषणों का बड़ा ही सुंदर प्रयोग करते हैं।

8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. तुलसीदास राम के अनन्य भक्त हैं। वे राम को लोक उद्धारक मानते हैं। वे मानते हैं कि राम की भक्ति धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्रदान करने वाली है।
2. तुलसी ने यह दर्शाया है कि राम और सीता का विवाह समस्त अयोध्या वासियों के लिए आनंद का विषय था।
3. इस आनंद में केवल अयोध्या वासी ही नहीं बल्कि प्रकृति भी सम्मिलित थी।
4. पुरवासियों की इच्छा राम को युवराज के रूप में देखने की थी। वे चाहते हैं कि राजा दशरथ अपने जीते जी राम को युवराज का पद दे दें।
5. तुलसी सगुण और निर्गुण भक्ति तथा ज्ञान व भक्ति के संबंध में समन्वयवादी दृष्टि रखते थे।
6. तुलसी अपने काव्य में सामंती व्यवस्था का मुखर विरोध करते हैं और सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं।
7. तुलसी की काव्य-भाषा लोकभाषा है।

8.6 शब्द संपदा

1. अछत	=	जीवन रहते; जीते जी
2. करतूती	=	कारीगरी; कला; हुनर; कौशल
3. जसु	=	यश; कीर्ति
4. बरनउँ	=	वर्णन करना
5. बिमल	=	निर्मल; दोषरहित
6. बिरंचि	=	रचने वाला; सृजनकर्ता; सर्जक; विश्वकर्मा; ब्रह्मा जी
7. मुकुरु	=	दर्पण
8. राऊ	=	नरेश; राजा
सुधारि	=	साफ करके

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. पठित पाठ के आधार पर 'अयोध्या में आनंद' कविता की विषयवस्तु पर प्रकाश डालिए।
2. तुलसी के काव्य में लोकमंगल की भावना तथा सामंतवादी व्यवस्था का विरोध की चर्चा कीजिए।
3. तुलसी के काव्य में निहित सामाजिक यथार्थ पर प्रकाश डालिए।
4. तुलसी की दास्य भक्ति और काव्य-भाषा पर टिप्पणी कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों शब्दों में लिखिए।

1. तुलसी के भक्ति-भाव को समझाइए।
2. तुलसी समन्वयवादी हैं। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
3. 'तुलसी राम को लोक तक उसकी भाषा में लेकर जाते हैं', स्पष्ट किजिए।
4. सब कें उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु।/ आप अछत जुबराज पद रामहि देउ नरेसु॥ इस काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
5. श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।/ बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि॥ इस काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
6. रिधि सिधि संपति नदीं सुहाई। उमगि अवध अंबुधि कहुँ आई॥/ मनिगन पुर नर नारि सुजाती। सुचि अमोल सुंदर सब भाँती॥ इस काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
7. मुदित मातु सब सखीं सहेली। फलित बिलोकि मनोरथ बेली॥/ राम रूपु गुनसीलु सुभाऊ। प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ॥ इस काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. नवधा भक्ति को बताया गया है- ( )

(अ) भागवत में (आ) शिव-पुराण में (इ) ऋग्वेद में (ई) कुमारसंभव में

2. “तुलसीदास का स्वप्न श्रमिक जनता के लिए धरोहर है।” यह किसकी उक्ति है? ( )

(अ) रामचंद्र शुक्ल (आ) राम विलास शर्मा (इ) नगेंद्र (ई) वियोगीहरि

3. तुलसी सामंती व्यवस्था के – ( )

(अ) समर्थक हैं (आ) प्रेरक हैं (इ) विरोधी हैं (ई) अनुयायी हैं

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. राम की भक्ति चारों फलों .... को प्रदान करने वाली है।
2. अयोध्या में नित .... हो रहे हैं।
3. तुलसी ज्ञान मार्ग की तुलना में .... मार्ग को चुनने की सलाह देते हैं।
4. तुलसी सगुण और निर्गुण भक्ति में ....नहीं करते हैं।

III. सुमेल कीजिए -

1. जनु एतनिअ बिरंचि करतूती	(अ) रूपक अलंकार
2. सब सखीं सहेली	(आ) उत्प्रेक्षा अलंकार
3. मनोरथ बेली	(इ) अनुप्रास अलंकार

8.8 पठनीय पुस्तकें

1. तुलसी ग्रंथावली – प्रथम एवं द्वितीय खंड
2. गोस्वामी तुलसीदास : रामचंद्र शुक्ल
3. तुलसीदास और उनका काव्य : रामनरेश त्रिपाठी
4. हिंदी साहित्य की भूमिका : हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. मध्ययुगीन हिंदी काव्यभाषा : रामस्वरूप चतुर्वेदी
6. परंपरा का मूल्यांकन : रामविलास शर्मा
7. कविता के पक्ष में : ऋषभदेव शर्मा
8. तुलसीदास और उनका युग : राजपति दीक्षित

इकाई 9 : सूरदास : एक परिचय

रूपरेखा

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 मूल पाठ : सूरदास : एक परिचय

9.3.1 जीवन परिचय

9.3.2 रचना यात्रा

9.3.3 रचनाओं का परिचय

9.3.4 हिंदी साहित्य में सूरदास का स्थान एवं महत्व

9.4 पाठ सार

9.5 पाठ की उपलब्धियाँ

9.6 शब्द संपदा

9.7 परीक्षार्थ प्रश्न

9.8 पठनीय पुस्तकें

9.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! इस इकाई में आप भक्तिकाल के महाकवि सूरदास के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित हो सकेंगे। आप जानते ही हैं कि हिंदी साहित्य के इतिहास को विद्वानों ने चार प्रमुख कालों में विभाजित किया है - आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल। कबीरदास, जायसी, सूरदास, तुलसीदास तथा मीराबाई आदि साहित्यकारों का अनन्य स्थान है। कृष्णभक्त अष्टछाप के कवियों में सूरदास को पुष्टिमार्ग के जहाज के नाम से जाना जाता है। भक्तिकालीन नैराश्यपूर्ण वातावरण में हिंदी साहित्य के सूर्य सूरदास का काव्य जन मन को आह्लाद से भर देने वाला रहा। उन्होंने ईश्वर के सगुण स्वरूप का चित्र ऐसे प्रस्तुत किया है कि ईश्वर शब्द किसी दूसरे लोक का प्रतीत नहीं होता है। सूरदास की भक्ति भावना साधन नहीं, अपितु साध्य बनकर प्रकट होती है।

9.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- सूरदास के जीवनवृतांत से परिचित हो सकेंगे।
- सूरदास के व्यक्तित्व के बारे में जान सकेंगे।
- वात्सल्य रस के क्षेत्र में सूरदास की अतुलनीय प्रतिभा से परिचित हो सकेंगे।
- सूरदास की विभिन्न रचनाओं और उनकी विशेषताओं को जान सकेंगे।
- सूरदास के भ्रमरगीत की मौलिकता और देन से अवगत हो सकेंगे।
- हिंदी साहित्य में सूरदास के स्थान और महत्व को समझ सकेंगे।

9.3 मूल पाठ : सूरदास : एक परिचय

प्रिय छात्रो! सूरदास के जीवन के बारे में प्रामाणिक रूप से बहुत अधिक जानकारी नहीं मिलती। उनके जन्म स्थान और जन्म वर्ष के बारे में भी काफी मतभेद है। इसी प्रकार यह भी निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि वे जन्म से अंधे थे या बाद में अंधे हुए। लेकिन यह निश्चित है कि उन्होंने गुरु वल्लभाचार्य की प्रेरणा से सख्य भाव की कृष्णभक्ति को अपने काव्य का विषय बनाया।

9.3.1 जीवन परिचय

माना जाता है कि हिंदी साहित्य में पुष्टिमार्ग की संकल्पना को साकार करने वाले कवि सूरदास का जन्म सन् 1478 ई. में आगरा से मथुरा जाने वाले मार्ग में 'रुनकता' नामक गाँव में हुआ था। 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' में इनके जन्मस्थान को दिल्ली के पास 'सीही' नामक गाँव को बताया गया है। इन्हें वार्ता साहित्य में रामदास सारस्वत के पुत्र के रूप में ब्राह्मण परिवार से संबंधित बताया गया है। इसी आधार पर कुछ विद्वान् 'सीही' गाँव को इनका जन्मस्थान बताते हैं। इनके अंधत्व के संदर्भ में आलोचकों के अलग-अलग मत है, जिनमें कुछ विद्वान् इन्हें जन्मांध, तो कुछ इनके बाद में अंधे होने का उल्लेख करते हैं।

सूरदास अपने जीवन के आरंभिक दिनों में विनय के पद गाया करते थे। उनकी शिक्षा के संदर्भ में कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता है। दंतकथाओं के अनुसार वे अपने जीवन के आरंभिक दिनों में गाँव से चार कोस दूर रह कर विनय के पद मधुर स्वर में गाते रहते थे। इनके भक्ति पदों का गायन सुनकर प्रायः भक्त मंडली आत्मविभोर हो जाया करती थी। वार्ता साहित्य में सूरदास को वैराग्य के बाद गऊघाट पर विनय के पद गाते हुए चित्रित किया गया है। गुरु वल्लभाचार्य के आशीर्वाद से वे कृष्णलीला गान करते हुए सख्य एवं माधुर्य भक्ति में तन्मय हो उठे। सूरदास के पदों की सजीवता देखकर इनके जन्मांध होने पर विश्वास ही नहीं होता है। वार्ता ग्रंथों में

सूरदास का वल्लभाचार्य के शिष्यत्व ग्रहण का काल सन् 1509-1510 के आस-पास बताया जाता है। इनके अकबर से मिलने का भी उल्लेख किया गया है। वल्लभाचार्य का शिष्यत्व ग्रहण करने के बाद वे पारसोली गाँव में रहने लगे थे।

वल्लभाचार्य ने अपने चार शिष्य कुंभनदास, सूरदास, कृष्णदास, परमानंददास तथा विट्ठलनाथ के चार शिष्य गोविंदस्वामी, छीतस्वामी, नंददास, चतुर्भुजदास को 'अष्टछाप' कवि के रूप में कृष्णलीला के गान की प्रेरणा दी। अष्टछाप के इन आठों कवियों में सबसे ऊँचा स्वर सूरदास का ही था। अष्टछाप के कवि श्रीनाथ जी के मंदिर में प्रातः एवं सायं कृष्ण लीलाओं का हृदयहारी गान करते थे।

सन् 1583 ई. में सूरदास की मृत्यु होने पर विट्ठलनाथ के मुख से यह वाक्य स्वतः निकल पड़ा - 'पुष्टिमारग को जहाज जात है, सो जाको कछु लेना होय सो लेउ।'

भगवान की भक्त पर जब कृपा हो तो उसे पुष्टि कहा जाता है। यह साधन तथा साध्य दोनों रूपों में हो सकती है। साधन भक्ति में भक्त भगवान को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है, जबकि साध्य भक्ति में भक्त स्वयं को भगवान पर छोड़ देता है। सूरदास का पुष्टिमार्ग साध्य भक्ति का उत्तम उदाहरण है। सूरदास को पुष्टिमार्ग का जहाज, वात्सल्य रस सम्राट, जीवनोत्सव का कवि, भावाधिपति तथा खंजन नयन आदि उपाधियों से संबोधित किया जाता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, 'सूरदास की भक्ति पद्धति का मेरुदंड पुष्टिमार्ग ही है।' हिंदी साहित्य में सूरदास को सूर्य के समान मानव मन को प्रकाशित करने वाला, तुलसीदास को चंद्र के समान आदर्श की शीतल स्थापना करने वाला, रीतिकालीन कवि केशवदास को तारे के समान काव्य के शिल्प पक्ष को द्युतिमान बनाने वाला तथा अब तक के अन्य हिंदी कवियों को जुगनुओं के समान काव्य प्रभा प्रसारित करने वाला बताया जाता है। इस संदर्भ में यह पंक्ति उल्लेखनीय है -

'सूर सूर तुलसी ससि, उडुगन केशवदास।
अब के कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकास॥'

बोध प्रश्न

- पुष्टिमार्ग का क्या अर्थ है?
- अष्टछाप के कवि क्या करते थे?

9.3.2 रचना यात्रा

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल को अध्ययन की सुविधा के लिए दो भागों में विभाजित किया गया है - निर्गुण भक्ति एवं सगुण भक्ति काव्य। सगुण भक्ति को पुनः दो धाराओं में विभाजित किया गया है - राम भक्ति शाखा एवं कृष्ण भक्ति शाखा। सूरदास कृष्ण भक्ति शाखा के शीर्षस्थ कवि हैं।

सूरदास का काव्य श्रीमद्भागवत पर आधारित कृष्ण काव्य है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - 'सूरसागर', 'सूरसारावली' एवं 'साहित्यलहरी'। इनकी अमर कीर्ति का आधार 'सूरसागर' है, जिसमें कृष्ण की बाल लीला, राधा-कृष्ण की प्रेम लीला और भ्रमर गीत आदि का चित्रण किया गया है। तत्कालीन भारतीय जनता के जीवन में निराशा का घनघोर बादल छाया हुआ था। उस समय जन जीवन को रोचकता प्रदान करने तथा जीवन के प्रति उत्साह जगाने के लिए सूरदास ने कृष्ण के लोकरंजक रूप को आधार बनाया।

हिंदी साहित्य में 'भ्रमर गीत' परंपरा को आरंभ करने वाले कवियों में सूरदास का नाम सर्वप्रथम आता है। सूरदास जब बाल लीला का चित्रण करते हैं तो वात्सल्य रस का अविष्कार हो जाता है। वे माँ के भाव को सूक्ष्मतापूर्वक प्रकट करने के लिए स्वयं माता यशोदा के रूप में अपने पदों में उतर आते हैं। बाल मनोविज्ञान के चित्रण में हिंदी साहित्य में सूर अकेले सूर्य ही हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 'सूर अपनी आँखों से वात्सल्य का कोना-कोना छान आए हैं।' उदाहरण के लिए यह अंश देखें -

'शोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुन चलत रेनु तनु मंडित, मुख दधि लेप किए।'

इसी तरह एक और उदहारण द्रष्टव्य है, जिससे स्वतः उनके वात्सल्य रसराजत्व का अनुभव हो जाएगा। यथा -

'सिखवत चलन जसोदा मैया।
अरबराई कर पानि गहावत, डगमगाई धरनि धरें पैंया॥'

सहजानुभूति, सहानुभूति तथा स्वानुभूति को सभी साहित्यकार नैसर्गिक प्रस्तुति नहीं दे सकते हैं। किंतु सूरदास ने माँ न होते हुए भी यशोदा बनकर मातृत्व की अद्भुत छटा को रूपायित किया है। वात्सल्य का हर पक्ष बड़ी सहजता के साथ चित्रित किया है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि 'सूरदास जब अपने काव्य विषय का वर्णन शुरू करते हैं, तो

मानो अलंकार शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे दौड़ा करता है, उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है।' इस प्रकार सूरदास जब भ्रमर गीत की रचना करते हैं, तो गोकुल की सरल ग्वालिनों की सरलता वाग्विदग्धता में परिवर्तित हो जाती है। उनकी रास लीला को देख कर ऐसा प्रतीत होता है मानो जीवन की अविरल, मधुरिम प्रेम स्वर धारा बह रही हो। सूर का रास लीला वर्णन युवावस्था का आकर्षण नहीं है अपितु वह तो बालपन से किशोरावस्था तक सहज विकसित झरने सा निर्मल प्रेम प्रवाह है।

सूरदास अपने काव्य चित्रण को अनेक उपमानों से अलंकृत करते हुए उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा की लड़ी लगा देते हैं। काव्य के शिल्प पक्ष की अनूठी प्रस्तुति करने के साथ ही कवि पात्रों के अंतःप्रकृति में भी प्रवेश करते हुए सुंदरतम रचना करते हैं। सूरदास अपने पदों में ब्रज भाषा को सुंदरतम, आकर्षक एवं मधुर प्रस्तुति देते हुए ब्रजभाषा की चाशनी में सभी को सराबोर कर देते हैं। उन्होंने ब्रज भाषा को हिंदी साहित्य की एक ऐसी भाषा के रूप में प्रतिष्ठापित किया जो अगले चार शतकों तक साहित्य की अविरल धारा बनी रही।

'सूसागर' में सूरदास ने प्रसंगों की नव्यतम उद्भावना कर अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है। अष्टछाप के सुरों में आठवाँ, मधुरतम एवं उच्चतम स्वर सूरदास का ही है। मध्यकालीन निराशापूर्ण वातावरण में जहाँ निवृत्ति परक पद लोक चिंतन की विचारधारा चारों ओर व्याप्त थी; ऐसे में सूरदास लोकभाषा में जीवन के प्रति प्रेम का मार्ग बनाते हैं। उनकी रचनाओं को पढ़-सुनकर ही जनता को जीवन संन्यास के स्थान पर उल्लास प्रतीत होने लगता है। सांसारिकता में आध्यात्मिकता का यह चित्रण ही उन्हें लोकप्रियता के शिखर तक पहुँचा देता है। उनके प्रेम को समाज तथा परिवार के बीच लोकव्यवहार के रूप में पनपते हुए देखा जा सकता है। प्रेम के संयोग पक्ष के चित्रण में कवि का मन कम ही लगा है, किंतु वियोग पक्ष की व्याकुलता संयोग पक्ष की तीव्रता को सहज ही स्पष्ट कर देती है। सूरदास की रचनायात्रा के इन पड़ावों ने उन्हें हिंदी साहित्य का अमर कवि बना दिया।

बोध प्रश्न

- सूरदास के वात्सल्य भाव का परिचय दीजिए ।
- सूरदास ने किस भाषा में रचनाएँ की?
- सूरदास कृष्ण के किस रूप से जनता को जीवन के प्रति उन्मुख करते हैं?

9.3.3 रचनाओं का परिचय

प्रिय छात्रो! जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है, सूरदास की रचनाएँ श्रीमद्भागवत की कथा पर आधारित हैं। वल्लभाचार्य जी की प्रेरणा से वे कृष्ण लीला का गायन करने लगे, तो उनकी रचनाओं में दास्य और विनय जैसे भावों के स्थान पर सख्य, वात्सल्य एवं माधुर्य भाव सृजित होने लगे। विद्वानों ने उनकी रचनाओं की संख्या लगभग पच्चीस तक बताई हैं। 'हिंदी साहित्य का ऐतिहास' (सं. डॉ. नगेंद्र) के अनुसार

> "डॉ. दीनदयालु गुप्ता ने उन (सूरदास) के द्वारा रचित 25 पुस्तकों की सूचना दी है, जिनमें सूरसागर, सूर सारावली, साहित्य लहरी, सूर पच्चीसी, सूर रामायण, सूर सठी और राधा रसकेली प्रकाशित हो चुकी हैं। वस्तुतः 'सूरसागर' और 'साहित्य लहरी' ही उनकी श्रेष्ठ कृतियाँ हैं। 'सूर सारावली' को अनेक विद्वान अप्रामाणिक मानते हैं, किंतु ऐसे विद्वान भी हैं, जो इसे 'सूरसागर' का सार अथवा विषय सूची मानकर इसकी प्रामाणिकता के पक्ष में हैं। 'सूरसागर' की रचना 'भागवत' की पद्धति पर 12 स्कंधों में हुई है। 'साहित्य लहरी' सूरदास के सुप्रसिद्ध द्रष्टव्य पदों का संग्रह है। इसमें अर्थगोपन-शैली में राधाकृष्ण की लीलाओं का वर्णन है, साथ ही अलंकार निरूपण की दृष्टि से भी इस ग्रंथ का महत्व है।"

'सूरसागर' में कृष्ण के लोकरंजक रूप को विस्तार देते हुए बाल कृष्ण के माध्यम से दुष्ट दैत्यों के संहार का वर्णन किया गया है। लेकिन कृष्ण की वात्सल्यपूर्ण बालीला और माधुर्यपूर्ण प्रेमलीला इसका मुख्य आकर्षण है। कृष्ण की बाल लीलाओं के विविध भावों को पढ़कर पाठक अपने जीवन की सारी कठिनाइयों को भूल जाता है। बालकों की बुद्धि चतुरता, अपने हमउम्र साथियों से प्रतिस्पर्धा तथा अपनी गलतियों को छिपाने के लिए एक से बढ़कर एक झूठ बोलने की कला को सूरदास ने सुंदर प्रस्तुति दी है। कृष्ण जन्मोत्सव में सूरदास स्वयं कृष्ण के बालसखा बन जाते हैं। वे गोचारण से लेकर माखनचोरी तक में साथ देते हैं, जिससे उनका बाल वर्णन जीवंत हो उठा है। यही कारण है कि सूरदास के वात्सल्य वर्णन को विश्व साहित्य में सबसे ऊँचा स्थान प्रदान किया गया है। माँ और पुत्र के सहज प्रेम को पढ़-सुन कर मन गद्गद हो उठता है।

सूरदास वात्सल्य के साथ ही शृंगार चित्रण में भी बेजोड़ है। जब वे भ्रमरगीत की रचना करते हैं, तो समस्त ब्रजवासियों की करुण पुकार सुन हृदय द्रवित हो उठता है। कृष्ण के मथुरा

गमन के पश्चात् गोपियों की हृदयविदारक विरह वेदना पाठकों को द्रवित कर देती है। भारतीय भक्ति और अध्यात्म को भ्रमरगीत प्रसंग में सशक्त प्रस्तुति मिली है। सूरदास भक्ति को साध्य मानकर ईश्वर के सगुण रूप की आराधना करते हुए गोपियों के विरह का वर्णन करते हैं। गोपियों को कृष्ण के विरह में तड़पना स्वीकार है किंतु ब्रह्म से एकाकार होना अथवा मुक्ति पाना स्वीकार नहीं है। गोपी-उध्दव-संवाद में गाँव की साधारण गोपियाँ नगर के उच्च शिक्षित विद्वान उद्धव की निर्गुण ब्रह्म की विचारधारा का तार्किक खंडन करके उन्हें निरुत्तर कर देती हैं।

सूरदास के मुक्त पद रस की छोटी-छोटी पिचकारियों के रूप में पाठकों के मन को सराबोर कर देते हैं। प्रकृति का चित्रण कवि ऐसे करते हैं कि ब्रज पाठकों के समक्ष सजीव रूप में प्रकट हो जाता है। राधा कृष्ण के रूप वर्णन को कवि अपने प्रज्ञाचक्षुओं से साकार करना आरंभ करते हैं, तो नख-शिख सौंदर्य की उपमा देखते ही बनती है। गोचारण प्रसंग, रास लीला तथा जीवन के अन्य विविध पक्ष ऐसे चित्रित किए गए हैं कि ब्रज सबकी आँखों में बस जाता है। ब्रजवासियों की जीवनशैली, त्यौहार आदि अपने आस-पास के अनुभूत होने लगते हैं।

सूरदास के पदों में काव्य का भाव पक्ष ही नहीं, शिल्प पक्ष भी अत्यंत उच्चकोटि का है। उनके पदों में बिंबों, प्रतीकों, लोकोक्तियों, मुहावरों, रसों तथा अलंकार आदि का मनोहारी प्रयोग हुआ है। ब्रजभाषा के देशज स्वरूप के साथ ही संस्कृत, अवधी, अरबी तथा फारसी आदि भाषाओं के शब्दों का संतुलित प्रयोग करते हुए वे ब्रजभाषा की सौम्यता का कहीं से भी क्षरण नहीं होने देते। चूँकि सूरदास गायन कला में प्रवीण थे इसलिए सुर तथा ताल को संगीतमय प्रस्तुति देने में पूर्णतः सफल रहे। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, सूर के काव्य में चित्रित प्रकृति पाठक की आँखों में ब्रजभूमि को बसा देती है। प्रकृति का अधिकांशतः उद्दीपन रूप ही उनके काव्य में देखा जा सकता है। संयोग के क्षणों में जो प्रकृति प्रेम रस में वृद्धि करती है, वियोग के क्षणों में वही त्रासद बन जाती है, यथा -

बिनु गोपाल बैरिन भई कुंजैं।
तब ये लता लगति अति सीतल,
अब भईं विषम ज्वाल की पुंजैं।

बोध प्रश्न

- सूरसारावली किस प्रकार की कृति है?
- गोपी-उद्धव-संवाद में क्या चित्रित है?

- सूरदास के काव्य के शिल्प पक्ष की विशेषता बताइए।

भ्रमरगीत : परंपरा और मौलिकता

सूरदास ने 'सूरसागर' की रचना 'श्रीमद्भागवत' के आधार पर की। 'भ्रमर गीत' का प्रसंग भी उन्होंने वहीं से ग्रहण किया है। लेकिन सूर के 'भ्रमर गीत' को भागवत के भ्रमर गीत की नकल नहीं कहा जा सकता। सूरदास ने अपने प्रतिपादन में मौलिक उद्भावनाएँ करके इसे एकदम नया और मोहक रूप प्रदान किया है। भागवत के दसवें स्कंध (पूर्वार्ध) के 47वें अध्याय में यह प्रसंग आता है। वहाँ उल्लेख है कि गोपियाँ कृष्ण के दूत उद्धव के सामने बेहद बेचैन होकर कृष्ण की चर्चा करती हैं। तभी एक गोपी किसी भँवरे को अपने पास गुन-गुन करते देखकर उसे कृष्ण का भेजा हुआ दूत मानकर वे सब बातें कहना शुरू कर देती हैं, जिन्हें संकोचवश वह उद्धव को सीधे-सीधे नहीं कह सकतीं। गोपी कहती है- हे धूर्त के बंधू मधुकर! तुम हमारे चरण न छुओ। तुमारी मूँछों में सौत के साथ विहार करने वाली माला का कुंकुम लगा है। तुम्हारी और कृष्ण की बंधुता ठीक ही है, क्योंकि जैसे तुम फूलों का रस लेकर छोड़ जाते हो, वैसे ही कृष्ण भी अपनी रूप माधुरी का एक बार पान करा कर अचानक हमें छोड़कर चले गए।

उस गोपी का यह अन्योक्तिपूर्ण उलाहना अन्य गोपियों को पसंद आया और उन्होंने तरह-तरह से भँवरे को संबोधित करने के बहाने उद्धव को खूब खरी-खोटी सुनाई। इस दौरान उन्होंने प्रेम भरे उपालंभ से कृष्ण के कपट-प्रेम, निष्ठुरता, क्रूरता, बेवफाई, अहसानफरामोशी, अव्यवस्थित चित और विरक्ति की उदहारण दे-दे कर आलोचना की। इस तरह उन्होंने उद्धव के मन पर अपनी कृष्ण भक्ति की दृढ़ता और अनन्यता का इतना प्रभाव डाला कि स्वयं उद्धव संसार में परम पूजनीय कहकर उनकी प्रशंसा करने लगे। इस प्रसंग में गोपियों ने अपने विरह की वेदना को व्यंग्यात्मक ढंग से भ्रमर को संबोधित करते हुए प्रकट किया है। इसलिए इसे 'भ्रमरगीत' कहा जाता है।

'भ्रमरगीत' का यह प्रसंग कृष्ण काव्य के रचयिताओं को बहुत प्रिय रहा है। विद्यापति की पदावली में भी कुछ ऐसे पद मिलते हैं, जिनमें विरह व्यथित राधा भँवरे को संबोधित करके कृष्ण के कठोर होने का प्रेममय उलाहना देती हैं। लेकिन सूरदास ने इस प्रसंग को जो नया विस्तार दिया है, वह उन्हें हिंदी की भ्रमरगीत परंपरा का सिरमौर बनाता है। खास बात यह है कि सूरदास के उद्धव भागवत के उद्धव से बहुत अलग हैं। भागवत में वें महामतिमान हैं तथा श्रीकृष्ण उन्हें माता-पिता को प्रसन्न करने और गोपियों के वियोग-रोग शांत करने के लिए भेजते

हैं। लेकिन सूरदास ने उन्हें भक्ति मार्ग के विरोधी के रूप में चित्रित किया है। सूरदास के उद्धव अद्वैतवादी और ज्ञान मार्गी हैं। "उनके हृदय में भक्ति की सरसता नहीं है। वे हठयोग में विश्वास करते हैं। श्रीकृष्ण उनका अहंकार भंग करने के लिए तथा उन्हें प्रेम-भक्ति की महत्ता समझाने के लिए गोपियों के पास भेजते हैं। सूरदास ने ज्ञान और योग के अतिरिक्त जप-तप, कर्मकांड आदि भक्ति से भिन्न सभी मार्गों का प्रतिनिधित्व उन पर आरोपित किया है। 'भागवत' में तो उनका रथ और उनकी वेशभूषा ही कृष्ण के सदृश बताई गई है, लेकिन 'सूरसागर' में उनका रंग भी कृष्ण और भ्रमर की भाँति काला बताकर भ्रमर पर की गई अन्योक्तियों में कृष्ण के साथ उन्हें भी समेटा गया है। वस्तुतः गोपियों के कटाक्ष कृष्ण की अपेक्षा उद्धव को अधिक लक्ष्य करते हैं।" (डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा, हिंदी साहित्य कोश, भाग-1, पृ. 466)

सूर के 'भ्रमर गीत' का काव्य पक्ष जितना महत्वपूर्ण है, उसका धार्मिक पक्ष भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। कहना गलत न होगा कि इसमें सूरदास के समय का धार्मिक परिवेश अपनी सारी विविधता के साथ उपस्थित है। यह ऐसा समय था, जब भारत के धर्म क्षेत्र में माया और अद्वैत के सिद्धांत लोगों को डरा रहे थे। अनेक लौकिक देवी-देवताओं की पूजा का प्रचलन था। हठवाद अपने उत्कर्ष पर था। अनेक अनधिकारी निर्गुणवादी अपने प्रचार द्वारा जनता को भ्रमित कर रहे थे। सूरदास ने इन सबका खंडन करने के लिए 'भ्रमर गीत' को अत्यधिक विस्तार प्रधान किया। उद्धव को भ्रमर के माध्यम से संबोधित करते हुए और श्रीकृष्ण को उलाहना देते हुए गोपियाँ मायावाद से लेकर हठयोग तक और अद्वैत से लेकर निर्गुण तक उस समय प्रचलित मत-वादों पर ऐसे चोटिल ढंग से देती हैं, जिसका उत्तर उद्धव से देते नहीं बनता। हठयोग के स्थान पर प्रेमपूर्ण भक्ति मार्ग की स्थापना वास्तव में मध्यकाल में भक्ति मार्ग के संघर्ष का दर्पण है। "भ्रमर गीत की गोपियाँ इस धर्म की सहजता, समर्थता और सफलता को वचन और प्रत्यक्ष उदहारण द्वारा प्रमाणित करती हैं। वे निर्गुण का विरोध तो करती दिखाई गई हैं, परंतु मूलतः उसका खंडन करना उन्हें अभीष्ट नहीं है। उनका तात्पर्य यह है कि सगुण के द्वारा ही, उसकी प्रेम-भक्ति के साधन से ही निर्गुण अद्वैत की सची अनुभूति हो सकती है। भक्ति मार्ग में, जो राजमार्ग के समान प्रशस्त है, ज्ञान और कर्म के मार्ग समाहृत हैं, साधन और साध्य की एक रूपता है।" (वही, 466)

प्रिय छात्रो! साहित्य न तो केवल काव्यशास्त्रीय सौंदर्य का विधान करता है और न ही किसी धार्मिक मतवाद तक सीमित होता है। वह जन सामान्य में अपनी पैठ तभी बना पाता है जब उसका सामाजिक पक्ष भी प्रबल हो। सूर के काव्य का सामाजिक पक्ष भी इस दृष्टि से

विचारणीय है। डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा ने यह माना है कि 'सूर सागर' का 'भ्रमर गीत' सूरदास के सामजिक दृष्टिकोण का भी परिचायक है । इससे पता चलता है कि वे अपने समय की परिस्थिति के प्रति कितने जागृत थे। यह भी कि तत्कालीन समस्याओं का समाधान वे किस उपाय से करना चाहते थे। इस खंडन-मंडन को उन्होंने अत्यंत काव्यमय शैली में प्रस्तुत किया है। उनकी गोपियाँ नीरस दार्शनिक वाद-विवाद नहीं करतीं बल्कि हृदय पक्ष पर आधारित मार्मिक व्यंग्य करती हैं। इस कारण सूर का 'भ्रमर गीत' एक श्रेष्ठ संकेतात्मक व्यंग्य काव्य बन गया है। गोपियों के द्वारा दिए गए उलाहने कवि सूरदास की तीव्र संवेदनशीलता, प्रेम भक्ति की गंभीरता और अभिव्यक्ति की चरम कलात्मकता के सूचक है।

'भ्रमर गीत' की इस व्यंग्यात्मकता की चर्चा करते हुए हिंदी साहित्य कोश में इसके पाँच प्रधान व्यंग्य विषयों का उल्लेख किया गया है, जो इस प्रकार हैं -

1. कृष्ण भ्रमर और उद्धव सहित मथुरा वासी की रंग रूप प्रवृत्ति और स्वभाव की समानता।
2. उद्धव के व्यक्तित्व में सरलता, गंभीरता, प्रकांड पांडित्य और परम आत्म संतोष के बावजूद हार्दिकता का ऐसा अभाव जिसके कारण उनका यह पांडित्य बोझ और बड़ी हद तक मूर्खता प्रतीत होता है।
3. निर्गुण ब्रह्म की अबोधगम्यता और आधारहीनता तथा इसके विपरीत गोपियों के प्रिय श्रीकृष्ण की साक्षात लीलाओं का स्मरण।
4. उद्धव द्वारा समझाए गए योगमार्ग की विरहिणी गोपियों के लिए असंगति और अनुपयोगिता।
5. कुब्जा और कृष्ण के विचित्र संयोग की असंगति और उपजा द्वारा गोपियों के द्वारा भेजा गया कटाक्ष पूर्ण संदेश।

भ्रमर गीत के अनेक पद व्यंग्य के इन पाँचों क्षेत्रों को भली प्रकार प्रमाणित करते हैं। उदहारण के लिए गोपियों का निम्न लिखित कथन देखा जा सकता है -

काहे को रोकत मारग सूधो?
सुनहु मधुप! निर्गुन-कंटक तें राजपंथ क्यों रूधो?
कै तुम सिखै पठाए कुब्जा, कै कही स्यामघन जू धौं?
वेद पुरान सुमृति सब ढूँढौं जुवतिन जोग कहूँ धौं?
ताको कहा परेखो कीजै जानत छाछ न दूधौ।

सूर मूर अक्रूर गए लै ब्याज निबेरत ऊधौ।।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भ्रमरगीत में सूरदास के अद्‌भुत काव्य कौशल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि 'वे अत्यंत सूक्ष्म संकेतों द्वारा विस्मय की मधुर व्यंजना करते हुए मानव मन की विविध पार्थिव वृत्तियों को उठाकर आध्यात्मिक स्तर पर पहुँचाते जाते हैं।'

9.3.4 हिंदी साहित्य में सूरदास का स्थान एवं महत्त्व

भक्तिकालीन हिंदी साहित्य में सूरदास के कृष्णमय काव्य के नायक सोलह कलाओं में प्रवीण थे। उनका काव्य 'सूरसागर' भक्ति का सागर है, जिसमें कवि के सूक्ष्मतम भावों का प्रकटीकरण हुआ है। सूरदास की काव्य-भाषा सहज और सरल शैली के कारण बरबस ही पाठकों को सम्मोहित कर लेती है। उनके भक्तिपूर्ण काव्य में नवधा भक्ति को देखा जा सकता है। एक कुशल कवि के समस्त गुण उनके काव्य में विद्यमान हैं। उनकी कृतियों में कल्पना का सम्यक दर्शन होता है। पुष्टिमार्ग में ईश्वर की भक्ति के लिए पाद सेवन, वंदना, अर्चना आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिसे सूरदास के काव्यों में सर्वत्र देखा जा सकता है।

हिंदी साहित्य गगन के सूर की भक्ति-प्रभामंडल में जो भी प्रवेश करता है, वह कवि की काव्य त्रिवेणी में पवित्र हो उठता है। उनकी काव्य त्रिवेणी कृष्ण के बाल लीला, रास लीला तथा भ्रमर गीत के रूप में प्रवाहित होती है। सूरदास बाल लीला वर्णन में बाल मनोविज्ञान के प्रत्येक पक्ष पर पद रचना करते हैं। सूर साहित्य को पढ़कर वर्तमान पीढ़ी भी बहुत कुछ सीख सकती है। वर्तमान समय में छोटे-छोटे बच्चो में अवसादग्रस्तता को देखा जा सकता है, क्योंकि बालक के विकास में माता, पिता, परिजन, मित्र, परिवेश आदि का समन्वित योगदान नहीं होता।

कृष्ण सोलह कलाओं में प्रवीण थे। जब वे भोगी बनते हैं, तो प्रेम की पराकाष्ठा तक पहुँचते हैं। जब मथुरा पहुँच कर कर्मयोगी बनते हैं, तो उनसे बढ़ कर कोई कर्मठ दिखाई नहीं देता।

हिंदी साहित्य में सूरदास की भक्ति, भाषा, भाव तथा शैली के समकक्ष दूर-दूर तक कोई नहीं ठहरता। वे भक्ति भाव में भगवान को अपना मित्र बना कर काव्य रचना करते हैं। हिंदी साहित्य में वात्सल्य रस की प्रतिष्ठापना में सूरदास का महत्वपूर्ण स्थान है। बाल लीला का इतना सूक्ष्म चित्रण एक माँ भी नहीं कर सकती है, जितनी सूक्ष्मता से सूरदास ने किया है। उनके माधुर्य भक्ति में मार्मिकता एवं मोहकता का सुंदर सामंजस्य देखा जा सकता है। विरह काव्य में केवल नायक-नायिका का विरह ही चित्रित नहीं हुआ है, अपितु माता यशोदा, नंदराज, गोकुल के

गोप-गोपियाँ, प्रकृति, पशु, पक्षी, पेड़-पौधे तथा यमुना नदी आदि सभी कृष्ण के विरह में व्याकुल हो उठते हैं। विरह का यह विराट स्वरूप सूरदास जैसे महाकवि ही चित्रित कर सकते हैं। सूरदास ने कृष्ण के लोकरंजक रूप का चित्रण किया है।

बोध प्रश्न

- सूरदास की प्रसिद्धि का आधार उनके किस कृति को माना जाता है?
- वर्तमान परिवेश में बालकों के अवसाद को रोकने में क्या सहायक हो सकता है?

9.4 पाठ सार

हिंदी साहित्य में सूरदास को भक्त शिरोमणि के रूप में जाना जाता है। सूरदास को लोकरंजक कवि माना जाता है। तद्युगीन समाज के निराशापूर्ण वातावरण में जीवन के प्रति राग जगाने में सूरदास का महत्वपूर्ण स्थान है। सूरदास अपने जीवन के आरंभिक दिनों में कृष्ण के भक्ति भाव में डूबे रहकर विनय के पद गाते रहते थे। वल्लभाचार्य की प्रेरणा से वे पुष्टिमार्ग में दीक्षित हो गए। अष्टछाप के कवियों में सूरदास सबसे उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित हैं। सूरदास का काव्य श्रीमद्भागवत पर आधारित कृष्ण काव्य है। उनकी रचनाओं में दास्य, विनय जैसे भावों के स्थान पर सख्य, वात्सल्य एवं माधुर्य भावों की प्रधानता देखी जा सकती है।

'सूरसागर' 'सूरसारावली' एवं 'साहित्यलहरी' आदि उनके प्रमुख ग्रंथ हैं, जिनमें 'सूरसागर' उनकी अमर कीर्ति का आधार बनी। उन्होंने ब्रजभाषा को हिंदी साहित्य की प्रमुख भाषा के रूप में प्रतिष्ठापित किया। सहजानुभूति, सहानुभूति तथा स्वानुभूति की भावना को सूरदास माँ न होते हुए भी यशोदा बनकर मातृत्व की अद्भुत छटा को रूपायित करते हैं। कवि की रचना में गोचारण प्रसंग, रास लीला तथा जीवन के विविध पक्ष ऐसे चित्रित किए गए हैं कि ब्रज मंडल सबकी आँखों में बस जाता है। ब्रजवासियों की जीवनशैली, त्यौहार आदि सबको अपने आस-पास अनुभूत होने लगते हैं। सूरदास के पदों में काव्य का भाव-पक्ष ही नहीं, शिल्प-पक्ष भी अत्यंत उच्च कोटि का है। उनके पदों में बिंबों, प्रतीकों, लोकोक्तियों, मुहावरों, रसों तथा अलंकार आदि का मनोहारी प्रयोग हुआ है। ब्रजभाषा के देशज स्वरूप के साथ ही संस्कृत, अवधी, अरबी तथा फारसी आदि भाषाओं का संतुलित प्रयोग करते हुए भी ब्रजभाषा की सौम्यता को उन्होंने अपने पदों में बनाए रखा है।

सूरदास गायन कला में प्रवीण थे, इसलिए सुर तथा ताल को संगीतमय प्रस्तुति देने में पूर्णतः सफल रहें। सूर काव्य में चित्रित प्रकृति चित्रण पाठक के आँखों में ब्रजभूमि को बसा देता

है। साहित्यकार की परिभाषा देने वाले विद्वानों ने निश्चय ही सूर साहित्य का अध्ययन किया होगा, क्योंकि सूरदास की रचनाओं में लोक का रंजन करने का भाव प्रमुखता के साथ चित्रित हुआ है। कृष्ण को पाठक भगवान नहीं, बल्कि अपने ही बीच रहने वाले इंसान की तरह पाते हैं, जो हँसते, रोते, सोते, जगते, झूठ बोलते, माखन चोरी करते हुए, गोपियों के साथ प्रेम लीला करते हुए पाए जाते हैं।

9.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. सूरदास हिंदी साहित्य के भक्ति काल में सगुण भक्ति के अंतर्गत कृष्ण काव्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।
2. सूरदास ने आरंभ में विनय पदों की रचना की। लेकिन बाद में वल्लभाचार्य के आदेश पर पुष्टिमार्ग के अनुरूप प्रेम-भक्ति का निरूपण किया।
3. सूरदास अष्टछाप के कवियों में प्रमुख माने जाते हैं।
4. सूर ने कृष्ण की बाल लीला, राधाकृष्ण की लीला और भ्रमरगीत का बेजोड़ वर्णन किया है।
5. सूरदास की रचनाएँ भागवत की कथा पर आधारित हैं, लेकिन उन्होंने कृष्ण के लोकरंजक रूप को उभारते हुए अनेक मौलिक उद्भावनाएँ की हैं।
6. सूरदास का भ्रमरगीत व्यंग्य काव्य का अनुपम उदहारण है।

9.6 शब्द संपदा

1. अर्थगोपन = रहस्यपूर्ण अर्थ शैली
2. अवसादग्रस्तता = लगातार उदास रहना
3. आत्मविभोर = अपने में मस्त
4. आह्लाद = ख़ुशी
5. उडुगन = तारे
6. कर्मठ = काम में कुशल, कर्मशील
7. क्षरण = क्षीण या कमजोर होना
8. खद्योत = जुगनू
9. झाँकना = छिपकर देखना

10. तन्मय = मग्न

11. दंतकथा = कल्पित कथा

12. द्युतिमान = चमकदार

13. नवनीत = मक्खन

14. नैसर्गिक = प्राकृतिक

15. प्रज्ञाचक्षु = अंधा व्यक्ति

16. प्रतिस्पर्धा = प्रतियोगिता

17. भ्रमर = भौंरा

18. मंडित = लगा हुआ

19. मेरुदंड = रीढ़

20. रेनु = धूल

21. वाग्विदग्ध बात करने में चतुर

22. समन्वित = मिला हुआ

9.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग500 शब्दों में दीजिए

1. सूरदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
2. सूरदास द्वारा चित्रित कृष्ण के लोकरंजक स्वरूप का वर्णन कीजिए।
3. हिंदी साहित्य में सूरदास के स्थान एवं महत्व की चर्चा कीजिए।
4. भ्रमरगीत परंपरा पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग200 शब्दों में दीजिए

1. पुष्टिमार्ग के जहाज के रूप में सूरदास का परिचय दीजिए।
2. अष्टछाप के कवियों के बारे में बताइए।
3. सूर कृष्णभक्ति काव्य की विशेषता बताइ ।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. सूरदास के पिता का नाम क्या यथा? ( )

(अ) रामदास (आ) श्यामदास (इ) नारायणदास (ई) हरिदास

2. सूरदास के गुरु का नाम क्या है? ( )

(अ) विट्ठलनाथ (आ) वल्लभाचार्य (इ) नरहरिदास (ई) रामदास

3. कौन सी रचना सूरदास की नहीं है? ( )

(अ) सूरसागर (आ) सूरसारावली (इ) साहित्यमीमांसा (ई) साहित्यलहरी

4. सूरदास अपने जीवन के आरंभिक दिनों में कैसे पद गाते थे? ( )

(अ) नीति के पद (आ) विनय के पद (इ) शृंगार के पद (ई) सभी

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. पुष्टिमार्ग का जहाज ....को कहा जाता है।
2. अष्टछाप के कवियों में सबसे ऊँचा स्वर ....का होता था।
3. 'सूरसागर' में ....लाख पदों का उल्लेख मिलता है।
4. हिंदी साहित्य गगन का सूर्य ....को कहा जाता है।

III. सुमेल कीजिए -

1. सूरसारावली	(अ) वात्सल्य रस प्रतिष्ठापक
2. साहित्यलहरी	(आ) व्यंग्य काव्य
3. सूरदास	(इ) अर्थगोपन शैली
4. भरमार गीत	(ई) अर्थ भेदन शैली

9.8 पठनीय पुस्तकें

1. सूर-साहित्य : हजारी प्रसाद द्विवेदी
2. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : गणपतिचंद्र गुप्त
3. ब्रजबोली साहित्य : शैलेंद्र मोहन झा
4. सूरदास और उनका साहित्य : देशराज सिंह भाटी
5. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल

इकाई 10 : भ्रमरगीत

रूपरेखा

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 मूल पाठ : भ्रमरगीत

10.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

10.3.2 अध्येय कविता

10.3.3 विस्तृत व्याख्या

10.3.4 काव्यगत विशेषताएँ

10.3.5 समीक्षात्मक अध्ययन

10.4 पाठ सार

10.5 पाठ की उपलब्धियाँ

10.6 शब्द संपदा

10.7 परीक्षार्थ प्रश्न

10.8 पठनीय पुस्तकें

10.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आपको मालूम है कि हिंदी साहित्य के इतिहास के चार कालों में से द्वितीय काल भक्तिकाल को 'स्वर्णकाल' के नाम से भी जाना जाता है। हिंदी साहित्य के भक्तिकाल को पुनः दो भागों में विभाजित किया गया है - सगुण भक्ति धारा और निर्गुण भक्ति धारा। सगुण भक्ति काव्यधारा की दो शाखाएँ हैं - राम भक्तिकाव्य शाखा तथा कृष्ण भक्तिकाव्य शाखा। कृष्ण भक्ति शाखा के लोकप्रिय कवि सूरदास हिंदी साहित्य गगन के सूर्य कहलाते हैं। उन्होंने अपनी कृतियों में कृष्ण को लोकरंजनकारी रूप में प्रस्तुत किया है। सूरदास के द्वारा चित्रित कृष्ण से संबंधित विविध पदों में कृष्ण को पाठक अपने बीच पाते हैं। उनके बाललीला, प्रेमलीला तथा 'भ्रमरगीत' प्रसंग को विश्व साहित्य में सम्मानपूर्वक स्थान दिया गया है। इस इकाई में आप 'भ्रमरगीत' से लिए गए दो पदों का अध्ययन करेंगे।

10.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- ‘भ्रमरगीत परंपरा’ से परिचित हो सकेंगे।
- भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा पर सगुण काव्य की प्रतिष्ठा के बारे में जान सकेंगे।
- माता यशोदा और कृष्ण-बलराम के वात्सल्य के विविध पक्ष से अवगत हो सकेंगे।
- यशोदा और कृष्ण के संदेश को ब्रज भाषा के सौंदर्य के साथ समझ सकेंगे।

10.3 मूल पाठ : भ्रमरगीत

हिंदी साहित्य में भ्रमरगीत परंपरा का आधार श्रीमद्भागवत पुराण को माना जाता है। हिंदी में सूरदास से पहले भ्रमरगीत प्रसंग का वर्णन विद्यापति के काव्य में भी मिलता है। लेकिन दोनों के प्रतिपादन में मूलभूत अंतर यह है कि सूरदास के भ्रमरगीत में नायक की लंपटता का वर्णन न के बराबर है, जबकि विद्यापति के पदों में नायक को भौरों के समान लंपट रूप में चित्रित किया गया है। आगे चलकर नंददास के ‘भँवरगीत’ में गोपियाँ बहुत ही तर्कशील रूप में दिखाई देती हैं। वहाँ गोपियाँ दार्शनिक रूप में चित्रित हैं।

‘भ्रमरदूत’ में कवि सत्यनारायण ‘कविरत्न’ ने यशोदा को भारतमाता के रूप में चित्रित किया है। उन्होंने इसे वात्सल्य और विरह के अलावा स्त्री शिक्षा जैसे युगीन संदर्भ से जोड़ा है। ‘प्रिय प्रवास’ में अयोध्या सिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’ ने राधा को समाजसेविका के रूप में चित्रित करते हुए विश्वकल्याण की कामना की है। जगन्नाथदास ‘रत्नाकर’ ने ‘उद्धव शतक’ में भक्ति और नीति काव्य का मिश्रण किया है।

10.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

भ्रमरगीत परंपरा में सूरदास का स्थान सर्वोपरि है। कृष्ण के तीन रूप हैं - लीलाधार बालकृष्ण, नीतिकुशल धर्मोपदेशक कृष्ण तथा द्वारिकाधीश कृष्ण। इनमें वे अपने हर रूप में अद्वितीय हैं। प्रस्तुत इकाई का संबंध बालकृष्ण के गोकुल से वृंदावन चले जाने के घटनाक्रम से है। कृष्ण जब मथुरा की ओर अपने कर्म रथ पर सवार होकर चले जाते हैं, तो गोकुलवासी कृष्ण के विरह में व्याकुल हो उठाते हैं। मथुरा पहुँचकर कृष्ण अपने लोक-कल्याणकारी कार्यों में व्यस्त हो गए। जब उन्हें गोप-गोपियों, राधा, नंदबाबा और माता यशोदा की याद आने लगती है तो वे अपने प्रिय मित्र उद्धव को गोकुलवासियों की खबर लेने के लिए भेजते हैं। आरंभ में वे उद्धव को

माता यशोदा से मिलकर अपने मन की बातें कहने के लिए कहते हैं। बाद में वे विरहिणी गोपियों से मिलने के लिए कहते हैं। उद्धव को माता यशोदा के पास भेजते हुए कृष्ण कहते हैं कि जीवन में मिलने वाले सारे भौतिक सुख गोकुल के प्रेम के समक्ष कुछ भी नहीं है। उल्लेखनीय है कि महाकवि सूरदास वात्सल्य रस के सिरमौर रचनाकार हैं। उन्होंने कृष्ण के लिए माता यशोदा की तड़प और माता यशोदा के लिए कृष्ण की बेचैनी का मार्मिक चित्रण किया है।

बोध प्रश्न

- गोकुलवासी क्यों विरह में डूब गए?
- मथुरा जाकर कृष्ण किस्में व्यस्त हो गए?
- कृष्ण के दूत बनकर मथुरा कौन गए?

कृष्ण क्यों कहते हैं कि सारे भौतिक सुख गोकुल के प्रेम के समक्ष कुछ भी नहीं है?

10.3.2 अध्येय कविता

[1]

पथिक! संदेशो कहियो जाय।
आवेंगे हम दोनों भैया, मैया जनि अकुलाय॥
याको बिलग बहुत हम मान्यो जो कहि पठयो धाय।
कहँ लौं कीर्ति मानिए तुम्हरी बड़ो कियो पय प्याय॥
कहियो जाय नंदबाबा सों अरु गहि जकरयो पाय।
दोऊ दुखी होन नहिं पावहि धूमरि धौरी गाय॥
यद्यपि मथुरा बिभव बहुत है तुम बिन कछु न सुहाय।
सूरदास ब्रजवासी लोगनि भेंटत हृदय जुड़ाय।

[2]

नीके रहियौ जसुमति मैया।
आवहिंगे दिन चार पाँच में हम हलधर दोउ भैया॥
जा दिन तें हम तुम तें बिछुरै, कह्यौ न कोऊ 'कन्हैया'।
कबहुँ प्रात न कियौ कलेवा, साँझ न पीन्हीं पैया॥
वंशी बैत विषान देखियौ द्वार अबेर सबेरौ।
लै जिनि जाइ चुराइ राधिका कछुक खिलौना मेरो॥

कहियौ जाइ नंद बाबा सों, बहुत निठुर मन कीन्हौं।
सूरदास, पहुँचाइ मधुपुरी बहुरि न सोधौं लीन्हौं॥

> **निर्देश :** 1. इस पदों का सस्वर वाचन कीजिए।
> 2. इस पदों का मौन वाचन कीजिए।

10.3.3 विस्तृत व्याख्या

पथिक! संदेशो कहियो जाय।
आवेंगे हम दोनों भैया, मैया जनि अकुलाय॥
याको बिलग बहुत हम मान्यो जो कहि पठयो धाय।
कहँ लौं कीर्ति मानिए तुम्हरी बड़ो कियो पय प्याय॥
कहियो जाय नंदबाबा सों अरु गहि जकरयो पाय।
दोऊ दुखी होन नहिं पावहि धूमरि धौरी गाय॥
यद्यपि मथुरा बिभव बहुत है तुम बिन कछु न सुहाय।
सूरदास ब्रजवासी लोगनि भेंटत हृदय जुड़ाय।

शब्दार्थ : पथिक = यात्री। जनि = नहीं। अकुलाय = व्याकुल। बिलग = बुरा। पठयो = भेजना। धाय = पालन-पोषण करने वाली। पय = दूध। पाय = पैर। धूमरी = काली या भूरी। धौरी = सफेद। बिभव = ऐश्वर्य सुख। सुहाय = अच्छा लगना। जुड़ाय = प्रसन्न होना।

संदर्भ : प्रस्तुत पद महाकवि सूरदास द्वारा रचित 'भ्रमरगीत' से लिया गया है। उल्लेखनीय है कि हिंदी साहित्य के कृष्णभक्त कवि शिरोमणि सूरदास का जन्म 1478 ई. में आगरा के 'रुनकता' नामक गाँव में हुआ था। उनकी तीन प्रमुख रचनाएँ मानी जाती हैं - 'सूरसागर', 'सूरसारावली' तथा 'साहित्यलहरी'। इसके अतिरिक्त उनकी लगभग बीस और रचनाओं का उल्लेख विद्वानों द्वारा किया गया है, किंतु उन्हें प्रामाणिकता की कसौटी पर खरा नहीं पाया गया। उन्होंने कृष्ण के लोकरंजक स्वरूप को लोकभाषा में चित्रित किया। हिंदी साहित्य गगन का यह सूर्य 1583 ई. में सदा के लिए अस्त हो गया, किंतु उनकी साहित्य रश्मियाँ सहृदय पाठकों के हृदय कमल को सदा खिलाती रहेंगी।

प्रसंग : प्रस्तुत पद में कृष्ण को मथुरा प्रवास के दौरान अपने बचपन की लीलाभूमि बहुत याद आती है। गोकुल गाँव के प्राकृतिक प्रांगण की सुंदरता, माता यशोदा, नंदबाबा, गौवंश आदि के

लिए वे मथुरा नगर में आकर बहुत व्याकुल हो उठते हैं। अतः वे अपने अंतरंग मित्र उद्धव को अपना असंदेश देकर गोकुल भेजते हैं, जिसे प्रस्तुत पद में सुंदर रूप में अभिव्यक्त किया गया है।

व्याख्या : कृष्ण उद्धव से कहते हैं कि हे पथिक उद्धव! तुम गोकुल जाकर हम दोनों भाइयों की कुशलक्षेम बताते हुए माता यशोदा से कहना कि हम दोनों बहुत जल्दी ही ब्रज में आएँगे। उन्हें कहना कि वे मेरे और दाऊ (बलराम) भैया के लिए अधिक चिंतित न हों। माता यशोदा से कहना कि उन्होंने माता देवकी को अपने संदेश में जो अपने आपको 'धाय' कहकर जो संदेश भेजा था, उसका हमें बहुत बुरा लगा है। उनको कहना कि हे माँ यशोदा! तुम्हारी कीर्ति का कितना गुणगान करूँ, तुम्हारा दूध पीकर ही तो हम इतने बड़े हुए हैं।

हे उद्धव! मेरे नंदबाबा के चरण हम दोनों की ओर से पकड़कर कहना कि वे मेरी गायों की अच्छे से देखभाल करें, उनका पूरा-पूरा ध्यान रखें। मेरी काली और सफेद गायें मेरे न रहने से दुखी न होने पाएँ। अर्थात नंदबाबा को हमारी ओर से गायों का ध्यान रखना पड़ता है, अतः उनके पाँव पकड़कर हमारे आने की उन्हें सूचना देना।

उनसे कहना कि हम जबसे मथुरा में आए हैं, सुख, वैभव का साम्राज्य हमारे चारों ओर फैला हुआ है। हमें यहाँ हर तरह का सुख प्राप्त होता है। किंतु हमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता। हमें तो आपके स्नेह की आदत सी पड़ी हुई है। कृष्ण कहते हैं कि उन्हें जीवन का वास्तविक सुख ब्रजवासियों के बीच ही मिलता है।

सूरदास के अनुसार कृष्ण के लिए जीवन के सुख और आनंद का वास्तविक स्थान ब्रजभूमि ही है। उन्हें जीवन का यथार्थ सुख और संतोष ब्रज में रहकर ही प्राप्त होता है। ब्रजवासियों से मिलकर उनके मन को शांति प्राप्त होती है।

विशेष : प्रस्तुत पद में सूरदास ने संदेश काव्य की परंपरा का निर्वाह करते हुए कृष्ण के विरह का मार्मिक चित्रण किया है। इसमें कृष्ण का माता यशोदा के प्रति सम्मान भाव प्रदर्शित हुआ है। उनकी गायों के प्रति चिंता में भारतीय ग्राम्य संस्कृति के सौंदर्य का निरूपण हुआ है, जहाँ पशु, पक्षी, नदी, पहाड़ तथा मानवता का नैसर्गिक सुख बिखरा रहता है। प्रस्तुत पद में उद्धव को 'पथिक' शब्द से संबोधित किया गया है। कृष्ण का ब्रजधाम के प्रति प्रेम सर्वोपरि बताते हुए नगरीय सुख-सुविधा के समक्ष ग्रामीण स्नेह तथा प्रेम को सर्वोपरि बताया गया है। ब्रजभाषा के सरस स्वरूप की छटा निराले अंदाज में कवि ने प्रस्तुत की है। कवि ने प्रेम को सर्वोपरि स्थान दिया है।

बोध प्रश्न

- कृष्ण यशोदा की कौन सी बात का बुरा मानते हैं?
- कृष्ण यशोदा के लिए क्या संदेश भेजते हैं?
- कृष्ण नंदबाबा के लिए क्या संदेश भेजते हैं?

नीके रहियौ जसुमति मैया।
आवहिंगे दिन चार पाँच में हम हलधर दोउ भैया॥
जा दिन तें हम तुम तें बिछुरै, कह्यौ न कोऊ 'कन्हैया'।
कबहुँ प्रात न कियौ कलेवा, साँझ न पीन्हीं पैया॥
वंशी बैत विषान देखियौ द्वार अबेर सबेरौ।
लै जिनि जाइ चुराइ राधिका कछुक खिलौना मेरो॥
कहियौ जाइ नंद बाबा सों, बहुत निठुर मन कीन्हौं।
सूरदास, पहुँचाइ मधुपुरी बहुरि न सोधौं लीन हौं॥

शब्दार्थ : नीके रहियौ = चिंता न करिए। आवहिंगे = आएँगे। बिछुरै = अलग होना। कलेवा = सुबह का जलपान। पैया = ताजे दूध की धार। बैत = छंदबद्ध रचना। विषान = सींग। अबेर = देर। निठुर= कठोर। मधुपुरी = सुख सुविधा से संपन्न नगर। सोधौं = खबर भी।

संदर्भ : प्रस्तुत पद में सूरदास कृष्ण के मातृ वियोग से जुड़े वात्सलयपूर्ण मनोभाव को प्रस्तुत करते हैं। कृष्ण को मथुरा में सभी यदुनाथ, कृष्ण आदि नाम से बुलाते थे, उन्हें अपना बचपन और ब्रजधाम हर समय याद आता रहता था। वे उद्धव से माता यशोदा के पास संदेश भेजते हुए अपनी सरल बाल भावना को इस पद में व्यक्त करते हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत पद में कृष्ण उद्धव के ब्रज की ओर प्रस्थान करते समय अपना संदेश देते हुए यह भी कहते हैं कि माता यशोदा से कहना कि वे राधा से मेरे खिलौनों को बचाकर कर रखें। गोकुल गाँव की उन्मुक्तता को कृष्ण मथुरा में नहीं पाते हैं, तो वे नंदबाबा को 'निष्ठुर' तक कह देते हैं।

व्याख्या : कृष्ण उद्धव को ब्रज भेजते समय कहते हैं कि हे उद्धव! तुम माता यशोदा से कहना कि वे हमारी चिंता बिलकुल न करें। हम दोनों भाई चार-पाँच दिनों में अर्थात बहुत जल्दी ही ब्रज वापस आकर सबसे मिलेंगे। वे कहते हैं कि मैं और हलधर भैया अपने ब्रज को और ब्रज के उन्मुक्त जीवन को बहुत याद करते हैं। नंदबाबा से कहना कि मथुरा में जब से आए हैं, किसी ने मुझे प्यार से 'कन्हैया' कहकर भी नहीं बुलाया है। सभी मुझे 'यदुनाथ' कहकर संबोधित करते हैं। यहाँ

तक कि जब से मथुरा आए हैं कभी प्रातः काल का जलपान भी नहीं किया और न ही गाय के थन का ताज़ा दूध ही कभी पीने के लिए मिला।

कृष्ण अपनी बाल मनोवृति को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि हे उद्धव! माता यशोदा से कहना कि मेरे सारे खिलौने तथा विशेष रूप से मेरी बाँसुरी को सँभाल कर रखें। क्योंकि राधा कभी भी मेरे खिलौनों को चुरा कर चली जाएगी। हे उद्धव! नंदबाबा से कहना कि वे इतने निष्ठुर क्यों हो गए हैं कि जबसे हमें मथुरा में छोडकर गए हैं कभी हमारी खोज-खबर ही नहीं ली। न तो वे स्वयं हमारी कुशल पूछने आएँ और न ही किसी को हमारी कुशलता पूछने के लिए भेजा।

विशेष : सूरदास के इस पद में कृष्ण के प्रसंग के माध्यम से बाल मनोवृत्ति को चित्रित किया गया है। कृष्ण पहली बार ब्रज छोड़ कर मथुरा गए थे, ऐसे में उन्हें अपना गाँव बहुत याद आता है। वे अपने ग्रामीण उन्मुक्तता भरे जीवन को याद करते हुए माता यशोदा तथा बाबा नंद के पास अपने अभिन्न मित्र उद्धव के द्वारा अपना संदेश भेजते हैं।

इस पद में सूर ने बालसुलभ खिलौनों के प्रति कृष्ण की चिंता को आह्लादक रूप से चित्रित किया है। राधा के साथ कृष्ण की बालोचित तकरार को सूर ने ब्रज भाषा की मृदुलता के साथ प्रस्तुत किया है।

गाँव की शुद्ध हवा और खान-पान का उल्लेख इस पद को स्मरणीय बना देता है।

बोध प्रश्न

- कृष्ण माता यशोदा के पास अपना संदेश किसके द्वारा भेजते हैं?
- सूरदास ने प्रातःकाल के जलपान को क्या कह कर चित्रित किया है?
- कृष्ण यशोदा को राधा से क्या बचाकर रखने के लिए कहते हैं?

10.3.4 काव्यगत विशेषताएँ

छात्रो! आपको अब तक यह बात समझ में आ गई होगी कि पहले पद में सूरदास ने कृष्ण के विरह का मार्मिक चित्रण किया है। इस पद में आपने भारतीय ग्राम्य संस्कृति को देखा है। बालक कृष्ण माता यशोदा के प्रति सम्मान भाव प्रदर्शित करते हुए दिखाई देते हैं। इसमें यह भी दिखाया गया है कि नगरीय सुख-सुविधा के समक्ष ग्रामीण स्नेह और प्रेम सर्वोपरि है। इस पद में संदेश काव्य परंपरा का निर्वाह हुआ है।

दूसरे पद बाल मानसिकता को दर्शाया गया है। बालक जिससे स्नेह और प्रेम करते हैं और जिनसे उन्हें अमित प्रेम प्राप्त होता है उनसे दूर रहना नहीं चाहते। यदि किसी कारणवश उनसे

दूर होना पड़े तो उनकी स्मृतियों में समय व्यतीत करते हैं। इस पद में सूरदास ने यह दर्शाया है कि कृष्ण नंदबाबा और माता यशोदा के स्नेह और वात्सल्य को याद करते हुए अपने अंतरंग मित्र उद्धव के द्वारा संदेश भेजते हैं कि वे जल्दी ही ब्रज वापस आ जाएँगे।

हिंदी साहित्य में सूरदास एक ऐसे कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं, जिन्होंने कृष्णकाव्य परंपरा को उच्चतम स्थान पर प्रतिष्ठापित किया। उन्होंने बोलचाल की ब्रजभाषा में कृष्ण के बाल लीला का वर्णन किया है। उन्होंने बालमनोविज्ञान को सुंदर रूप से अभिव्यक्त किया है। बालकों का खिलौनों के प्रति मोह हो या फिर गाय के थान से ताज़ा दूध पीने की बात हो, ऐसे ही कई बाल सुलभ चेष्टाओं को सूरदास बहुत रोचक ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

मथुरा में ऐश्वर्य, सुख और समृद्धि है फिर पर भी कृष्ण को ब्रज का प्रेम भरा जीवन याद आता है। सूरदास कृष्ण के बाल मन में निहित ग्रामीण स्नेह और प्रेम को मार्मिक रूप से दर्शाया है। इस अभिव्यक्ति के लिए किया गया शब्द चयन, अलंकार निरूपण, संगीतात्मक प्रस्तुति आदि ध्यान आकर्षित करते हैं।

भ्रमरगीत परंपरा के क्षेत्र में सूर के पद अत्यंत श्रेष्ठ हैं। उन्होंने राधा-कृष्ण के प्रेम के स्वरूप को उदात्त रूप से प्रस्तुत किया है। यह प्रेम भारतीय संस्कृति में पूज्य है। कवि के 'भ्रमरगीत' के पदों में ब्रज संस्कृति के माध्यम से भारतीय सनातन परंपरा को सशक्त अभिव्यक्ति मिली है। 'भ्रमरगीत' के माध्यम से सूरदास अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल हुए। वे सगुण भक्ति को बहुत ही सरल और रोचक ढंग से प्रतिपादित करते हैं। निर्गुण भक्ति पर सगुण भक्ति का विजय 'भ्रमरगीत' में देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- सूरदास ने बालमनोविज्ञान का चित्रण किसके माध्यम से किया है?
- भारतीय ग्राम्य संस्कृति की दो विशेषताएँ बताइए।
- 'भ्रमरगीत' में सूरदास ने किसका प्रतिपादन किया है?

10.3.5 समीक्षात्मक अध्ययन

प्रिय छात्रो! हिंदी साहित्य में कृष्णभक्ति काव्य परंपरा में सूरदास का सबसे ऊँचा स्थान है। अष्टछाप कवियों की परंपरा में सबसे मधुर और सुरीला राग सूरदास का ही था। उन्होंने भक्ति काव्य परंपरा में भगवान और भक्त के बीच की दूरी को सख्य भाव के साथ मिटाया। कृष्ण की कृपा के प्रति विनयावनत होकर विनय के पद गाने वाले सूरदास को वल्लभाचार्य ने

कृष्णभक्ति का ऐसा पान कराया कि कृष्ण कवि के 'कान्हा' बन गए। भगवान् और भक्त के ऐसे निश्छल संबंधों की सर्जना सूरदास जैसे सूर्य के द्वारा ही हो सकता था।

तद्युगीन समाज की निराशा को दूर करते हुए कृष्ण की निर्मल बाललीला, प्रेमलीला तथा भ्रमरगीत काव्यों के द्वारा सुर ने अपनी कृति 'सूरसागर' में निरूपित है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'सूरसागर' के लगभग 400 उन पदों का संकलन 'भ्रमरगीत सार' के रूप में किया है। इसमें कृष्ण अपने अभिन्न मित्र उद्धव को अपना संदेशवाहक बना कर ब्रज भेजते हैं। उद्धव के योग एवं ब्रह्म ज्ञान के अभिमान को ब्रज की सरल गोपियों के सगुण भक्ति पूर्ण प्रेम के सामने नतमस्तक होते दिखाया गया है।

सूरदास का भ्रमरगीत प्रसंग उद्धव और गोपियों के संवाद का वह अंश है, जब उद्धव कृष्ण का संदेश लेकर गोपियों के समक्ष आते हैं। वे गोपियों को कृष्ण के योगमाया रूप और ब्रह्म रूप का ज्ञान देने लगते हैं। भोली-भाली गोपियों को ब्रह्म से भला क्या लेना देना था, वे तो कृष्ण प्रेमरस में रमी हुई थीं। वे भौंरे के माध्यम से उद्धव को उपालंभ देने लगती हैं।

उद्धव कृष्ण के दूत बनकर ब्रज जाते हैं ताकि कृष्ण के विरह में डूबी गोपियों के दुख दूर कर सकें और उन्हें समझा सकें। वही उद्धव ब्रज से वापस जाते समय गोपियों के दूत बनकर कृष्ण के पास पहुँचते हैं और कृष्ण के समक्ष गोपियों के प्रेम का पक्ष रखते हैं।

'भ्रमरगीत' में लोकगीतों का सम्मिश्रण देखा जा सकता है। इसमें भले ही विरह की अभिव्यक्ति है, लेकिन कहीं भी विरह का रोना नहीं है। क्योंकि इसमें कृष्ण माता यशोदा और नंदबाबा को अपने हृदय में महसूस करते हैं तो माता यशोदा, नंदबाबा और गोपियाँ कृष्ण को। इस काव्य में विरह स्थायी भाव है।

बोध प्रश्न

- गोपियाँ किसके माध्यम से उद्धव को उपालंभ देती हैं?
- 'भ्रमरगीत' विरह काव्य होने पर भी इसमें विरह का रोना क्यों नहीं है?

10.4 पाठ सार

हिंदी साहित्य के कृष्ण भक्त कवियों में सूरदास का महत्वपूर्ण स्थान है। कृष्ण के लोकरंजनकारी लीलाओं का चित्रण करते हुए उन्होंने कृष्ण को सामान्य मानव के रूप में प्रस्तुत किया है। पाठक कृष्ण लीला का पठन करते समय अपने घर, परिवार तथा आस-पास के बालकों में कृष्ण रूप के दर्शन करने लगते हैं। कृष्ण की बाल लीलाओं के अद्‌भुत दृश्य को ऊपर वर्णित

पदों में भी देखा जा सकता है।

हिंदी साहित्य में भ्रमरगीत परंपरा का आरंभ करते हुए सूरदास ने निर्गुण भक्ति काव्यधारा पर सगुण भक्ति का सहज प्रभाव चित्रित किया है। विरह की जिस परंपरा को भ्रमरगीत परंपरा के अन्य कवियों ने आगे बढ़ाया है, उनमें सूरदास द्वारा चित्रित विरह सात्विकता के अद्‌भुत उदाहरण प्रतीत होते हैं। कृष्ण मथुरा में अपने लोक-कल्याणकारी कार्यों में व्यस्त हो जाते हैं, लेकिन जब उन्हें माता यशोदा, नंदबाबा, राधा, गोप-गोपियों की याद आने लगती है तो वे अपने प्रिय मित्र उद्धव को गोकुलवासियों की खबर लेने के लिए भेजते हैं।

कृष्ण उद्धव को माता यशोदा से मिलकर अपना संदेश देने के लिए कहते हैं। वे उद्धव को माता यशोदा के पास भेजते हुए कहते हैं कि जीवन में मिलने वाले सारे सुख गोकुल के प्रेम के सामने कुछ भी नहीं है। वे कहते हैं कि हे उद्धव! तुम माता यशोदा से कहना कि वे हमारी चिंता बिलकुल न करें। हम दोनों भाई चार-पाँच दिनों में ब्रज वापस आकर जल्दी ही सबसे मिलेंगे। माता यशोदा से कहना कि मेरे सारे खिलौने तथा विशेष रूप से मेरी बाँसुरी को संभाल कर रखें, क्योंकि राधा कभी भी मेरे खिलौनों को चुरा ले जाएगी। अंततः वे कहते हैं कि हे उद्धव! नंदबाबा से पूछना कि वे इतने कठोर हृदय के क्यों हो गए हैं? वे जबसे हमें मथुरा में छोड़कर गए हैं, न तो कभी हमारी खोज-खबर ही ली है और न ही किसी को हमारी कुशलता पूछने के लिए भेजा है। इस प्रकार सूरदास ने उक्त दो पदों के माध्यम से जिस तरह कृष्ण के ब्रज विरह को सुंदरतम अभिव्यक्ति दी है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

10.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. सूरदास का 'भमरगीत' बड़ी सीमा तक भागवत के भ्रमरगीत का मौलिक विकास है।
2. 'भ्रमरगीत' में जितना महत्व कृष्ण और गोपियों के प्रेम का है, कृष्ण और यशोदा के वात्सल्य का भी उतना यही महत्व है।
3. कृष्ण मथुरा में रहकर भी राज दरबार की संस्कृति और नगरीय जीवन को हृदय से नहीं अपना पाते हैं।
4. मथुरा रहते हुए कृष्ण अपने आपको जड़ों से उखड़ा हुआ महसूस करते हैं। ऐसा नगर और गाँव की संस्कृति में अंतर के कारण है।
5. कृष्ण कभी भी गोकुल, ब्रजवासियों तथा नंद और यशोदा को नहीं भूल पाते। बचपन की

यादें सदा उनका पीछा करती रहती हैं।

6. कृष्ण के लिए समस्त ब्रजमंडल, वहाँ की प्रकृति और गो-धन अपने परिवार के सदस्य के समान हैं।
7. कृष्ण का ब्रज प्रेम शहरी संस्कृति पर ग्रामीण प्रकृति की विजय का प्रतीक है।
8. यशोदा माता के लिए कृष्ण का संदेश 'विप्रलंब वात्सल्य' का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

10.6 शब्द संपदा

1. अभिव्यक्ति = प्रकट करना
2. आपत्ति = एतराज़
3. आह्लाद = हार्दिक ख़ुशी
4. उद्भावना = पहली बार अस्तित्व में आना
5. उन्मुक्त = स्वतंत्र
6. कसौटी = परखना
7. किंचित = थोड़ा
8. खरा = सच्चा
9. निरूपण = विवेचना करना
10. नैसर्गिक = प्राकृतिक
11. परिमार्जित = शुद्ध करना
12. प्रांगण = आँगन
13. मृदुलता = कोमलता
14. यथार्थ = सत्यता
15. रमना = तल्लीन होना
16. लंपटता = कामुकता
17. समक्ष = सामने

10.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'भ्रमरगीत' परंपरा का विवेचन कीजिए।
2. कृष्ण के संदेशों में किन-किन बातों का उल्लेख किया गया है?
3. पठित पदों के आधार पर ब्रज संस्कृति का परिचय दीजिए।
4. भ्रमरगीत परंपरा में सूरदास का क्या स्थान है?

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 200 शब्दों में दीजिए।

1. कृष्ण ब्रजभूमि के लिए क्यों व्याकुल थे?
2. कृष्ण ने माता यशोदा के लिए क्या संदेश भेजा?
3. ब्रजवासियों की जीवनशैली की कुछ झलकियों को बताइए।
4. सूरदास के भ्रमरगीत की क्या विशेषता है?
5. 'पथिक! संदेशो कहियो। / आवेंगे हम दोनों भैया, मैया जनि कुलाए॥/ याको बिलग बहुत हम मान्यो जो कहि पठयो धाय।' इन पंक्तियों का संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. कृष्ण ने उद्धव को कहाँ भेजा? ( )
   (अ) सीही (आ) गोकुल (इ) मथुरा (ई) अयोध्या
2. कृष्ण अपना संदेश सर्वप्रथम किसके पास भेजते हैं? ( )
   (अ) गोपियाँ (आ) राधा (इ) यशोदा (ई) नंद
3. कृष्ण उद्धव से काली और सफ़ेद गायों का किसे ध्यान रखने के लिए कहते हैं? ( )
   अ) नंदबाबा (आ) यशोदा (इ) ब्रजवासी (ई) राधा
4. भँवरगीत किसकी रचना है? ( )
   अ) परमानंद दास (आ) नंददास (इ) सूरदास (ई) रामचंद्र शुक्ल

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. स्वर्णकाल हिंदी साहित्य के ....को कहा जाता है।

2. सूरदास की कृष्णभक्ति भ्रमरगीत में ....भाव की है।

3. वात्सल्य रस के महाकवि ....को कहा जाता है।

4. सूरदास अपने जीवन के आरंभिक दिनों में ....के पद गया करते थे।

5. हिंदी साहित्य का सूर्य कवि ....को कहा जाता है।

III. सुमेल कीजिए -

1. सहित्यलहरी	(अ) मथुरा
2. पथिक	(आ) सूरदास
3. मधुपुरी	(इ) उद्धव

10.8 पठनीय पुस्तकें

1. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य : मैनेजर पांडेय

2. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल

3. सुर-साहित्य : हजारी प्रसाद द्विवेदी

4. सूरसागर सार - सटीक : धीरेंद्र वर्मा (संकलनकर्ता)

इकाई 11 : बिहारी : एक परिचय

रूपरेखा

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 मूल पाठ : बिहारी : एक परिचय

11.3.1 जीवन परिचय

11.3.2 रचना यात्रा

11.3.3 रचना का परिचय

11.3.4 हिंदी साहित्य में बिहारी का स्थान एवं महत्व

11.4 पाठ सार

11.5 पाठ की उपलब्धियाँ

11.6 शब्द संपदा

11.7 परीक्षार्थ प्रश्न

11.8 पठनीय पुस्तकें

11.1 प्रस्तावना

हम अपने जीवन में आने वाली परिस्थितियों से बहुत कुछ सीखते हैं। जीवन में मिलने वाली पद-प्रतिष्ठा, सम्मान-अपमान, संसार का व्यवहार आदि हमें सोचने पर विवश करते हैं कि आखिर ये जीवन क्या है? कवि, साहित्यकार अपने जीवन तथा समाज में घटित घटनाओं को देखकर उनसे प्राप्त अनुभव को अपने साहित्य में अभिव्यक्त करता है। जीवन के इन्हीं अनुभवों को हिंदी साहित्य के कवियों ने अभिव्यक्त किया है। इन कवियों में रीतिकाल के प्रमुख कवि बिहारी का प्रमुख स्थान है। उन्होंने अपने जीवन को अपने दोहों में अभिव्यक्त करते हुए 'गागर में सागर' भरने का काम किया है।

11.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- बिहारी के व्यक्तित्व से परिचित हो सकेंगे।
- बिहारी के कृतित्व से परिचित हो सकेंगे।

- रीतिकाल को दृष्टिगत रखते हुए बिहारी के काव्य की विशेषताएँ समझ सकेंगे।
- बिहारी और 'बिहारी सतसई' के हिंदी साहित्य में स्थान और महत्व को जान सकेंगे।

बिहारी की भाषा-शैली के सौंदर्य से अवगत हो सकेंगे।

11.3 मूल पाठ : बिहारी : एक परिचय

बिहारी के व्यक्तित्व और कृतित्व को हम इन निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर समझने का प्रयास करेंगे।

11.3.1 जीवन परिचय

हिंदी साहित्य में रीतिकाल को ही उत्तर मध्यकाल (संवत् 1700-1900) कहा जाता है। 'रीति' शब्द को एक काव्य परिपाटी के रूप में ग्रहण किया जाता है। संस्कृत काव्यशास्त्र में 'रीति' शब्द उस काव्यांग विशेष के लिए ही रूढ़ है, जिसे काव्य की आत्मा के रूप में घोषित कर आचार्य वामन ने तत्संबंधी पृथक संप्रदाय का प्रवर्तन किया। उनके अनुसार गुण विशिष्ट रचना, अर्थात् पदसंघटना-पद्धति विशेष का नाम 'रीति' है। इस संबंध में डॉ. नगेंद्र एवं डॉ. हरदयाल ने बताया है कि 'रीति' शब्द संस्कृत के समान हिंदी में भी बहुत पहले से काव्य रचना-पद्धति के लिए रूढ़ है। रीति शब्द को इसी रूढ़ अर्थ में ग्रहण करते हुए कह सकते हैं कि 'रीतिकाव्य' वह काव्य है जिसकी रचना विशिष्ट पद्धति अथवा नियमों को दृष्टि में रखकर की गई हो।' रीतिकालीन काव्य को मुख्यत: तीन भागों में बाँटा जाता है - रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त।

डॉ. बच्चन सिंह ने इस विभाजन को थोड़ा उलट दिया था। उन्होंने रीतिबद्ध को बद्धरीति काव्य, रीतिमुक्त को मुक्तरीति काव्य शब्द से अभिहित किया रीतिसिद्ध के अंतर्गत उन कवियों को शामिल किया जाता है जिन्होंने अपने आचार्यत्व का प्रदर्शन नहीं किया। रीतिबद्ध में विद्वत्ता, काव्यशास्त्र के माध्यम से अपना वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास दिखता है रीतिसिद्ध कवियों ने काव्य सिद्धांतों, रस, छंद, अलंकारों पर कही-कहीं ध्यान दिया और कहीं-कहीं ध्यान नहीं दिया। विद्वत्ता का परिचय देना इनका ध्येय नहीं है। इसके अंतर्गत बिहारी को प्रमुख रूप से शामिल किया जाता है।

बोध प्रश्न

- रीतिकालीन काव्य को कितने भागों में बाँटा जाता है?

• रीतिसिद्ध कवि किसे कहते हैं?

बिहारी के जन्म को लेकर मतभेद है। इनका जन्म सन् 1595 ई. माना जाता है। कुछ पुस्तकों में सन् 1603 ई. बताया जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इनका जन्मकाल संवत् 1660 (सन् 1597 ई.) के लगभग माना है। इनका जन्म ग्वालियर के पास गोविंदपुर गाँव में हुआ था। ये जाति के माथुर चौबे थे। इनके पिता का नाम केशव था। ये केशव कवि केशवदास से भिन्न हैं। इनके गुरु नरहरिदास थे। इनके एक बड़े भाई और एक छोटी बहन थी। इनके माता की मृत्यु छोटी बहन के जन्म के बाद थोड़े ही दिनों में हो गई। एक दोहे के आधार पर इनके विषय में जानकारी प्राप्त होती है। यह दोहा बिहारी द्वारा रचित माना जाता है परंतु यह दोहा 'बिहारी सतसई' में सम्मिलित नहीं है -

जनम ग्वालियर जानिये खंड बुंदेले बाल।
तरूणाई आई सुखद मथुरा बसि ससुराल॥

'बिहारी सतसई' के प्रथम टीकाकार कृष्णलाल कवि ने बिहारी के एक दोहे के आधार पर उनके पिता का नाम केशवराय बताया है। यह बिहारी का प्रार्थनापरक दोहा है-

प्रगट भए द्विजराज कुल, सुबस बसे ब्रज आइ।
मेरे हरौ कलेस सब, केसव केसवराइ॥

पहले के बादशाह बहुत ही उदार प्रवृत्ति के होते थे। वे विभिन्न धर्म के लोगों, गुरुओं, महात्माओं का पूरा सम्मान करते थे। 1618 ई. में शाहजहाँ वृंदावन गए थे। उन्होंने महात्मा नरहरिदास से भेंट की। इस भेंट में नरहरिदास ने बिहारी की प्रशंसा की थी। कहते हैं कि आगरा में ही अब्दुलरहीम ख़ानख़ाना से बिहारी की भेंट हुई थी।

बोध प्रश्न

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने बिहारी का जन्म किस संवत में माना है?
- 'बिहारी सतसई' के प्रथम टीकाकार का नाम बताइए।

सन् 1620 ई. में शाहजहाँ के दरबार में कई राजे-महाराजे उपस्थित हुए। उस अवसर पर बिहारी की काव्य प्रतिभा को सभी ने देखा और बहुत से राजाओं ने उनकी वार्षिक वृत्ति बाँध दी। बाद में जहाँगीर और शाहजहाँ के बीच मतभेद पैदा हो गया। फलस्वरूप शाहजहाँ को आगरा से हटना पड़ा।

ध्यान रखा जाना चाहिए कि जब निज़ाम बदलता है तो वहाँ के सहयोगी, कृपापात्र सभी

बदलते हैं। शाहजहाँ के साथ-साथ बिहारी के भी बुरे दिन आ गए। बिहारी अपनी वृत्ति लेने के लिए बूँदी, जोधपुर आमेर आदि जाया करते थे। इसी वृत्ति को प्राप्त करने के लिए वे एक बार आमेर नरेश जयसिंह के यहाँ गए। जानकारी मिली कि राजा जयसिंह अपनी नवविवाहिता पत्नी के प्रेम पाश में ऐसे बँध गए हैं कि उन्होंने राजपाट पर ध्यान देना छोड़ दिया है। प्रधान महारानी (चौहान रानी) अत्यधिक दुखी थीं। बिहारी ने कुछ यत्न लगाकर एक दोहा राजा जयसिंह के पास भिजवा दिया। राजा इससे बहुत प्रभावित हुए और आकर बिहारी से मिले तथा राजपाट संभालना शुरू किया। दोहा द्रष्टव्य है-

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं बिकास इहि काल।
अली कली ही सों बंध्यौ, आगे कौन हवाल।।

प्रधान महारानी को जब यह ज्ञात हुआ कि बिहारी के दोहे के प्रभाव के कारण राजा जयसिंह ने राजकाज संभाल लिया है तो उन्होंने प्रसन्न होकर बिहारी को 'कालापहाड़ी' नामक गाँव पुरस्कार स्वरूप दे दिया। बताया जाता है कि बिहारी मृत्यु सन् 1663 ई. में हुई।

बोध प्रश्न

- बिहारी ने राजा जयसिंह के पास कौन सा दोहा भिजवाया था?
- बिहारी को चौहानी रानी ने कौन सा गाँव तोहफे में क्यों दिया?

11.3.2 रचना यात्रा

बिहारी की एक प्रामाणिक कृति 'बिहारी सतसई' प्राप्त होती है। यह ग्रंथ बिहारी की कीर्ति का आधार है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है 'बिहारी ने इस सतसई के अतिरिक्त और कोई ग्रंथ नहीं लिखा। यही एक ग्रंथ उनकी इतनी बड़ी कीर्ति का आधार है।' 'बिहारी सतसई' को लिखने के संदर्भ में बिहारी ने एक दोहे के माध्यम से बताया है-

हुकुम पाइ जयसाहि कौ, हरि-राधिका-प्रसाद।
करी बिहारी सतसई, भरी अनेक संवाद॥

चौहानी रानी (प्रधान रानी) के पुत्र रामसिंह की शिक्षा की ज़िम्मेदारी बिहारी को दी गई। रामसिंह का विद्यारंभ बिहारी की देखरेख में ही प्रारंभ हुआ। बिहारी ने उस समय तक जितने दोहे लिखे थे सबको संग्रहित किया। उसमें कुछ अन्य कवियों की रचनाओं का संग्रह करके रामसिंह का अध्ययन शुरू करवाया गया।

'बिहारी सतसई' में दोहों के विषय भिन्न-भिन्न हैं। वे दोहे भक्तिपरक, नीतिपरक और

शृंगारपरक हैं। बिहारी सतसई में निश्चित रूप से भक्ति और नीतिपरक दोहे हैं परंतु इसमें प्रमुखता शृंगार की ही है। इसलिए 'बिहारी सतसई' को शृंगार काव्य की संज्ञा भी दी जाती है। इसमें भक्ति, नीति, शृंगार के साथ व्यंग्य और प्रकृति चित्रण भी है।

बोध प्रश्न

- 'बिहारी सतसई' के सभी दोहों को एक जगह संग्रहीत करने का मुख्य उद्देश्य क्या था?
- 'बिहारी सतसई' में किस प्रकार के दोहे हैं?

11.3.3 रचना का परिचय

बिहारी की एक ही प्रामाणिक कृति है 'बिहारी सतसई'। यहाँ सत् का अर्थ है सात और सई का अर्थ है सौ। इसमें दोहों की संख्या को लेकर विवाद रहा है। इसमें 713 दोहे हैं, परंतु कुछ आलोचकों ने 713 से अधिक दोहे भी स्वीकार किए हैं। जगन्नाथदास रत्नाकर ने 'बिहारी सतसई' की टीका 'बिहारी रत्नाकर' के नाम से प्रस्तुत की है। इसमें विभिन्न प्राचीन प्रतियों, टीकाओं के आधार पर 'बिहारी सतसई' में 713 दोहे ही माने हैं। वे लिखते हैं 'मानसिंह वाली टीका अर्थात् हमारी तीसरी प्राचीन प्रति में 713 दोहे मिलते हैं, और अंत में टीकाकार ने स्पष्ट रूप से लिख भी दिया है कि सतसई में 713 दोहे हैं। रत्नकुँवरि वाली पुस्तक अर्थात् पाँचवीं प्राचीन प्रति में भी ये ही 713 दोहे देखने में आते हैं। बिहारी के शिष्य वाली प्रति अर्थात् दूसरी प्राचीन प्रति में इन 713 दोहों में से 117, 301, 604 और 713 अंकों के दोहे नहीं हैं, पर इनमें से 117 तथा 301 अंकों के दोहे तो अन्य प्राचीन प्रतियों में विद्यमान हैं और 604 अंक वाला दोहा तीसरी, चौथी तथा पाँचवीं पुस्तकों में उपलब्ध है और पहली प्रति में केवल 493 तक दोहे हैं। अतः: उसमें भी इसकी उपस्थिति मान लेना असंगत नहीं है। अब रहा 715 अंक वाला दोहा। यह चौथे अंक की पुस्तक में भी नहीं है पर कृष्णलाल की गद्य टीका वाली प्रति में, जिसका कथन ऊपर हो चुका है, यह 713 ही अंक पर पाया जाता है, अत: इसकी उपस्थिति दो सटीक प्रतियों तथा एक मूल प्रति में है। इसके अतिरिक्त पहले अंक की प्रति में इसकी उपस्थिति तथा अनुपस्थिति, दोनों संदिग्ध हैं। सटीक पुस्तकें सामान्यत: मूल पुस्तकों से अधिक प्रामाणिक मानी जाती हैं, अत: इस 713 अंक वाले दोहे को बिहारी कृत मानना समीचीन प्रतीत होता है।' जहाँ तक जगन्नाथदास रत्नाकर की 'बिहारी सतसई' पर लिखित टीका 'बिहारी-रत्नाकर' का प्रश्न है तो यह अत्यधिक प्रामाणित मानी जाती है। 'बिहारी सतसई' की टीका 'बिहारी रत्नाकर' पर टिप्पणी करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है- 'बिहारी का सबसे उत्तम और प्रामाणिक

संस्करण बड़ी मार्मिक टीका के साथ थोड़े दिन हुए प्रसिद्ध साहित्यमर्मज्ञ और ब्रजभाषा के प्रधान आधुनिक कवि बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ने निकाला। जितने श्रम और जितनी सावधानी से यह संपादित हुआ है, आज तक हिंदी का और कोई ग्रंथ नहीं हुआ।' इन सब बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि 'बिहारी सतसई' में कुल 713 दोहे हैं।

बोध प्रश्न

- बिहारी सतसई में कुल कितने दोहे स्वीकार किए जाते हैं?

'बिहारी सतसई' में दोहों में विभिन्न विषयों को उद्घाटित किया गया है। इसमें शृंगारपरक, भक्तिपरक, नीतिपरक, व्यंग्यात्मक और प्रकृति चित्रण सहित बिंदुओं को दृष्टिगत रखते हुए दोहे समाहित किए गए हैं। शृंगारपरक एक दोहा द्रष्टव्य है-

बतरस लालच लाल की, मुरली धरि लुकाइ।
सौंह करै भौंहनि हँसे, दैन कहै, नटि जाइ।।

यहाँ गोपिकाओं ने श्रीकृष्ण से मीठी-मीठी बातें करने के लिए उनकी मुरली को छिपाकर रख दिया है। वे कसम खाती हैं कि हे कन्हैया! हमने तुम्हारी मुरली नहीं छिपाई है लेकिन उनकी भौहें हंसती रहती हैं। देने के लिए कहती हैं फिर मुकर जाती हैं। नायिका के वियोग वर्णन में ऊहात्मकता आ गई है। दोहा द्रष्टव्य है-

इत आवति चलि जात उत, चली छ-सातक हाथ।
चढ़ी हिंडोरे सी रहै, लगी उसासन साथ।।

नायिका वियोगावस्था में है। वह लेटी हुई है। वह जब साँस लेती और छोड़ती है तो छह-सात हाथ उसकी शरीर ऊपर आती है और जाती है। ऐसा लगता है कि वह झुला झूल रही है। उसका अंतिम क्षण है। बिहारी ने कृष्ण भक्ति की है। उनका एक भक्तिपरक दोहा द्रष्टव्य है-

या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यौं ज्यों बूड़ै स्याम रँग, त्यौं त्यौं उज्जलु होइ।।

बिहारी कहते हैं इस चित्त या मन के बारे में क्या कहूँ? इसकी स्थिति कुछ समझ में नहीं आती। जैसे-जैसे यह कृष्णा के श्याम रंग में डूबता जाता है। वैसे-वैसे यह चित्त उज्ज्वल होता चला जाता है। उनकी भक्ति सच्ची है तभी तो वे लिखते हैं -

करौ कुबत जगु, कुटिलता तजौं न, दीनदयाल।
दुखी होहुगे सरल हिय बसत, त्रिभंगी लाल।।

बिहारी लिखते हैं ये संसार भले ही मेरी बुराई करे लेकिन मैं अपने मन के टेढ़ेपन को नहीं छोड़ूँगा। यदि मैं अपने हृदय को सरल या सीधा बना लूँगा तो उसमें बसने में त्रिभंगी कृष्ण को बहुत कष्ट होगा। नीतिपरक दोहों की बात करें तो उसमें बड़ी ज्ञान की बातें छिपी हुई हैं। उनमें से कुछ दोहों की हम आगे व्याख्या भी करेंगे। उदाहरण द्रष्टव्य है-

कनक-कनक तें सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
वह खाए बौराय नर, यह पाए बौराय।।

बिहारी के यहाँ मात्र शृंगार, भक्ति, नीति के ही दोहे नहीं हैं। उनके दोहों में व्यंग्य चित्रण भी है। बिहारी के दोहों में अभिव्यक्त व्यंगोक्तियाँ कटूक्तियाँ नहीं बनी हैं। वे व्यंग्य ही हैं, जिसे देखकर या तो आप हँसते हैं या मुस्कुराते हैं। क्रोधित नहीं होते हैं। उदाहरण देखिए-

परतिय-दोषु पुरानु सुनि, सखि मुल्की सुखदानि ।
कसु करि राखी मिश्रहूँ, मुंह आई मुसकानि ।।

बोध प्रश्न

- बिहारी सतसई में शृंगार, भक्ति और नीति के दोहे हैं स्पष्ट कीजिए।

बिहारी ने प्रकृति चित्रण भी किया है। उदाहरण देखिए-

छकि रसाल-सौरभ, सने मधुर माधुरी-गंध।
ठौर ठौर झौंरत झपत, भौंर-झौंर मधुअंध।।

बिहारी सतसई में गाँव तथा शहर के बीच की खाई साफ तौर पर दिखती है। बिहारी सतसई में जीवन के विभिन्न पहलुओं पर दृष्टिपात करते हुए दोहों की रचना की गई है। इन दोहों को संग्रहित इसलिए किया गया ताकि रामसिंह को शिक्षित किया जा सके। बिहारी का प्रयास कभी-भी दोहों को क्रमबद्धता प्रदान करने का नहीं रहा है। बिहारी सतसई का समाप्ति काल 1662 ई. माना जाता है। यह संवत् के हिसाब से संवत् 1719 आता है। इस विषय में एक दोहा भी प्रसिद्ध है।

संवत् ग्रह शशि जलधि छिति, तिथि छठ बासर चंद।
चैत मास पख कृष्ण में, पूरन आनंद कंद।।

'अङ्कानां वामतो गति:' अंक बायीं ओर को गिने जाते हैं, इस हिसाब से सतसई का निर्माण 1719 में निश्चित होता है।

यदि हम बिहारी सतसई की भाषा की बात करें तो बिहारी ने अपने दोहों की रचना

ब्रजभाषा में की है। रीतिकाल में भाषा के रूप में ही ब्रज को ग्रहण किया जाता था। वर्तमान में भले ही यह एक बोली के रूप में हो गई है। बच्चन सिंह लिखते हैं कि 'बिहारी की भाषा ब्रजभाषा है। उस समय की प्रचलित 'काव्यभाषा' है। भक्तिकाल में प्रचलित ब्रजभाषा और रीतिकाल में प्रचलित काव्य भाषा में एक अंतर दिखाई पड़ता है वह यह कि पहली लोक भाषा के निकट है जबकि दूसरी उससे दूर पड़ गई है। भक्तिकाल की कविताएँ जनता को संबोधित थीं तो रीतिकाल की कविताएँ राजाओं-महाराजाओं और सामंतों-सरदारों को। एक में जनमानस को छूने का प्रयास था तो दूसरी में सामंत वर्ग को चमत्कृत करने का प्रयास। ऐसी स्थिति में रीतिकालीन काव्यभाषा का अलंकृतिपूर्ण हो जाना स्वाभाविक था।' बिहारी ने तो कई राज दरबारों को देखा था। यह तो स्वाभाविक ही है कि उनकी काव्य भाषा में थोड़ी तड़क-भड़क, थोड़ी लचक-मचक रहेगी ही।

बोध प्रश्न

- भक्तिकाल और रीतिकाल में प्रचलित ब्रजभाषा में अंतर बताइए।

एक शब्द के पर्यायवाची को कैसे प्रयोग करना है यह तो कोई बिहारी से सीखे।

'कृष्ण' शब्द के पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग द्रष्टव्य है-

1. साजे **मोहन**-मोह कौं, मोहीं करत कुचैन।
2. कच-अँगुरी-बिच दीठि दै, चितवति **नन्दकुमार**।
3. रतिपाली, आली अनत, आए **बनमाली** न।
4. चटक-भरयौ **नट** मिलि गयौ अटक-भटक बट माँह।
5. फेरि डहडही कीजियै सुरत सींचि **घनस्याम**।

डॉ. बच्चन सिंह अपनी पुस्तक 'बिहारी का नया मूल्यांकन' में बताते हैं कि 'मोहन के मोहने में जो चमत्कार है वह अन्य में नहीं। मोहन मोहकता के गुण से स्वयं संपन्न हैं, इसलिए उनको मुग्ध करना अपेक्षाकृत अधिक कठिन है। नन्दकुमार में जो कुमारत्व है वह चितए जाने के प्रसंग में अर्थ गर्भत्व से पूर्ण है। संकेत-स्थल पर, जो प्राय: वन, नदी-तट आदि हुआ करता है, न आकर वनमाली ही अन्यत्र रति का पालन कर सकते हैं। अटक-भटक बट के प्रसंग में कोई कुशल नट ही गुमराह नायिका का उद्धार करने में समर्थ है। 'घनश्याम' श्लेषत्वेन व्याख्या की माँग नहीं करता।' देखिए बिहारी ने किस भली प्रकार से कृष्ण के पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया है।

बोध प्रश्न

- बिहारी ने कृष्ण शब्द के पर्यायवाची का कैसे उपयोग किया है?

बिहारी पर एक आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने शब्दों की तोड़-मरोड़ बहुत की है। शब्दों को अपने हिसाब से तोड़-मरोड़कर प्रयोग कर लिया है। ध्यान रखा जाना चाहिए कि भाषा की तोड़-मरोड़ बिहारी से अधिक 'भूषण' तथा 'देव' ने की है। इस संदर्भ में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन है 'बिहारी की भाषा चलती होने पर भी साहित्यिक है। वाक्य रचना व्यवस्थित है और शब्दों के रूप का व्यवहार एक निश्चित प्रणाली पर है। यह बात बहुत कम कवियों में पाई जाती है। बिहारी की भाषा इस दोष से भी बहुत कुछ मुक्त है। दो-एक स्थल पर ही 'स्मर' के लिए 'समर', 'ककै' ऐसे कुछ विकृत रूप मिलेंगे।' यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि कभी-कभी जनता भी उच्चारण करते समय शब्दों के रूप को बदल देती है।

कोई भी कवि हो उसकी कविता में एक भाषा का प्राधान्य अवश्य रहता है परंतु उस कवि की स्वयं की भाषा विभिन्न भाषाओं के शब्दों से मिलकर बनी होती है। बिहारी ने अपने काव्य में संस्कृत के साथ-साथ अरबी-फारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया है। बिहारी ने अपनी बिहारी सतसई में संस्कृत की तत्सम शब्दावली का प्रयोग किया है यथा- जालरंध्र, श्रमस्वेदकन, प्रथम, पयोद, रूपसुधा, सचिक्कन, अद्वैतता, कज्जल, निदाध, पावस, कलित, इन्दीवर, काव्य-व्यूह, कलित-दलित, अलिपुंज, कोकनद, घनसार, प्रतिबिंबित, परिमल, घण्टावली, श्रुति, ब्रह्म, मकराकृति आदि। बिहारी सतसई में अरबी-फारसी के भी कई शब्द मिलते हैं जैसे- अकस, कुबत, चश्मा, जोर, सिकार, बेकाम, निसान, हद, अहसान, लगाम, फौज, नाहक, मुलुक, पायन्दाज आदि।

पूर्व में संकेत किया गया है कि किसी कवि की एक प्रधान भाषा होती है। उसमें विभिन्न बोलियों-भाषाओं के शब्द मिले होते हैं। देखा जाए तो बिहारी ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है परंतु इस ब्रज भाषा पर विभिन्न बोलियों बुंदेलखंडी, अवधी और पूर्वी बोलियों का प्रभाव है।

जहाँ तक छंद का प्रश्न है तो बिहारी ने दोहा छंद का प्रयोग किया है। मुक्तकों के अनेक भेदो में बिहारी ने दोहा छंद को चुना है। अपभ्रंश साहित्य अपने साथ दोहा छंद लेकर आया। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बताया है कि 'दोहा या दूहा अपभ्रंश का अपना छंद है।' अन्य छंदों की भाँति दोहा छंद भी निरंतर परिमार्जित होता रहा है। 'बिहारी सतसई' में तो लगता है कि इसे पूर्णता प्राप्त हो गई है। डॉ. नगेंद्र के शब्दों में कहें तो 'ब्रजभाषा पर बिहारी का असाधारण

अधिकार था। उनको शब्द और वर्ण के स्वभाव की परख थी। शब्द और वर्ण उनके दोहों में नगों के समान जड़े हैं और रत्नों की आभा बिखेरते हैं। शब्द को माँजने, चमकाने, मोड़ने और संवारने की कला में सिद्धहस्त हैं। उनकी रचना में ब्रज भाषा अपनी प्रौढ़ता और भाव-संपन्नता में इठलाती हुई फलती है। वह लय और गति, संगीत और नर्तन की विशेषताओं से युक्त है। उनकी भाषा प्रांजल, प्रौढ़, मधुर और सरस है।' कुल मिलाकर हम ये कह सकते हैं कि बिहारी रीतिकाल के एक प्रमुख कवि हैं। भाषा के स्तर पर वे 'ब्रजभाषा' का प्रयोग करते हैं।

बोध प्रश्न

- बिहारी ने अपनी रचनाओं में किस छंद का प्रयोग किया है?

11.3.4 हिंदी साहित्य में बिहारी का स्थान एवं महत्व

बिहारी का रीतिकाल में एक विशिष्ट स्थान है। उनके संदर्भ में बाबू गुलाबराय लिखते हैं 'ये महाकवि प्रभावशाली कवि तो थे ही, इसके अतिरिक्त हर विषय के प्रकांड पंडित भी थे। इन्होंने अपनी 'सतसई' में प्राय: सभी विषयों की जानकारी का परिचय दिया है।' उनका यह दोहा द्रष्टव्य है-

दुसह दुराजु प्रजानु कौं, क्यों न बढ़ै दुख द्वंद्व ।
अधिक अँधेरो जग करत, मिलि मावस रवि चन्द।।

बिहारी पर अपने विचार अभिव्यक्त करते हुए विश्वम्भर 'मानव' कहते हैं 'उन्होंने अपने से पूर्व छह सौ वर्ष के काव्य को धर्म के प्रभाव से मुक्त करके जीवन की ओर मोड़ा। यही काम आज के युग में किसी ने किया होता तो वह 'काव्य में विद्रोह' कहलाता। लौकिक जीवन के एक बड़े पक्ष के सौंदर्य, क्रीड़ा और आनंद का जैसा सजीव वर्णन बिहारी में पाया जाता है, वैसा आज तक किसी कवि के काव्य में नहीं। ... वैसे ही रीति-काल के दो सौ वर्ष की कड़ी टूटी हुई दिखाई देगी, यदि उसमें से बिहारी का नाम निकाल दिया जाए तो।' बिहारी निश्चित रूप से रीतिकाल के एक अप्रतिम कवि हैं। उनके यहाँ असांप्रदायिक दृष्टिकोण भी साफ तौर पर दिखता है। रीतिबद्ध तथा रीतिमुक्त कवियों में किसी मत विशेष के प्रति आग्रह नहीं व्यक्त किया। बच्चन सिंह ने 'बिहारी' शीर्षक पुस्तक में बिहारी के एक दोहे को प्रस्तुत किया है जिसमें उनका असांप्रदायिक दृष्टिकोण साफ तौर पर दिखता है। दोहा द्रष्टव्य है-

अपनैं-अपनैं मत लगे, बादि मचावत सोरू।
ज्यों-त्यों सबहीं सेइबौ, एकै नन्दकिसोरु॥

जहाँ तक 'बिहारी सतसई' का प्रश्न है तो यह वास्तव में एक श्रृंगारिक रचना है। इसमें अवश्य ही भक्ति व नीति के दोहे हैं परंतु इन सबके बीच शृंगारिक दोहों की संख्या अधिक है। दोहा एक छोटा सा छंद है परंतु अपने एक-एक दोहे में बिहारी ने 'गागर में सागर' भरने का काम किया है। हाँ कहीं-कहीं ऊहात्मकता अधिक आ गई है परंतु इससे 'बिहारी सतसई' की महत्ता कम नहीं हो जाती। बिहारी के दोहों पर टिप्पणी करते हुए आचार्य रामचंदु शक्ल ने लिखा है- 'मुक्तक कविता में गुण होना चाहिए वह बिहारी के दोहों में अपने चरम उत्कर्ष को पहुँचा है, इसमें कोई संदेह नहीं। मुक्तक में प्रबंध के समान रस की धारा नहीं रहती जिसमें कथा प्रसंग की परिस्थिति में अपने को भूला हुआ पाठक मग्न हो जाता है और हृदय में एक स्थायी प्रभाव ग्रहण करता है। इसमें तो रस के ऐसे छींटे पड़ते हैं जिनसे हृदयकलिका थोड़ी देर के लिए खिल उठती है। यदि प्रबंधकाव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है। इसी से यह सभा समाजों के लिए अधिक उपयुक्त होता है।' डॉ. नगेंद्र एवं डॉ. हरदयाल ने बताया है कि 'डॉ. ग्रियर्सन के अनुसार यूरोप में 'बिहारी सतसई' के समकक्ष कोई रचना नहीं है।' यह बिहारी सतसई की प्रासंगिकता ही है कि उसकी कई टीकाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। रामस्वरूप चतुर्वेदी कहते हैं 'रीतिकालीन कवियों में बिहारी और देव के बीच श्रेष्ठतर रचनाकार कौन है, इस पुराने विवाद में पड़े बिना भी यह ज़रूर कहा जा सकता है कि रीतिकालीन मनोवृत्ति का श्रेष्ठ प्रतिनिधित्व बिहारी के काव्य में मिलता है।'

यह सत्य है कि बिहारी प्रारंभिक जीवन से ही रचनाएँ करने लगे थे। उनके दोहों पर उनके जीवनानुभव की गहरी छाप दिखती है। इसीलिए बिहारी के काव्य में शृंगार, भक्ति, नीति, प्रकृति, गाँव, शहर आदि के वर्णन मिलते हैं। बिहारी एक कुशल नीतिकार, शास्त्रज्ञ, अनुभवी तथा शासन-प्रशासन की बड़ी समझ रखने वाले कवि थे। इनकी मुहावरेदार भाषा को देखते हुए राधाकृष्णदास ने इन्हें (बिहारी) 'मुहावरे का बादशाह' कहा था। इनकी रचना 'बिहारी सतसई' की महत्ता पर यह दोहा बिल्कुल सटीक बैठता है। दोहा द्रष्टव्य है-

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखत में छोटे लगैं, बेधैं सकल शरीर॥

बोध प्रश्न

- 'बिहारी ने गागर में सागर भर दिया है।' इस पर अपने विचार लिखिए।
- राधाकृष्णदास ने बिहारी को क्या कहा?

11.4 पाठ सार

इस इकाई को पढ़ने के बाद हम सारांशत: कह सकते हैं कि बिहारी रीतिकाल के प्रमुख कवि हैं। इनके जन्म को लेकर मतभेद है। इनका जन्म सन् 1595 ई. माना जाता है। कुछ पुस्तकों में इनका जन्म सन् 1603 ई. बताया गया है। एक दोहा जो इस संदर्भ में प्रसिद्ध है परंतु 'बिहारी सतसई' में सम्मिलित नहीं है।

जनम ग्वालियर जानिये खण्ड बुंदेले बाल ।
तरूणाई आई सुखद मथुरा बसि ससुराल ।।

बिहारी सतसई के प्रथम टीकाकार कृष्णलाल कवि ने बिहारी के एक दोहे के आधार पर उनके पिता का नाम केशवराय बताया है। ये केशवराय या केशव रीतिकालीन कवि केशवदास से भिन्न हैं।

प्रगट भए द्विजराज कुल, सुबस बसे ब्रज आइ।
मेरे हरौ कलेस सब, केसव केसवराइ॥

इनके गुरु का नाम नरहरिदास था। बिहारी की भेंट शाहजहाँ से भी हुई थी।
महाराज जयसिंह को पुन: शासन-प्रशासन संभालने के लिए उद्यत करने वाला दोहा निम्न है-

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल ।
अली कली ही सों बंध्यौ, आगे कौन हवाल॥

महाराज जयसिंह को प्रधान रानी (चौहानी रानी) से एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी। जिसका नाम रामसिंह था। रामसिंह को शिक्षित करने के उद्देश्य से 'बिहारी सतसई' को संग्रहित किया गया था।इसमें कुछ अन्य कवियों की रचनाओं को भी संग्रहित किया गया था। बिहारी की मृत्यु सन् 1663 ई. में हुई।

'बिहारी सतसई' बिहारी की कीर्ति का आधार है। इसमें कुल 713 दोहे हैं। ये दोहे शृंगार, भक्ति तथा नीति सहित विविध विषयों को लेकर लिखे गए हैं। इन दोहों में वियोग वर्णन करते समय कहीं-कहीं ऊहात्मकता आ गई है। बिहारी सतसई के संबंध में सबसे प्रमाणित टीका बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' की 'बिहारी रत्नाकर' मानी जाती है।

जहाँ तक भाषा का प्रश्न है तो बिहारी ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। ब्रज उनकी 'बिहारी सतसई' की मुख्य भाषा है। इसमें अवश्य ही अरबी-फारसी, संस्कृत, अवधी, बुंदेलखण्डी के शब्द आए हैं। 'बिहारी सतसई' की प्रासंगिकता ही है कि रामसिंह को शिक्षित करने के लिए

इसे संग्रहित किया गया। आज के विद्यार्थियों के लिए भी यह उतनी ही शिक्षाप्रद तथा लाभप्रद है।

11.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. बिहारी रीतिकाल के एक प्रमुख कवि हैं।
2. बिहारी की कीर्ति का आधार उनकी रचना 'बिहारी सतसई' है।
3. बिहारी सतसई में कुल 713 दोहे स्वीकार किए जाते हैं।
4. बिहारी के दोहे तत्कालीन परिस्थितियों का आभास देते हैं।
5. बिहारी ने अपने दोहों के माध्यम से 'गागर में सागर' भरने का काम किया है।

11.6 शब्द संपदा

1. तरुणाई	=	नौजवानी
2. त्रिभंगी	=	तीन स्थानों से भंग। श्रीकृष्ण जब मुरली बजाते हैं तो अपने शरीर को तीन (पैर, कमर, गर्दन) से भंग (मोड़ लेना) करते हैं
3. द्विजराज कुल	=	ब्राह्मण परिवार
4. रतिकाल	=	हिंदी साहित्य के इतिहास में एक काल विशेष
5. संवत्	=	वर्ष की गणना का पैमाना। संवत् वर्ष में से 57 वर्ष घटा देने से सन ईस्वी प्राप्त होता है जैसे- संवत् 1700 में से 57 घटा देने से जो अंक मिलेगा वह सन ईस्वी होगा। यहाँ सन 1643 ईस्वी होगा।
6. सतसई	=	सात सौ

11.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. बिहारी की भाषा पर अपने विचार लिखिए।
2. बिहारी के कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
3. हिंदी साहित्य में बिहारी के महत्व पर विचार कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. बिहारी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
2. बिहारी ने राजा जय सिंह के पास एक दोहा क्यों भिजवाया था? उस दोहे का राजा जय सिंह पर क्या प्रभाव पड़ा?
3. बिहारी सतसई पर लिखी गई टीकाओं के नाम लिखते हुए चर्चा कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. 'बिहारी सतसई' किसकी रचना है? ( )

   (अ) घनानंद (आ) बिहारी (इ) केशवदास (ई) देव

2. बिहारी के गुरु थे? ( )

   (अ) वल्लभाचार्य (आ) केशवदास (इ) नरहरिदास (ई) विट्ठलनाथ

3. 'बिहारी सतसई' में कुल कितने दोहे स्वीकार किए जाते हैं?

   (अ) 725 दोहे (आ) 713 दोहे (इ) 700 दोहे (ई) 715 दोहे

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. 'बिहारी सतसई' मूल रूप से ....रचना है।
2. बिहारी .... काल के कवि हैं।
3. बिहारी सतसई ही ....की कीर्ति का आधार है।

III. सुमेल प्रश्न -

1. बिहारी	(अ) एक रचना का नाम
2. बिहारी सतसई	(आ) बिहारी
3. जाति चौबे माथुर	(इ) ससुराल
4. मथुरा	(ई) कवि

11.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल

2. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र, हरदयाल

3. बिहारी : बच्चन सिंह

4. बिहारी सतसई : सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

5. बिहारी रत्नाकर : जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

इकाई 12 : बिहारी के दोहे

रूपरेखा

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 मूल पाठ : बिहारी के दोहे

12.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

12.3.2 अध्येय कविता

12.3.3 विस्तृत व्याख्या

12.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

12.4 पाठ सार

12.5 पाठ की उपलब्धियाँ

12.6 शब्द संपदा

12.7 परीक्षार्थ प्रश्न

12.8 पठनीय पुस्तकें

12.1 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में स्त्री सौंदर्य की चर्चा रीतिकाल में खूब हुई है। वहाँ श्रीकृष्ण और राधा को नायक-नायिका के रूप में चित्रित कर कवियों ने शृंगारिक रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। जहाँ तक बिहारी का सवाल है तो उनकी बिहारी सतसई इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। यह सत्य है कि बिहारी सतसई में भक्ति और नीति के दोहे है लेकिन मूल रूप से ये शृंगारिक रचना ही है। हमारे पाठ्यक्रम में सम्मिलित दोहों की बात करें तो ये चयनित दोहे भक्ति, नीति, शृंगार और प्रकृति से संबंधित हैं।

12.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- बिहारी के निर्धारित दोहों में अभिव्यक्त भावों और विचारों से अवगत हो सकेंगे।
- तत्कालीन परिस्थितियों में राधा-कृष्ण की भक्ति से अवगत हो सकेंगे।
- बिहारी की भक्ति पद्धति से अवगत हो सकेंगे।

- बिहारी के प्रेम निरूपण को समझ सकेंगे।
- तत्कालीन प्राकृतिक सौंदर्य की अनुभूति कर सकेंगे।

12.3 मूल पाठ : बिहारी के दोहे

12.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

प्रिय छात्रो! पहले दोहे में बिहारी ने राधा व कृष्ण की भक्ति की है। यहाँ राधा के महात्म्य पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। दूसरे दोहे में कृष्ण के शारीरिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए प्रभु से यही प्रार्थना की जा रही है कि वे बिहारी के हृदय में इसी सुंदर रूप के साथ बस जाएँ। तीसरे दोहे में भी कृष्ण की मोहनी सूरत की चर्चा करते हुए उनकी भक्ति की गई है। चौथे दोहे में यह बताया गया है कि ब्रज क्षेत्र और राधा-कृष्ण के सामने सारे तीर्थ छोटे हैं। पाँचवे दोहे में बिहारी का मन बार-बार यमुना के किनारे चला जा रहा है। उस क्षेत्र के वृक्षों की छाया व सुगंधित वायु अत्यंत सुखद प्रतीत हो रही है। छठवें दोहे में एक सखी अपनी दूसरी सखी से श्रीकृष्ण के गले से हृदय तक में लटकती हुई माला की सुंदरता का वर्णन करती है। सातवें दोहे में श्रीकृष्ण के वियोग में सखियाँ तड़प रही हैं। जहाँ-जहाँ वे कृष्ण के साथ घूमती-फिरती थीं, उन स्थानों पर आज भी उनकी निगाह टिक जाती है। आठवें दोहे में श्लेष का प्रयोग करते हुए एक सखी से बिहारी ने राधा कृष्ण की जोड़ी के चिरजीवी होने की कामना की है। नवें दोहे में बिहारी ने किसी युगलोपसना करने वाले भक्त के जरिए कहलवाया है कि राधा-कृष्ण कि सुंदरता के लिए कई जोड़े नेत्रों की जरूरत है। दसवें दोहे में बिहारी ने श्रीकृष्ण के सिर पर लगाए गए मोर-पंखों की सुंदरता के जरिए कृष्ण की सुंदरता का बाखान किया है।

12.3.2 अध्येय कविता

मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि सोई।
जा तन की झाँई परै स्यामु हरित दुति होई ॥1॥
सीस मुकुट कटि- काछनी कर मुरली उर-माल।
इहिं बानक मो मन बसौं सदा बिहारी लाल ॥2॥
मोहनि मूरति श्याम की अति अद्भुत जोई।
बसति सुचित अंतर प्रतिबिम्बित जग होइ ॥3॥
तजि तीरथ हरी-राधिका तन दुति करु अनुराग।
जिहिं ब्रज केलि निकुंज मग पग-पग होत प्रयाग ॥4॥

सघन कुंज छाया सुखद सीतल सुरभि समीर।
मनु ह्वै जात अजौं वहै उहि जमुना के तीर ॥5॥
सखि सोहत गोपाल कै उर गुंजन की माल।
बाहिर लसति मनौ पिए दावानल की ज्वाल ॥6॥
जहाँ- जहाँ ठाढ़ौ लख्यौ स्यामु सुभग सिरमौरू।
बिनहूँ उनु छिन गहि रहतु दृगनु अजौं वह ठौरु ॥7॥
चिरजीवौ जोरी जुरे क्यों न सनेह गंभीर।
को घटी ए वृषभानुजा वे हलधर के बीर ॥8॥
नित प्रति एकत हीं रहत बैस बरन मन एक।
चहियत जुगल किसोर लखि लोचन जुगल अनेक ॥9॥
मोर मुकुट की चंद्रकनु यौन राजत नंदनंद।
मनु ससि सेखर की अकस किय सेखर सत चंद॥10॥

निर्देश : 1. इन दोहों का सस्वर वाचन कीजिए।
2. इन दोहों का मौन वाचन कीजिए।

12.3.3 विस्तृत व्याख्या

मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि सोई।
जा तन की झाँईं परै स्यामु हरित दुति होई ॥1॥

शब्दार्थ : भव-बाधा = सांसारिक बाधा। हरौ = हरण करना, दूर कर देना। झाँईं = छाया, झाँकी, झलक। परै = ध्यान, पड़ने से । दुति = प्रकाश

संदर्भ : यह दोहा प्रमुख रीतिकालीन कवि बिहारी की प्रसिद्ध रचना 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रसंग : यहाँ कवि ने राधा और कृष्ण की सुंदरता का बखान करते हुए उनकी भक्ति की है। भक्ति करते हुए राधा से यह प्रार्थना की है कि उसकी सारी सांसारिक बाधाएँ दूर करें।

व्याख्या: यह दोहा भक्ति से संबंधित है। यह बिहारी की विशेषता ही कही जाएगी कि यहाँ इस दोहे के तीन अर्थ निकल रहे हैं। इस दोहे का पहला अर्थ है- हे! मेरी वही राधा नागरी, मेरी सभी सांसारिक बाधाओं को दूर करो। वही राधा जिनके शरीर की छाया या परछायी पड़ने से श्याम

(साँवले) वर्ण के श्रीकृष्ण भी हरे रंग से प्रकाशवान हो जाते हैं अर्थात उनका शरीर हरे रंग का हो जाता है। वही राधा नागरी सभी सांसारिक बाधाओं, कष्टों, तकलीफ़ों को दूर करें।

इस दोहे का दूसरा अर्थ ये है- हे! वही राधा नागरी मेरे सांसारिक कष्टों को दूर करें। हे! वही राधा नागरी जिनके शरीर की झाँकी या झलक पा जाने से या देख लेने से श्रीकृष्ण हरे-भरे हो जाते हैं अर्थात खुश हो जाते हैं। वही राधा मेरी सांसारिक बाधाओं को दूर करें।

इस दोहे का तीसरा अर्थ ये है- हे! वही राधा नागरी जिसके रूप का ध्यान पड़ने से भक्त के हृदय में व्याप्त कल्मष, पातक इत्यादि दूर हो जाता है यानि भक्त का हृदय प्रकाशमान हो जाता है। वही राधा मेरे सांसारिक दुख, चिंता को दूर करें।

काव्यगत विशेषता

1. ब्रज भाषा प्रयोग, भावात्मक शैली, भक्ति रस, दोहा छंद।
2. यहाँ श्लेष अलंकार का प्रयोग है। कुछ शब्दों को देखें तो जैसे - झाँई के तीन अर्थ हैं- (1) परछायी, आभा (2) झाँकी, झलक (3) ध्यान। इसी तरह परै शब्द का अर्थ है -पड़ने से। लेकिन यहाँ इसके तीन अर्थ हैं (1) तन पर पड़ने से (2) दृष्टि में पड़ने से (3) हृदय में पड़ने से। इसी तरह स्यामु (श्याम) का अर्थ है साँवला क्योंकि साँवले श्रीकृष्ण हैं। इसलिए अर्थ हुआ श्रीकृष्ण। लेकिन यहाँ भी इसके तीन अर्थ हैं - (1) श्याम वर्ण वाले श्रीकृष्ण (2) श्रीकृष्ण (3) काले रंग का पदार्थ यानि दुख, दारिद्र्य आदि। जिनका रंग कवि परिपाटी में काला स्वीकार किया जाता है। इसी तरह हरित-दुति (हरित द्युति) यानि हरे रंग की आभा। यहाँ इसके भी तीन अर्थ स्वीकार किए जाते हैं- (1) हरे रंग वाला (2) हरा-भरा अर्थात प्रसन्न-वदन (3) हृतद्युति, गतद्युति, हतप्रभ, अर्थात तेज हीन।

बोध प्रश्न

- प्रस्तुत दोहे का कोई एक अर्थ अपनी भाषा में लिखिए।

सीस मुकुट कटि-काछनी कर मुरली उर-माल।
इहिं बानक मो मन बसौं सदा बिहारी लाल ॥2॥

शब्दार्थ : सीस = सिर। मुकुट = ताज। कटि = कमर। काछनी = कच्छा या एक प्रकार का कपड़ा जिसे कमर के नीचे पहना जाता है। कर = हाथ। मुरली = वंशी, एक प्रकार का वाद्ययंत्र। उर = हृदय। माल = माला। इहि = इसी। बानक = रूप, बनावट। मो = मेरे। मन = मन या चित्त। बसो = बसिए। सदा = हमेशा। बिहारीलाल = विहार या विचरण करने वाले अर्थात श्रीकृष्ण

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा प्रमुख रीतिकालीन कवि बिहारी की प्रसिद्ध रचना 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रसंग : यहाँ बिहारी श्रीकृष्ण से प्रार्थना करते हैं कि एक विशेष प्रकार की साज-सज्जा या रूप के साथ मेरे हृदय में हे! श्रीकृष्ण आप वास कीजिए अर्थात बसिए।

व्याख्या : यहाँ बिहारी श्रीकृष्ण की भक्ति कर रहे हैं और उन्हें अपने हृदय में बसने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। सवाल यह है कि वह रूप वह साज-सज्जा कैसी हो? इस पर वे कहते हैं - हे! श्रीकृष्ण सिर पर मुकुट या ताज कमर में कच्छा, हाथ में मुरली और हृदय पर माला धारण करके आपका जो रूप बनता है, वह बहुत ही सुंदर होता है। आप उस रूप में बहुत सुशोभित होते हैं। इसलिए हे! प्रभु इसी रूप-स्वरूप के साथ मेरे मन या हृदय में सदा बसें। अन्य किसी रूप में नहीं बल्कि बस इसी रूप में बसें।

काव्यगत विशेषता : यहाँ कटि, काछनी, कर शब्दों में 'क' वर्ण की आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

बोध प्रश्न

- कवि बिहारी ने यहाँ श्रीकृष्ण से किस रूप में मन या हृदय में बसने की प्रार्थना की है?

मोहनि मूरति श्याम की अति अद्भुत जोई।
बसति सुचित अंतर प्रतिबिम्बित जग होइ॥3॥

शब्दार्थ : मोहनि = मोह लेने वाली। मूरति = मूर्ति। अद्भुत = आश्चर्य चकित हो जाना। बसति = बसना। अंतर = अंदर। प्रतिबिंबित = छाया का दिखना। जग = संसार।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा प्रमुख रीतिकालीन कवि बिहारी की प्रसिद्ध रचना 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रसंग : भक्त के हृदय में श्रीकृष्ण बस गए हैं। उनके बसने की वजह से पूरी दुनिया उस भक्त को कृष्णमय दिखाई दे रही है। इस बात को वह अपने मन से कह रहा है।

व्याख्या : हे मन! ज़रा सुनो, मन को मोह लेने वाले श्रीकृष्ण की गति या उनकी रीति अत्यधिक आश्चर्यचकित कर देने वाली है। हालाँकि वे बसते तो सुंदर व साफ चित्त अर्थात मन के अंदर लेकिन उसके बाद उनकी झाँकी या छाया संसार या दुनिया में व्याप्त हर पदार्थ में दिखती है।

काव्यगत विशेषता : ब्रजभाषा, मनोविश्लेषणात्मक शैली, भक्ति रस, दोहा छंद।

बोध प्रश्न

- श्रीकृष्ण की मन मोह लेने वाली मूर्ति की अद्भुत स्थिति क्या है?

तजि तीरथ हरी-राधिका तन दुति करु अनुराग ।
जिहिं ब्रज केलि निकुंज मग पग-पग होत प्रयाग॥4॥

शब्दार्थ : तजि = छोडकर, त्यागकर। तीरथ = तीर्थ या पवित्र स्थल। हरि-राधिका = कृष्ण और राधा। तन-दुति = शरीर की कांति, आभा, चमक। करि=करो। अनुराग = लगन लगाना। जिहिं = जिस स्थान पर। ब्रज = ब्रज क्षेत्र, उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में पड़ने वाला विशेष स्थान। केलि= खेल, हंसी-मज़ाक। निकुंज = उपवन, छोटा बाग। मग = मार्ग, रास्ता। पग = पैर। प्रयाग = तीर्थ स्थल।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा प्रमुख रीतिकालीन कवि बिहारी की प्रसिद्ध रचना 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रसंग : यहाँ कवि अपने मन को समझाते हुए कह रहा है कि श्रीकृष्ण के प्रति अनुराग रखो।

व्याख्या : कवि अपने मन से कहता है कि हे! मेरे मन तू इधर-उधर मत भटक। तू बस एक काम कर और वह काम यह है कि सारे तीर्थों को छोड़ दे। कृष्ण और राधा के शरीर की कांति या आभा में अनुराग कर यानि अपना मन लगा। हे! मेरे मन, यदि तू ऐसा करेगा तो इस ब्रज क्षेत्र में जहाँ-जहाँ राधा और कृष्ण रास रचाते थे, खेलते थे, हंसी मज़ाक करते थे, विहार करते थे। उस वाटिका या उपवन के मार्ग में पैर रख। उस क्षेत्र में पैदल चलने पर पग-पग (कदम-कदम) पर प्रयाग हो जाता है। कहने का मतलब है कि तीर्थराज प्रकट हो जाता है। उसका पुण्य (सवाब) प्राप्त हो जाता है।

काव्यगत विशेषता : यहाँ भाषा ब्रज, शैली मनोविश्लेषणात्मक, रस भक्ति, छंद दोहा है।

बोध प्रश्न

- यहाँ कवि अपने मन को किस तरह समझाता है?

सघन कुंज छाया सुखद सीतल सुरभि समीर।
मनु ह्वै जात अजौं वहे उहि जमुना के तीर॥5॥

शब्दार्थ : सघन = गझिन, परिपूर्ण। कुंज = उपवन, छोटा बगीचा। सुखद = आनंददायक। सीतल= ठंडा। सुरभि = सुगंधित, खुशबूदार। समीर = वायु, हवा। मनु = मन। ह्वै = हो जाता

है। अजौं = आज भी। वहे = वैसा ही। उहि = उसी। जमुना = यमुना नदी। तीर = किनारा

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा प्रमुख रीतिकालीन कवि बिहारी की प्रसिद्ध रचना 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रसंग : यहाँ श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद गोपियाँ दुखी हैं। वे बैठकर पुरानी बातों को याद कर रही हैं।

व्याख्या : यहाँ एक वियोगिनी सखी अपनी दूसरी वियोगिनी सखी से कहती है- हे सखी! यमुना नदी का वह किनारा जहाँ हम श्रीकृष्ण के साथ विहार (घूमना-फिरना) करते थे, अब भी जब कि श्रीकृष्ण यहाँ नहीं हैं। मन उन्हीं बातों को याद करके उसी में डूब जाता है। डूबने के बाद वैसी ही सुखद अनुभूति जब वे (श्रीकृष्ण) साथ थे होती थी। वैसी ही सुखद अनुभूति (एहसास) उनके न रहने पर भी होती है। यही वजह है कि प्रिय श्रीकृष्ण के नहीं रहने पर ये उपवन के वृक्षों की छाया और वहाँ बहने वाली सुगंधित वायु जो वियोगवस्था में दुख व ताप पहुँचाने वाले होते हैं। वे सुखद व शीतल हो जाते हैं। उसका कारण यह है कि हम पूरी तरह उसी में डूब जाती हैं।

काव्यगत विशेषता : यहाँ भाषा ब्रज, शैली भावात्मक, फ़्लैशबैक (पूर्वदीप्ति), वियोग शृंगार रस, दोहा छंद है।

बोध प्रश्न

- यहाँ एक वियोगिनी दूसरी वियोगिनी सखी से क्या-क्या बातें कह रही है?

सखि सोहत गोपाल कै उर गुंजन की माल।
बाहिर लसति मनौ पिए दावानल की ज्वाल ॥6॥

शब्दार्थ : सखि = सहेली। सोहति = शुसोभित होना, खूबसूरत लगना। गोपाल = गाय को पालने वाले यानि श्रीकृष्ण। उर = हृदय। गुंजन = भौंरे का गुंजार। क्योंकि भौंरे पुष्पों के आस-पास गुंजार करते हैं। इसलिए यहाँ अर्थ पुष्प का लिया जाएगा। माल = माला। बाहिर = बाहर। लसति=लपलपाना। मनौ = मान लो या मान लीजिए। पिए = पीना। दावानल = जंगल की आग। ज्वाल = ज्वाला।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा प्रमुख रीतिकालीन कवि बिहारी की प्रसिद्ध रचना 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रसंग : यहाँ एक सखी अपनी दूसरी सखी से श्रीकृष्ण के न मिल पाने के कारण श्रीकृष्ण और सखी को हुए दुख को अभिव्यक्त करती है।

व्याख्या : यहाँ एक सखी अपनी दूसरी सखी से कहती है कि हे! मेरी प्रिय सखी, ये जो श्रीकृष्ण ने अपने हृदय पर पुष्पों कि जो माला धारण कर रखी है वह अत्यंत सुशोभित हो रही है। उसे देखने पर ऐसा लग रहा है कि मानो निर्धारित स्थल पर मेरे न मिल पाने के कारण जो उन्हें दुख या विरह की अग्नि को सहना पड़ा है। वह ज्वाला बाहर आकर उस पुष्प की माला के रूप में लपलपा रही है। विरह का ताप अत्यधिक है। जिसे मेरे प्रिय, श्रीकृष्ण को सहना पड़ा है।

काव्यगत विशेषता : यहाँ भाषा ब्रज, शैली भावात्मक, वियोग शृंगार, दोहा छंद, अलंकार उत्प्रेक्षा है।

बोध प्रश्न

- उपर्युक्त दोहे की भाषा, शैली, रस, छंद, अलंकार के विषय में लिखिए।

जहाँ-जहाँ ठाढ़ौ लख्यौ स्यामु सुभग सिरमौरू॥
बिनहूँ उनु छिन गहि रहतु दृगनु अजौं वह ठौरु॥7॥

शब्दार्थ : ठाढ़ो = खड़ा। लख्यौ = देखा था। सुभग-सिरमौरू = भाग्यवनो का शिरोमणि। यहाँ इसका अर्थ यह है स्वरूपवनों का शिरोमणि। कहने का तात्पर्य है सुंदर या रूपवान लोगों में सर्वश्रेष्ठ। बिनहूँ = उनके बिना। अजौं = आज भी या अब भी अर्थात उनके (श्रीकृष्ण) के बहुत दिनों से यहाँ नहीं रहने पर भी। ठौर = स्थान

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा प्रमुख रीतिकालीन कवि बिहारी की प्रसिद्ध रचना 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रसंग : यहाँ ब्रज वधूटियाँ आपस में बातचीत कर रही हैं। जब श्रीकृष्ण यहाँ थे तो वे जिन जिन स्थानों पर खड़े होते थे। उनके नहीं रहने पर भी उनके प्रभाव से उन स्थानों की रमणीयता बनी हुई है। उन स्थानों को देखने पर मन वहीं लग जाता है।

व्याख्या : यहाँ स्थिति यह है कि श्रीकृष्ण ब्रज को छोड़कर चले गए हैं। उनके चले जाने के बाद उनकी बातें, वे स्थान जहाँ वे खड़े होते थे, घूमते फिरते थे। वे सब वहीं हैं। ब्रज की कई वधुएँ एकत्रित होकर श्रीकृष्ण की चर्चा करती हैं। वे उन पुरानी बातों, स्थानों को याद करती हैं। वे आपस में बातचीत करती हुई कहती हैं कि हमने जहाँ सुंदर पुरुषों के शिरोमणि श्रीकृष्ण को पहले खड़ा देखा था, वे स्थान आज भी विद्यमान हैं। आज जब वे यहाँ नहीं हैं। उनकी अनुपस्थिति में भी वे स्थान जहाँ वे खड़े होते थे उसको देख लेने पर आज भी वे नेत्रों को पकड़ लेते हैं। कहने का तात्पर्य है कि श्रीकृष्ण के प्रभाव के कारण उनकी रमणीयता बरकरार है। आँखें

वहाँ से हटाने का जी ही नहीं चाहता।

काव्यगत विशेषता : ठौर शब्द का अर्थ स्थान होता है लेकिन इस शब्द के संदर्भ में बिहारी रत्नाकर में जगन्नाथदास रत्नाकर ने बताया है कि ये शब्द भाषा में प्रायः स्त्रीलिंगवत प्रयुक्त होता है पर इस दोहे से विदित होता है कि बिहारी इसको पुल्लिंग मानते थे। सतसई भर में यह शब्द 4 जगह और आया है, पर उन चारों जगह इसका प्रयोग ऐसी रीति से हुआ है कि इसका लिंग प्रतीत नहीं होता।

बोध प्रश्न

- ठौर शब्द के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।

चिरजीवौ जोरी जुरे क्यों न सनेह गंभीर।
को घटी ये वृषभानुजा वे हलधर के बीर॥8॥

शब्दार्थ : चिरजीवौ = सदैव जीवित रहे। जोरी = जोड़ी। जुरे = जुड़ना। सनेह = स्नेह, प्रेम। को = कौन। घटि = कम। वृषभानुजा = वृषभानु की कुमारी]। हलधर = बलदेव या बलदाऊ

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा प्रमुख रीतिकालीन कवि बिहारी की प्रसिद्ध रचना 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रसंग : यहाँ राधा और कृष्ण दोनों एक दूसरे से नाराज़ हैं। इस स्थिति को देखकर एक सखी दूसरी सखी से इन दोनों को सुनाते हुए कुछ बातें कहती है। यहाँ श्लेष का प्रयोग करते हुए अभिव्यक्ति की गई है। इसलिए यहाँ इसके तीन अर्थ निकलते हैं।

व्याख्या : हम यहाँ उपर्युक्त दोहे के तीनों अर्थ पर क्रमवार विचार करते हुए उसकी व्याख्या प्रस्तुत करेंगे।

पहली व्याख्या : एक सखी अपनी दूसरी सखी से कहती है- हे सखी ! देखो ये दोनों (राधा-कृष्ण) कैसे नाराज़ होकर बैठे हैं। मैं तो कहती हूँ कि यह जोड़ी चिरजीवी हो। आखिर इनके बीच गहरा स्नेह या प्यार क्यों न हो? ये दोनों एक-दूसरे से कम नहीं हैं। दोनों एक से बढ़कर एक हैं। एक वृषभानु जी जैसे महापुरुष की बेटी हैं तो दूसरी तरफ ये कृष्ण बलदेव जैसे प्रभावशाली पुरुष के भाई हैं। इसलिए इनकी जोड़ी बहुत अच्छी है।

दूसरी व्याख्या : पहली सखी ने जो बातें कहीं उन बातों को सुनकर दूसरी सखी कहती है- यह जोड़ी चिरजीवी हो। इन दोनों के बीच गंभीर स्नेह नहीं जुड़ पा रहा है। उसका कारण है कि दोनों में कोई कम नहीं है। एक तो वृषभानु (वृष के सूर्य) की बेटी हैं। इस कारण उनमें प्रचंडता

है। तो दूसरी तरफ वे शेषनाग के अवतार बलदेव के भाई हैं। इस कारण उनमें भी उग्रता तथा असहनशीलता है।

तीसरी व्याख्या : अब एक तीसरी सखी कहती है हाँ सही बात है। इन दोनों की जोड़ी चिरजीवी हो लेकिन इन दोनों के व्यवहार के कारण इनमें गंभीर प्रेम नहीं हो सकता। कारण यह है कि इन दोनों में कोई कम तो है नहीं। दोनों एक ही तरह की प्रवृत्ति के हैं। समझने-बुझाने से मानते ही नहीं हैं। एक यह कि राधा वृषभानुजा- बैल की अनुजा यानि बहन हैं और वे कृष्ण - हलधर यानि बैल के भाई हैं। कहने का तात्पर्य है कि ये दोनों गाय-बैल की तरह हैं।

काव्यगत विशेषता : यहाँ भाषा ब्रज, शैली व्यंग्यात्मक, शृंगार रस, दोहा छंद, श्लेष अलंकार है।

बोध प्रश्न

- उपर्युक्त दोहे की कोई एक पसंदीदा व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

नित प्रति एकत हीं रहत बैस बरन मन एक।
चहियत जुगल किसोर लखि लोचन जुगल अनेक ॥9॥

शब्दार्थ : नित प्रति एकत हीं रहत = हमेशा ही एक रहने वाले। बैस = आयु। बरन = वर्ण या रंग। चाहियत = चाहिए। जुगल किशोर = किशोर जोड़ी या राधा और कृष्ण। लखि = देखना। लोचन = नेत्र, आँख। जुगल = जोड़ी अनेक = कई।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा प्रमुख रीतिकालीन कवि बिहारी की प्रसिद्ध रचना 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रसंग : यहाँ एक युगलोपासक भक्त द्वारा राधा और कृष्ण की सुंदरता व उनके बीच के प्रेम को देखने के लिए कई जोड़े नेत्रों की कामना की गई है।

व्याख्या : आयु, वर्ण तथा मन से सदैव एक ही होकर रहने वाले राधा और कृष्ण की सुंदरता को देखने के लिए केवल ये दो नेत्र (एक जोड़ी आँखें) ही काफी नहीं हैं। इन एक जोड़ी नेत्रों से देखकर आत्मा तृप्त नहीं हो पाती। राधा व कृष्ण की सुंदरता देखने के लिए कई जोड़े नेत्रों की जरूरत हैं ताकि हम उनकी शोभा को देख सकें और आत्मिक रूप से तृप्त हो सकें।

काव्यगत विशेषता : यहाँ भाषा ब्रज, भक्ति रस, दोहा छंद प्रयुक्त है।

बोध प्रश्न

- भक्त को एक जोड़े नेत्रों की जगह कई जोड़े नेत्रों की अभिलाषा क्यों है।

मोर मुकुट की चंद्रकनु यौन राजत नंदनंद॥

मनु ससि सेखर की अकस किय सेखर सत चंद॥10॥

शब्दार्थ : चंद्रिकनु = चंद्रिकाओं से। मोर के पंखों में जो चंद्राकार चिह्न होते हैं उन्हें चंद्रक कहा जाता है। कवि ने इस चंद्रक शब्द के स्त्रीलिंग रूप चंद्रिका का यहाँ प्रयोग किया है। नंदनंद = नन्द के पुत्र यानि श्रीकृष्ण। ससिसेखर = महादेव, भोलेनाथ, शिव, महेश। जिनके मस्तक पर चंद्रमा है। अकस = अरबी में अक्स है। लेकिन ब्रज या अवधी में अकस के रूप में प्रयुक्त होता है। इस शब्द का मुख्यार्थ उल्टा या प्रतिबिंब होता है लेकिन हिंदी तथा उर्दू में यह वैर के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा प्रमुख रीतिकालीन कवि बिहारी की प्रसिद्ध रचना 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रसंग : यहाँ एक सखी नायिका से श्रीकृष्ण की शोभा का वर्णन करके उसके मन में उस सुंदरता या शोभा को देखने की लालसा उत्पन्न करना चाहती है।

व्याख्या : सखी, नायिका से कहती है कि श्रीकृष्ण ने अपने सिर पर मोर के पंखों का मुकुट धारण किया है। इससे उनका रूप-.सौंदर्य अत्यधिक बढ़ गया है। मोर मुकुट कि चंद्रिकाओं से श्रीकृष्ण ऐसे सुशोभित हो रहे हैं कि मानो श्रीकृष्ण ने महादेव के मस्तक पर विराजमान चंद्रमा के जैसे ही सौ चंद्रमा अपने सिर पर धारण कर कामदेव के जैसे सुशोभित हो रहे हैं। उनकी सुंदरता तो देखते ही बन रही है।

काव्यगत विशेषता : यहाँ मानो शब्द के आधार पर स्पष्ट हो रहा है कि यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है।

बोध प्रश्न

- उपर्युक्त दोहे के आधार पर श्रीकृष्ण की सुंदरता का वर्णन कीजिए।

12.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन देखने पर यह ज्ञात होता है कि तीसरे क्रम पर आने वाला काल रीतिकाल है। इस रीतिकाल में तीन शाखाएँ साफ तौर पर देखी जा सकती हैं - रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त। रीतिसिद्ध के अंतर्गत आने वाले कवियों में श्रेष्ठ कवि बिहारी हैं। बिहारी की रचना की बात करें तो इनकी एक प्रामाणिक रचना मिलती है जिसका नाम बिहारी सतसई है। बिहारी के दोहो पर कई लोगों ने टीकाएँ लिखी हैं। उनमें सबसे प्रसिद्ध टीका जगन्नाथदास रत्नाकर जी की 'बिहारी रत्नाकर' है। 'बिहारी सतसई' में कुल 713 दोहे

स्वीकार किए जाते हैं। बिहारी सतसई को पढ़ने के बाद हम पाते हैं कि इनके दोहे तत्कालीन परिस्थितियों का आभास करा देते हैं। यदि हम अपने पाठ्यक्रम में सम्मिलित दोहों की ही बात करें तो यहाँ भी भक्ति, शृंगार, नीति, प्रकृति से संबंधित दोहे हैं।

बिहारी सतसई की भाषा की बात करें तो इन्होंने अपने दोहों में मुख्य रूप से ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। हाँ यह अवश्य है कि इन्होंने अन्य भाषाओं के शब्दों को ब्रज की प्रकृति के अनुरूप बनाकर उसे अपने दोहों में प्रयोग कर लिया है। इनके यहाँ अरबी-फारसी के शब्द जैसे-अक्स, अहसान, चश्मा, कबूल, हमाम, नाहक, पायन्दाज, फौज आदि शब्द मिलते हैं। किसी एक भाषा में उसके आसपास बोली जाने वाली भाषा या बोली के शब्द भी मिले हुए रहते हैं। बिहारी की भाषा ब्रज है लेकिन इसमें बुंदेली, अवधी और पूर्वी का भी प्रभाव देखा जा सकता है। लिंग बदल देने की बात ब्रजभाषा के प्रायः सभी कवियों में पाई जाती है। बिहारी के यहाँ भी यह बात देखने को मिलती है। ऐसा भी होता है कि कोई एक शब्द एक क्षेत्र विशेष में पुल्लिंग के रूप में प्रयुक्त होता है तो दूसरे क्षेत्र में स्त्रीलिंग रूप में। बिहारी के यहाँ भी रुख, उसार, मिठासु जैसे शब्दों में लिंग प्रयोग की त्रुटियाँ दिखाई देती हैं।

बोध प्रश्न

- बिहारी के यहाँ अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग है। स्पष्ट कीजिए।

यदि हम छंद की बात करें तो बिहारी ने दोहा छंद का प्रयोग किया है। हमारे पाठ्यक्रम में भी दोहे ही शामिल हैं। उनके दोहों में अनुप्रास, श्लेष, उत्प्रेक्षा सहित विभिन्न अलंकारों का प्रयोग है।

12.4 पाठ सार

बिहारी के दोहों में हम देखते हैं कि उन्होंने राधा-कृष्ण की भक्ति की है। उन्हीं को सामने रखकर शृंगारिक वर्णन भी किया है। पाठ्यक्रम में सम्मिलित दोहे से ये बात साफ तौर पर स्पष्ट हो जाती है कि वे युगलोपासक थे। उन्होंने सिर्फ कृष्ण की ही भक्ति नहीं की है अपितु राधा की भी भक्ति की है। उनके दोहों में नीति को भी साफ तौर पर देखा जा सकता है।

12.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं --

1. बिहारी रीतिकाल की रीतिसिद्ध शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।

2. उनकी एक ही प्रामाणिक रचना मिलती है। इसका नाम ‘बिहारी सतसई’ है।
3. ‘बिहारी सतसई’ पर कई टीकाएँ लिखी गई हैं। लेकिन सबसे अच्छी टीका जगन्नाथदास रत्नाकर की ‘बिहारी रत्नाकर’ मानी जाती है।
4. ‘बिहारी सतसई’ मूल रूप से शृंगारिक रचना है, लेकिन इसमें भक्ति, नीति और प्रकृति से संबंधित दोहे भी सम्मिलित हैं।

12.6 शब्द संपदा

---

1. कल्मष = मैल या पाप। इसे काले रंग का माना जाता है।
2. पातक = गिरानेवाला। पाप कार्य (बुरा काम) जिससे आदमी नर्क (जहन्नुम) में जाता है।
3. युगलोपासक = राधा और कृष्ण की साथ-साथ उपासना (पूजा) करने वाला। इसका प्रारंभ निंबार्काचार्य ने शुरू किया था। वे एक दार्शनिक थे। जिनके दर्शनको ‘द्वैताद्वैत’ दर्शन कहा जाता है। इनका जन्म महाराष्ट्र के औरंगाबाद के निकट हुआ था। इन्होंने राधा-कृष्ण की युगलोपासना पर बल दिया।

12.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. बिहारी के चयनित दोहों का सार अपने शब्दों में लिखिए।
2. बिहारी व बिहारी सतसई के संदर्भ में विद्वानों के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

खंड (आ)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. चिरजीवौ जोरी जुरे क्यों न सनेह गंभीर।/को घटी ये वृषभानुजा वे हलधर के बीर॥ इसकी सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
2. सखि सोहत गोपाल कै उर गुंजन की माल।/ बाहिर लसति मनौ पिए दावानल की ज्वाल॥ इसकी सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

3. मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि सोई।/ जा तन की झाँईं परै स्यामु हरित दुति होई॥ इसकी सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. 'बिहारी सतसई' के टीकाकार? ( )
   (अ) बिहारी (आ) जन्नाथदास रत्नाकर (इ) राजा जयसिंह (ई) राजा मानसिंह
2. बिहारी को किस शाखा में शामिल किया जाता है? ( )
   (अ) रीतिबद्ध (आ) रीतिसिद्ध (इ) रीतिमुक्त (ई) कोई नहीं
3. बिहारी की भाषा मुख्य रूप से है - ( )
   (अ) मैथिली (आ) अवधी (इ) ब्रज (ई) खड़ी बोली

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. चिरजीवौ जोरी ....।
2. मोहनि मूरति श्याम की ....।
3. सीस मुकुट कटि-काछनी कर .... उर-माल.

III. सुमेल प्रश्न -

1. श्याम	(अ) अरबी शब्द
2. अकस	(आ) रीतिकाल
3. बिहारी	(इ) 713 दोहे
4. बिहारी सतसई	(ई) श्रीकृष्ण

12.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र, हरदयाल
3. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. बिहारी : बच्चन सिंह
5. बिहारी रत्नाकर : जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

इकाई 13 : सुभद्रा कुमारी चौहान : एक परिचय

रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 मूल पाठ : सुभद्रा कुमारी चौहान : एक परिचय

13.3.1 जीवन परिचय

13.3.2 व्यक्तित्व

13.3.3 काव्य की प्रेरणाएँ

13.3.4 रचना यात्रा एवं कृतियाँ

13.3.5 काव्य की प्रमुख कथ्यगत विशेषताएँ

13.3.6 छायावादोत्तर हिंदी कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान का महत्व

13.4 पाठ का सार

13.5 पाठ की उपलब्धियाँ

13.6 शब्द संपदा

13.7 परीक्षार्थ प्रश्न

13.8 पठनीय पुस्तकें

13.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! सुभद्रा कुमारी चौहान आधुनिक युगीन राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना से संपन्न एक ख्याति प्राप्त एवं लोकप्रिय रचनाकार हैं। आधुनिक हिंदी काव्य जब अपनी करवटें बदल रहा था, तब जिन कवियों ने अपनी रचनाओं द्वारा जन-जीवन के अंतर्मन में देशप्रेम की भावना को जगाते हुए उनमें एक विशेष प्रकार की स्फूर्ति का संचार किया, उनमें सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है। अतएव उनका अप्रतिम योगदान स्मरणीय है। इनके द्वारा सृजित कृतियाँ हिंदी साहित्य जगत में विशिष्ट पहचान रखती हैं।

13.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन से परिचित हो सकेंगे।

- उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित हो सकेंगे।
- तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों से परिचित हो सकेंगे।
- सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्यगत विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

उनकी राष्ट्रीय भावना से परिचित हो सकेंगे।

13.3 मूल पाठ : सुभद्रा कुमारी चौहान : एक परिचय

13.3.1 जीवन परिचय

स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना, संघर्षशील महिला, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम कोकिला, राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना से संपन्न सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त, 1904 ई. को नागपंचमी के दिन उत्तर प्रदेश के प्रयाग जिले के निहालपुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह और माता का नाम धिराज कुँवर था। सुभद्रा जी की चार बहिनें और तीन भाई थे। उनकी एक बड़ी बहन के देहावसान बाल्यकाल में ही हो गया था। तीनों भाई उनसे बड़े थे। सबसे बड़ी भाई रामऔतार सिंह थे। किंतु वे दीर्घकाल तक नहीं रह पाए। दूसरे भाई का नाम ठाकुर राज बहादुर सिंह था। वे मध्यभारत के अजयगढ़ राज्य में सेशंस जज थे। तीसरे भाई ठाकुर रामप्रसाद सिंह थे, जिन्होंने असहयोग आंदोलन में सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया था। वे सुभद्रा जी के जीवनकाल में ही बड़े भाई के समान दिवंगत हो गए थे। उनकी तीन बहनों के नाम सुंदर, रानी और कमला थे। इनकी शादी क्रमशः कानपुर, बाँदा और बनारस में हुई थी। इस प्रकार सुभद्रा जी को अपने जीवनकाल में अपनी तीनों बहनों और एक भाई का भरपूर स्नेह प्राप्त हुआ। इन सभी के अतिरिक्त उनकी एक चचेरी बहन भी उनके साथ निवास करती थी। उनका नाम गोमती था तथा सुभद्रा जी की वे हमउम्र थीं। सुभद्रा जी को मातृ-पितृ प्रेम के अलावा अपने भाई-बहनों का भरपूर प्रेम प्राप्त हुआ। सुभद्रा जी के बाल्यकाल में सामाजिक स्थितियाँ सामान्य नहीं थीं। तत्कालीन समाज अनेक जड़ परंपराओं से जकड़ा हुआ था। आठ-नौ वर्ष की लड़कियों को घर से बाहर निकलने नहीं दिया जाता था, परंतु सुभद्रा जी के बड़े भाइयों ने घर की लड़कियों को स्कूल जाने दिया। सुभद्रा जी पाँचवीं-सातवीं कक्षा में थीं, तभी 1919 ई. में उनका विवाह ठाकुर लक्ष्मण सिंह से हुआ। ठाकुर लक्ष्मण सिंह भी एक देशभक्त व्यक्ति थे। अतः उन्होंने सदैव सुभद्रा जी को प्रोत्साहन और सहयोग दिया। अपने पिता, ठाकुर रमानाथ सिंह की देख रेख में उनकी प्रारंभिक शिक्षा हुई। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कास्थवेट गर्ल्स कॉलेज, प्रयाग से हुई।

सुभद्रा जी की पाँच संतानें थीं। सुधा, अजय, विजय, अशोक और ममता। किसी युग का साहित्य उस युग के मानवीय भावों, विचारों और आकांक्षाओं का प्रकटीकरण होता है और मनुष्य के विचार तथा आकांक्षाएँ उस युग की परिस्थितियों के अनुसार ही बनती हैं। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण भी कहा गया है। सुभद्रा जी का समकालीन समाज परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, हताशा एवं निराशा से भरा हुआ था। वह जन-जागृति, देश-प्रेम की अभिव्यक्ति और विदेशी शासन के प्रति आक्रोश का युग था। संपूर्ण भारतवर्ष में स्वतंत्रता प्राप्ति की लहर दौड़ पड़ी थी। सुभद्रा जी के व्यक्तित्व के अनेक पक्ष हैं जिनमें से एक पक्ष दृश्य, एकनिष्ठ और समर्पित वीरांगना का भी है। यह ध्यान देने योग्य है कि अप्रैल 1919 में जलियाँवाला बाग हत्याकांड हो चुका था।

विदेशी अधीनता से ग्रस्त एवं त्रस्त समाज के शांत करुणाद्र रोदन से अभिभूत सुभद्रा जी ने 1921 में गांधी जी के असहयोग आंदोलन को संपूर्ण भारतवर्ष में प्रचारित किया। इस तरह वे स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली प्रथम महिला के रूप में चिह्नित की गईं। उन्हें जेल भी जाना पड़ा, वे दो बार जेल गईं। अपनी इसी सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतिबद्धता को उन्होंने अपनी रचनाओं में स्थान दिया एवं अपनी कविताओं के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन को प्रेरित किया। स्वतः उनका नाम छायावादोत्तर कविता जगत में अग्रिम पंक्ति में रखा जाता है। 15 फरवरी, 1948 में एक कार दुर्घटना में उनका आकस्मिक निधन हो गया। वे तब मात्र तैंतालीस वर्ष की थीं।

सम्मान

'मुकुल' काव्य संग्रह एवं 'बिखरे मोती' पर सुभद्रा कुमारी चौहान को 'सेकसरिया' पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनके राष्ट्रप्रेम की भावना का सम्मान करते हुए डाक विभाग ने 1976 में एक डाक टिकट भी जारी किया तथा भारतीय तट-रक्षक सेना ने 28 अप्रैल, 2006 को एक नवनियुक्त तट-रक्षक जहाज को सुभद्रा कुमारी चौहान नाम से अभिहित किया था। 27 नवंबर, 1949 में जबलपुर के निवासियों ने चंदा इकठ्ठा करके नगरपालिका प्रांगण में सुभद्रा जी की आदमकद प्रतिमा लगवाई।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम कोकिला क्यों कहा जाता है?
- सुभद्रा कुमारी चौहान को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था?

13.3.2 व्यक्तित्व

छात्रो! सामान्य रूप से व्यक्तित्व के दो पक्ष होते हैं - बाह्य और आंतरिक। व्यक्तित्व एक निजी उपादेयता है, किंतु उसका निर्माण अनेक कारकों की देन है। इनमें परिवार, समाज, संस्कृति, धर्म आदि कुछ प्रमुख कारक हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य के आधार पर उनके व्यक्तित्व का यदि आकलन करें तो पाएँगे कि एक सरल सहज प्रवाहमयता उनकी रचनाओं में विद्यमान है। यह सहजता उनके व्यक्तित्व का भी अभिन्न अंग है। जीवन की समस्याओं के प्रति उनकी चिंता और उसकी अभिव्यंजना उनके बहिर्मुखी एवं स्पष्टवादी होने का परिचायक हैं। विलियम वर्ड्सवर्थ के शब्द 'भावों के उच्छवास' को उधार लें तो सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य और व्यक्तित्व दोनों को न्यायोचित ठहराया जा सकता है। वे जीवन के मौलिक उद्वेगों का संपुंज थीं। तत्कालीन रूढ़िवादी समाज में रहने के बावजूद उनका परिवार व्यापक सोच का हिमायती था। इसका सकारात्मक प्रभाव हमें सुभद्रा जी के व्यक्तित्व में दिखता है। वे रूढ़िवादी समाज के खिलाफ एक सशक्त स्वर बनकर अपने समय में उभरीं और उन्होंने सती प्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा आदि कुप्रथाओं का सदैव विरोध किया। इसी तरह वे पर्दा प्रथा की भी विरोधी थीं। पर्दा-प्रथा के विरोध की वे स्वयं मिसाल थीं। उनकी कविताओं एवं कहानियों के माध्यम से हम जान सकते हैं कि वे नारी के स्वतंत्र अस्तित्व के पक्ष में थीं। उनके कहानी संग्रह 'बिखरे मोती' के विनीत निवेदन में सुभद्रा जी ने लिखा था - "रूढ़ियों और सामाजिक बंधनों की शिलाओं पर अनेक निरपराध आत्माएँ प्रतिदिन चूर-चूर हो रही हैं। किंतु उनके हृदय-बिंदु जहाँ तहाँ मोतियों के समान बिखरे पड़े हैं। मैंने तो उन्हें केवल बटोरने का ही प्रयत्न किया है। मेरे इस प्रयत्न में कला का लोभ है और अन्याय के प्रति क्षोभ भी।" (नई ज़मीन की तलाश, पृ. 251)। इसी प्रकार कहानी-संग्रह 'उन्मादिनी' के निवेदन में भी वे स्त्री के चहुँमुखी विकास का समर्थन करते हुए दिखाई देती हैं - "स्त्री के हृदय को पहचानो और उसको चारों ओर विकसित होने का अवसर दो, यह न भूल जाओ कि उसका अपना भी एक व्यक्तित्व है।" (नई ज़मीन की तलाश, पृ. 251)। सुभद्रा जी की दृढ़ धारणा थी कि विवाह के बाद भी नारी का अस्तित्व स्वतंत्र रहता है। इस कथन को उन्होंने विवाह के बाद चरितार्थ भी किया। अपने पति ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उन्होंने अपना सर्वस्व राष्ट्र-सेवा में लगा दिया।

यदि उचित माहौल एवं अवसर प्रदान किए जाए एवं लालन-पालन में लैंगिक भेद न हो तो एक व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास हो सकता है। सुभद्राकुमारी चौहान इसका अन्यतम

उदाहरण हैं। ‘मुकुल’ काव्य-संग्रह के ‘परिचय’ में श्री प्रफुल्लचंद्र ओझा ‘मुक्त’ लिखते हैं - “सुभद्रा कुमारी के पिता बड़े उदार विचारों वाले और प्रतिष्ठित पुरुष थे। उन्हें स्वभाव से ही कविता और संगीत से विशेष प्रेम था। उनकी इस सुरुचि का बालिका सुभद्रा पर भी विशेष प्रभाव पड़ा। बचपन से ही इन्हें प्राकृतिक दृश्यों को देखने, सृष्टि के सौंदर्य पर विचार करने और तितलियों तथा फूलों के पीछे दौड़ने-फिरने का व्यसन सा हो गया था। पढ़ने-लिखने का शौक भी इन्हें छोटी उमर से ही था...इनके कवि जीवन का भविष्य इन्हीं पात्रों में छिपा हुआ था।” (परिचय, मुकुल, पृ. 5)। उनका महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि स्त्रियों की भागीदारी स्वतंत्रता आंदोलन एवं साहित्य के क्षेत्र में विरल थी। स्त्री की भागीदारी की जहाँ तक बात उठेगी, हम संभवतः उन्हें साहित्य के क्षेत्र में प्रवर्तक के रूप में स्मरण करेंगे। बकौल कमलाकांत पाठक- “सुभद्रा जी दृढ़ और निष्ठावान महिला थीं। मानवता के श्रेष्ठतम गुण उनके व्यक्तित्व में कूट-कूट कर भरे हुए थे। .... ओज और साहस को वे मानवता के पोषक उपकरण समझती थी। ममत्व और प्रेम की कोमलता उनकी मानवता का ही शृंगार थीं। ... त्याग और बलिदान की भावना उनकी मानवतावादी जीवन दृष्टि की विकसित अवस्था को ही लक्षित करती हैं।” (कमलाकांत पाठक, सुभद्रा-साहित्य और राष्ट्रीय कविता, पृ. 20-22)।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा जी नारी के किस तरह अस्तित्व के पक्ष में थीं?
- सुभद्रा जी कैसी कवयित्री के रूप में वे स्थापित हो चुकी थीं?

13.3.3 काव्य की प्रेरणाएँ

काव्य-प्रेरणा के कई कारक हो सकते हैं। पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, राष्ट्र-प्रेम आदि कुछ कारक हो सकते हैं। ‘स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम कोकिला’ के नाम से संबोधित राष्ट्रभक्त कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान को सर्वप्रथम काव्य की प्रेरणा परिवार से ही मिली। जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है, सुभद्रा जी के पिता जी का कविता और संगीत के प्रति अतिरिक्त रुझान था। इसलिए उन्होंने सुभद्रा जी में भी सृजन करने की क्षमता को पहचान लिया था तथा उनकी इस क्षमता को समय रहते प्रोत्साहित भी किया। कविताओं के प्रति रुचि बाल्यकाल में ही हो शुरू हो चुका था। गणित की पुस्तक में कविताएँ लिखने वाली सुभद्रा की शिकायत जब शिक्षकों द्वारा उनके पिताजी को की गई तो वे क्रोधित होने के बजाए हर्ष से भर गए। 9 वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने काव्य-रचना के प्रति अपने

रुझान को स्पष्ट कर दिया था। अपनी कविताओं में राष्ट्र प्रेम के प्रति आह्वान की प्रेरणा उन्हें गांधी जी से मिली। इस तरह साहित्य सृजन के नेपथ्य में देशप्रेम भी रहा। विवाह के बाद उनके पति लक्ष्मण सिंह के देशभक्ति के प्रति राग को और धार देने का काम सुभद्रा जी ने किया। उन्होंने भी कदम-कदम पर सुभद्रा जी का साथ दिया। दोनों एक-दूसरे की प्रेरणा का कारण बने। उनकी बड़ी बेटी सुधा चौहान लिखती हैं- "इन पति-पत्नी का जीवन तो निश्चय ही गुलामी को तोड़ने वाली हथौड़ी बन गया था।" (सुधा चौहान, मिला तेज से तेज, पृ. 176)। स्पष्ट है कि लक्ष्मण सिंह और सुभद्रा जी एक दूसरे के लिए बने थे। "दोनों के विचार, भाव और उद्देश्य ही नहीं, प्रवृत्तियाँ भी एक थीं। वे ऐसे आदर्श दंपति थे, जो परस्पर सौहार्द, प्रेम और विश्वास पर टिके थे। लक्ष्मण सिंह ने सुभद्रा के व्यक्तित्व के विकास में पूरा-पूरा सहयोग दिया। सुभद्रा-लक्ष्मण की आदर्श जोड़ी सभी भारतीय परिवारों के लिए आदर्श थी। स्वतंत्रता के साथ जिस मर्यादा और नैतिक जिम्मेदारी की आवश्यकता होती है, वह इन दोनों में संस्कार रूप से विकसित हुई थी। सुभद्रा बसंत की अग्रदूत थीं, तो लक्ष्मण सिंह स्वाधीनता का शंखनाद थे। सुभद्रा ने जो कार्य ओजस्वी कविताओं द्वारा किया, वही कार्य लक्ष्मण सिंह ने पत्रकारिता के माध्यम से किया।

उनके काव्योत्कर्ष में माखनलाल चतुर्वेदी का भी अतुलनीय योगदान था। एक गुरु के रूप में उन्होंने सुभद्रा जी की काव्य-प्रतिभा को निखारने का पुनीत कार्य किया । 1920 में ही उन्हें हिंदी साहित्य जगत में ख्याति प्राप्त हो चुकी थी। उनकी कविताएँ कई प्रतिष्ठित साहित्यकारों से प्रशंसा बटोर रहीं थीं। इन परिस्थितियों को देखते हुए माखनलाल जी ने उन्हें 'कर्मवीर' के प्रथम अंक में कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित किया। 'कर्मवीर' के प्रकाशन के आरम्भ के पहले ही उनका साहित्यिक परिवार भी बहुत विशाल एवं गंभीर था। संभवतः यह उनके सहज स्वभाव के कारण था। शमानुलाल श्रीवास्तव, नर्मदा प्रसाद खरे, केशवप्रसाद पाठक, रामकुमार वर्मा, जैनेंद्र कुमार, ललित प्रसाद शुक्ल, रामेश्वर गुरु, राम विलास शर्मा आदि के साथ उनके घनिष्ठ संबंध थे। निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि सुभद्रा जी इन विद्वानों-चिंतकों-सर्जकों से निरंतर प्रभावित होती रही होंगी। इसका प्रभाव उनके साहित्य पर भी देखा जा सकता है।

सुभद्रा जी का साहित्यिक जीवन एवं राजनैतिक जीवन एक दूसरे से संबद्ध थे। उनका देश-प्रेम उनके व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा था। जब आसपास का पूरा परिदृश्य स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए व्यग्र था, तब सुभद्रा कुमारी चौहान ने भी अपने कोमल भावों पर लोहे का आवरण

चढ़ा दिया और युवाओं को राष्ट्र के प्रति न्योछावर होने हेतु कविताओं का सृजन करने लगीं। तत्कालीन समाज एवं परिस्थितियाँ सुभद्रा जी की काव्य-प्रेरणा के अभिन्न अंग थीं।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा ने जो कार्य ओजस्वी कविताओं द्वारा किया, वही कार्य किस विद्वान ने पत्रकारिता के माध्यम से किया?
- सुभद्रा जी की काव्य-प्रेरणा का अभिन्न अंग क्या था?

13.3.4 रचना यात्रा एवं कृतियाँ

सुभद्रा जी की रचना-यात्रा निहालपुर के सामान्य मकान से शुरू हुआ। अपने दोस्तों के साथ खेल के दौरान उमड़े उद्गारों को वे अपनी रचनाओं में स्थान देती थीं। सो बचपन से ही खुद को अभिव्यक्त करने की उनमें उत्कट लालसा थी। केवल एक रचना 'झाँसी की रानी' ने उन्हें साहित्य जगत में अमरत्व प्रदान कर दिया था ।परिमाण की दृष्टि से यदि देखा जाए तो उन्होंने बहुत कम रचनाएँ ही कीं, किंतु जितना भी किया उसे साहित्यकारों एवं पाठकों ने सराहा।

सुभद्रा कुमार चौहान ने 88 कविताओं और 46 कहानियों की रचना की। उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं :

काव्य-संग्रह : मुकुल (1930), त्रिधारा (चुनी हुई कविताएँ), सभा का खेल (बाल काव्य)

कहानी संग्रह : बिखरे मोती (1932), उन्मादिनी (1934), सीधे-सादे चित्र (1947)

संपादित : विवेचनात्मक गल्पमाला

जीवनी : मिला तेज से तेज (पुत्री सुधा चौहान द्वारा रचित)

पद्य साहित्य

एक कवयित्री के रूप में सुभद्रा जी अपने काव्य-संग्रहों के प्रकाशन से पहले ही स्थापित हो चुकीं थीं। उनकी प्रसिद्धि का आलम यह था कि जब 'कर्मवीर' और अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रही थीं, तभी से उनकी कविता पढ़ने को लोग लालायित रहते। डॉ. रामकुमार वर्मा ने 'मुकुल' काव्य-संग्रह की भूमिका में इसी बात को अपने शब्दों में कुछ इस तरह प्रस्तुत किया है- "परिस्थितियों की हिलोर में कविता इस प्रकार चलती है, जैसे कोई मंत्र-मुग्ध। मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं कि कविता में ऐसे शक्ति उत्पन्न होती है जो सुनने वालों को मुग्ध कर देती है। पर मतलब यह है कि कविता स्वयं मंत्र-मुग्ध की भाँति अग्रसर होती है। उसका प्रत्येक शब्द मतवाला होता है।" (रामकुमार वर्मा, मुकुल, भूमिका से)। उनकी सहजता का एक

उदाहरण द्रष्टव्य है :

"उत्साह उमंग निरंतर
रहते मेरे जीवन में
उल्लास विजय का हंसता
मेरे मतवाले मन में।" (वर्तमान साहित्य, अक्टूबर 2005, पृ. 42)

सुभद्रा जी का साहित्य क्षेत्र में जब आविर्भाव हुआ था, देश स्वतंत्रता की राह पर खुद को न्योछावर कर देने को तत्पर था। सुभद्रा जी की कविताओं का मुख्य स्वर भी राष्ट्रीय-चेतना ही रहा। "राष्ट्रीय चेतना की विस्तार शील परिधि के अंदर पनपने वाली आत्म-चेतना के जो मनोहर बिंब हमें आधुनिक हिंदी काव्य में दिखाई देते हैं, वे आज भी हमारे गौरव का विषय है। इस काव्य-साहित्य में सुभद्रा जी का साहित्य, अपनी भाव पद्धति और शैली की विशेषताओं के कारण पृथक और विशेष स्थान रखता है।" (मुक्तिबोध रचनावली-5, सं. नेमिचंद्र जैन, पृ. 376)। सुभद्राकुमारी चौहान की एक विशिष्टता यह भी है कि सामान्य जीवन प्रसंगों को वे राष्ट्र के प्रति प्रेम एवं कर्तव्य में रूपांतरित कर सकती थी। इससे उनकी स्वाधीनता प्राप्ति की उत्कट चाह का परिचय प्राप्त होता है। राखी त्यौहार के बहाने यह कवितांश देखिए :

"आते हो भाई? पुनः पूछती हूँ
कि माता के बंधन की लाज तुमको
तो बंदी बनो देखो बंधन है कैसा?
चुनौती यह राखी की आज है तुमको। (मुकुल, राखी की चुनौती, पृ. 66)

'जलियाँवाला बाग़ में बसंत', 'झाँसी की रानी', 'राखी की चुनौती', 'मातृ मंदिर में', 'विजया दशमी', 'पुरस्कार कैसा', 'झाँसी की रानी की समाधि पर', 'वीरों का कैसा हो वसंत', 'सेनानी का स्वागत' जैसी राष्ट्रीय चेतना में पगी कविताएँ विविध रूपों में स्वाधीनता की अलख जगाती हैं।

बेशक राष्ट्रीय चेतना की ध्वजा वाहक के रूप में सुभद्रा जी ने जन-जन तक अपनी पहुँच बनाई। किंतु इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि उनके अन्य रूपों का परिचय हमें प्राप्त नहीं हुआ। सुभद्रा कुमारी चौहान ने स्त्री अस्मिता का प्रश्न भी अपनी रचनाओं में उठाया है। उन्होंने स्त्री के विभिन्न रूपों का चित्रांकन किया है। मुकुल बिहारी सरोज ने उचित ही इस ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है- "उनकी रचनाओं में नारी, आदर्श पत्नी है, अगर वात्सल्य प्रवाहित करने वाली

माँ है, स्नेह रस में विभोर कली है, जीवन में आनंद के दीप जलाने वाली प्रेयसी है। इन सबके उपरांत वह अवसर पड़ने पर रण-चंडी का रूप धारण कर शत्रु से लोहा लेने वाली वीर बाली भी है।" (सरोज मुकुल बिहारी, सुभद्रा कुमारी चौहान : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ.24)।

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के प्रबल स्वर के रूप में स्थापित सुभद्रा जी के काव्य-संग्रहों 'मुकुल' और 'त्रिधारा' से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वे मात्र राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित कवयित्री नहीं थीं वरन् उनके यहाँ मनुष्य एवं जीवन के नानाविध भावों का चित्रण भी विद्यमान है। 'मुकुल' काव्य संग्रह में जहाँ एक ओर राष्ट्रीय भाव से ओतप्रोत कविताएँ हैं, वहीं निष्कलुष प्रणय भाव और वात्सल्य भाव का अंकन भी है। इसी प्रकार उनके दूसरे काव्य-संग्रह में भी जहाँ राष्ट्रीय भाव संपन्न कविताएँ विद्यमान हैं, वहीं प्रणय भाव और जीवन दर्शन विषयक कविताएँ भी हैं। स्पष्ट है कि सुभद्रा जी गंभीर से गंभीर विषय को भी सरल रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता रखती थीं। इस सरलता के चलते उनकी रचनाएँ अपनी सरसता नहीं खोती हैं- "सुभद्रा जी की भावुकता कोरी भावुकता नहीं है, बाह्य जीवन पर संवेदनात्मक मानसिक प्रतिक्रियाएँ हैं। यही कारण है कि उनकी कविताओं में भाव मानव-संबंध विशेष परिस्थिति से, विशेष परिस्थिति सामाजिक-राष्ट्रीय परिस्थिति से, एक अटूट शृंखला बंधी हुई है। भाव के सारे संदर्भों का निर्वाह उनके काव्य में हो जाता है। इससे उनकी वास्तविक भाव संपन्नता का, संवेदनशीलता का चित्र हमारे सामने खिंच जाता है।" (मुक्तिबोध रचनावली-5, सं. नेमिचंद्र जैन, पृ. 392)।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता की विशेषताएँ बताइए।
- 'मुकुल' काव्य संग्रह में किस प्रकार की कविताएँ संकलित हैं?

13.3.5 काव्य की प्रमुख कथ्यगत विशेषताएँ

सुभद्रा कुमारी चौहान अनुभूतियों की कवयित्री हैं। उनकी कविताओं में सहज-निष्कलुष अनुभूतियाँ विद्यमान हैं। उनकी कविताओं की प्रमुख कथ्यगत विशेषताएँ हैं : राष्ट्रीय भावना, अतीत का गौरव, संस्कृति, भक्ति, जातिगत विषमता का विरोध, प्रकृति, परिवार, स्वानुभूति, प्रेम।

राष्ट्रीय भावना

देश प्रेम की भावना राष्ट्रीय भावना का मूल केंद्र है। इसके अंतर्गत राष्ट्र की आंतरिक और

बाह्य सत्ता का समावेश हो जाता है। राष्ट्रीयता की भावना एक आधुनिक अवधारणा है। अतः आधुनिक राष्ट्रीय भावना का उद्घोष हमें 1857 की क्रांति में सुनाई देता है। यह एक ऐसी क्रांति थी जिसमें परतंत्रता से उपजी छटपटाहट तथा स्वाधीनता के प्रति आशा और आकांक्षा को देखा जा सकता है। इस क्रांति ने हर क्षेत्र को प्रभावित किया। साहित्य को इस दृष्टि से यदि देखें तो पाएँगे कि इस क्रांति के आधार पर खड़े होकर रचनाकार एक नए नवजागरण की परिकल्पना में जुटे हुए थे। अतएव भारतेंदु युग, द्विवेदी युग से होते हुए जब हमने छायावादी युग में प्रवेश किया तब गांधी जी का प्रवेश भारतीय राजनीति में हुआ। स्वतंत्रता की लालसा बलवती हुई। त्याग और बलिदान की भावना जनता में जागृत हुई। स्वाभिमान की रक्षा मूल ध्येय बन कर उभरा। यह वह समय था जब सुभद्रा कुमारी चौहान का पदार्पण काव्य-जगत में हुआ। गांधी जी से वे बेहद प्रभावित थीं, इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत रचनाओं को प्रस्तुत करना एक उत्तरदायित्व की तरह ग्रहण किया। उनका प्रथम लक्ष्य लोगों को देश-प्रेम के लिए प्रेरित करना था, ताकि हम पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ सकें। सुभद्रा कुमारी चौहान ने देश की मिट्टी पर खड़े रहकर उसका रूप निहारा। 'लोहे को पानी कर देना' कविता में वे गांधीजी के व्यक्तित्व की सराहना करती हैं। 'सेनानी का स्वागत' शीर्षक कविता में बहादुर स्वतंत्रता सेनानियों की यातनाओं के बावजूद उन्हें हिम्मत न हारने का आह्वान करती हैं-

"हैं संतप्त तदपि आशा से
स्वागत आज तुम्हारा
एक बार फिर कह दो झंडा
ऊँचा रहे हमारा।" (मुकुल, सेनानी का स्वागत, पृ. 143)

सुभद्रा कुमारी चौहान ने राष्ट्रीयता का स्वर विभिन्न रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। कभी वे 'राखी की चुनौती' कविता द्वारा राष्ट्र पर न्योछावर होने की चुनौती पेश करती हैं तो कभी 'मातृ मंदिर' कविता के माध्यम से स्वदेश और स्वभाषा पर गौरव करने की बात करती हैं। स्वभाषा का क्या भविष्य होगा यह भी कविता के माध्यम से हमें पता चलता है -

"तू होगी व्यवहार देश के
बिछड़े हृदय मिलाने में।
तू होगी अधिकार, देश भर
को स्वातंत्र्य दिलाने में।" (मुकुल, मातृ मंदिर में, पृ. 87)

सुभद्रा कुमारी चौहान के बारे में कहा जा सकता है कि इनका काव्य-संसार देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत है। देश के मिट्टी का सोंधापन उनकी कविताओं में व्याप्त है। राष्ट्रीयता का चुनाव तात्कालिक समाज में कोई विकल्प नहीं था, वरन जीवन का अभिन्न अंग बन कर उभरा था। सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रीय कविताएँ कई भावों को विस्तृत फलक में संजोने का कार्य करती हैं। उनकी काव्यगत राष्ट्रीय चेतना उनकी निजी राष्ट्रीय चेतना का जीवंत विस्तार है।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में राष्ट्रीय भावना का मूल केंद्र क्या है?

अतीत का गौरव

इतिहास या यूँ कहें अतीत देशप्रेम का अभिन्न हिस्सा होता है। प्रेरणा के लिए एक व्यक्ति अपने अतीत का आकलन करता है। अनेक सकारात्मक पहलुओं का संचयन करता है ताकि गौरव का भाव जागृत हो सके। हमारे देश में भी समय-समय पर ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने विवेक, वीरता, साहस, मानवतावादी विचारधारा, धार्मिक उदारता और पराक्रम से देश का नाम ऊँचा किया है। अतः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय चेतना का एक अवश्यंभावी पक्ष अतीत का गौरव गान भी होता है। सुभद्रा जी की कविताओं में यह तत्व सर्वत्र विद्यमान है। 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता में कवयित्री कहती हैं -

"कह दे अतीत अब मौन त्याग
लंके तुझमें क्यों लगी आग
ऐ कुरुक्षेत्र अब जाग जाग;
बतला अपने अनुभव अनंत
वीरों का कैसा हो वसंत। (मुकुल, वीरों का कैसा हो वसंत, पृ. 111)

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता प्रेरणा देने का काम करती है। उनकी कविताएँ संदेशात्मक प्रवृत्ति से ओत-प्रोत हैं जिसमें वीर सेनानियों, वीरांगनाओं की झलक हमें प्राप्त होती है। उनकी कविता 'झाँसी की रानी की समाधि पर' का उदाहरण देखिए -

"इस समाधि में छिपी हुई है
एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की
दिव्य आरती फेरी। (मुकुल, झाँसी की रानी की समाधि पर, पृ. 146)

कह सकते हैं कि सुभद्रा जी की कविताएँ गौरवशाली अतीत के प्रतिबिंब हैं। अतीत के गौरव में दरअसल वर्तमान की चिंता समाहित होती है। सुभद्रा जी के यहाँ वर्तमान समाज की झाँकी भी हमें उसी न्यायोचित रूप में प्राप्त होती है, जिस तरह विगत वैभव के आख्यान मिलते हैं। सुभद्रा जी का काव्य आत्म गौरव, आत्मग्लानि, वर्तमान के प्रति चेतन प्रवृत्ति एवं भविष्य की शुभाकांक्षा का एक मिश्रित रूप है।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता किस तरह की कविता है?
- राष्ट्रीय चेतना का अवश्यंभावी पक्ष क्या है?

सांस्कृतिक कविताएँ

सुभद्रा जी की एक और विशिष्टता यह भी है कि उन्होंने अपनी कविताओं में उन जीवन प्रसंगों को भी स्वाधीनता से संयुक्त करने का प्रयास किया जिनका संबंध हमारी संस्कृति से है। ‘राखी की चुनौती’ कविता में वे कहती हैं -

> “आते हो भाई? पुनः पूछती हूँ
> कि माता के बंधन की लाज तुमको
> तो बंदी बनो देखो बंधन है कैसा?
> चुनौती यह राखी की आज है तुमको।” (मुकुल, राखी की चुनौती, पृ. 66)

हम देख सकते हैं कि सुभद्रा जी की कविताओं में यदि हमारी आस्थाएँ, मान्यताएँ, विश्वास, त्यौहार आदि आते भी हैं तो उनका संदर्भ देश और स्वाधीनता से निश्चित रूप से जुड़ा हुआ होता है। देवता, मंदिर, पुजारी, माँ सभी कहीं न कहीं ऐसे प्रतीकों के रूप में व्यवहृत होती हैं जिनसे प्रेरणा अथवा सन्देश प्रेषित हो।अतएव उनकी कविता के विषय रहस्य का निर्माण न कर मानवीय औदात्य का निरूपण करती हैं। ‘राखी’ कविता में वे कृष्ण को भाई मानकर तात्कालिक भारतीय दुर्दशा को उजागर करती हैं। इसी प्रकार ‘विजयादशमी’ त्यौहार के माध्यम से कवयित्री के हृदय का उदगार देखिए :

> “रामचन्द्र की विजय-कथा का
> भेद बता आदर्श सखी
> पराधीनता से छूटे यह
> प्यारा भारतवर्ष सखी” (मुकुल, विजायादशमी, पृ. 79)

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में आस्थाएँ, मान्यताएँ आदि का संदर्भ किससे जुड़ा हुआ है?

भक्ति एवं आध्यात्मिक भावना

जिस देश की आध्यात्मिक एवं भक्ति चेतना जितना प्रबल होती है, वह राष्ट्र उतना ही शक्तिशाली होता है। राष्ट्र का आत्मबल जागृत करने का यह सद्प्रयास हम भारतेंदु एवं परवर्ती युगों में भी देखने को मिलता है। इस समय के रचनाकारों ने अध्यात्म का सहारा लेकर राष्ट्र को उदासीनता के कोहरे से निकालने और आध्यात्मिक आत्मबल के संचरण का प्रयास किया। भारतीय संस्कृति की गौरवशाली संवाहिका सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी भक्ति भावना का भी परिचय दिया किंतु पुनः यह स्पष्ट करना ज़रूरी जान पड़ता है कि उनका मूल उद्देश्य आशा का संप्रेषण रहा। 'विदाई' कविता में वे कृष्ण से दृढ़ता, बल जैसे गुणों की माँग करती हैं :

"तुम्हारी दृढ़ता से जग पड़े
देश का सोया हुआ समाज
तुम्हारी भव्य मूर्ति से मिले
शक्ति वह विकट त्याग की आज।" (मुकुल, विदाई, पृ. 95)

'ठुकरा दो या प्यार करो' कविता में कवयित्री अपनी शर्तों पर ईश्वर की आराधना की बात करती हैं, यानी आडम्बरहीन पूजन की। इसी तरह। 'जाने दो' कविता भी कुछ इसी प्रकार का अर्थ निष्पादित करती है। वे राखी, होली, राम, कृष्ण, मंदिर आदि का प्रयोग करती हैं, लेकिन उनका दृष्टिकोण सांप्रदायिक न हो कर राष्ट्रहित में है। वे इन तमाम प्रतीकों को स्वाधीनता आंदोलन के पक्ष से जोड़कर हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में प्रतीक किससे जुड़कर सामने आते हैं?

जातिगत विषमता का विरोध

तात्कालिक सामाज का दुर्भाग्यपूर्ण पक्ष जातिवादी मानसिकता भी था। अपनी कविताओं में सुभद्रा कुमारी चौहान ने जाति-पाति से उपजी विषमता का प्रतिकार किया है तथा उनके भावनात्मक उद्घोष हमें प्रेरित करते हैं। 'प्रभु तुम मेरी मन की जानो' कविता में उनका उदगार द्रष्टव्य है :

“मैं अछूत हूँ मंदिर में मुझको आने का अधिकार नहीं है
किंतु देवता यह न समझना तुम पर मेरा प्यार नहीं है।”
“यह निर्मम समाज का बंधन और अधिक अब सह न सकूंगी
यह झूठा विश्वास, प्रतिष्ठा झूठी इसमें रह न सकूँगी।“
‘मुरझाया फूल’ के माध्यम से कवयित्री कहती है-
“यह मुरझाया फूल, इसका हृदय दुखाना मत
स्वयं विखरने वाली इसकी पंखुड़ियां विखराना मत”

(मुकुल, विस्मृति की स्मृति, पृ. 108)

यहाँ ‘मुरझाया फूल’ उन लोगों का प्रतीक है, जिनके साथ जाति आधारित भेदभाव किया जाता है। कवयित्री इसी भावना का प्रतिकार करती है। सुभद्रा कुमारी चौहान की अभिव्यक्ति जातिभेद, मज़हब, सांप्रदायिकता का प्रतिरोध करती हैं। स्वाधीनता एक हो कर ही प्राप्त किया जा सकता है। कवयित्री इस बात से वाकिफ है। कविताओं के माध्यम से वे अपने गाम्भीर्य, विवेक एवं सहिष्णुता का परिचय हमें देती हैं।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान के अनुसार स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?

प्रकृति

प्रकृति के प्रति कवयित्री के सान्निध्य का परिचय इसी बात से हो जाता है कि महज़ 9 साल की उम्र में उनकी कविता ‘नीम’ ‘मर्यादा’ नामक पत्रिका में 1913 में छप चुकी थी जिसमें उन्होंने नीम की उपयोगिता को दर्शाया :

“सब दुखहरन सुखकर परम हे नीम ! जब देखूं तुझे
तुहि जानकार अति लाभकारी हर्ष होता है मुझे।”

(सिंह, कुँवर पाल. वर्तमान साहित्य-2005, पृ. 20)

‘शिशिर समीर’, ‘स्वागत साज’, ‘वेदना’, ‘तुम’, ‘झिलमिल तारे’ आदि कविताओं में कवयित्री ने प्रेम और प्रकृति दोनों के संश्लेषण से कविता की रचना की है। ‘वेदना’ कविता में कवियित्री कहती हैं :

‘दिन में प्रचंड रवि किरणें मुझको शीतल कर जाती
पर मधुर ज्योत्सना तेरी हे शशि है मुझको जलाती

संध्या की सुमधुर बेला सब विहग नीड़ में आते।

मेरी आँखों के जीवन बरबस मुझसे छीन जाते'" (मुकुल, वेदना, पृ. 159)

सुभद्रा जी ने प्रकृति का आलंबन भी स्वाधीनता से जोड़कर किया है। 'वीरों का कैसा हो वसंत', जलियावाला बाग़ में वसंत', 'विजयी मयूर' कविताओं में उनकी इस अभिलाषा को देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान ने प्रकृति का आलंबन किससे जोड़कर किया है?

परिवार

राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत सुभद्रा चौहान की कविताओं से बावस्ता होने के बाद उनकी पारिवारिक कविताएँ विस्मित करती हैं। माँ का अभूतपूर्व निश्छल रूप हमें सुभद्रा जी के यहाँ मिलता है। 'बालिका का परिचय' एक बेमिसाल कविता है। इसी प्रकार 'इसका रोना' भी एक मार्मिक कविता है। 'बालिका का परिचय' कविता में कवयित्री कहती हैं :

"परिचय पूछ रहे हो मुझसे

कैसे परिचय दूँ इसका

वही जान सकता है इसको

माता का दिल है जिसका" (मुकुल, बालिका का परिचय, पृ. 51)

इसी प्रकार 'इसका रोना' कविता में बच्चे के रुदन को लेकर एक तरह सुखद अहसास करती हैं। ऐसा एक माँ और परिवार से नाभिनाल व्यक्ति ही कर सकता है :

"मैं हूँ उसकी प्राकृत संगीनी

उसकी जन्म-प्रदाता हूँ

वह मेरी प्यारी बिटिया है

मैं ही उसकी माता हूँ।" (मुकुल, इसका रोना, पृ. 53)

देश लिए जितना प्रेम सुभद्रा जी के मन में था उतना ही प्रेम वह अपने परिवार से भी करती थीं। बच्चों के लिए उनके मन में उतना ही स्नेह और ममत्व भरा हुआ था। बच्चों की छोटी से छोटी हरकतें उनकी नज़रों में कैद हो जाती थीं। उन्होंने माँ, पत्नी का कर्तव्य बखूबी निभाया। देश और परिवार सुभद्रा जी के लिए एक बराबर थे। भावनातमक रूप से वे दोनों से जुड़ी थीं।

स्वानुभूति

सुभद्रा जी ने स्वनुभूतियों को भी अपनी कवितओं में प्रश्रय दिया है। अपनी निजी अनुभूतियों के माध्यम से जीवन की सामान्य सी लगने वाली घटनाओं को अपनी कविताओं में बड़ी सहजता से गूँथ लेती हैं। 'मेरा नया बचपन', 'मेरा जीवन', 'मेरी प्याली', 'उल्लास', 'करुण कहानी', 'परिचय', 'अनोखा दान', 'उपेक्षा', 'व्याकुल चाह' आदि कविताएँ उनकी स्वनुभुतियों का प्रतिनिधित्व करती कविताएँ हैं। पहले भी ज़िक्र किया जा चुका है शैशव अवस्था के अद्भुत चित्र सुभद्रा जी ने उकेरे हैं। किंतु इस बहाने वे अपनी शैशव को भी याद करती प्रतीत होती हैं। 'मेरा नया बचपन' कविता का यह उद्धरण देखिए :

"वह सुख का साम्राज्य छोड़कर, मैं मतवाली बड़ी हुई
लुटी हुई, कुछ ठगी हुई सी, दौड़ द्वार पर खड़ी हुई।"
"जिसे खोजती थी बरसों से, अब जाकर उसको पाया
भाग गया था मुझे छोड़कर, वह बचपन फिर से आया।"

(मुकुल, मेरा नया बचपन, पृ. 46)

सुभद्रा कुमारी चौहान एक जीवट व्यक्तित्व की धनी थीं। नकारात्मक परिस्थतियों को सकरातमक रूप से किस प्रकार लिया जाना चाहिए, यह कोई भी सुभद्रा जी से सीख सकता है। प्रतिकूल को अनुकूल बनाने का कवयित्री माद्दा रखती थीं। 'मेरा जीवन' कविता उनकी इसी सकारात्मकता से हमारा परिचय कराती है :

"मैंने हंसा सिखा है, मैं नहीं जानती रोना
बरसा करता पल-पल पर, मेरे जीवन में सोना।" (मुकुल, मेरा जीवन, पृ. 28)

इसी प्रकार 'उल्लास' में चारित्रिक दृढ़ता का परिचय हमें देती हैं :

"जीवन में न निराशा मुझको
कभी रुलाने को आयी
जग झूठा है यह विरक्ति भी
नहीं सताने को आयी" (मुकुल, उल्लास, पृ. 133-134)

प्रेम

प्रेम एक बहुमूल्य भाव है। यह एक प्राणशक्ति है। जो किसी भी व्यक्ति को दुर्जेय परिस्थितियों से उबरने का संबल प्रदान करती है। निजी हो या सामाजिक प्रेम, यथास्थिति में

परिवर्तन की ताकत रखता है। सुभद्रा जी की प्रेम कविताएँ हमें प्रभावित करती हैं क्योंकि किसी भी प्रकार की क्लिष्टता का बोध हमें प्राप्त नहीं होता। 'कलह-कारण', 'चलते समय', 'मेरे पथिक', 'भ्रम', 'स्मृतियाँ', 'पुरस्कार का मूल्य', 'चिंता', 'प्रियतम से', 'मानिनी राधे', 'आहत की अभिलाषा', 'प्रेम-शृंखला', 'अपराधी है कौन दंड का भागी बनता कौन', 'मनुहार', 'प्रथम-दर्शन', 'साध', 'तुम', 'पूछो', 'प्यार', 'मेरा गीत, 'मधुमय प्याली' आदि कविताओं में अपने प्रेम भाव को ज़ाहिर किया है।

अपनी कई प्रेम कविताओं में वे स्त्री-अस्तित्व का भी एक अपरोक्ष रूप हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं। 'प्रियतम' कविता की यह बानगी देखिए -

"बहुत दिनों तक हुई परीक्षा, अब रूखा व्यवहार न हो
अजी, बोल तो लिया करो तुम, चाहे मुझपर प्यार न हो।"

(मुकुल, प्रियतम से, पृ. 35)

इसी प्रकार का उद्गारर 'आहत की अभिलाषा' कविता में भी देखने को मिलता है :

"मेरे मन में घर तुमने निज अधिकार बढाया।
किंतु तुम्हारे मन में मैंने तिल भर ठौर न पाया।।

(मुकुल, आहत की अभिलाषा, पृ. 40)

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि विविध विषय-क्षेत्रों पर सुभद्रा जी ने अपनी कविताओं का वितान रचा है। राष्ट्रीय चेतना का स्वर मुख्य है। बकौल मुक्तिबोध : "सुभद्रा जी के काव्य में भावों के बहुत गहरे रंग नहीं हैं, पर भावों में गहराई है। स्वाभाविकता है, सरलता है। उनका काव्य-गुण जिन स्रोतों से उत्पन्न हुआ है, जिसके द्वारा यह स्वाभाविकता और सरलता काव्य-रस के अंगों के रूप में आई है। वे स्रोत केवल शैली के गुण नहीं है, भावों में गहरे रंग भरने अथवा हलके स्ट्रोक्स देने के प्रकार पर भी वे अवलंबित नहीं हैं। वे स्रोत है जीवन के प्रति संवेदनात्मक प्रतिक्रियाएँ जो अपनी ताजगी, नवीनता और जीवन-वस्तु-संपर्क के कारण गहराई से छू लेती है।" (जैन नेमिचंद्र, मुक्तिबोध रचनावली, भाग 5, पृ. 397)

13.3.6 छायावादोत्तर हिंदी कविता में सुभद्राकुमारी चौहान का महत्व

जिस समय सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य जगत में आविर्भाव हुआ वह समय स्वतंत्रता अन्दोलन का दौर था। साहित्य ने अपनी धारा तात्कालिक परिस्थिति के अनुरूप ढाल ली और स्वतंत्रता और राष्ट्रीयता की चेतना का प्रभाव प्ररोक्ष या अपरोक्ष रूप से इस समय के

रचनाकारों में दिखने लगा। वह समय कई प्रकार की सामाजिक रूढ़ियों का भी समय था, जिसमें महिलाओं पर भी कई तरह की पाबंदियाँ थी बावजूद इसके जो महिलाएँ भी उस समय रचना कर्म से जुड़ी थीं सभी ने अपने-अपने स्तर पर देश-प्रेम की भावना को जगाने, अपनी जड़ताओं से बाहर निकालने, अपनी रूढ़ परंपराओं को छोड़ने की प्रेरणा देने का रचनात्मक प्रयास किया। ऐसी महिला रचनाकार साहित्य के नानविध विधाओं से खुद को प्रेषित कर रही थीं, कविता, कहानी, लेख, संस्मरण आदि मुख्य विधाएँ हुईं। कुछ प्रसिद्धी पा सकीं, कुछ विफल हुईं, किंतु साहित्य के इतिहास में इन तमाम महिला रचनकारों के नाम महत्वपूर्ण हैं। सुमित्रा कुमारी सिन्हा, विद्यावती कोकिल, तोरन देवी शुक्ल 'लली', 'तारादेवी पाण्डेय', 'रामेश्वरी देवी 'चकोरी, महादेवी वर्मा एवं सुभद्रा कुमारी चौहान आदि ने अपनी ओजस्वी वाणी से जन मन को आंदोलित किया तथा राष्ट्रीय मुक्ति हेतु आह्वानपारक कविताओं का सृजन किया।

इन सभी महिला कवयित्रियों के बीच एक ऐसी भी कवयित्री रही हैं, जिन्होंने अपने गीतों से राष्ट्रीय आंदोलन के संघर्षयुक्त समय में जनता में गहरी प्रेरणा, उत्साह का स्फूरण किया। सुभद्रा कुमारी जी का स्वर इन सब महिला रचनाकारों में सबसे अलग इसलिए उभर कर आता है कि उनके यहाँ कथनी और करनी का भेद सबसे कम था। व्यक्तिगत जीवन और रचनागत जीवन, दोनों जीवन में क्रांति और परिवर्तन की पहल उनके यहाँ लगातार दिखाई देती है। व्यवहारिक और सैद्धांतिक जीवन का एकाकार करते हुए सुभद्रा जी सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने वाली सक्रीय महिला थीं। राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े होने के कारण उन्होंने अपना अनुभव सामाजिक एवं राजनीतिक यथार्थ को निरूपित करने में किया। उनकी कविता 'झाँसी की रानी' गीत ने लोक गीत का रूप धर लिया और जन जन का प्रिय गीत बन गया। आलम यह रहा कि देश के वीर नायकों के लिए सुभद्रा जी ने जो भी कविताएँ लिखीं, गीत लिखे, वे जागरण के गीत बन गए। अतीत गौरव और शहीदों का गुणगान राष्ट्रीय चेतना से लैस कविताओं की पहचान। यह प्रवृत्ति सुभद्रा जी के यहाँ स्पष्ट रूप से विद्यमान है।

राष्ट्रीय काव्यधारा में दो पक्ष स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते हैं- उग्र एवं नरम। सुभद्रा जी चूँकि गांधी जी से प्रभावित थीं तो उनका रुख नरम नीति के समर्थन में था, किंतु उनकी कविताओं की बात जहाँ तक होती हैं वहाँ हमें दोनों पक्षों का संस्पर्श दिखाई पड़ता है। एक ओर जहाँ उनके यहाँ 'झाँसी की रानी', 'राखी की चुनौती', 'वीरों का कैसा हो वसंत' जैसी ओज और चुनौती देती कविताएँ हैं तो वहीं दूसरी ओर 'मुरझाया फूल', 'आहत की अभिलाषा' आदि

कविताएँ भी हैं।

राष्ट्रीय काव्यधारा को गति देने तथा सुषुप्त जनमानस को झंकृत करने में सुभद्राकुमारी चौहान की कविताएँ महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाती हैं। वे अपनी देशप्रेम से परिपूर्ण कविताओं के माध्यम से जन जन को उद्वेलित करने और शत्रु से सदा लोहा लेनें को प्रेरित करतीं हैं। उनके काव्य का अधिकतर हिस्सा राष्ट्र की तरुणाई को जगाने का कार्य करती है। उनकी कविताओं में आत्मविश्वास की अभूतपूर्व झलक देखते बनती है।

'स्वागत' शीषर्क कविता की यह बानगी देखिए :

हमें नहीं भय संगीनों का, चमक रही जो उनके हाथ।
जरा नहीं डर उन तोपों का, गरज रहीं जो बल के साथ।।

(मुकुल, स्वागत, पृ. 98)

गुलामी से आज़ादी की ओर देखने का माद्दा जो सुभद्रा जी के यहाँ देखने को मिलता है वह विरल है। उनकी जीवन के प्रति सकारात्मकता आकर्षक है। बेचैनी है किंतु निराशा का नामोनिशान नहीं। उनकी काव्य साधना का मूल उत्स देश की पराधीनता की बेड़ियों से मुक्ति और उज्जवल भविष्य की चाह है। साथ ही साथ वे नारी मुक्ति और दलितोत्थान को भी समुचित स्थान अपनी कविताओं में देती हैं जो उदात मानसिकता का परिचय देती हैं। अपने समय की सबसे मुखर कवयित्री के रूप में उन्हें ख्याति प्राप्त है। साफगोई उनकी प्रभावी है। ओज और भाव का अद्‌भुत संयम उनकी रचनाओं में सर्वत्र विद्यमान है।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य का अधिकतर हिस्सा किस चेतना को जागता है?

13.4 पाठ सार

आधुनिक हिंदी काव्य की राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा में सुभद्रा कुमारी चौहान का प्रमुख स्थान है। किसी भी काव्य संग्रह के प्रकाशन से पूर्व ही पाठक उनकी कविताओं की प्रतीक्षा करता था। उत्तरछायावादी काव्य की तमाम प्रवृतियाँ उनकी रचनाओं में विद्यमान हैं। मुख्य स्वर राष्ट्रीयता है। जो नानाविध रूपों में उभर कर आता है। कहीं समर्पण का भाव है, कहीं विद्रोह का तो कहीं बलिदानी का भाव है। कहीं आह्वान हैं कहीं चुनौती और ललकार है। किंतु उनके महत्व का एक महत्पूर्ण कारण उनका अपने परिजनों एवं परिवार जनों के प्रति अगाध

स्नेह और सतत प्रेरणा का स्वभाव। दलितों और नारियों के प्रति अतरिक्त नेह और उनके हित की चिंता। सुभद्रा जी का मूल महत्व उनकी प्रेरणा की भावना में निहित है। वे हमें अतीत पर गौरव करना सिखाती हैं।

13.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. सुभद्रा कुमारी चौहान आधुनिक हिंदी काव्य की सर्वाधिक तेजस्वी और ओजस्वी कवयित्री हैं।
2. वे हिंदी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा में प्रमुख स्थान रखती हैं।
3. राष्ट्र, प्रेम, परिवार और प्रकृति उनके काव्य के मूल आधार हैं।
4. उनके काव्य में स्वानुभूति की तीव्रता दिखाई देती है।
5. जीवन के सकारात्मकता सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों की साझा विशेषता है।
6. सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्य भक्ति, ओज और उदात्त गुण से परिपूर्ण है।

13.6 शब्द संपदा

1. अभूतपूर्व	=	अद्भुत, अनोखा
2. अस्मिता	=	अपनी सत्ता की पहचान
3. आलंबन	=	रस की उत्पत्ती में सहायक एक विभाव
4. आस्था	=	निष्ठा, श्रद्धा
5. कुप्रथा	=	बुरी प्रथा
6. सत्याग्रह	=	सत्य का आग्रह
7. सांप्रदायिकता	=	अपने संप्रदाय या धर्म को श्रेष्ठ मानते हुए दूसरे धर्म को गलत ठहराना

13.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
2. सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य की कथ्यगत विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।
3. 'सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय चेतना की सबसे प्रबल संवाहिका रही हैं।' इस कथन की पुष्टि कीजिए।
4. छायावादोत्तर कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान के महत्व का विस्तृत आकलन कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में चित्रित वात्सल्य भाव पर संक्षिप्त टिपण्णी लिखिए।
2. सुभद्रा कुमारी चौहान सहज अनुभूतियों कीकवयित्रीहैं। इस कथन की पुष्टि कीजिए।
3. सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्य-प्रेरणा पर एक संक्षिप्त टिपण्णी लिखिए।
4. प्रणय भाव सुभद्रा कुमारी चौहानकी कविताओं का अभिन्न अंग है। इस कथन को पुष्ट कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. सुभद्रा जी के काव्योत्कर्ष में किसका अतुलनीय योगदान था? ( )

    (अ) माखनलाल चतुर्वेदी (आ) रामकुमार वर्मा

    (इ) जैनेद्र कुमार (ई) इनमे से कोई नहीं

2. इनमे से सुभद्रा जी का काव्य-संग्रह नहीं हैं? ( )

    अ) मुकुल आ) त्रिधारा इ) सभा का खेल ई) वीणा

3. सुभद्रा जी द्वारा रचित स्वाधीनता की अलख जगाती कविताएँ हैं? ( )

    अ) जलियावाला बाग़ में बसंत (आ) झाँसी की रानी

    इ) वीरों का कैसा हो वसंत (ई) यह सभी

4. जिस समय सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य जगत में आविर्भाव हुआ वह समय किसका दौर था? ( )

(अ) स्वतंत्रता आंदोलन का (आ) प्रयोगवाद का

(इ) प्रगतिवाद का (ई) नई कविता का

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. सुभद्रा कुमारी चौहान.............अनुभितियों की कवयित्री थीं।
2. सुभद्रा कुमारी चौहान...........युग की कवयित्री थीं।
3. सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं का प्रधान भाव.........है।

III. सुमेल कीजिए-

1. प्रियतम	(अ) स्वानुभूतिपरक कविता
2. झाँसी की रानी की समाधि पर	(आ) भक्तिपरक कविता
3. शिशिर समीर	(इ) सांस्कृतिक कविता
4. करुण कहानी	(ई) राष्ट्रीय चेतना परक कविता
5. ठुकरा दो या प्यारा करो	(उ) प्रेमपरक कविता

13.8 पठनीय पुस्तकें

1. सुभद्रा साहित्य और राष्ट्रीय कविता : कमलाकांत पाठक
2. हिंदी साहित्य का इतिहास : नगेंद्र
3. आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीय भावना : सुधा शंकर पांडे
4. आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना : हरी दामोदर

इकाई 14 : जलियाँवाला बाग में बसंत

रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना
14.2 उद्देश्य
14.3 मूल पाठ : जलियाँवाला बाग में बसंत
14.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय
14.3.2 अध्येय कविता
14.3.3 विस्तृत व्याख्या
14.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन
14.4 पाठ सार
14.5 पाठ की उपलब्धियाँ
14.6 शब्द संपदा
14.7 परीक्षार्थ प्रश्न
14.8 पठनीय पुस्तकें

14.1 प्रस्तावना

सुभद्रा कुमारी चौहान आधुनिक युगीन राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना से संपन्न एक ख्याति प्राप्त एवं लोकप्रिय रचनाकार हैं। हम उनके जिस रूप से परिचित हैं वह उनका कवि रूप है। आधुनिक हिंदी काव्य जब अपनी करवटें बदल रहा था तब जिन कवियों ने अपनी रचनाओं द्वारा जन-जीवन के अंतर्मन में देश प्रेम की भावना को उद्‌बुद्ध करते हुए उनमें एक विशेष प्रकार की स्फूर्ति का संचार किया उनमें सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है। अतएव उनका अप्रतिम योगदान, स्मरणीय है। इनके द्वारा सृजित कृतियाँ हिंदी साहित्य जगत में विशिष्ट पहचान रखती हैं। 'साहित्य जनता का प्रतिबिम्ब है'- इस कथन को अक्षरशः सही साबित करने वाली कवयित्री के रूप में सुभद्रा कुमारी चौहान हमारे समक्ष प्रस्तुत होती हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से इन्होंने राष्ट्र गौरव और अस्मिता की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग की प्रेरणा दी तथा स्वदेश प्रेम, राष्ट्रीय स्वाभिमान, स्वधर्म अभिमान, सांस्कृतिक ऐक्य, जन-जागृति आदि का संदेश दिया। स्वतंत्रता पूर्व की अपनी रचनाओं में जहाँ इन्होंने देशवासियों में क्रांति,

शौर्य एवं वीरत्व के भाव भरे वहीं स्वातंत्र्योत्तर रचनाओं में विषाक्त वातावरण, शासन तंत्र की दुर्बलता, पाकिस्तानी वैमनस्य, चीनी आक्रमण आदि का वर्णन कर जागृति का संदेश दिया है। हम जिन सुभद्रा कुमारी चौहान से परिचित हैं, उन्होंने प्रसिद्धि अपनी पूर्व की रचनाओं से पाई। 'झाँसी की रानी' कविता के माध्यम से वे जन-जन के हृदय में विद्यमान हैं। यह अतिशयोक्ति बिलकुल नहीं होगी यदि हम कहें कि मैथिलीशरण गुप्त एवं रामधारी सिंह दिनकर जिस तरह हमारे राष्ट्रीय कवि हैं, उसी प्रकार सुभद्रा जी हमारी राष्ट्रीय कवयित्री हैं। इस इकाई के माध्यम से हम उनके जीवन और उनकी रचनाओं के महत्व का आकलन करने का प्रयास करेंगे।

14.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्य चेतना से परिचित हो सकेंगे।
- अध्येय कविता में राष्ट्रीय भावना से परिचित हो सकेंगे।
- अध्येय कविता की भाव सौंदर्य को समझ सकेंगे।
- अध्येय कविता की भाषा-शैली से परिचित हो सकेंगे।

14.3 मूल पाठ : जलियाँवाला बाग में बसंत

14.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

जलियाँवाला बाग हत्याकांड भारत के इतिहास से जुड़ी हुई एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। यह घटना इतनी भयावह थी कि दुनिया भर में इसकी भर्त्सना हुई। यह देश की स्वतंत्रता के लिए चल रहे राष्ट्रीय आंदोलनों के उभार को कुचलने के लिए अंग्रेजों द्वारा सुनियोजित ढंग से अंजाम दी गई घटना थी ताकि पुनः 1857 जैसे अखिल भारतीय आन्दोलन की कोई सोच भी न सके। इस हेतु ब्रिटिश सरकार ने 18 मार्च, 1919 में रॉलेट एक्ट जैसा काला एवं अमानवीय कानून लागू कर दिया। इस कानून के पारित हो जाने के उपरांत ब्रिटिश सरकार किसी भी भारतीय पर अदालत के बिना मुकदमा चला सकती थी, उसे जेल में बंद कर सकती थी। उसे मुकदमा दायर करने वाले के नाम का खुलासा करना भी अब ज़रूरी नहीं था। अंग्रेजों ने मन बना लिया था कि किसी भी प्रकार के क्रांतिकारी गतिविधियों को पूर्ण रूप से निषेधित किया जा सके, व्यक्तिगत स्वतंत्रता को समाप्त कर दिया जाए। इस कानून की सहायता से ब्रिटिश सरकार किसी भी प्रकार के राजनितिक प्रतिरोध एवं आन्दोलन को कुचलने में सफल हो सकती

थी। पूरे देश में विरोध प्रारंभ हो गया। कई बड़े नेताओं ने त्यागपत्र दिया। देशव्यापी हड़तालें, जुलूस, उपवास, प्रार्थना-सभाएँ और प्रदर्शन होने लगे। जगह-जगह सत्याग्रह-मंडल स्थापित हुए। पंजाब में भी प्रतिरोध देखने को मिले। पंजाब में 10 अप्रैल, 1919 को प्रसिद्ध नेता सत्यपाल एवं किचलू की गिरफ्तारी हुई। 12 अप्रैल को ब्रिटिश सरकार ने अमृतसर के दो बड़े नेताओं चौधरी बुगामल और महाशा रतन चंद को भी गिरफ्तार कर लिया गया। इससे माहौल बिगड़ गया। सैन्य अधिकारियों के दमन से आम जनता में रोष और असंतोष भर गया। क्रोधित जनता ने यूरोपीय नैशनल बैंक के मैनेजर को मार दिया एवं भवन को आग के हवाले कर दिया। टाउन हॉल और डाक घर पर भी हमले हुए। अँग्रेज़ सहम गए उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा कि यदि इस विरोध प्रदर्शन को थामा नहीं गया तो खतरा उत्पन्न हो सकता है।

जलियाँवाला बाग पंजाब के अमृतसर में एक स्थान है। यहाँ 13 अप्रैल, 1919 को बैसाखी के पर्व में भाग लेने के लिए लोग बाग में एक जुट हुए थे। साथ ही साथ वे ब्रिटिश सरकार द्वारा रॉलेट एक्ट पारित किए जाने का अहिंसात्मक प्रतिरोध भी कर रहे थे। तकरीबन 20,000 लोग बाग में एकत्रित हुए थे जिनमें बच्चे, बूढ़े, महिलाएँ एवं युवा शामिल थे। वहीं अँग्रेज़ जनरल डायर ने अपने वरिष्ठ मायकल ओडवायर के आदेश पर निहत्थे-निर्दोष लोगों पर गोलियाँ चलाने का आदेश दे दिया। सिपाहियों ने 10 मिनट तक गोलियाँ चलाईं। गोलीबारी के मध्य लोग जान बचाने के लिए भागे। मैदान से बाहर जाने के लिए मात्र एक रास्ता था जिसे सैनिकों ने बंद कर रखा था। बाग चारों ओर से 10 फुट की दीवार से बंद था। ऐसे में अनेक लोग अपनी जान बचाने के लिए वहाँ स्थित कुएँ में कूद पड़े। कुछ ही मिनटों में जलियाँवाला की मिट्टी निर्दोष लोगों के खून से लाल हो गई। अंगेजों ने 370 लोगों के मरने की पुष्टि की गई। जबकि उस वक़्त के गैर सरकारी आंकड़ों के अनुसार लगभग एक हजार लोगों की मृत्यु हुई और 1500 के करीब लोग घायल हुए। इस जघन्य हत्याकांड के उपरांत अंग्रेजों द्वारा की गई लिपा-पोती ने स्वतंत्रता-प्राप्ति के हौसलों को और बुलंद कर दिया। भारतीय स्वतंत्रता-प्राप्ति के इतिहास में निश्चय ही यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना एक काले-अध्याय के रूप में अंकित है।

इस निंदनीय घटना से व्यथित होकर ही सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'जलियाँवाला बाग में वसंत' जैसे मार्मिक कविता की रचना की। ऋतुराज वसंत का आगमन तो निश्चित है। ऋतु-चक्र प्राकृतिक अवस्था है, किंतु कवयित्री इस कविता के माध्यम से निवेदन करती हैं कि इस बार जब वसंत आए तो अपने क्रिया-कलापों को लेकर संयम बरते। साथ ही साथ फिजा में जो गमगीनी

छाई हुई थी, उसका भी हवाला हमें कविता के माध्यम से प्राप्त होता है।

14.3.2 अध्येय कविता

[1]

यहाँ कोकिला नहीं, काग हैं, शोर मचाते,
काले काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते।
कलियाँ भी अधखिली, मिलीं हैं कंटक कुल से,
वे पौधे, वे पुष्प शुष्क हैं अथवा झुलसे।

[2]

परिमल-हीन पराग दाग़ सा बना पड़ा है,
हाँ! यह प्यारा बाग! खून से सना पड़ा है।
ओ, प्रिय ऋतुराज ! किंतु धीरे आना
यह शोकस्थान, यहाँ मत शोर मचाना।

[3]

वायु चले, पर मंद चाल से उसे चलाना,
दुःख की आहें संग उड़ा कर मत ले जाना।
कोकिल गावें, किंतु राग रोने का गावें,
भ्रमर करें गुंजार कष्ट की कथा सुनावें।

[4]

लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ कुछ गीले।
किंतु न तुम उपहार भाव आ कर दिखलाना
स्मृति में पूजा हेतु यहाँ थोड़े बिखराना।

[5]

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा कर
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी ला कर।
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं,
अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं।

[6]

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना
कर के उसकी याद अश्रु के ओस बहाना।
तड़प तड़प कर विरुद्ध मरे हैं गोली खा कर,
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जा कर।
यह सब करना, किंतु यहाँ मत शोर मचाना,
यह है शोकस्थान बहुत धीरे से आना।।

निर्देश : 1. इन पदों का सस्वर वाचन कीजिए।   2. इन पदों का मौन वाचन कीजिए।

14.3.3 विस्तृत व्याख्या

यहाँ कोकिला नहीं, काग हैं, शोर मचाते,
काले काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते।
कलियाँ भी अधखिली, मिलीं हैं कंटक कुल से,
वे पौधे, वे पुष्प शुष्क हैं अथवा झुलसे।

शब्दार्थ : कीट : कीड़ा, जमीन पर रेंगने वाले छोटे-छोटे जीव। शुष्क = सूखा, रूखा।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'जलियाँ वाला बाग में बसंत' से ली गई हैं।

प्रसंग : कविता के माध्यम से कवयित्री जलियाँवाला बाग में अंग्रेजों द्वारा निहत्थे लोगों पर गोली चलाए जाने की मार्मिक कथा प्रस्तुत करती हैं। जलियाँवाला बाग पंजाब के अमृतसर में एक स्थान है। यहाँ 13 अप्रैल, 1919 को बैसाखी के पर्व पर अंग्रेज़ सरकार के विरोध में लोग एकत्रित हुए थे। वहीं अंग्रेज़ जनरल डायर ने अपने वरिष्ठ मायकल ओडवायर के आदेश पर निहत्थे-निर्दोष लोगों पर गोलियां चलाने का आदेश दिया। इस हत्याकांड में हज़ारों भारतीय शहीद हुए थे। कवयित्री प्रकृति एवं परिस्थिति की विभिन्न दशाओं के बहाने वह हमें जलियाँवाला बाग में हुए खौफनाक मंज़र से परिचित करवाती हैं।

व्याख्या : कवयित्री शोक संतप्त हो कर कहती हैं कि जलियाँवाला बाग अब एक शोक-स्थल में परिवर्तित हो गया है। अब यहाँ विरानी छा गई है। सन्नाटा पसरा हुआ है। यहाँ कोयल नहीं, केवल कौए हैं। इसलिए किसी कोयल की मधुर आवाज़ सुनाई नहीं देती जो ध्वनि सुनाई देती

भी है वह कौओं का शोर है। काले-काले कीड़ों को देखकर भँवरों का भ्रम होता है। भँवरे उल्लास का प्रतीक हैं, किंतु यहाँ तो अमंगल के प्रतीक केवल कीड़े दिखाई दे रहे हैं। माहौल इतना गमगीन है की कलियाँ भी काँटों के बीच अधखिली सी मिली हैं। कलियों ने भी उदासी में अपना खिलना स्थगित कर दिया है। चहुँओर फैले मृत्यु की विभीषिका के बीच, यहाँ के पौधे भी सूख गए हैं तथा झुलस गए हैं। कुल मिलाकर प्रकृति में भी उदासी छाई हुई है।

विशेष

1. जलियाँवाला बाग नरसंहार का कारुणिक एवं हृदय को द्रवित कर देने वाले दृश्य का चित्रण है।
2. 'काले काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते' में 'क' एवं 'भ्र' की पुनरावृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।
3. गेय एवं मुक्तक पद है।

बोध प्रश्न

- जलियाँवाला बाग में कोयल की जगह कौओं का शोर क्यों हैं? संक्षेप में लिखिए।
- जलियाँवाला बाग में ऐसा क्या हुआ था जिसके विषाद में कलियाँ अधखिली है और पुष्प झुलस गए हैं?

परिमल-हीन पराग दाग़ सा बना पडा है,
हाँ! यह प्यारा बाग! खून से सना पडा है।
ओ, प्रिय ऋतुराज ! किंतु धीरे आना
यह शोकस्थान, यहाँ मत शोर मचाना।

शब्दार्थ : परिमल = सुगंध। ऋतुराज = ऋतुओं का राजा-वसंत। शोक = दुःख।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'जलियाँ वाला बाग में बसंत' से ली गई हैं।

प्रसंग : पूर्ववत।

व्याख्या : कवियत्री कहती हैं की यह बाग जहाँ जघन्य कृत्य हुआ है, अब दुर्गंधयुक्त है, यहाँ अब किसी प्रकार की सुवास की आशा नहीं की जा सकती है। जो फूल हैं वे सुगंधहीन हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि बाग को दाग़ सा लग गया है। यानी अशुभ हुआ है। वे कहती हैं कि यह बाग जो कभी प्रिय हुआ करता था वहाँ कत्ले-आम होने की वजह से पूरा बाग खून से सना हुआ है।

कवियत्री विनम्र निवेदन करती हैं कि हे ऋतुओं के राजा बसंत, यहाँ आना तो दबे पाँव आना, धीरे आना ताकि किसी को भी तुम्हारे आगमन का भान न हो, यह बाग जो कभी हर्ष और उल्लास का कारण था अब एक शोक व्यक्त करने के स्थान में परिवर्तित हो चुका है। इसलिए यदि तुम्हारा आगमन इस बाग में हो तो शांति से आना किसी भी प्रकार का शोर न मचाना।

विशेष

1. जलियाँवाला बाग नरसंहार का कारुणिक एवं हृदय को द्रवित कर देने वाले दृश्य का चित्रण है।
2. 'दाग़ सा' में उपमा अलंकार है।
3. गेय एवं मुक्तक पद है।

बोध प्रश्न

- फूलों में खुशबू क्यों नहीं है? जलियाँवाला बाग में ऐसा क्या घटा था। संक्षेप में लिखिए।
- किसी शोकस्थान की क्या मर्यादाएँ होती हैं?

वायु चले, पर मंद चाल से उसे चलाना,
दुःख की आहें संग उड़ा कर मत ले जाना।
कोकिल गावें, किंतु राग रोने का गावें,
भ्रमर करें गुंजार कष्ट की कथा सुनावें।

शब्दार्थ : वायु = पवन। मंद = धीमा, मद्धम। कोकिल = कोयल। राग = धुन। गुंजार = ध्वनि।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'जलियाँवाला बाग में बसंत' से ली गई हैं।

प्रसंग : पूर्ववत।

व्याख्या : कवयित्री वसंत के ऋतु से अनुरोध करते हुए कहती हैं कि हे ऋतुराज तुम्हारे आगमन पर यदि वायु चले तो वह भी मंद चाल से चले क्योंकि यह स्थल अब शोक-स्थल में परिवर्तित हो चुका है। इसलिए तुमसे आग्रह है कि तुम वायु को मंद गति से चलाना। कहीं ऐसा न हो कि जो लोग अपने इष्ट के असमय जाने पर शोक-संतप्त हैं उनकी आहें वायु उड़ाकर न ले जाए। कोयल यदि भूले से गीत गायें तो उनके गीतों में रुदन का राग हो ताकि किसी को ऐसा न लगे कि उसकी मधुरता में उल्लास का भाव है और उससे किसी को कष्ट पहुँचे। भौरें यदि गुंजार करें भी तो उनमें भी कष्ट की अनुभूति हो। ऐसा प्रतीत न हो की कि दुःख के अलावा को अन्य भाव

फिज़ा में व्याप्त है।

विशेष

- जलियाँवाला बाग नरसंहार का कारुणिक एवं हृदय को द्रवित कर देने वाले दृश्य का चित्रण है।
- गेय एवं मुक्तक पद है।

बोध प्रश्न

- कवयित्री वायु से मंद-मंद बहने का आग्रह क्यों कर रही हैं?
- कवयित्री कोयल और भौंरे से किस प्रकार का निवेदन कर रही हैं?

लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ कुछ गीले।
किंतु न तुम उपहार भाव आ कर दिखलाना
स्मृति में पूजा हेतु यहाँ थोड़े बिखराना।

शब्दार्थ : पुष्प = फूल। सुगंध = खुशबू। उपहार भाव = भेंट देने का भाव। स्मृति = याद।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'जलियाँवाला बाग में बसंत' से ली गई हैं।

प्रसंग : पूर्ववत।

व्याख्या : कवयित्री वसंत से विनम्र निवेदन कर रही है कि यह स्थल एक शोक स्थल में परिवर्तित हो चुका है, इसलिए फूल यदि लाए जाएँ तो वे अधिक चटकीले न हों, अर्थात बहुत रंग बिरंगे न होकर साधारण हों तथा उनमें यदि सुगंध हो भी तो वह बहुत फीकी हो। वे ओस से भीगे हुए हों। यानी उनमें आद्रता हो, करुणा और संवेदना हो। इसी तरह जब तुम आओ तो ऐसा बिलकुल न प्रतीत हो कि तुम उपहार देने के भाव से आए हो। इतने लोगों का अपनी जान से हाथ धो बैठना किसी भी तरह से उपहार देने की घटना नहीं है। इसलिए जब तुम आना तो केवल श्रद्धा का भाव व्यक्त करते हुए थोड़े से पुष्प अर्पित कर देना ताकि स्मृति में हम शहीदों का वंदन कर सकें।

विशेष

1. जलियाँवाला बाग नरसंहार का कारुणिक एवं हृदय को द्रवित कर देने वाले दृश्य का चित्रण है।

2. ‘ओस से’ में उपमा अलंकार है।

3. गेय एवं मुक्तक पद है।

बोध प्रश्न

- ऋतुराज बसंत से किस तरह के पुष्प लाने का आग्रह कवयित्री कर रही हैं?
- कवयित्री उपहार भाव का निषेध करने के लिए क्यों कह रही हैं? संक्षेप में लिखिए।

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा कर
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी ला कर।
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं,
अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं।

शब्दार्थ : कोमल = सुकुमार। भिन्न = अलग।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता ‘जलियाँ वाला बाग में बसंत’ से ली गई हैं।

प्रसंग : पूर्ववत।

व्याख्या : कवयित्री उक्त पंक्तियों के माध्यम से यह बताने की कोशिश करती हैं कि जनरल डायर की क्रूरता इतनी अधिक थी कि जवान-बच्चे-बूढ़ों का भेद तक नहीं किया गया और सभी को मौत के घाट के उतार दिया गया। इस कारण कई छोटे-छोटे बच्चे तक गोली के शिकार हो गए। कवयित्री ऋतुराज से निवेदन करती है कि इन कोमल बालकों को जो अपने जीवन के प्रथम चरण को भी पूर्ण नहीं कर पाए उनके लिए उन्हीं की भांति कलियाँ लेकर आना और उनकी स्मृति में अर्पित कर देना। इसी तरह वे सभी लोग जो किसी आशा से वशीभूत होकर बाग में अपना प्रतिरोध दर्ज करने आए थे उनकी भी उम्मीदों पर वज्र प्रहार हुआ है और उनके हृदयों को पीड़ा पहुँची है। वे अपने परिवार एवं देश से विछिन्न हो गए हैं। वे जो इस देश का भविष्य भी हो सकते थे।

विशेष

1. जलियाँवाला बाग नरसंहार का कारुणिक एवं हृदय को द्रवित कर देने वाले दृश्य का चित्रण है।
2. मुहावरेदार भाषा का प्रयोग है। हृदय छिन्न होना = दिल को चोट पहुँचना
3. गेय एवं मुक्तक पद है।

बोध प्रश्न

- जलियाँवाला बाग में जो नरसंहार हुआ था क्या उसमें सिर्फ बड़े-बुज़ुर्ग ही मारे गए थे या अन्य भी? संक्षेप में लिखिए।
- कोमल बच्चों के मारे जाने पर क्या-क्या नुकसान हुआ है?

कुछ कलियाँ अध:खिली यहाँ इसलिए चढ़ाना
कर के उसकी याद अश्रु के ओस बहाना।
तड़प तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खा कर,
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जा कर।
यह सब करना, किंतु यहाँ मत शोर मचाना,
यह है शोकस्थान बहुत धीरे से आना।।

शब्दार्थ : अश्रु = आँसू। ओस = शबनम, तुहिन। वृद्ध = बूढ़े। शुष्क = सूखे।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'जलियाँ वाला बाग में बसंत' से ली गई हैं।

प्रसंग : पूर्ववत।

व्याख्या : कवयित्री उक्त पंक्तियों के माध्यम से यह ऋतुराज बसंत से कहती हैं कि जब तुम यहाँ आओ तो अधखिली कलियाँ इसलिए चढ़ाना ताकि तुम्हारी स्मृति में यह शहादत दर्ज हो जाए और तुम निर्दोष मासूमों को याद कर थोड़े आँसू बहा लेना। इसी तरह जहाँ-जहाँ तड़पते हुए बुजुर्ग मरे हैं, उनके सम्मान में तुम शुष्क पुष्प गिरा देना। यह सब करते हुए यह भी एहतियात बरतना की कोई शोर न हो क्योंकि यह अब एक शोक स्थल है अतएव यहाँ जब भी आना बहुत धीरे से, मंथर गति से आना।

विशेष

1. जलियाँ वाला बाग नरसंहार का कारुणिक एवं हृदय को द्रवित कर देने वाले दृश्य का चित्रण है।
2. 'तड़प-तड़प' में अनुप्रास अलंकार है।
3. गेय एवं मुक्तक पद है।

बोध प्रश्न

- वृद्ध जलियाँवाला बाग में किस तरह मरे हैं? अपने शब्दों में उत्तर लिखिए।

- कवयित्री किसी भी प्रकार का शोर क्यों नहीं चाहती हैं?

14.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

स्वाधीनता आन्दोलन भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जिस राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा की आधारशीला तात्कालिक परिस्थितियों के अनुसार रखी गई थी। उसी परम्परा में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में छायावादोत्तर कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान अंकित होती हैं। अपना सक्रिय योगदान देने वाले कवियों में बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', राधा चरण गोस्वामी, प्रताप चरण मिश्र, मैथिली शरण गुप्त, बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन, माखन लाल चतुर्वेदी, सोहन लाल द्विवेदी, श्याम नारायण पाण्डेय, रामधारी सिंह 'दिनकर', जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, नाथूराम शर्मा आदि प्रमुख रचनाकारों में शामिल किए जाते हैं।

हिंदी साहित्य में सुभद्राकुमारी चौहान जी की महत्ता को स्थापित करता हुआ मुक्तिबोध का यह कथन द्रष्टव्य है - "सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्य में जो स्वाभाविक प्रवाहमयी सरलता है और जो अहेतुक गंभीर मुद्रा का खटकता सा लगने वाला अभाव है, उसका कारण है जीवन के उस मौलिक उद्वेग का राग, जिसने समाज में भिन्न-भिन्न रूप धारण किए। राष्ट्रीय आंदोलन उसका एक रूप था, उसकी एक अभिव्यक्ति थी। स्त्रियों की स्वाधीनता का प्रश्न उसका दूसरा रूप था और पतित जातियों का उत्थान तीसरा....कुछ विशेष अर्थों में सुभद्रा जी का राष्ट्रीय-काव्य हिंदी में बेजोड़ है। क्योंकि उन्होंने उस राष्ट्रीय आदर्श को जीवन में समाया हुआ देखा है, उसकी प्रवृत्ति अपने अंतःकरण में पाई है, अतः वह अपने समस्त जीवन-संबंधों को उसी प्रवृत्ति की प्रधानता पर आश्रित कर देती हैं, उन जीवन संबंधों को उस प्रवृत्ति के प्रकाश में चमका देती हैं.... सुभद्रा कुमारी चौहान नारी के रूप में ही रहकर साधारण नारियों की आकांक्षाओं और भावों को व्यक्त करती हैं। बहन, माता, पत्नी के साथ-साथ एक सच्ची देश सेविका के भाव उन्होंने व्यक्त किए हैं। उनकी शैली में वही सरलता है, वही अकृत्रिमता और स्पष्टता है जो उनके जीवन में है।"

राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा में सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपना विशिष्ट योगदान दिया था। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं का अध्ययन-विश्लेषण करने से हमें तात्कालिक परिस्थितियों का ज्ञान होता है। यह तात्कालिक परिस्थितियों की उपज ही थी कि उनकी कविताओं में समसामयिक विषयों को प्राथमिकता मिली। देश स्वाधीनता प्राप्ति के मुहाने पर

खड़ा था, देश का खासो-आम खुद को इस स्वतंत्रता के आन्दोलन में झोंकने का प्रयास कर रहे थे। इसी कारण उनकी कविताओं का प्रमुख स्वर वीर रस है जो कि राष्ट्र-प्रेम की उपज है। इनके अलावा प्रेम के नानारूपों का दर्शन उनकी कविताओं में होता है। वात्सल्य प्रेम, लोक प्रेम एवं आध्यात्मिक प्रेम कुछ मुख्य विशेषताएँ हैं। वात्सल्य के अंतर्गत भक्ति भावना भी हमें उनकी कविताओं में देखने को मिलता है। आइए हम उनकी कविताओं में व्याप्त विशेषताओं को चिह्नित करने की चेष्टा करें।

काव्यगत विशेषताएँ

राष्ट्रप्रेम

राष्ट्रीय भावना में राष्ट्र-वंदना, मातृभूमि तथा जन्मभूमि के प्रेम का महत्वपूर्ण स्थान है। कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का अपनी भूमि के प्रति सदा समर्पण का भाव रहा है। देश के प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त कर के वह सच्चे सपूत होने को स्थापित करती हैं :

“किंतु क्या हुआ माता, मैं भी
तो हूँ तेरी ही संतान
इसमें ही संतोष मुझे के
इसमें ही आनंद महान
मुझ-सी एक एक की बन तू
हुई महान, सभी भाषाओं
की तू ही सरताज हुई।” (मातृमंदिर, मुकुल, पृ. 99)

कवयित्री मातृभूमि पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने से एक पल भी नहीं हिचकती। बलिदान होने के लिए भी वे सदैव तैयार रहती हैं :

“न होने दूंगी अत्याचार
चलो, मैं हो जाऊं बलिदान” (व्यथित हृदय, मुकुल, पृ. 103)

इसी प्रकार :

“आते हो भाई ! पुनः पूछती हूँ-
कि माता के बंधन की लाज तुमको?” (राखी की चुनौती, मुकुल, पृ. 77)

राष्ट्रीय चेतना स्वभाववश सार्वभौमिक, काल-निरपेक्ष एवं सार्वदेशीय होती है। मातृभूमि की रक्षा और उसकी स्वतंत्रता में तन-मन-धन न्योछावर कर देना हम नागरिक का प्रथम कर्तव्य

होता है। एक देश की स्वतंत्रता किसी अन्य देश के लिए प्रेरणास्रोत का काम करती है :

“असहयोग, पर मिट जाना
यह जीवन तेरा होगा
हम होंगे स्वाधीन, विश्व का
वैभव धन तेरा होगा।“ (मातृमंदिर में, कोकिला, पृ. 100)

हजारों स्वतंत्रता सेनानी, लाठी-चार्ज, कोड़ों की मार और जेल की कड़ी यातनाएँ भुगतते थे। सुभद्रा कुमारी जी स्वयं जेल गई थीं। पर इससे स्वतंत्रता प्राप्ति की इच्छा और प्रबल हुई। ‘सेनानी का स्वागत’ नामक कविता में कवयित्री के जज़्बात इस कदर पेश हुए हैं :

“गोली लाठी-चार्ज जेल की ये भीषण दीवारें
काल-कोठरी, दण्ड यातना, वे कोड़ों की मारें
प्रभुता मद से भरी शत्रु की व्यंग्य भरी बौछारें
साक्षी है साहस की, फिर जीतें या हारें” (वे कुंजे, कोकिला)

उनकी सर्वप्रसिद्ध कविता ‘झाँसी की रानी’ की भी कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं, लक्ष्मीबाई के बहाने वे एक ऐसी वीरांगना का स्मरण करती हैं जो राष्ट्र-प्रेम की एक मिसाल बन कर हमारे समक्ष प्रस्तुत होती हैं :

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा आया, नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार (झांसी की रानी, मुकुल, पृ. 59)

देशप्रेम और राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत वीरों का कैसा हो बसंत, राखी की चुनौती, विजयादशमी, स्वदेश के प्रति, झंडे की इज्जत में आदि कविताएँ भारतीय नवयुवकों का देश के प्रति प्रेम एवं कर्तव्य के प्रति जागरूक करती है। विरल ही होंगे जो ‘झाँसी की रानी’ कविता से परिचित नहीं होंगे

डॉ. रामकुमार वर्मा जी ने ‘मुकुल’ कविता संग्रह की भूमिका में स्पष्ट लिखा है कि- “सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में विविधता होते हुए भी उनकी कविताएँ राष्ट्रीय हैं। क्योंकि उनका जीवन ही राष्ट्रीय मानरूप है। सच्चे अनुभवों ने उनकी इन कविताओं को अधिक स्पष्ट और हृदयग्राही बना दिया है। इन्होंने अपनी राष्ट्रीय कविताओं में वीर भाव के काव्य-भावुकता इस

प्रकार भर दी है कि उन कविताओं का मूल्य वस्तुतः देश के मूल्य के बराबर हो जाता है।”

वात्सल्य-प्रेम

स्त्री व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा है ममत्व। जननी होने के कारण वात्सल्य भाव प्राकृतिक रूप से स्त्री को प्राप्त है। सुभद्रा कुमारी चौहान भी इसका अपवाद नहीं हैं। डॉ. किशोरीलाल जी के अनुसार - “सुभद्रा जी का केंद्रस्थ भाव ‘प्रेम’ है। उन्होंने वात्सल्य रस की बेजोड़ कविताएँ लिखी हैं। ‘मेरा नया बचपन’ उनकी प्रसिद्द कविता है। उन्होंने बालिका के बहाने आनेवाले युग में लड़कियों के सामाजिक महत्त्व को रेखांकित किया है, जहाँ वे पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर परिवार, समाज और राष्ट्र कि समृद्धि में योगदान देंगी।” (अंतिम यात्रा, डॉ. किशोरी लाल, राष्ट्रभक्त कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. 92)

अपने बचपन की स्मृतियों कि खोई एवं उन्हें स्मरण कर पुलकित हो सुभद्रा जी जब अपनी बेटी को देखती है तो उसका मधुर चित्रण हमें ‘मेरा नया बचपन’ कविता में हमें देखने को मिलता है। कवियित्री बेटी के बहाने पुनः बचपन का अनुभव कर रही है :

> “मैं बचपन को बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी
> नंदन वन-सी फूल उठी यह छोटी-सी कुटिया मेरी
> माँ ओ कहकर बुला रही थी मिट्टी खाकर आई थी
> कुछ मूंह में कुछ लिए हाथ में मुझे खिलाने आई थी” (मेरा नया बचपन)

बच्चों के प्रति प्रेम उनका अगाध प्रेम ही था जो ‘कदम्ब का पेड़’ कविता बनकर हमारे समक्ष निसृत हुआ :

> “वहीं बैठ फिर बड़े मजे से मैं भी बांसुरी बजाता
> अम्मा-अम्मा कह वंशी के स्वर में तुम्हें बुलाता
> बहुत बुलाने पर भी, माँ जब नहीं उतर कर आता
> माँ, तब माँ का हृदय तुम्हारा बहुत विकल हो जाता” (कदम्ब का पेड़)

इसी तरह ‘खिलौनेवाला’ कविता में बच्चों का भोलापन देखने को मिलता है-

> “हरा-हरा तोता पिंजड़े में
> गेंद एक पैसे वाली
> छोटी सी मोटर गाड़ी है
> सर-सर चलने वाली”

किसी बच्चे का रुदन कर्ण-प्रिय हो सकता है, इसे कवयित्री कविता ‘इसका रोना’ कविता में बड़े ममतामयी ढंग से दर्शाती हैं :

“तुम कहते हो- मुझको इसका रोना नहीं सुहाता है।
मैं कहती हूँ- इस रोने से अनुपम सुख छा जाता है॥
सच कहती हूँ, इस रोने की छवि को जरा निहारोगे।
बड़ी बड़ी आँसू की बूंदों की मुक्तावली वारोगे॥” (इसका रोना, मुकुल, पृ. 44)

कहा जा सकता है कि मातृ-मन कोमल भावों का संपुंज होता है। निश्छल प्रेम का एक रूप वात्सल्य प्रेम है। प्रेम के इस रूप को हम सुभद्रा कुमारी जी कविताओं में देख सकते हैं।

लोक-प्रेम

कवयित्री के अंदर मानव-प्रेम कूट-कूट कर भरी हुई। एक मंझे हुए रचनाकार की पहचान लोक से जुड़ाव से पता चलता है। ‘झाँसी की रानी’ कविता में ऐसे कई उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं जिससे उनके अन्य प्रान्तों के लोगों से जुड़ाव उनके लोक-जुड़ाव को पुख्ता करता है। ‘बुंदेले हर बोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी’ की टेक उनके लोक से जुड़ाव को स्थापित करता है। सरल भाषा में ओज के साथ छंद का उतार-चढ़ाव अपने आप में एक अद्भुत प्रयोग था। पूर्व में देहातों में इसी तर्ज पर ‘आल्हा-उदल’ की वीरगाथा गई जाती थी।

प्रकृति-प्रेम

प्रकृति के प्रति आसक्ति तात्कालिक साहित्यिक आंदोलन का प्रभाव था। सुभद्राकुमारी चौहान भी इससे अछूती नहीं रहीं। प्रकृति प्रेम के अनेकानेक रूप उनकी कविताओं में देखने को मिलते हैं-

“क्या गाती हो किसे बुलाती
बतला दो कोयल रानी
प्यासी धरती देख मांगती
हो क्या मेघों से पानी? (कोयल)

इसी प्रकार कवियित्री के मनोभावों का प्रकृति के साथ सामजस्य ‘वेदना’ कविता में बिठाने का यत्न किया गया है :

“दिन में प्रचंड रवि-किरणें
मुझको शीतल कर जातीं।

पर मधुर ज्योत्स्ना तेरी,

हे शशि ! है मुझे जलाती॥" (वेदना)

कवियित्री नीम का मानवीकरण कर एक सहज चित्र हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं-

"हे नीम ! यद्यपि तू कड़ू, नहीं रंच-मात्र मिठास है।

उपकार करना दूसरों का, गुण तिहारे पास है।।

नहिं रंच-मात्र सुवास है, नहिं फूलती सुन्दर कली।

कडुवे फलों अरु फूल में तू सर्वदा फूली-फली।।

तू सर्वगुणसम्पन्न, तू जीव-हितकारी बड़ी।

तू दुःख हारी है प्रिये ! तू लाभकारी है बड़ी॥"(नीम)

इनके आलावा उनकी कविताओं में प्रेम के अन्य रूप भी हमें प्राप्त होते हैं, दाम्पत्य प्रेम, भ्रातृ-प्रेम, अराध्य अथवा प्रियतम प्रेम में एक ओर प्रणय निवेदन है, शिकायते हैं तो वहीं दूसरी ओर देश प्रेम के नाम पर नागरिक कर्तव्य बोध के स्वर भी उनकी कविताओं में विद्यमान हैं।

भाषा-शैली

भाषा शैली की जहाँ तक बात है, सुभद्रा जी की भाषा सहज, सरल और ग्राह्य है। उनकी कविताओं की विशिष्ट पहचान उनकी गेयता है। गीतात्मकता के गुण लिए उनकी कविताएँ इसलिए स्मरण योग्य भी हैं। संगीतात्मकता भी उनकी कविताओं का एक महत्पूर्ण पहलू है। ताल और तुक में अभूतपूर्व सामंजस्य उनकी कविताओं का प्राण है। शब्द चयन ऐसी कविताओं में महत्पूर्ण भूमिका निभाते हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्यकला की विशेषता यह है कि उनकी भाषा भले ही बहुत सरल है पर उसमें लक्षणा शब्द शक्ति और प्रतीकों के बहुत गहन अर्थ विद्यमान होते हैं। आइए, पहले 'लक्षणा' एवं 'प्रतीक' शब्दों के अर्थ समझ लें। शब्दों के अर्थ प्रकट करने वाली शक्ति को ही 'शब्दशक्ति' कहते हैं। शब्दों के अर्थ तीन प्रकार के होते हैं- मुख्य अर्थ, लक्ष्य अर्थ और व्यंग्य अर्थ। इसलिए शब्दशक्तियाँ भी तीन मानी गई हैं- अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। अभिधा शक्ति से शब्द का मुख्य अर्थ, प्रचलित अर्थ या शब्दकोष में दिया गया अर्थ निकलता है। पर कभी-कभी वह अर्थ पर्याप्त नहीं होता। तब मुख्य अर्थ से जुड़ा नया अर्थ ग्रहण करना पड़ता है। इसे लक्ष्यार्थ कहते हैं। लक्ष्यार्थ देने वाली शब्द की शक्ति 'लक्षणा' कहलाती है। तीसरे प्रकार की शब्द शक्ति होती है व्यंजना। बहुत सरल शब्दों में व्यंजना मुख्य यानी अभिधार्थ और लक्ष्यार्थ से अलग अर्थ की प्रीति कराना होता है। इसे व्यंग्यार्थ या ध्वन्यार्थ कहते हैं। इस

कविता में सुभद्रा जी का प्रकृति से प्रतीकों का आलंबन लेकर हमें लक्ष्यार्थ के समीप ले जाना है। लक्ष्यार्थ वह अनहोनी घटना है जो जलियांवाला बाग में घटित हुई। जिसने भारतियों के हृदयों को क्षत-विक्षत कर दिया।

मन के सूक्ष्म भावों-प्रेम, घृणा क्रोध आदि को सपष्ट करने के लिए हम ठोस वस्तुओं का सहारा लेते हैं। उन्हें ही प्रतीक कहते हैं। उनकी एक विशेषता यह भी है कि कवयित्री ने 'मानवीकरण' की शैली अपनाकर प्रकृति के उपादानों का भी मानव सदृश सचीव चित्रण किया है। इस कविता में मानवीय मनोभावों का प्रतीक प्राकृतिक आलंबन हैं। मसलन कोयल, कौए, सूखे फूल, काँटे, आँसू आदि। तात्पर्य यह है कि सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता का भाव पक्ष और कला पक्ष, दोनों हृदय स्पर्शी हैं। शब्दों को प्रयोग वो एहतियातन करती हैं ताकी गीत की लय के प्रवाह में कठिनाई का अनुभव न हो।

14.4 पाठ-सार

प्रस्तुत कविता में कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने जलियाँवाला बाग हत्याकांड का दृश्य हम सभी के समक्ष प्रस्तुत किया है। कवयित्री बाग में अंग्रेजों द्वारा किए गए नरसंहार से व्यथित है। उनकी वेदना को कविता के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है। किसी भी बाग की रौनक वहाँ के पशु-पक्षी होते हैं। विशेषकर वसंत आगमन उपरांत कोयल की मधुर कुहुकने की आवाज़ सुनाई देने लगती है। ऋतुराज बसंत अपने आगमन के साथ रंगों का एक सैलाब भी लाता है। पुष्प-वृक्ष एवं पौधे नए कोमल पत्तों, कलियों एवं फूलों से भरे होते हैं। चहुँओर प्रसन्नता एवं उमंग का प्रसार होता है। किंतु जलियाँवाला बाग में जो नरसंहार घटित हुआ उसने सुभद्राकुमारी चौहान के कोमल मन को दुखी किया अतएव वे कहती हैं की जलियांवाला बाग में कोयल नहीं कौए शोर मचाते हैं। काले-काले कीड़े-मकौड़े भौंरों के भिनभिनाने का भ्रम पैदा करते हैं। फूलों की अधखिली कलियाँ कंटकों के कुल से मिलते हैं। वहाँ के पौधे व फूल सूखे हुए हैं या झुलसे हुए हैं। वह सुगंधहीन फूल की भांति हैं जो ऐसा प्रतीत हो रहा है, किसी दाग़ के समान हों क्योंकि यह प्यारा सा बाग खून से सना पड़ा है। कवयित्री ऋतुओं में श्रेष्ठ ऋतुराज वसंत से निवेदन कर रही है कि वे आयें तो मंथर गति से आयें क्योंकि यह मृत लोगों का स्थान है अतः यहाँ किसी प्रकार का शोर अनुचित है। वायु से वे आग्रह करती हैं कि जब तुम बाग से बह कर जाओ तो धीमे से बहना ताकि दुःख न बह जाए। इसी प्रकार कोयल जब गायें तो वह रुदन राग ही हो एवं भौरें भिनभिनायें तो केवल ऐसा लगे कि कष्ट की कहानी बयान कर रहे हों।

कवयित्री ऋतुराज से कहती हैं कि फूल बिना सजावट वाले हों और उनकी सुगंध मद्धम हो एवं वे ओस से भीगे हुए हों। यह भी ताकीद रहे कि वे किसी उपहार का भान न करायें बल्कि वे शहीद हुए निर्दोष लोगों का स्मरण हमें करायें, इसीलिए उन्हें इसी तरह से बिखेरा भी जाए। वे हृदय जिसमें जीवन के कई रंग थे सब टूट गए। वे प्रिय, परिवार अपने देश से अलग हो गए हैं। इसलिए यहाँ कुछ बिना खिली हुई कलियों को यादों की ओस के आंसुओं से चढ़ाना है। जो बूढ़े व्यक्ति यहाँ गोली खाकर मरे उन पर कुछ सूखे फूल चढ़ा देना है तथा यह सब करते हुए भी यह ध्यान अवश्य रहे कि बहुत धीरे से ही आना है क्योंकि यह दुःख और मातम की जगह है। यहाँ शोर नहीं मचाया जा सकता।

14.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा की ऐसी एक मात्र कवयित्री हैं जो स्वतंत्रता आंदोलन में भी सक्रिय थीं और लेखन में भी।
2. सुभद्रा कुमारी चौहान ने युग धर्म और रचना धर्म दोनों का सटीकतापूर्वक निर्वाह किया।
3. ओज गुण और वीर रस सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रमुख काव्य भूमि है।
4. 'जलियाँवाला बाग में वसंत' हिंदी की स्वातंत्र्य चेतना प्रधान कविताओं में प्रमुख स्थान रखते है।
5. यह कविता अपने उद्बोधन पूर्ण स्वर के करण पाठकों के मन में देशप्रेम और बलिदान की भावना जागृत करने में समर्थ है।
6. इस कविता में करुणा और उत्सर्ग के उदात्त भाव विशेष रूप से द्रष्टव्य है।

14.6 शब्द संपदा

1. कंटक = काँटे
2. काग = कौआ
3. कीट = कीड़ा
4. कोकिला = कोयल
5. परिमल = पराग, सुगंध
6. भ्रम = छलावा

7. भ्रमर = भौंरा

8. शुष्क = सूखे

9. स्मृति = याद

10. हृदय छिन्न होना = दिल को चोट पहुँचना

14.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'जलियाँवाला बाग भारतीय इतिहास में एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना है।' इस कथन की पुष्टि कीजिए।
2. कवयित्री ऋतुराज बसंत से क्या आग्रह कर रही है और क्यों कर रही है? सविस्तार उत्तर दीजिए।
3. सुभद्रा कुमारी चौहान की विशेष ओं पर एक सुदीर्घ टिप्पणी लिखिए।
4. जलियाँवाला बाग कविता का सार अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. वसंत ऋतु में किसी प्रकार के परिवर्तन हमें देखने को मिलते हैं? संक्षेप में लिखिए।
2. कवयित्री के बाल्यकाल पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. सुभद्रा कुमारी चौहान के भाषिक-वैशिष्ट्य पर एक टिप्पणी लिखिए।
4. जलियाँवाला बाग में पेड़ों की स्थिति का वर्णन कीजिए।
5. बाग में वृद्धों के मारे जाने का वर्णन कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. जलियाँवाला बाग किसके जुल्म का प्रतीक है? ( )

   (अ) जमींदारों के (आ) मिल मालिकों के (इ) अंग्रेजों के (ई) मुगलों के

2. कवयित्री इस कविता में किसे धीरे-से आने को कहती है? ( )

(अ) ऋतुराज को (आ) महाराज को (इ) ठंडी हवा को (ई) लोगों को

3. इस कविता में ऋतुराज किसे कहा गया है? ( )

(अ) ग्रीष्म ऋतु को (आ) शरद ऋतु को (इ) वसंत ऋतु को (ई) वर्षा ऋतु को

4. कवयित्री ऋतुराज से कैसा पुष्प लाने को कहती है? ( )

(अ) अधिक सजीले न हों (आ) मंद सुगंध वाले हों

(इ) ओस से गीले हों (ई) उपर्युक्त सभी

5. बच्चों की स्मृति में कैसे पुष्प लाने को कहा गया है? ( )

(अ) सूखे फूल (आ) कलियाँ (इ) खिले फूल (ई) भीगे फूल

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

1. पूजा के लिए थोड़े फूल ....।
2. यह प्यारा बाग ………………… से सना पड़ा है।
3. अपने प्रिय परिवार ………………… देश से भिन्न हुए हैं।
4. लाना संग में पुष्प न हों वे अधिक ……………………।

III. सुमेल कीजिए -

1. कोकिला	(अ) पुष्पराज
2. मंद	(आ) याद
3. पराग	(इ) भौंरा
4. स्मृति	(ई) धीरे
5. भ्रमर	(उ) कोयल

14.6 पठनीय पुस्तकें

1. सुभद्रा समग्र
2. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र
3. आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीय भावना : दामोदर
4. मिला तेज से तेज : सुधा चौहान
5. मुकुल : सुभद्राकुमारी चौहान
6. कोकिला : सुभद्राकुमारी चौहान

इकाई 15 : महादेवी वर्मा : एक परिचय

रूपरेखा

15.1 प्रस्तावना
15.2 उद्देश्य
15.3 मूल पाठ : महादेवी वर्मा : एक परिचय
15.3.1 व्यक्तित्व और कृतित्व
15.3.2 हिंदी साहित्य में महादेवी वर्मा का स्थान
15.4 पाठ सार
15.5 पाठ की उपलब्धियाँ
15.6 शब्द संपदा
15.7 परीक्षार्थ प्रश्न
15.8 पठनीय पुस्तकें

15.1 प्रस्तावना

छायावादी काव्यधारा की काव्य चेतना को अपनी कविताओं, रचनाओं में जीवटता से प्रस्तुत करने वाली कवयित्री महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा कहकर संबोधित किया जाता है। यद्यपि महादेवी ने कोई उपन्यास, कहानी या नाटक नहीं लिखा तो भी उनके लेख, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, भूमिकाओं और ललित निबंधों में जो गद्य लिखा है वह श्रेष्ठतम गद्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। उसमें जीवन का संपूर्ण वैविध्य समाया है। बिना कल्पना और काव्यरूपों का सहारा लिए कोई रचनाकार गद्य में कितना कुछ अर्जित कर सकता है, यह महादेवी को पढ़कर ही जाना जा सकता है। उनके गद्य में वैचारिक परिपक्वता इतनी है कि वह आज भी प्रासंगिक है। समाज सुधार और नारी स्वतंत्रता से संबंधित उनके विचारों में दृढ़ता और विकास का अनुपम सामंजस्य मिलता है। सामाजिक जीवन की गहरी परतों को छूने वाली इतनी तीव्र दृष्टि, नारी जीवन के वैषम्य और शोषण को तीखेपन से आंकने वाली इतनी जागरूक प्रतिभा और निम्न वर्ग के निरीह, साधनहीन प्राणियों के अनूठे चित्र उन्होंने ही पहली बार हिंदी साहित्य को दिये।

महादेवी वर्मा एक सफल छायावादी कवयित्री होने के साथ-साथ चर्चित गद्यकार भी

थी। उनकी कविताओं और गद्य, दोनों साहित्यिक विधाओं में एक लेखिका की पीड़ा अभिव्यक्त हुई हैं। उनकी कविताओं में यह पीड़ा काफी सघन रूप में उपस्थित है। वही जब गद्यकार के रूप में महादेवी वर्मा सामने आती है तो वहाँ जीवन के यथार्थ से वह मुठभेड़ करती नजर आती है और उस यथार्थ का वर्णन किया है।

छायावादी काव्यधारा के चार प्रमुख हस्ताक्षर में से एकमात्र कवयित्री महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व को इस इकाई में जानने-समझने की कोशिश की जाएगी। महादेवी वर्मा एक गंभीर विचारक, प्रमुख छायावादी कवयित्री, विदरोगी चेतना सम्पन्न गद्य लेखिका के रूप में अपने साहित्य के साथ उनके व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

15.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- महादेवी वर्मा के जीवन की विविध परिस्थितियों से अवगत हो सकेंगे।
- महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व की विविध पहलुओं से परिचित हो सकेंगे।
- महादेवी वर्मा के कृतित्व की विस्तृत और प्रामाणिक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- छायावादी काव्य में महादेवी वर्मा के महत्व से परिचित हो सकेंगे।
- महादेवी के काव्य की अंतर्वस्तु और सौंदर्य दृष्टि से अवगत हो सकेंगे।
- नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना के परिप्रेक्ष्य में महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य का मूल्यांकन कर सकेंगे।

15.3 मूल पाठ : महादेवी वर्मा : एक परिचय

15.3.1 व्यक्तित्व और कृतित्व

महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व में संवेदना दृढ़ता और आक्रोश का अद्‌भुत संतुलन मिलता है। वे अध्यापक, कवि, गद्यकार, कलाकार, समाजसेवी और विदुषी के बहुरंगे मिलन का जीता जागता उदाहरण थीं। वे इन सबके साथ-साथ एक प्रभावशाली व्याख्याता भी थीं। उनकी भाव चेतना गंभीर, मार्मिक और संवेदनशील थी। महादेवी वर्मा की रचनाओं में पीड़ा और वेदना की अभिव्यक्ति के संदर्भ यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि महादेवी वर्मा के साहित्य में अभिव्यक्त पीड़ा उनकी स्व की पीड़ा है। महादेवी वर्मा के यहाँ पीड़ा का जो गहन रूप मौजूद है वह एक नारी के भोगे हुये यथार्थ का स्वर-चित्र है। भारतीय समाज में नारी को कभी

मानवीयता के स्तर पर उचित ढंग से नहीं देखा गया। भारतीय समाज में नारी को या तो देवी के रूप में देखा गया है या फिर उसे कुलटा, कुलक्षिणी के रूप में बहिष्कार किया गया। नारी को हमेशा से पुरुषों के संरक्षण में जीना पड़ा। एक स्त्री बचपन में अपने पिता पर निर्भर होती है, उम्र के बढ़ते पड़ाव पर वह पति का सहारा लेती है और बुढ़ापे में पुत्र के सहारे अपना जीवन यापन करती है। समाजीकरण की प्रक्रिया में भी स्त्री-पुरुष को लेकर भेदभाव स्पष्ट तौर पर देखा जाता है। स्त्रियों के प्रति होने वाले हर तरह के भेदभाव के खिलाफ 19वीं और 20वीं शताब्दी में नारी के शोषण के खिलाफ कुछ सुधारवादी लोगों ने आवाज़ उठाई थी। इन सुधारवादियों ने नारी के दुर्दशा की ओर समाज का ध्यान आकर्षित भी किया था। उन लोगों ने सती प्रथा, पर्दा प्रथा, विधवा विवाह, नारी शिक्षा जैसे नारी सुधार के विभिन्न मुद्दों को सामने लाया था। ऐसी स्थिति में कोई स्त्री समाज में बनाए नियम कानून को तोड़ती है तो उसे समाज और परिवार की अवमानना और विरोध का सामना करना पड़ता है। महादेवी वर्मा भी स्त्री के संबंध में चारदीवारी में कैद रखने की परंपरा का विरोध किया। उन्होने समाज के रूढ बंधनों को तोड़ा और स्त्री को लेकर बने जकड़नों से मुक्त होकर अपने कर्म क्षेत्र में उतर पड़ी।

महादेवी वर्मा अपने समय में गांधी जी के नेतृत्व में हो रहें स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़ी और स्त्रियों को शामिल होने के लिए आवाज़ भी लगाई। महादेवी वर्मा के आह्वान पर बड़ी संख्या में स्त्रियों ने स्वाधीनता आंदोलन में शामिल हुई। उन्होने अपने गद्य रचनाओं में न केवल नारी की समस्याओं को उठाया बल्कि समस्याओं के स्तर पर दुहरा जीवन जी रहीं दलित और शोषित वर्ग की स्त्रियों को भी सामने रखा और उनके ज्वीयन-यापन से जुड़े प्रश्नों पर उनका सहयोग भी किया। उन्होने साहित्य में नारी और दलित दोनों वर्गों की वकालत की और उनके प्रति अपनी सहानुभूति भी प्रदर्शित की।

1932 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के बाद से उनकी प्रसिद्धि का एक नया युग प्रारंभ हुआ। भगवान बुद्ध के प्रति गहन भक्तिमय अनुराग होने के कारण और अपने बाल-विवाह के अवसाद को झेलने वाली महादेवी बौद्ध भिक्षुणी बनना चाहती थीं। कुछ समय बाद महात्मा गांधी के सम्पर्क और प्रेरणा से उनका मन सामाजिक कार्यों की ओर उन्मुख हो गया। प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत साहित्य में एम०ए० करने के बाद प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या का पद संभाला और चाँद का निःशुल्क संपादन किया। प्रयाग में ही उनकी भेंट रवीन्द्रनाथ ठाकुर से हुई और यहीं पर 'मीरा जयंती' का शुभारम्भ किया। कलकत्ता

में जापानी कवि योन नागूची के स्वागत समारोह में भाग लिया और शान्ति निकेतन में गुरुदेव के दर्शन किये। यायावरी की इच्छा से बद्रीनाथ की पैदल यात्रा की और रामगढ़, नैनीताल में 'मीरा मंदिर' नाम की कुटीर का निर्माण किया। एक अवसर ऐसा भी आया कि विश्ववाणी के बुद्ध अंक का संपादन किया और 'साहित्यकार संसद' की स्थापना की। भारतीय रचनाकारों को आपस में जोड़ने के लिये 'अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन' का आयोजन किया और राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद से 'वाणी मंदिर' का शिलान्यास कराया।

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात इलाचंद्र जोशी और दिनकर जी के साथ दक्षिण की साहित्यिक यात्रा की। निराला की काव्य-कृतियों से कविताएँ लेकर 'साहित्यकार संसद' द्वारा अपरा शीर्षक से काव्य-संग्रह प्रकाशित किया। 'साहित्यकार संसद' के मुख-पत्र साहित्यकार का प्रकाशन और संपादन इलाचंद्र जोशी के साथ किया। प्रयाग में नाट्य संस्थान 'रंगवाणी' की स्थापना की और उद्घाटन मराठी के प्रसिद्ध नाटककार मामा वरेरकर ने किया। 1954 में वे दिल्ली में स्थापित साहित्य अकादमी की सदस्या चुनी गईं तथा 1981 में सम्मानित सदस्या। इस प्रकार महादेवी का संपूर्ण कार्यकाल राष्ट्र और राष्ट्रभाषा की सेवा में समर्पित रहा।

महादेवी का कार्यक्षेत्र लेखन, संपादन और अध्यापन रहा। उन्होंने इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। यह कार्य अपने समय में महिला-शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम था। इसकी वे प्रधानाचार्य एवं कुलपति भी रहीं। 1923 में उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका 'चाँद' का कार्यभार संभाला। 1930 में नीहार, 1932 में रश्मि, 1934 में नीरजा तथा 1936 में सांध्यगीत नामक उनके चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए। 1939 में इन चारों काव्य संग्रहों को उनकी कलाकृतियों के साथ वृहदाकार में यामा शीर्षक से प्रकाशित किया गया। उन्होंने गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किये। इसके अतिरिक्त उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियां हैं जिनमें मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी, शृंखला की कड़ियाँ और अतीत के चलचित्र प्रमुख हैं। सन 1955 में महादेवी जी ने इलाहाबाद में साहित्यकार संसद की स्थापना की। वे हिंदी साहित्य में रहस्यवाद की प्रवर्तिका भी मानी जाती हैं। महादेवी बौद्ध धर्म से बहुत प्रभावित थीं। महात्मा गांधी के प्रभाव से उन्होंने जनसेवा का व्रत लेकर झूसी में कार्य किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी हिस्सा लिया। 1936 में नैनीताल से 25 किलोमीटर दूर रामगढ़ कसबे के उमागढ़ नामक गाँव में महादेवी वर्मा ने एक बँगला बनवाया था। जिसका नाम उन्होंने मीरा मंदिर रखा था।

जितने दिन वे यहाँ रहीं इस छोटे से गाँव की शिक्षा और विकास के लिए काम करती रहीं। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए उन्होंने बहुत काम किया। आजकल इस बंगले को महादेवी साहित्य संग्रहालय के नाम से जाना जाता है। शृंखला की कड़ियाँ में स्त्रियों की मुक्ति और विकास के लिए उन्होंने जिस साहस व दृढ़ता से आवाज़ उठाई हैं और जिस प्रकार सामाजिक रूढ़ियों की निंदा की है उससे उन्हें महिला मुक्तिवादी भी कहा गया। महिलाओं व शिक्षा के विकास के कार्यों और जनसेवा के कारण उन्हें समाज-सुधारक भी कहा गया है। उनके संपूर्ण गद्य साहित्य में पीड़ा या वेदना के कहीं दर्शन नहीं होते बल्कि अदम्य रचनात्मक रोष समाज में बदलाव की अदम्य आकांक्षा और विकास के प्रति सहज लगाव परिलक्षित होता है।

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा ने चाँद पत्रिका का कार्यभार कब संभाला था?
- महादेवी वर्मा ने मीरा मंदिर नामक कुटीर का निर्माण कहाँ करवाया था?

जीवन परिचय

महादेवी वर्मा (26 मार्च, 1907-11 सितंबर, 1987) हिंदी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं। वे हिंदी साहित्य में छायावादी युग के प्रमुख स्तंभों जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और सुमित्रानंदन पंत के साथ महत्वपूर्ण स्तंभ मानी जाती हैं। कवि निराला ने उन्हें 'हिंदी के विशाल मन्दिर की सरस्वती' भी कहा है। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरूआत की और अंतिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं। उनका बाल-विवाह हुआ परंतु उन्होंने अविवाहित की भांति जीवन-यापन किया। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ साथ कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। उन्हें हिंदी साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर बनी रहीं। वे भारत की 50 सबसे यशस्वी महिलाओं में भी शामिल हैं।

प्रारंभिक जीवन और परिवार

वर्मा का जन्म फ़र्रुख़ाबाद, उत्तर प्रदेश के एक संपन्न परिवार में हुआ। महादेवी जी के माता-पिता का नाम हेमरानी देवी और बाबू गोविन्द प्रसाद वर्मा था। महादेवी वर्मा की छोटी

बहन और दो छोटे भाई थे। क्रमश: श्यामा देवी (श्यामा देवी सक्सेना धर्मपत्नी - डॉ. बाबूराम सक्सेना, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष एवं उपकुलपति इलाहाबाद विश्व विद्यालय) श्री जगमोहन वर्मा एवं श्री मनमोहन वर्मा।

महादेवी वर्मा के हृदय में शैशवावस्था से ही जीव मात्र के प्रति करुणा थी, दया थी। उन्हें ठण्डक में कूँ कूँ करते हुए पिल्लों का भी ध्यान रहता था। पशु-पक्षियों का पालन-पोषण और उनके साथ खेलकूद में ही दिन बिताती थीं। चित्र बनाने का शौक भी उन्हें बचपन से ही था। इस शौक की पूर्ति वे पृथ्वी पर कोयले आदि से चित्र उकेर कर करती थीं। उनके व्यक्तित्व में जो पीडा, करुणा और वेदना है, विद्रोहीपन है, अहं है, दार्शनिकता एवं आध्यात्मिकता है तथा अपने काव्य में उन्होंने जिन तरल सूक्ष्म तथा कोमल अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की है, इन सब के बीज उनकी इसी अवस्था में पड़ चुके थे और उनका अंकुरण तथा पल्लवन भी होने लगा था।

शिक्षा

महादेवी की शिक्षा 1912 में इंदौर के मिशन स्कूल से प्रारम्भ हुई साथ ही संस्कृत, अंग्रेजी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। 1916 में विवाह के कारण कुछ दिन शिक्षा स्थगित रही। विवाहोपरान्त महादेवी जी ने 1919 में बाई का बाग स्थित क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रावास में रहने लगीं। महादेवी जी की प्रतिभा का निखार यहीं से प्रारम्भ होता है।

1915 में महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रान्त भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया और कविता यात्रा के विकास की शुरुआत भी इसी समय और यहीं से हुई। वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1925 तक जब अपनी मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी, वह एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था। पाठशाला में हिंदी अध्यापक से प्रभावित होकर ब्रजभाषा में समस्यापूर्ति भी करने लगीं। फिर तत्कालीन खड़ीबोली की कविता से प्रभावित होकर खड़ीबोली में रोला और हरिगीतिका छंदों में काव्य लिखना प्रारंभ किया। उसी समय माँ से सुनी एक करुण कथा को लेकर सौ छंदों में एक खंडकाव्य भी लिख डाला। कुछ दिनों बाद उनकी रचनाएँ तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगीं। विद्यार्थी जीवन में वे प्रायः राष्ट्रीय और सामाजिक जागृति संबंधी कविताएँ लिखती रहीं। मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पूर्व ही उन्होंने ऐसी कविताएँ लिखना शुरू कर दिया था, जिसमें व्यष्टि में समष्टि और स्थूल में सूक्ष्म

चेतना के आभास की अनुभूति अभिव्यक्त हुई है। उनके प्रथम काव्य-संग्रह 'नीहार' की अधिकांश कविताएँ उसी समय की हैं।

महादेवी वर्मा का नौ वर्ष पूरा होते-होते सन् 1916 में उनके बाबा श्री बाँके विहारी ने इनका विवाह बरेली के पास नबाव गंज कस्बे के निवासी श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कर दिया, जो उस समय दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। महादेवी जी का विवाह उस उम्र में हुआ जब वे विवाह का मतलब भी नहीं समझती थीं। महादेवी वर्मा पति-पत्नी सम्बंध को स्वीकार न कर सकीं। कारण आज भी रहस्य बना हुआ है। आलोचकों और विद्वानों ने अपने-अपने ढँग से अनेक प्रकार की अटकलें लगायी हैं। पिता जी की मृत्यु के बाद श्री स्वरूप नारायण वर्मा कुछ समय तक अपने ससुर के पास ही रहे, पर पुत्री की मनोवृत्ति को देखकर उनके बाबू जी ने श्री वर्मा को इण्टर करवा कर लखनऊ मेडिकल कॉलेज में प्रवेश दिलाकर वहीं बोर्डिंग हाउस में रहने की व्यवस्था कर दी। जब महादेवी इलाहाबाद में पढ़ने लगीं तो श्री वर्मा उनसे मिलने वहाँ भी आते थे। किन्तु महादेवी वर्मा उदासीन ही बनी रहीं। विवाहित जीवन के प्रति उनमें विरक्ति उत्पन्न हो गई थी। इस सबके बावजूद श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कोई वैमनस्य नहीं था। सामान्य स्त्री-पुरुष के रूप में उनके सम्बंध मधुर ही रहे। दोनों में कभी-कभी पत्राचार भी होता था। यदा-कदा श्री वर्मा इलाहाबाद में उनसे मिलने भी आते थे। एक विचारणीय तथ्य यह भी है कि श्री वर्मा ने महादेवी जी के कहने पर भी दूसरा विवाह नहीं किया। महादेवी जी का जीवन तो एक संन्यासिनी का जीवन था ही।

बोध प्रश्न

- महादेवी का जन्म किस वर्ष हुआ था और कहाँ हुआ था?
- महादेवी वर्मा के जीवन से जुड़े हुये महत्वपूर्ण प्रसंग पर दस पंक्तियों में लिखें।

रचना यात्रा

महादेवी जी कवयित्री होने के साथ-साथ विशिष्ट गद्यकार भी थीं। उनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं।

कविता संग्रह

1. नीहार (1930), 2. रश्मि (1932), 3. नीरजा (1934), 4. सांध्यगीत (1936), 5. दीपशिखा (1942), 6. सप्तपर्णा (अनूदित-1959), 7. प्रथम आयाम (1974), 8. अग्निरेखा (1990)

महादेवी वर्मा के अन्य अनेक काव्य संकलन भी प्रकाशित हैं, जिनमें उपर्युक्त रचनाओं में से चुने हुए गीत संकलित किये गये हैं, जैसे आत्मिका, परिक्रमा, सन्धिनी (1965), यामा (1936), गीतपर्व, दीपगीत, स्मारिका, नीलांबरा और आधुनिक कवि महादेवी आदि।

महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य

रेखाचित्र : अतीत के चलचित्र (1941) और स्मृति की रेखाएं (1943)

संस्मरण : पथ के साथी (1956) और मेरा परिवार (1972) और संस्मरण (1983)

चुने हुए भाषणों का संकलन : संभाषण (1974)

निबंध : शृंखला की कड़ियाँ (1942), विवेचनात्मक गद्य (1942), साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध (1962), संकल्पिता (1969)

ललित निबंध : क्षणदा (1956)

कहानियाँ : गिल्लू

संस्मरण, रेखाचित्र और निबंधों का संग्रह : हिमालय (1963), अन्य निबंध में संकल्पिता तथा विविध संकलनों में स्मारिका, स्मृति चित्र, संभाषण, संचयन, दृष्टिबोध उल्लेखनीय हैं। वे अपने समय की लोकप्रिय पत्रिका 'चाँद' तथा 'साहित्यकार' मासिक की भी संपादक रहीं। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने प्रयाग में 'साहित्यकार संसद' और रंगवाणी नाट्य संस्था की भी स्थापना की।

महादेवी वर्मा का बाल साहित्य

महादेवी वर्मा की बाल कविताओं के दो संकलन छपे हैं - ठाकुरजी भोले हैं, आज खरीदेंगे हम ज्वाला

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किस संस्था की स्थापना की थी?
- महादेवी वर्मा की साहित्य की किन-किन विधाओं में रचना करती थी बताए?

पुरस्कार व सम्मान

उन्हें प्रशासनिक, अर्धप्रशासनिक और व्यक्तिगत सभी संस्थाओँ से पुरस्कार व सम्मान मिले। 1943 में उन्हें 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' एवं 'भारत भारती' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 1952 में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्या मनोनीत की गयीं। 1956 में भारत सरकार ने उनकी साहित्यिक सेवा के लिये 'पद्म भूषण' की

उपाधि दी। 1979 में साहित्य अकादमी की सदस्यता ग्रहण करने वाली वे पहली महिला थीं। 1988 में उन्हें मरणोपरांत भारत सरकार की पद्म विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया।

सन 1969 में विक्रम विश्वविद्यालय, 1977 में कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल, 1980 में दिल्ली विश्वविद्यालय तथा 1984 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने उन्हें डी.लिट की उपाधि से सम्मानित किया। महादेवी वर्मा को 'नीरजा' के लिये 1934 में 'सक्सेरिया पुरस्कार', 1942 में 'स्मृति की रेखाएँ' के लिये 'द्विवेदी पदक' प्राप्त हुए। 'यामा' नामक काव्य संकलन के लिये उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ। वे भारत की 50 सबसे यशस्वी महिलाओं में भी शामिल हैं। 1968 में सुप्रसिद्ध भारतीय फ़िल्मकार मृणाल सेन ने उनके संस्मरण 'वह चीनी भाई' पर एक बांग्ला फ़िल्म का निर्माण किया था जिसका नाम था नील आकाशेर नीचे। 16 सितंबर, 1991 को भारत सरकार के डाकतार विभाग ने जयशंकर प्रसाद के साथ उनके सम्मान में 2 रुपए का एक युगल टिकट भी जारी किया है।

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा के किस संस्मरण पर फिल्म का निर्माण हुआ था?
- महादेवी वर्मा उत्तर प्रदेश विधानसभा की सदस्य किस वर्ष बनी थी?

15.3.2 हिंदी साहित्य में महादेवी वर्मा का स्थान

आधुनिक गीत काव्य में महादेवी जी का स्थान सर्वोपरि है। उनकी कविता में प्रेम की पीर और भावों की तीव्रता वर्तमान होने के कारण भाव, भाषा और संगीत की जैसी त्रिवेणी उनके गीतों में प्रवाहित होती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। महादेवी के गीतों की वेदना, प्रणयानुभूति, करुणा और रहस्यवाद काव्यानुरागियों को आकर्षित करते हैं। पर इन रचनाओं की विरोधी आलोचनाएँ सामान्य पाठक को दिग्भ्रमित करती हैं। आलोचकों का एक वर्ग वह है, जो यह मानकर चलते हैं कि महादेवी का काव्य नितान्त वैयक्तिक है। उनकी पीड़ा, वेदना, करुणा, कृत्रिम और बनावटी है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे मूर्धन्य आलोचकों ने उनकी वेदना और अनुभूतियों की सच्चाई पर प्रश्न चिह्न लगाया है- दूसरी ओर आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जैसे समीक्षक उनके काव्य को समष्टि परक मानते हैं। 'दीप' (नीहार), मधुर मधुर मेरे दीपक जल (नीरजा) और मोम सा तन गल चुका है कविताओं को उद्धृत करते हुए निष्कर्ष निकाला है कि ये कविताएं महादेवी के 'आत्मभक्षी दीप' अभिप्राय को ही व्याख्यायित नहीं करतीं बल्कि उनकी

कविता की सामान्य मुद्रा और बुनावट का प्रतिनिधि रूप भी मानी जा सकती हैं।

महादेवी अपनी विद्वत तार्किकता और उदाहरणों के द्वारा छायावाद और रहस्यवाद के वस्तु शिल्प की पूर्ववर्ती काव्य से भिन्नता तथा विशिष्टता ही नहीं बतायी, यह भी बताया कि वह किन अर्थों में मानवीय संवेदन के बदलाव और अभिव्यक्ति के नयेपन का काव्य है। उन्होंने किसी पर भाव साम्य, भावोपहरण आदि का आरोप नहीं लगाया केवल छायावाद के स्वभाव, चरित्र, स्वरूप और विशिष्टता का वर्णन किया। हालांकि जो लोग उन्हें पीड़ा और निराशा की कवयित्री मानते हैं वे यह नहीं जानते कि उस पीड़ा में कितनी आग है जो जीवन के सत्य को उजागर करती है।

यह सच है कि महादेवी का काव्य संसार छायावाद की परिधि में आता है, पर उनके काव्य को उनके युग से एकदम असम्पृक्त करके देखना, उनके साथ अन्याय करना होगा। महादेवी एक सजग रचनाकार हैं। बंगाल के अकाल के समय 1943 में इन्होंने एक काव्य संकलन प्रकाशित किया था और बंगाल से सम्बंधित 'बंग भू शत वंदना' नामक कविता भी लिखी थी। इसी प्रकार चीन के आक्रमण के प्रतिवाद में हिमालय नामक काव्य संग्रह का संपादन किया था। यह संकलन उनके युगबोध का प्रमाण है।

साहित्य में महादेवी वर्मा का आविर्भाव उस समय हुआ जब खड़ीबोली का आकार परिष्कृत हो रहा था। उन्होंने हिंदी कविता को बृजभाषा की कोमलता दी, छंदों के नये दौर को गीतों का भंडार दिया और भारतीय दर्शन को वेदना की हार्दिक स्वीकृति दी। इस प्रकार उन्होंने भाषा साहित्य और दर्शन तीनों क्षेत्रों में ऐसा महत्त्वपूर्ण काम किया जिसने आनेवाली एक पूरी पीढ़ी को प्रभावित किया। शचीरानी गुर्टू ने भी उनकी कविता को सुसज्जित भाषा का अनुपम उदाहरण माना है। उन्होंने अपने गीतों की रचना शैली और भाषा में अनोखी लय और सरलता भरी है, साथ ही प्रतीकों और बिंबों का ऐसा सुंदर और स्वाभाविक प्रयोग किया है जो पाठक के मन में चित्र सा खींच देता है। छायावादी काव्य की समृद्धि में उनका योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। छायावादी काव्य को जहाँ प्रसाद ने प्रकृतितत्त्व दिया, निराला ने उसमें मुक्तछंद की अवतारणा की और पंत ने उसे सुकोमल कला प्रदान की वहाँ छायावाद के कलेवर में प्राण-प्रतिष्ठा करने का गौरव महादेवी जी को ही प्राप्त है। भावात्मकता एवं अनुभूति की गहनता उनके काव्य की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है। हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाव-हिलोरों का ऐसा सजीव और मूर्त अभिव्यंजन ही छायावादी कवियों में उन्हें 'महादेवी' बनाता है। वे हिंदी बोलने वालों

में अपने भाषणों के लिए सम्मान के साथ याद की जाती हैं। उनके भाषण जन सामान्य के प्रति संवेदना और सच्चाई के प्रति दृढ़ता से परिपूर्ण होते थे। वे दिल्ली में 1983 में आयोजित तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन के समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर दिये गये उनके भाषण में उनके इस गुण को देखा जा सकता है।

मौलिक रचनाकार के अलावा उनका एक रूप सृजनात्मक अनुवादक का भी है जिसके दर्शन उनकी अनुवाद-कृत 'सप्तपर्णा' (1960) में होते हैं। अपनी सांस्कृतिक चेतना के सहारे उन्होंने वेद, रामायण, थेरगाथा तथा अश्वघोष, कालिदास, भवभूति एवं जयदेव की कृतियों से तादात्म्य स्थापित करके 39 चयनित महत्वपूर्ण अंशों का हिंदी काव्यानुवाद इस कृति में प्रस्तुत किया है। आरंभ में 61 पृष्ठीय 'अपनी बात' में उन्होंने भारतीय मनीषा और साहित्य की इस अमूल्य धरोहर के सम्बंध में गहन शोधपूर्ण विमर्ष किया है जो केवल स्त्री-लेखन को ही नहीं हिंदी के समग्र चिंतनपरक और ललित लेखन को समृद्ध करता है। गद्य साहित्य के क्षेत्र में भी उन्होंने कम काम नहीं किया। उनका आलोचना साहित्य उनके काव्य की भांति ही महत्वपूर्ण है। उनके संस्मरण भारतीय जीवन के संस्मरण चित्र हैं। उन्होंने चित्रकला का काम अधिक नहीं किया फिर भी जलरंगों में 'वॉश' शैली से बनाए गए उनके चित्र धुंधले रंगों और लयपूर्ण रेखाओं का कारण कला के सुंदर नमूने समझे जाते हैं। उन्होंने रेखाचित्र भी बनाए हैं। दाहिनी ओर करीन शोमर की क़िताब के मुखपृष्ठ पर महादेवी द्वारा बनाया गया रेखाचित्र ही रखा गया है। उनके अपने कविता संग्रहों यामा और दीपशिखा में उनके रंगीन चित्रों और रेखांकनों को देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा को किन दो उपाधिओं से विभूषित किया जाता है?

15.4 पाठ सार

इस प्रकार हम देखते है कि महादेवी वर्मा अपने सम्पूर्ण रचनात्मक व्यक्तित्व के साथ छायावाद ही नहीं बल्कि आधुनिक हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्तम्भ के रूप में हम सबके सामने उपस्थित होती हैं। हालांकि छायावाद कि एक कड़ी बनकर महादेवी पंत और निराला कि तरह काव्य चेतना संबंधी कोई बदलाव नहीं करती बल्कि छायावादी काव्य रूपी दीये के प्रकाश में ही अपनी संपूर्ण रचनात्मकता का उपयोग करती हैं। छायावादी शैली की सभी प्रमुख विशेषताओं की सफलतम अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं में दिखलाई पड़ती है। यह सफलता इतनी

अप्रतिम है कि इसको लेकर कहा जाता है 'छायावाद ने महादेवी को जन्म दिया और महादेवी ने छायावाद को जीवन'। व्यक्तित्व के साथ कृतित्व की जीवंतता का अद्‌भुत मिश्रण माहदेवी वर्मा के यहाँ दिखाई पड़ता है। अतः कह सकते हैं कि व्यक्तित्व और कृतित्व के आधार पर महादेवी वर्मा ने प्रेम कि उदात्ता, वेदना कि गहराई एवं व्यापकता, रहस्य की भावना की अभिव्यक्ति का जो आदर्श प्रस्तुत किया है वह हिंदी साहित्य की दुनिया में अन्यत्र दुर्लभ है। महादेवी की सौंदर्य भावना और दृष्टि सहज रूप से छायावादी साहित्यिक चेतना को समृद्ध करती है। अनूठी काव्य शैली, कल्पना का ऐश्वर्य, गद्य में सामाजिक यथार्थ की उपस्थिति, अनुभूति की गहराई महादेवी के कृतित्व के साथ व्यक्तित्व की भी विशेषता है जिसे सदैव याद रखा जाएगा।

15.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. महादेवी वर्मा का संपूर्ण व्यक्तित्व उदात्त गुण से संपन्न मातृ छवि से निर्मित था।
2. महादेवी ने निजी जीवन में समाज के बने बनाए बंधनों को तोड़ा और नारी स्वातंत्र्य की वकालत की।
3. महादेवी का काव्य निजी वेदना के लोक-वेदना से एकाकार होने का प्रभावशाली उदाहरण है।
4. महादेवी वर्मा छायावाद चतुष्टय में विरहानुभूति और रहस्य भावना को व्यंजित करने वाली चतुर्थ रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

15.6 शब्द संपदा

1. आक्रोश	=	रोषपूर्ण भावना
2. आत्मभक्षी	=	स्वयंहारी
3. आत्मीय	=	स्नेह संबंध
4. आविर्भाव	=	प्रकट होना
5. कुलक्षिणी	=	कुल को लांछन लगाने वाली
6. जीवटता	=	पराक्रमी
7. यशस्वी	=	सुख्यात
8. वैषम्य	=	विषम होने का भाव

9. सघन = घना

10. हृदयग्राही = रुचिकर

15.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. छायावाद ने महादेवी को जन्म दिया और महादेवी ने छायावाद को जीवन इस कथन की पुष्टि करें।
2. महादेवी वर्मा के सामाजिक जीवन संबंधी चर्चा करें।
3. महादेवी वर्मा के साहित्य के मूल में उनकी काव्य सांस्कृतिक चेतना ही विद्यमान है, इस कथन का स्पष्टीकरण करें।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. महादेवी कौन सी पत्रिका का सम्पादन करती थी?
2. महादेवी को कुल कितनी भाषाओं की जानकारी थी?
3. महादेवी काव्य के अतिरिक्त और किन विधाओं में निपुण थी?

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. महादेवी का जन्म किस वर्ष में हुआ था? ( )

   (अ) 1911 (आ) 1924 (इ) 1907 (ई) 1905

2. महादेवी का विवाह किस उम्र में हुआ था? ( )

   (अ) 12 (आ) 15 (इ) 18 (ई) 9

3. महादेवी उत्तर प्रदेश के विधानसभा की सदस्य कब बनी थी? ( )

   (अ) 1947 (आ) 1956 (इ) 1952 (ई) 1954

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. महादेवी के काव्य संग्रह दीपशिखा का प्रकाशन वर्ष ..... है।
2. महादेवी के आलोचनात्मक निबंध संग्रह 'साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध' कृति सन ..... में प्रकाशित हुई।
3. महादेवी वर्मा का जन्म स्थान .... है।
4. महादेवी के गद्य साहित्य का प्रमुख तत्व ...... है।

III. सुमेल कीजिए-

1. नीरजा	(अ) संस्मरण
2. पथ के साथी	(आ) काव्य संग्रह
3. अतीत के चलचित्र	(इ) निबंध
4. क्षणदा	(ई) रेखाचित्र

15.8 पठनीय पुस्तकें

1. महादेवी वर्मा : इंद्रनाथ मदान
2. महादेवी नया मूल्यांकन : गणपति चन्द्रगुप्त
3. महादेवी : सं. परमानंद श्रीवास्तव
4. महीयसी महादेवी : गंगाप्रसाद पांडे
5. साहित्यकार महादेवी : हर्षनंदिनी भाटिया

इकाई 16 : गीति काव्य

रूपरेखा

16.1 प्रस्तावना

16.2 उद्देश्य

16.3 मूल पाठ : गीति काव्य

16.3.1 अध्येय कविता का समान्य परिचय

16.3.2 अध्येय कविता

16.3.3 विस्तृत व्याख्या

16.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

16.4 पाठ सार

16.5 पाठ की उपलब्धियां

16.6 शब्द संपदा

16.7 परीक्षार्थ प्रश्न

16.8 पठनीय पुस्तकें

16.1 प्रस्तावना

महादेवी वर्मा छायावादी कवयित्री के रूप में हिंदी साहित्य में लोकप्रिय हैं। महादेवी का जन्म उत्तर प्रदेश के फ़र्रुखाबाद में सन 1907 में हुआ था। महादेवी वर्मा का प्रारंभिक जीवन इंदौर और इलाहाबाद में व्यतीत हुआ। महादेवी वर्मा साहित्य में एक कवयित्री के रुप में प्रतिष्ठित है परंतु वह अपने गद्य लेखन के लिए हिंदी साहित्य में अप्रतिम रचनकर के तौर पर याद की जाती हैं। उनकी गद्य रचनाएँ भाषा और विचार की दृष्टि से अत्यंत परिपक्व मानी जाती हैं। महादेवी अपने जीवन में शिक्षा को काफी महत्व प्रदान करती है। वह प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. करने के बाद वहाँ महिला विद्यापीठ में प्रधानाचार्य हो गई थी। उन्होंने बीच के कुछ वर्षों तक चाँद पत्रिका के विदुषी अंक का संपादन भी 1935 में किया। यह अंक हिंदी में हुए स्त्री-विमर्श की परंपरा में विशेष महत्व रखता है।

छायावादी काव्य विशेषता के साथ महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य में स्थान अक्षुण्ण है। उनके काव्य संग्रहों में की कविताओं में छायावादी-रहस्यवादी प्रवृतियाँ विद्यमान है जिसमें स्त्री

की पीड़ा और उसके मुक्ति के स्वर मौजूद है। महादेवी वर्मा की कविताओं में स्त्री की पीड़ा का अनुभव उनके स्व का ही हैं। इनकी कविताओं में प्रेम का जिक्र भी मुक्ति के प्रतीक के रूप में मौजूद है। महादेवी की कविताओं में वैचारिक दृढ़ता छायावादी काया विशेषता के साथ मौजूद है।

16.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- महादेवी वर्मा के काव्य के मूल भाव से परिचित हो सकेंगे।
- अध्येय गीतों के माध्यम से महादेवी की काव्यगत विशेषताओं को समझ सकेंगे। की विस्तृत व्याख्या को समझ सकेंगे।
- छायावाद की कसौटी पर महादेवी के काव्य को परख सकेंगे।
- महादेवी के गीतों में निहित प्रतीक और बिंब विधान के सौंदर्य से अवगत हो सकेंगे।

16.3 मूल पाठ : गीति काव्य

16.3.1 आध्येय कविता का समान्य परिचय

इस इकाई में महादेवी वर्मा के काव्य साहित्य से दो कविताओं को लिया गया हैं। जिसमें पहली कविता 'पंथ होने दो अपरिचित' है वही दूसरी कविता 'जो तू आ जाते' हैं। पहली कविता महादेवी वर्मा के काव्य संग्रह 'दीपशिखा' से ली गई है और दूसरी कविता उनके प्रथम काव्य संग्रह 'नीहार' से हैं। महादेवी वर्मा के इन दोनों कविताओं के माध्यम से जहाँ छायावादी काव्य चेतना की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति होती है वही दोनों कविताओं में उनके अनुभव गहन रूप से मौजूद है जिसमें भारतीय स्त्री के संघर्ष, मुक्ति, प्रेम, विरह के क्षण अभिव्यक्त हैं।

16.3.2 अध्येय कविता

[1]

पंथ होने दो अपरिचित

घेर ले छाया अमा बन
आज कंजल-अश्रुओं में रिमझिमा ले यह घिरा घन
और होंगे नयन सूखे
तिल बुझे औ' पलक रूखे

आर्द्र चितवन में यहाँ
शत विद्युतों में दीप खेला
अन्य होंगे चरण हारे
और हैं जो लौटते, दे शूल को संकल्प सारे
दुखव्रती निर्माण उन्मद
यह अमरता नापते पद
बांध देंगे अंक-संसृति
से तिमिर में स्वर्ण बेला
दूसरी होगी कहानी
शून्य में जिसके मिटे स्वर, धूलि में खोई निशानी
आज जिस पर प्रलय विस्मित
मैं लगाती चल रही नित
मोतियों की हाट औ'
चिनगारियों का एक मेला
हास का मधु-दूत भेजो
रोष की भ्रू-भंगिमा पतझार को चाहे सहे जो
ले मिलेगा उर अचंचल
वेदना-जल, स्वप्न-शतदल
जान लो वह मिलन एकाकी
विरह में है दुकेला!

[2]

जो तुम आ जाते

कितनी करुणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग
गाता प्राणों का तार तार
अनुराग भरा उन्माद राग
आँसू लेते वे पथ पखार

जो तुम आ जाते एक बार
हँस उठते पल में आर्द्र नयन
धुल जाता होठों से विषाद
छा जाता जीवन में बसंत
लुट जाता चिर संचित विराग
आँखें देतीं सर्वस्व वार
जो तुम आ जाते एक बार

16.3.3 विस्तृत व्याख्या

घेर ले छाया अमा बन .... विरह में है दुकेला!

शब्दार्थ : अपरिचित = अज्ञात, अंजान। अमा = अंधेरी रात। कज्जल अश्रुओं = एकदम साफ आंसुओं की तरह बारिश का पानी। तिल बुझे = जिन आँखों के काले। चितवन = दृष्टि। शूल = कांटे। अंक संसृति = सृष्टि की गोद में। स्वर्ण बेला = सुनहली सुबह। विस्मित = आश्चर्य से भरा हुआ। भरू भंगिमा = भौंहों के संचालन। उर अचंचल = स्थिर भाव से युक्त हृदय। स्वप्न शतदल= कमल के फूल की तरह खिले हुए सपने। दुकेला = विरह में दोनों पक्षों के अस्तित्वान होने का भाव।

संदर्भ : 'पंथ होने दो अपरिचित' शीर्षक यह प्रस्तुत कविता गीत दीपशिखा (1942) से संग्रहीत है।

प्रसंग : 'दीपशिखा' की कविताओं में महादेवी वर्मा की वैचारिक मजबूती दिखलाई पड़ती है। महादेवी वर्मा के साहित्यिक कर्म में हम आसानी से देख सकते हैं कि वहाँ एक नई रचनात्मक ज़मीन तलाशने का अरमान है। भले ही इसके लिए कितनी ही कठिनायी क्यों न झेलनी पड़ें और कितनी ही कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े। ऐसी कठिनाइयों का विश्लेषण और फिर उनपर विजय प्राप्त करने के लिए उनका सामना करना, निर्माण और सृजन की राह बनाना है।

व्याख्या : इस कविता में महादेवी कहती है कि मै जिस रास्ते पर चलना चाहती हूँ वह मेरे लिए नया हो सकता है लेकिन अपरिचित या परिचय का मोहताज नहीं हो सकता। हालांकि मुझे उस रास्ते की कठिनाइयों और कष्टों का अनुमान भी हो सकता है। यह भी संभव है कि इस यात्रा में मेरा सहायता करने वाला कोई न हों। संभव है कि मेरा सहारा केवल मेरा आत्मबल हो तब भी कोई बात नहीं। महादेवी पूर्ण विश्वास के साथ कहती है कि पंथ, रास्ते को अपरिचित होने दो

और मेरे प्राणों को अकेला रहने दो। मैं पीछे नहीं हटूँगी। यह रास्ता प्रिय तक पहुँचाने वाला जय। इस कविता में जिन दो अर्थों कि संभावना व्यक्त की जाती है उनमें से एक स्त्री के संघर्ष से जुड़ा हुआ है और दूसरा पीरी के पथ पर चलने में हीनेवाली दुश्वारियों के बारे में।

महादेवी कहती है कि यदि मेरी छाया अमावस्या की काली रात बनकर छा जाये, घिरे बादलों से ऐसे बारिश हो मानों निर्मल आँसू बरस रहे हों। फिर भी मै हार नहीं मानूँगी। वे दूसरों की अंखे होंगी जो कठिन समय आने पर दुख के साथ सुख जाती अहि। उन आँखों का सौंदर्य बुझ जाता है, पलकें रूखी हो जाती है। मेरी हिम्मत तो यह है कि उन गीली आँखों में भी मैंने निगाहों की चमक बनाए राखी है, जैसे बरसते हुये आसमान में सैकड़ों बिजलियाँ ऐसे चमकती है मानों निरंतर दीप जल रहे हों और रौशनी झलमला रही है।

इस कविता में आगे वह कहती है कि वह किसी और तरह के लोग होंगे जिनके कदम परेशानियों के कारण रुक जाते है, हार मान जाते है। वे दूसरे ढंग क लोग होंगे जो रास्तों के काँटों को अपने संकल्प सौंप कर हारे हुये मन के साथ लौट जाते होंगे। मेरे पाँव अमरत्व की यात्रा कर रहे हैं। वे मृत्यु के भाय से मुक्त है। उन्होने दुख को व्रत की तरह स्वीकार किया है और वे निर्माण के प्रति उन्माद के स्तर तक संकल्प ग्रहण कर चुके है। अर्थात महादेवी कहती है कि मै हार नहीं मानूँगी और न ही उस हार को स्वीकार करूंगी। मेरे यही कदम इस संसार के गोद में है फैले अंधेरे के बीच एक सुनहले सबेरे का निर्माण करेंगे।

हार मान जाने वालो की कहानी दूसरे तरह की होगी जहाँ संघर्ष करनेवालों की आवाज़ शून्य में सिमटकर रह जाएगी और उनकी हरेक निशानी समय के साथ धूल में खो जाएगी। परंतु मेरे साथ यह सब नहीं होगा। मै मोतियों की हात और चिंगारियों का मेला लगा रही हूँ अर्थात मै अपने आसुओं को क्रांति के रूप में ढाल देना चाहती हूँ। इसलिए आज इस हाट और मेला पर प्रलय भी आश्चर्य में हैं। जो प्रलय मुझे खत्म करने आया था, मिटाने आया था वह अब मेरी हिम्मत को देखकर आश्चर्य में हैं।

कविता के अंत में महादेवी वर्मा मानों किसी अज्ञात और अनंत प्रियतम को संबोधित करते हुये कहती है कि तुम चाहे प्रसन्न रहनेवाले वसंत को अपने दूत बनाकर मेरे पास भेजो या भौंह चढ़ाकर रोष प्रकट करनेवाले पतझड़ को। मेरा हृदय सब कुछ सह लेगा। मेरा हृदय अचंचल रहकर अपने दुख के आँसुओं और कमाल की तरह सुंदर सपनों को लेकर तुमसे मिलेगा। एक बात तो स्पष्ट है कि वह मिलन मुझे अकेला कर देगा, क्योंकि संघर्ष की जिन प्रेरणाओं ने मेरे

व्यक्तित्व का निर्माण किया है उन सबकी पूर्णाहुति इस मिलन में हो जाएगा। यह मिलन मेरे तुम्हारे द्वैत को खत्म कर देगा। द्वैत की समाप्ति मानो हमारे अस्तित्व व्यक्तित्व को घुला मिला लेने के समान है। इस तरह यह मिलन मुझे एकाकी हो जाने के एहसास से परिचित करा देगा जबकोई विरह की स्थिति में मुझे एहसास है कि तुम भी हो और मै भी हूँ। जिसके लिए मिलन एकाकी हो जाने का भाव है और विरह में दोनों के अस्तित्वान होने के भाव बना रहता है।

महादेवी के भीतर यह, निर्माण-उन्मद, कुछ नया कर गुज़रने के लिए एक ललक भर नहीं है। यह एक निर्माणाकांक्षा है जो अंधकार के वजूद को पूरी तरह स्वीकार कर, बड़ी शिद्दत के साथ उजाले के लिए जूझती है। यह तिमिर में स्वर्ण- वेला की तलाश है।

काव्यगत विशेषताएँ

'दीपशिखा' संग्रह से लिया गया प्रस्तुत गीत महादेवी वर्मा की वैचारिकता की दृढ़ता का परिचायक है।

यह गीत अपने अर्थ के संदर्भ में दुहरा अर्थ रखता है। एक अर्थ स्त्री के संघर्ष से जुड़ा हुआ है, वहीं दूसरा अर्थ प्रिय पथ पर चलने वाली कठिनाइयों से संबंधित है।

इसमें महादेवी मानो अपने अज्ञात और अनंत प्रियतम को भी संबोधित कर रही हैं।

बोध प्रश्न

- 'मिलन है एकाकी/ विरह में है दुकेला' से महादेवी का क्या अभिप्राय है?
- प्रस्तुत कविता में महादेवी किस पर दृढ़ होने की बात करती हैं?
- महादेवी वर्मा इस कविता में स्त्री के किस रूप की बात करती हैं, बताएँ।

कितनी करुणा कितने संदेश .... जो तुम आ जाते एक बार

शब्दार्थ : तार-तार = छिन्न भिन्न कर देना। अनुराग = प्रेम। उन्माद = सनक, भ्रम। पखार = जल से साफ करने का काम। आर्द्रनाद = नम आवाज। विषाद = दुख। विराग = अरुचि, राग का अभाव। सर्वस्व = सभी कुछ।

संदर्भ : यह कविता महादेवी के प्रथम काव्य संग्रह 'नीहार' (1930) से ग्रहीत है।

प्रसंग : महादेवी वर्मा प्रस्तुत कविता में अपने प्रियतम के आने के बाद जो बदली हुई परिस्थितियाँ बनेगी उसका वर्णन किया है। कविता प्रिय के संभावित आगमन के स्वागत की मधुर कल्पनाओं से सराबोर है। छायावादी कवियित्री महादेवी वर्मा के इन शब्दों को जो चाहे वो गा सकता है। ऐसी अवस्था जो मन के तार झंकृत कर दे, उल्लास भर दे तिस पर आसुओं का

दुर्गम संयोग यह प्रेम की वह स्थिति है जहाँ प्रेमी/प्रेयसी का आगमन हो रहा हो। महादेवी जी ने इस कविता में भावों का जो संपुट डाला है वो अद्‌भुत है।

व्याख्या : महादेवी वर्मा द्वारा रचित कविता 'जो तुम आ जाते एक' से ली गई इन काव्य पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री एक स्त्री के उसके प्रियतम के मिलन से उत्पन्न होने वाली उस तीव्र अभिलाषा का वर्णन किया है। प्रियतम के आने के बाद पैदा होने वाले प्रभाव की कल्पना का बड़ा ही भावपूर्ण चित्रण है। महादेवी वर्मा अपनी कविताओं में रहस्यवादी तत्वों को भी शामिल करती थी। अज्ञात के प्रति उनका प्रेम उनकी कविताओं की एक विशेषता ही हैं। यह कविता में एक छायावादी रहस्यवादी गीत हैं। यहाँ प्रियतम का एक अर्थ परमात्मा से भी हैं। आत्मा परमात्मा से मिलकर माधुर्य से भर उठता है और उसके न होने से उत्पन्न होने वाले सभी विराग, दुख समाप्त हो जाते है। यहाँ कविता में प्राणों में वीणा की कल्पना की गई है। जिस प्रकार लौकिक जीवन में प्रेमी प्रेमिका आपस में मिलने के लिए व्याकुल रहते है उसी तरह आत्मा और परमात्मा के मिलन को लेकर भी चर्चा रहती है। इस छायावादी गीत में महादेवी वर्मा ने उस चीर सुंदर, अज्ञात से मिलने की अपनी तीव्र इच्छा प्रकट की हैं।

महादेवी वर्मा की कविता में संवेदनात्मक स्तर पर जो भाव, शक्ति बनकर उपस्थित होते हैं उनके मूल में लौकिक प्रेम के अनुभव के साथ रहस्यात्मक अध्यात्मिकता की भी मौजूदगी देखने को मिलती है। अखंड चेतन को पुष्प व्यक्तित्व के रूप में रखने वाली महादेवी भारतीय नारी के सम्मान और उसकी श्रद्धेय पवित्रतता को कविता की ऊर्जा बनाकर उसमें त्याग और तप का आलोक बाहर देती है। उनके संकल्प की अनुभूति नारी के स्नेह भरे आत्मदानी व्यक्तित्व को, अंधकार से टकरा प्रेम के दीप को सदैव प्रज्ज्वलित करते रहने का सांस्कृतिक चेतना को मार्मिक अभिव्यक्ति इस कविता में की हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

छायावादी काव्य चेतना को यह कविता प्रस्तुत करती है।

प्रियतम से मिलने की आकांक्षा मौजूद है और उसके आने से क्या बदलाव हो जाएगा यह कवयित्री ने वर्णित किया हैं।

रहस्यवाद की भी पुष्टि है, जिससे मिलने की आकांक्षा है वह अज्ञात हैं।

बोध प्रश्न

- 'जो तुम आ जाते' कविता में महादेवी वर्मा किसके आने की बात करती है।

- प्रियतम के आने पर पथ में क्या बिछ जाते?
- महादेवी वर्मा के इस कविता के मूल में क्या है?

16.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

महादेवी ने प्रकृति के उपकरणों में जिस सौंदर्य के दर्शन किए, उसी से उनका प्रणयानुभूति का उदभव हुआ और इसी विराट सौंदर्य के प्रति वह अपने प्रणयोद्गार व्यक्त करती रही। सौंदर्य तो प्रेम का प्रेरक होता है। फिर अपार, अथाह, असीम सौंदर्य किससे हृदय का प्रणय से उद्वेलित नहीं कर देगा। महादेवी में अपने इस आलौकिक प्रिय से मिलने की तीव्र इच्छा है। इस प्रकार प्रणय के अनेकानेक मनोभावों के चित्रण उनकी कविताओं में भरे पड़े हैं वहाँ स्त्री सुलभ लाज संकोच के भी दर्शन होते हैं।

महादेवी की विरह वेदना में निश्चलता और सात्विकता के दर्शन होते हैं। विरह रूपी संगीत महादेवी की आत्मा को झंकृत करता है तथा वेदना इनके जीवन के प्रकाशमान करती है। विरह की सात्विकता महादेवी की कविताओं में विश्व वेदना बन जाती है। उनकी पीड़ा हृदय की शांत और गंभीर पीड़ा थी। चिर विरह की भावना के कारण महादेवी की कविताओं में उनके हृदय की करुणा दिखाई देती है। करुणा से भरी होने के कारण महादेवी की वेदना भी परिष्कृत रूप में अभिव्यक्त हुई है। महादेवी जी ने अपने काव्य में एक तरफ तो भारतीय नारी के असंतोष, निराशा और अकांक्षा स्वर मुखरित हुई है।

महादेवी वर्मा के काव्य का मुख्य शृंगार उसका काव्य रूप ही है और वह है उसका सफल रूप से गीतिभाजन। इसी के कारण वे आधुनिक युग की मिरा भी काही जाती हैं। उनका गीतिकाव्य एक कोमल मेधु खंड की तरह बरसता है और युग की सभी ज्वालाओं को शीतलता प्रदान करता है। यह अभिव्यक्ति का समर्थ माध्यम बनकर यहाँ आता है। आत्मानुभूति का चित्रांकन, स्वर संगीत और शब्द योजना का सुंदर संयोजन, आरोह-अवरोह का निर्माण तथा भावानुकूल भाषा एवं शैली विधान सभी उनकी व्यापक करुणा को शक्ति प्रदान करते है। इस पाठ में शामिल दोनों कविताओं को गीतिकाव्य की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के बतौर देखा जा सकता हैं।

महादेवी वर्मा की काव्य भाषा अनेकों गुणों एवं भाषिक विशेषताओं से युक्त है। गेयता के साथ-साथ कोमल भाषा में खड़ी बोली का परिष्कृत एवं काव्योचित रूप सहज ही देखा जा सकता हैं। नए शब्दों का सृजन, विशिष्ट अर्थ भरने की काला, लक्षणिकता, रमणीय बिम्ब एवं

प्रतीक विधान की अभिव्यक्ति, शब्द निरूपण, वर्ण विन्यास, नाद सौंदर्य तथा उक्ति सौंदर्य का मार्मिक निर्वाह उनकी कविता की प्राणशक्ति है। तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज तथा प्रतीक शब्दों का उचित प्रयोग उनके काव्य कौशल को ही प्रदर्शित करता है।

महादेवी वर्मा की प्रतीकात्मक संकेत भाषा उनकी कविता का विशिष्ट पहचान हैं। दीपक, बादल, नीर, आँसू, पतवार आदि प्रतीकों का प्रयोग उनके काव्य सौंदर्य को समृद्ध करता हौ। जीवन के विविध क्षेत्रों के लिए प्रतीक निश्चित ही महादेवी की सूक्ष्म एवं गहन कल्पना का परिचय देते हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से उनकी मनोवैज्ञानिक सूझ-बुझ का भी पता चलता है। प्रकृति, पुराण एवं संस्कृति के प्रतीकों के प्रति उनका विशेष झुकाव दिखलाई पड़ता हैं। भाषा में खनक के साथ अलंकारों का सुंदर प्रयोग उनकी कविता को हिंदी साहित्य में विशेष स्थान प्रदान करता है।

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा की कविताओं का मुख्य काव्य रूप क्या है?
- महादेवी के विरह वेदना में किस तरह के दर्शन होते हैं?
- सौंदर्य किसका प्रेरक होता है?
- प्रतीक योजना के तहत महादेवी वर्मा के किस सूझ-बुझ का पता चलता हैं।

16.4 पाठ सार

इस इकाई में आपने छायावाद की अंतिम स्तंभ कवयित्री महादेवी वर्मा की दो कविताओं का अध्ययन किया है। इन कविताओं के मूल प्रतिपाद्य को सारांश के रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है। 'पंथ होने दो अपरिचित' कविता में महादेवी वर्मा प्रेरित कर रही है कि अपार दुख में भी संघर्ष की इच्छा शक्ति को नहीं छोडना चाहिए। इस कविता में अपनी दृढ़ वैचारिकी का परिचय देते हुये वह कहती है कि विपरीत परिस्थितियों में भी कोशिश बंद नहीं करनी चाहिए।

'जो तुम आ जाते' कविता प्रियतम के आने को लेकर है। दूसरी अन्य कविताओं की तरह इस कविता में भी प्रेम मूल भाव है। उन्होंने इस कविता में प्रेम के मधुर रूप का चयन किया है। क्योंकि माधुर्य को, वह प्रेम को महत्वपूर्ण गुण मानती है।

हृदय के अनेक रागात्मक संबंधों में माधुर्यमूलक प्रेम ही उस सामंजस्य तक पहुंच सकता है जो सब रेखाओं में रंग भर सके, सब रूपों को सजीवता दे सके और आत्म निवेदन को इष्ट के

साथ समता के धरातल पर खड़ा कर सके। इस कविता में छायावादी साहचर्य का भाव मौजूद है।

16.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. महादेवी के गीत विषय वस्तु और भाषा-शैली की दृष्टि से छायावाद के प्रौढ़तम रूप के उदाहरण हैं।
2. महादेवी के काव्य में रहस्य भावना के साथ स्त्री जीवन की वेदना भी ध्वनित होती है।
3. महादेवी की कविताओं में प्रेम का विरह पक्ष प्रधान है, जो उनके स्व की अभिव्यक्ति के रूप में आया है।
4. महादेवी वर्मा का अप्रस्तुत विधान, प्रतीक प्रयोग और बिंब निर्माण छायावादी काव्य भाषा के सर्वथा अनुरूप हैं।

16.6 शब्द संपदा

1. अज्ञात = न जाना हुआ
2. अमरत्व = अमर होने की अवस्था
3. झलमला = चमकीला
4. प्रतिनिधि = प्रतिरूप, किसी के स्थान पर
5. माधुर्यमूलक = शोभा युक्त सुंदरता
6. रागात्मक = प्रेममय
7. संवेदनात्मक = अनुभूति से जुड़ा हुआ
8. सराबोर = तरबतर
9. साहचर्य = संग,साथ

16.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. महादेवी वर्मा की कविताओं की विशिष्ट पहचान क्या है?

2. महादेवी वर्मा की चयनित कविताओं में अभिव्यकट प्रतीक योजना के बारे में लिखें।

3. महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मिरा क्यों कहा जाता है?

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'पंथ होने दो अपरिचित' कविता में महादेवी वर्मा किस इच्छा शक्ति को नहीं छोडने की बात कर रही हैं?
2. 'जो तुम आ जाते' कविता में प्रेम के अतिरिक्त और कौन सा छायावादी तत्व विद्यमान है?
3. महादेवी वर्मा के कविताओं में किसके जीवन का संघर्ष दिखलाई पड़ता हैं?

I. सही विकल्प चुने -

1. 'पंथ होने दो अपरिचित' कविता किस काव्य संग्रह सी ली गई है? ( )

   (अ) नीहार (आ) दीपशिखा (इ) नीरजा (ई) रश्मि

2. महादेवी की कविताओं में क्या प्रधान है? ( )

   (अ) प्रेम का विरह पक्ष (आ) प्रेम का संयोग पक्ष (इ) युद्ध वर्णन (ई) प्रकृति चित्रण

3. महादेवी वर्मा किस तरह की कवि मनी जाती है? ( )

   (अ) हालावादी (आ) प्रयोगवादी (इ) प्रगतिवादी (ई) रहस्यवादी

II. रिक्त स्थान की पूर्ति करें -

1. महादेवी वर्मा ने एम ए की पढ़ाई ....शहर से की थी।
2. करुणा, संदेश .... बनकर बिछ जाते।
3. महादेवी वर्मा का प्रथम काव्य संग्रह ……....................है।
4. दीपशिखा में दीप .... का प्रतीक है।

III. सुमेल कीजिए -

1. दीपशिखा	अ) कवयित्री
2. नीहार	आ) रहस्यवाद
3. महादेवी	इ) 1930
4. छायावाद	ई) 1942

16.8 पठनीय पुस्तकें

1. महादेवी वर्मा : इन्द्रनाथ मदान

2. महादेवी नया मूल्यांकन : गणपति चन्द्रगुप्त

3. महादेवी : सं. परमानंद श्रीवास्तव

इकाई 17 : रामधारी सिंह 'दिनकर' : एक परिचय

रूपरेखा

17.1 प्रस्तावना

17.2 उद्देश्य

17.3 मूल पाठ : रामधारी सिंह 'दिनकर' : एक परिचय

17.3.1 दिनकर का व्यक्तित्व

17.3.2 दिनकर की काव्य यात्रा

17.3.3 दिनकर का काव्य दर्शन

17.3.4 दिनकर की काव्य-भाषा

17.4 पाठ सार

17.5 पाठ की उपलब्धियाँ

17.6 शब्द संपदा

17.7 परीक्षार्थ

17.8 पठनीय पुस्तकें

17.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप इस पाठ में रामधारी सिंह 'दिनकर' के बारे में अध्ययन करेंगे। हिंदी साहित्य में लौह पुरुष के नाम से विख्यात रामधारी सिंह 'दिनकर' युगद्रष्टा कवि हैं। उन्होंने अपने युगधर्म को समझकर राष्ट्र के अतीत, वर्तमान और भविष्य को समन्वित करने का प्रयास किया है। तो आइए, ऐसे महान साहित्यकार के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करेंगे।

17.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- दिनकर के व्यक्तित्व के विविध आयामों को समझ सकेंगे।
- दिनकर की काव्य यात्रा के पड़ावों से परिचित हो सकेंगे।
- दिनकर के काव्य में निहित राष्ट्रीय भावना को समझ सकेंगे।
- दिनकर की काव्य-भाषा की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
- दिनकर की वैचारिकता से अवगत हो सकेंगे।

17.3 मूल पाठ : रामधारी सिंह 'दिनकर' : एक परिचय

प्रिय छात्रो! आप इस इकाई में दिनकर के व्यक्तित्व और कृतित्व से संबंधित पहलुओं का अध्ययन करेंगे।

17.3.1 दिनकर का व्यक्तित्व

छात्रो! अब हम दिनकर के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को देखेंगे जो इस प्रकार हैं -

जन्म एवं परिवार

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितंबर, 1908 को बिहार प्रांत के मुंगेर जिले के सिमरिया गाँव में बाबू रवि सिंह और मनरूप देवी के घर मझले पुत्र के रूप में हुआ था। दिनकर का जन्म उस समय हुआ था जब देश अंग्रेजों के अत्याचारों से त्रस्त था। उनके पिता एक ठेठ किसान थे जिनके पास अपना कहने को केवल फूस की झोपड़ी थी। दिनकर केवल दो वर्ष के थे तभी उनके पिता की मृत्यु हो गई। परिवार के मुखिया की मृत्यु हो जाने से पूरा परिवार बिखर गया था। ऐसे में उनकी माता मनरूप देवी ने अपनी कर्मशक्ति और इच्छाशक्ति के द्वारा न केवल अपने परिवार को आगे बढ़ाया बल्कि अपनी संतानों को शिक्षित बनाने का बीड़ा भी उठाया।

बोध प्रश्न

- रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म कब हुआ?
- दिनकर के परिवार के बारे में आप क्या जानते हैं?

शिक्षा और व्यक्तित्व

दिनकर को शिक्षित करने में उनकी माँ मनरूप देवी का बहुत बड़ा योगदान रहा। वे जानती थी कि परिस्थितियों से हार मानकर अपने आपको समय के आगे समर्पित कर देने से समस्याएँ समाप्त नहीं होतीं। शिक्षा एक ऐसा अस्त्र है जिसके द्वारा बहुत सारी समस्याओं का समाधान मिल जाता है। अगर समाधान न भी मिले, पर आत्मबल तो मिलता ही है। इसी विचार के साथ उन्होंने पाँच वर्ष की अवस्था से ही दिनकर को विद्यालय भेजना शुरू कर दिया। दिनकर ने भी माँ को निराश नहीं किया। वे प्रारंभ से ही एक कुशल छात्र थे। उनकी बुद्धि बड़ी तेज थी लेकिन घर की परिस्थितियाँ इतनी खराब थीं कि दीया जलाकर उन्हें अपनी पढ़ाई करनी पड़ती थी। इसके संबंध में उन्होंने स्वयं लिखा है, 'टिमटिम दीपक के प्रकाश में पढ़ते निज

पोथी शिशुगण।' दिनकर ने माँ की सहायता के लिए गाय-भैंस चराना भी शुरू कर दिया था।

पाँचवीं कक्षा पास करने के बाद दिनकर का नाम बारो गाँव के नेशनल मिडिल स्कूल में लिखवा दिया गया, परंतु अभी वे सातवीं कक्षा में ही थे कि तो वह स्कूल बंद हो गया। तब उनका नाम बारो में ही सरकारी मिडिल स्कूल में लिखवा दिया गया। लेकिन इन सारी बातों के बावजूद उनकी मेधा-शक्ति का विकास बड़ी तेजी से हो रहा था। सातवीं क्लास में हिंदी में सर्वाधिक अंक लाने पर उन्हें एक बार 'रामचरितमानस' और एक बार 'सूरसागर' जैसे ग्रंथ पुरस्कार स्वरूप प्राप्त हुए। सातवीं कक्षा पास करने के बाद आठवीं कक्षा के लिए मोकामा घाट के जेम्स वाकर स्कूल में भर्ती हुए।

दिनकर जी के गाँव सिमरिया और मोकामा के बीच गंगा नदी बहती है। स्टीमर और नाव की व्यवस्था तो उस समय भी थी, लेकिन इन सबका खर्चा उठाने की शक्ति दिनकर के पास नहीं थी। घर से मात्र एक धोती-कुर्ता पहनकर वे नंगे पाँव पैदल मोकामा घाट पहुँचते और वहाँ से तैर कर गंगा नदी पार करके अपने स्कूल पहुँचते थे। "जिस प्रकार कंचन आग में तपकर कुंदन बनता है, उसी प्रकार दिनकर समय की कठोर अग्नि में तपकर श्रेष्ठतम मानव तथा महानतम रचनाकार बनें।" सन् 1928 में अर्थात 20 वर्ष की आयु में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। मैट्रिक की परीक्षा में उनको पूरे जनपद में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए। उनकी इस उपलब्धि के कारण उन्हें बिहार सरकार के द्वारा 'भूदेव' पदक दिया गया।

मैट्रिक पास करने के बाद दिनकर को उच्च शिक्षा के लिए पटना जाना पड़ा। उन्होंने पटना कॉलेज में अपना नाम लिखवाया। वे हिंदी को अपना प्रमुख विषय बनाकर आगे की पढ़ाई करना चाहते थे, लेकिन पटना कॉलेज के प्रधान अध्यापक मि. हार्न ने उन्हें हिंदी विषय लेने की अनुमति नहीं दी। दिनकर ने इतिहास को प्रमुख विषय के रूप में लेकर बी.ए. आनर्स की परीक्षा पास की। इसी समय पारिवारिक कर्तव्यों को पूरा करने के लिए वे नौकरी की तलाश कर रहे थे और उन्होंने बिहार सरकार के मंत्री गणेश दत्त सिंह से सहायता भी माँगी लेकिन गणेश दत्त सिंह ने सहायता नहीं की, अपितु यह कह दिया - 'जाओ कहीं जाकर मास्टरी करो।' काफी परिश्रम के बाद उन्हें बरबिघा के एक नए उच्च विद्यालय में प्रधानाध्यापक का पद मिल। उन्होंने यह नौकरी एक साल ही किया क्योंकि सितंबर 1934 में उनकी नियुक्ति बिहार सरकार के राजस्व विभाग में सब-रजिस्ट्रार के पद पर हुई थी। इस नौकरी के मिलने पर उन्हें पारिवारिक रूप से तो निश्चिंतता हुई, परंतु यहीं से शुरू हुई उनकी औपनिवेशिक सरकार के नौकरी की

अन्यतम समस्याएँ। उनका व्यक्तिगत जीवन संघर्षशील रहा।

दिनकर का व्यक्तित्व प्रभावशाली था। गोरा चिट्टा रंग, पाँच फुट ग्यारह इंच लंबाई, भारी भरकम शरीर, बड़ी-बड़ी आँखें जो किसी रचना के संबंध में चिंतन करते समय थोड़ी-सी सिकुड़कर क्लिष्ट-सी हो जाती थीं, परंतु बात करते समय अथवा कविता पाठ करते समय तेजोदीप्त हो उठतीं। दिनकर के व्यक्तित्व की एक और विशेषता यह भी थी कि वे हाजिरजवाबी थे। वे न तो किसी की अनुचित बात को सहन करते थे और न ही किसी की चाटुकारिता करना उन्हें पसंद था। इन्हीं विशेषताओं के कारण उन्हें कुछ लोग अहंकारी भी कहते थे। इस क्रांतिकारी कवि को दूसरों के कथन की अपेक्षा अपने स्वभाव पर ज्यादा विश्वास था। वे बहुत अच्छा काव्यपाठ भी करते थे। उनकी वाणी प्रभावोत्पादक थी।

भगवतीचरण वर्मा ने दिनकर के व्यक्तित्व के संबंध में लिखा है, “जैसे पंत को देखते ही कोमलता और संयमता का प्रभाव उत्पन्न हो जाता है, वैसे ही निराला और दिनकर के दर्शन मात्र से ही पौरुष और प्रभुत्व की याद आ जाती है। कलाकार की हैसियत से मैं दिनकर को अधिक स्पष्ट और ईमानदार मानता हूँ। दिनकर अपनी भावनाओं की सीमा छोड़ने को कहीं भी तैयार नहीं है। कहीं भी आरोपित विश्वासों का सहारा दिनकर ने नहीं लिया है।”

बोध प्रश्न

- दिनकर की शिक्षा किन परिस्थितियों में आगे बढ़ी?
- दिनकर के व्यक्तित्व की कुछ विशेषताएँ लिखिए।
- ‘भूदेव’ पदक दिनकर को क्यों मिला?
- दिनकर के व्यक्तित्व के संबंध में भगवतीचरण वर्मा ने क्या लिखा है?

गृहस्थ जीवन

दिनकर के समय में विवाह बहुत जल्दी हो जाया करते थे। दिनकर जब 12-13 साल के थे तभी से उनके विवाह के लिए प्रस्ताव आने लगे थे। परिवारवालों ने रक्षा ठाकुर की कन्या श्यामवती के साथ उनका विवाह करवा दिया। प्रथानुसार गौना बाद में करवाया गया था। उनके गृहस्थ जीवन की शुरूआत अच्छी थी। श्यामवती देवी पतिभक्त महिला थीं। उनकी चार संतानें हुईं। दो पुत्र रामसेवक सिंह तथा केदारनाथ सिंह तथा दो पुत्रियाँ विनीता देवी और विभा देवी। दिनकर का गृहस्थ जीवन सफल और सुखी था लेकिन पैसे के लिए होनेवाले संघर्ष ने उनके परिवार के प्रेम को नष्ट कर दिया था।

दिनकर ने 'उदयाचल' नामक प्रकाशन संस्था की स्थापना की थी। बड़े बेटे रामसेवक सिंह को उन्होंने इस संस्था को परिवार के साथ जोड़कर आगे ले जाने की जिम्मेदारी सौंपी थी। लेकिन रामसेवक न तो प्रकाशन के कार्य को ठीक प्रकार से संभाल सके और न ही परिवार को जोड़कर रख सके। बाद में उन्हें कोई असाध्य रोग भी हो गया जिसके कारण उनकी मृत्यु हुई। जिस आयु में दिनकर को आराम करना चाहिए था उस आयु में विधवा पुत्रवधू और पाँच अनाथ पोते-पोतियों का बोझ उन पर आ गया। इस तरह फिर से उनका जीवन संघर्षशील बन गया।

दिनकर को सन् 1973 में हल्का पक्षाघात हुआ लेकिन उनकी कार्य करने की शैली में कोई परिवर्तन नहीं आया। एक दिन उन्हें चेन्नै जाना था। वहाँ से वे तिरुपति जाना चाहते थे। उनकी नातिन उषा ने उनसे तुतलाती जुबान में पूछा, 'आप तिरुपति क्यों जा रहे हैं नाना!' दिनकर ने हँसकर कहा, 'मौत माँगने जा रहा हूँ।' उन्होंने तिरुपति में बालाजी का दर्शन किया लेकिन वहाँ से वापस नहीं लौट सके। सन् 24 अप्रैल, 1974 में तिरुपति में दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हुई।

बोध प्रश्न

- दिनकर का जीवन किस प्रकार था?
- दिनकर ने किस प्रकाशन संस्था को स्थापित किया था?

पुरस्कार एवं सम्मान

1948 : 'कुरुक्षेत्र' के लिए काशी नागरी प्रचारिणी सभा, उत्तर प्रदेश सरकार तथा भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत।

1956 : 'संस्कृति के चार अध्याय' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार के द्वारा पुरस्कृत।

1959 : 'पद्मभूषण' से सम्मानित।

1962 : भागलपुर की विश्वविद्यालय द्वारा साहित्य के क्षेत्र में मानद डॉक्टर की उपाधि से सम्मानित।

: 'सरस्वती' पत्रिका की हीरक-जयंती के उपलक्ष्य में मानपत्र से राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त द्वारा सम्मानित।

1965 : गुरुकुल महाविद्यालय द्वारा 'विद्यावाचस्पति' उपाधि से सम्मानित।

1968 : राजस्थान विद्यापीठ द्वारा 'साहित्य चूड़ामणि' उपाधि से सम्मानित।

1973 : 'उर्वशी' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित।

17.3.2 दिनकर की काव्य यात्रा

छात्रो! दिनकर का बचपन संघर्षशील रहा। जीवन संघर्षों के साथ-साथ वे अपनी रचनात्मक यात्रा को आगे बढ़ा रहे थे। दिनकर ने मात्र 12 वर्ष की आयु में सन् 1920 में महात्मा गांधी का प्रथम दर्शन किया। गांधी जी की बातों ने दिनकर के बाल मन को बहुत प्रभावित किया था। तभी से वे मन से राष्ट्रवादी बन गए थे। लगभग इसी वर्ष उन्होंने अपने गाँव सिमरिया में मनोरंजन पुस्तकालय की स्थापना भी की थी। वे एक हस्तलिखित समाचार पत्र का संपादन भी करते थे।

बोध प्रश्न

- गांधी जी से दिनकर किस प्रकार प्रभावित हुए?

दिनकर की पारिवारिक परिस्थितियाँ ऐसी नहीं थी कि वे राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से सत्याग्रही बनकर कूद पड़ते, लेकिन उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय क्रांति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। दिनकर की शिक्षा और काव्य लेखन दोनों साथ-साथ चल रहें थे। एक तरफ जहाँ वे अपने घर-परिवार के लिए शिक्षा के माध्यम से अपने जीवन की राह तलाश कर रहे थे, वहीं दूसरी तरफ अपने काव्य के माध्यम से युवा मन के आक्रोश को भी अभिव्यक्ति दे रहे थे।

छात्रो! क्या आप जानते हैं कि रामधारी सिंह का नाम 'दिनकर' कैसे पड़ा? इसकी भी एक रोचक कहानी है। उन दिनों बेगूसराय से 'प्रकाश' नामक मासिक पत्रिका निकलती थी। रामधारी सिंह इस पत्रिका में नियमित लिखा करते थे। एक दिन उनके कुछ मित्रों ने उन से कहा कि रामधारी सिंह नाम कुछ बड़ा लगता है। अतः क्यों न कोई उपनाम रख लें। दिनकर को मित्रों की यह बात अच्छी लगी, परंतु क्या नाम रखें इस संबंध में वे कई दिनों तक विचार करते रहे। आखिरकार उनके मन में एक विचार कौंध गया। उनके पिता का नाम रवि सिंह था। रवि के पुत्र दिनकर, दिनकर प्रकाश का स्रोत भी है और उनका उद्देश्य अपने काव्य के माध्यम से प्रकाश फैलाना ही तो है, अतः क्यों न 'दिनकर' उपनाम का ही प्रयोग किया जाए। यह विचार जब उन्होंने अपने मित्रों के सामने रखा तो सभी को बहुत पसंद आया। इस तरह रामधारी सिंह, 'दिनकर' बन गए।

बोध प्रश्न

- 'दिनकर' उपनाम कैसे पड़ा?

छायावाद का कल्पना-लोक इस क्रांतिकारी कवि को बहुत समय तक अपने मोहपाश में बाँध नहीं पाया। वह ऐसा समय था जब ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध आक्रोश अत्यंत तीव्र होता जा रहा था। दिनकर इतिहास के विद्यार्थी होने के कारण देश-विदेश के इतिहास को पढ़ रहे थे। वे फ्रांस की राज्यक्रांति, अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम, मार्क्स और लेनिन के विचार आदि का अवलोकन कर रहे थे। परिणामस्वरूप उनके मन में अंतर्द्वंद्व पैदा होने लगा। उनके सामने एक ओर विश्व में हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध जनता का आक्रोश था तो दूसरी ओर गाँव का घोर अंधकार। यह सब देखकर दिनकर का कवि-मन आक्रोश से भरने लगा। इन परिस्थितियों के कारण ही उनका मन छायावादी कल्पना लोक से निकलकर वर्तमान के कठोर धरातल पर आ खड़ा हुआ।

बोध प्रश्न

- किन परिस्थितियों के कारण दिनकर का कवि-मन आक्रोश से भरने लगा?

1933 तक आते-आते दिनकर की काव्य प्रतिभा ने अपने लिए दिशा तलाश कर ली थी। छायावाद की कल्पना को त्यागकर उन्होंने अपने भैरव-हुंकार के लिए शंख उठा लिया था। दिनकर के युवा मन को भी गांधी जी का अहिंसा आंदोलन बहुत अच्छा नहीं लग रहा था। उन्होंने चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों के विचारों का समर्थन किया। 'हिमालय' में उनके मन का यही आक्रोश दिखाई देता है- 'रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,/ जाने दो उनको स्वर्ग धीर,/ पर, फिर हमें गांडीव-गदा,/ लौटा दे अर्जुन-भीष्म वीर।' यहीं से उनके काव्य में उग्र राष्ट्रीय काव्यधारा बह चली जिसे क्रमशः 'हुंकार', 'कुरुक्षेत्र' और अंततः 'परशुराम की प्रतीक्षा' में देख सकते हैं।

दिनकर की इस उग्र विचारधारा की प्रतिक्रिया निश्चित रूप से सरकारी क्षेत्र में होने लगी थी। अंग्रेजी सरकार से दिनकर का पहला टकराव सन् 1934 में बिहार हिंदी सम्मेलन के छपरा अधिवेशन के समय हुआ। इस सम्मेलन में उन्होंने अध्यक्षता की थी। सरकार ने मुख्य रूप से उनसे दो सवालों के जवाब माँगे। पहला यह कि, 'कवि सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए आपने सरकार से अनुमति क्यों नहीं माँगी?' दूसरा यह कि, 'सभापति की हैसियत से कवियों को सरकार के विरुद्ध कविताएँ पढ़ने से क्यों नहीं रोका?' दिनकर ने सरकार के द्वारा पूछे गए सवालों का जवाब बड़े ही संयम के साथ दिया था। सरकार के पहले सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि, 'सांस्कृतिक सभाओं में जाने के लिए मैंने अनुमति माँगने की आवश्यकता नहीं समझी'

और दूसरे सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा था, 'कवियों को यदि कविता पढ़ने से रोका जाता तो जनता उनकी ओर और भी आकृष्ट होती।' सौभाग्यवश बात वहीं समाप्त हो गई थी लेकिन सरकार और दिनकर के बीच वैचारिक संघर्ष समाप्त नहीं हुआ। वह धीरे-धीरे बढ़ने लगा। यह भी सच है कि नौकरी को लेकर शुरू से ही उन्हें परेशानियों का सामना करना पड़ा था। जीवन के उतार-चढ़ावों ने उनको संघर्षशील, निर्भीक, स्पष्टवादी, ओजस्वी स्वर के स्वामी और स्वाभिमानी बना दिया था।

बोध प्रश्न

- क्या दिनकर गांधी जी के अहिंसक विचार से सहमत थे?
- दिनकर के स्वभाव में किन-किन गुणों को पाया जाता है?

1935 से लेकर 1940 तक उनकी चार किताबें क्रमशः 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती' और 'द्वंद्वगीत' आ चुकी थीं। 'रेणुका' में तो दिनकर की निर्भीकता स्पष्ट रूप में सामने आई थी। सन् 1940 में ही 'जनता' के सहायक संपादक ने उनसे तार द्वारा एक कविता माँगी। उस समय गांधी जी इस उधेड़-बुन में फँसे थे कि आंदोलन शुरू किया जाए या नहीं। गांधी जी के द्वंद्व को लेकर दिनकर ने 'ओ दुविधाग्रस्त शार्दूल बोल' नामक कविता रच डाली। यह कविता पूर्णतया सरकार विरोधी थी। कॉलेज के दिनों में भी दिनकर अपना नाम बदलकर 'अमिताभ' नाम से कविताएँ लिखा करते थे सो उन्होंने इस कविता में भी 'अमिताभ' नाम का प्रयोग किया। उन्होंने लिखा-

'यह तो दिनकर की सृष्टि नहीं,
अमिताभ देव की दुष्ट कर्म।'

सरकार ने सेंसर करके यह कविता तो छप जाने दी, लेकिन कलेक्टर ने उन्हें बुलाकर चेतावनी दी। उन्हें नौकरी से न निकाला कर तबादला कर दिया। तबादला तो उनके लिए साधारण सी बात हो गई। बार-बार उन्हें सरकारी अधिकारियों को जवाब भी देना पड़ता था। उन्हीं दिनों को याद करके दिनकर ने स्वयं लिखा था कि, घबराहट में आकर उन्होंने नौकरी छोड़ने के लिए अवश्य सोचा था, लेकिन नहीं तीन कारणों से नहीं छोड़ पाए। पहली तो यह कि नौकरी छूट गई तो परिवार खाएगा क्या? दूसरी यह कि हर तबादले के साथ उन्हें चार-छह दिन की छुट्टियाँ मिल जाती थीं, तो वे जयप्रकाश जी के सान्निध्य में बिताने पटना चले जाते थे और तीसरी बात यह कि जयप्रकाश जी बराबर शह देते रहते थे कि 'इस्तीफा देने के बजाय बरतरफ़ हो जाना ही श्रेष्ठ है।'

दिनकर जी को अंग्रेज सरकार ने तो आत्मसंघर्ष की तरफ धकेल दिया। उनका तबादला युद्ध-प्रचार विभाग में कर दिया। दिनकर का कवि-मन अपने इस दुर्भाग्य पर आँसू बहा रहा था। देश में उन्हीं की कविताएँ पढ़ते हुए नौजवान जिस अंग्रेजी राज्य के खिलाफ बगावत कर रहे थे वे स्वयं उसी अंग्रेजी राज की विशाल व्यवस्था के एक अवयव का पुर्जा बने हुए थे। उन्हें अपने चारों तरफ अव्यवस्था की एक धुंध-सी बिखरी नजर आ रही थी। 'आग की भीख' शीर्षक कविता में वे अपनी इसी अवस्था को दर्शाया है-

'धुंधली हुई दिशाएँ, छाने लगा कुहासा।
कुचली हुई शिखा से, आने लगा धुआँ सा।
प्यारे स्वदेश के हित अंगार माँगता हूँ।
चढ़ती जवानियों का शृंगार माँगता हूँ।'

बोध प्रश्न

- दिनकर अपनी नौकरी किन कारणों से नहीं छोड़ पा रहे थे?

दिनकर को ऐसा महसूस हो रहा था कि अंग्रेज सरकार की चाकरी करते-करते उनके अंदर की आग ठंडी हो रही है। वे छटपटाहट से भर उठे। उनके भीतर भीषण द्वंद्व चल रहा था। अपने इस अंतर्द्वंद्व को अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है-

'आगे पहाड़ को पा घटा रुकी हुई है,
बलपुंज केसरी की ग्रीवा झुकी हुई है।
निर्वाक है हिमालय गंगा डरी हुई है।
निस्तब्धता निशा की दिन में भरी हुई है।'

दिनकर की यह विवशता और पीड़ा मात्र उनकी नहीं है। उनकी इस पीड़ा के साथ देश की पीड़ा जुड़ी है। सन् 1942 के आंदोलन को भी अंग्रेजों ने बुरी तरह से कुचल दिया था। कवि मन को लग रहा था कि इस महायज्ञ की अग्नि बुझती जा रही है और वे स्वयं अंग्रेजों की गुलामी करते हुए देश के लिए कुछ नहीं कर पा रहे हैं। 'निमंत्रण' शीर्षक कविता में वे देश के संपूर्ण साहित्यकारों को इस प्रकार आमंत्रित करते हैं -

'सुलगती नहीं यज्ञ की आग।
दिशा धूमिल, यजमान अधीर।
पुरोधा कवि कोई है यहाँ।

देश को दे ज्वाला के तीर।'

स्वतंत्रता सेनानियों को उत्साहित करते हुए भी उन्होंने लिखा है-

'वह प्रदीप जो दिख रहा है झिलमिल, दूर नहीं है,
थक कर बैठ गए क्यों भाई! मंजिल दूर नहीं है।'

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय भारतीय राजनीति वास्तव में ऊहापोह की शिकार थी। हालाँकि कांग्रेस इस युद्ध में अंग्रेजों का असहयोग कर रही थी, फिर भी गांधी जी का मानवतावादी सिद्धांत इस पक्ष में नहीं था कि इस समय युद्धरत अंग्रेजों को किसी कठिनाई में डाला जाए। परिणाम यह हुआ कि राष्ट्रीय आंदोलन में एकाएक ठंडापन-सा आ गया। इस ठंडेपन से खिन्न कवि पुकार उठता है-

'शुरू हुई आराध्य भूमि यह, क्लांति नहीं रे राही।
और नहीं तो पाँव लगे हैं क्यों पड़ने डगमग से?'

दिनकर द्वितीय विश्वयुद्ध के भीषण समय में अपनी आग के साथ-साथ देश की आग को भी प्रज्वलित करने के लिए प्रयत्नशील थे। लेकिन इन सारी बातों के बावजूद उनका मन शांत नहीं था। मानसिक स्तर पर वे एक तीव्र द्वंद्व के शिकार थे। वे उस समय अंग्रेज सरकार के प्रचार विभाग में थे। चारों तरफ से वे निंदा तथा व्यंग्य बाणों को सह रहे थे। अंग्रेजी राज के विरोध में सबसे उग्र राष्ट्रीय कविताएँ लिखने वाला जनता का लाड़ला कवि इस युद्ध काल में अंग्रेज़ों की चाकरी कर रहा था। यह बात किसी को भी पच नहीं रही थी। इसी समय सन् 1945 के अंत में मुज्जफ़रपुर में 'सुहृद संघ' का वार्षिकोत्सव मनाया गया। सभापति के रूप में माखनलाल चतुर्वेदी ने कहा, 'हमारे राष्ट्रीय कवि जब चाँदी के चंद टुकड़ों पर बिकते हैं, तब हम साहित्य में राष्ट्रीयता की बात कैसे करें!' दिनकर माखनलाल चतुर्वेदी की बात से अंदर तक आहत हो गए और उन्होंने सरकार के प्रचार विभाग से त्यागपत्र दे दिया। दिनकर सरकारी सेवा से मुक्त होकर लगभग डेढ़ साल तक पत्रकारिता से जुड़े रहें। इस दौरान उन्होंने अपने लिए कुछ समय बिताया। किसी की चाकरी नहीं, किसी के प्रति जवाबदेही नहीं, केवल वे अपने विचारों और अपने साहित्य के साथ जी रहे थे। उसी समय 1946 में नोआखाली के दंगे ने मानवता को संपूर्ण रूप से तार-तार कर दिया। इस भीषण सांप्रदायिक विद्वेष से व्यथित होकर दिनकर ने 'तकदीर का बँटवारा' नाम की एक कविता लिखी जिसमें उनकी मानवीय संवेदनाएँ मूर्त रूप से प्रस्फुटित हुईं -

'नारी-नर जलते साथ हाय,
जलते हैं मांस रुधिर अपने।
जलती है वर्षों की उमंग,
जलते हैं सदियों के सपने।'

परंतु न तो कवि संवेदना काम आई और न ही करोड़ों लोगों की दुआ। 15 अगस्त, 1947 में स्वतंत्रता के साथ ही भारत और पाकिस्तान के रूप में देश विभाजन की त्रासदी को झेलना पड़ा।

बोध प्रश्न

- दिनकर को नौकरी क्यों छोड़नी पड़ी?
- नोआखाली दंगे से व्यतीत दिनकर ने क्या किया?

दिनकर के लिए द्वितीय विश्वयुद्ध के समय तक का काल संघर्षपूर्ण था। वे तन-मन दोनों से ही टूट चुके थे, लेकिन स्वतंत्रता के बाद उनके जीवन में काफी बदलाव आया। बिहार सरकार ने उन्हें पटना विश्वविद्यालय द्वारा संचालित लंगट सिंह महाविद्यालय (मुजफ्फरपुर) में हिंदी विभाग का अध्यक्ष बनाकर भेजा। यहाँ वे केवल दो साल ही रहें। अप्रैल 1952 में वे राज्यसभा के सदस्य चुन लिए गए और इस महाविद्यालय से अपना त्यागपत्र देकर दिल्ली चले गए। दिल्ली जाने के बाद दिनकर को स्वाधीन भारत की वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त हुआ। यहाँ इस क्रांतिकारी कवि ने देखा कि जिस आशा, विश्वास और सपने के साथ भारतवासियों ने अंग्रेजों के साथ युद्ध किया था, उन भावनाओं के लिए देश की राजधानी दिल्ली में बैठे नेताओं के मन में कोई श्रद्धा नहीं थी। दिनकर ने यह पाया कि लोकतंत्र तो एक छलावा बन गया था। लोकतंत्र के सिंहासन पर वे लोग बैठे थे जिन्हें आम जनता की पीड़ा, दुख-दर्द से कोई मतलब नहीं था। वे तो अपने जीवन के हास-विलास में ही व्यस्त थे। जनता भूख और बेबसी की पीड़ा से त्रस्त थी और नेता भोग-विलास में। कवि का अंतर्मन स्वतंत्रता के इस भयानक रूप को देखकर रो पड़ा। उन्होंने सन् 1954 में 'भारत का यह रेशमी नगर' शीर्षक कविता लिखी। अपनी इस कविता में उन्होंने दिल्ली का विलासपूर्ण जीवन और गाँवों की बदहाली का अत्यंत हृदयविदारक चित्र प्रस्तुत किया है-

'भारत धूलों से, भरा आँसुओं से गीला,
भारत अब भी व्याकुल विपत्ति के बारे में।

दिल्ली में तो है खूब ज्योति की चहल-पहल,
पर भटक रहा है सारा देश अंधेरे में।'

दिनकर जनप्रतिनिधियों को धिक्कारते हुए कहते हैं-

'चिंता हो भी क्यों तुम्हें? गाँव के जलने से
दिल्ली में तो रोटियाँ नहीं कम होती हैं।
घुलाता न अश्रु बूंदों से आँखों का काजल,
गालों पर की धूलियाँ नहीं नम होती हैं।'

दिनकर आजीवन सामाजिक विषमता से लड़ते रहें। जब उन्होंने स्वाधीन भारत की इस राजनीतिक विडंबना को देखा तो दुख और पीड़ा से भर उठे।

बोध प्रश्न

- दिनकर आजीवन किससे लड़ते रहें?
- स्वाधीन भारत के किस दृश्य को देखकर दिनकर दुखी हुए?

17.3.3 दिनकर का काव्य दर्शन

दिनकर की काव्य साधना एक ऐसी यात्रा है जिसे अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अनगिनत मार्गों को तय करना पड़ा। दिल्ली प्रवास का समय दिनकर के रचनात्मक उत्कर्ष का समय रहा। उस समय तक देश स्वतंत्र हो चुका था। दिनकर राजनेताओं के रवैये से प्रसन्न नहीं थे, लेकिन संवैधानिक व्यवस्था पर उन्हें पूर्ण विश्वास था। कवि की भावनाएँ जो स्वतंत्रता से पहले अत्यंत तीखी और आक्रोशपूर्ण हुआ करती थीं, अब शांत होकर समाज के रचनात्मक स्वरूप की तलाश करने लगी थीं।

दिनकर छायावाद से बहुत अधिक प्रभावित नहीं हो सके। वस्तुतः दिनकर का काव्य स्वच्छंद काव्य है। यह काव्यधारा स्वयं को कल्पना की सीमा से मुक्त कर जीवन के सभी पक्षों का यथावत सृजन करती है। दिनकर के स्वच्छंदतावादी काव्य को 'रेणुका' के निम्न पंक्तियों के माध्यम से समझ जा सकता है-

ऐसा दो वरदान, कला को
कुछ भी रहे अजेय नहीं,
रजकण से ले पारिजात तक
कोई रूप अगेय नहीं।

काव्य की विशेषताएँ

छात्रो! अब दिनकर के काव्य की कुछ प्रमुख विशेषताओं को देखेंगे जो इस प्रकार हैं -

सौंदर्यबोध

कवि दिनकर ने सौंदर्य के मापदंड को बहुत विस्तृत आकाश दे दिया था। उन्होंने सौंदर्य को केवल प्रेयसी के शारीरिक सुंदरता में नहीं खोजा बल्कि बबूल और कैक्टस में भी देखा। दिनकर ने जिस सौंदर्य को विश्लेषित किया वह सौंदर्य माटी के सुगंध से सराबोर, प्रकृति को अपने अंगों में सजाए और अपनी परिस्थितियों के यथावत अलंकारों से शोभित है। दिनकर के काव्य में अलौकिक सौंदर्य का महत्व नहीं है। इसके बजाय एक ऐसे संसार के सौंदर्य को देखा जा सकता है, जहाँ केवल मनुष्य का मनुष्य से नहीं बल्कि संपूर्ण जगत से अगाध प्रेम हो-

'फूलों की क्या बात? बांस की हरियाली पर मरता हूँ।
अरी दूब, तेरे चलते जगती का आदर करता हूँ।
किसी लोभ से इसे छोड़ दूँ, यह जग ऐसा स्थान नहीं,
और बात क्या? बहुधा मैं चाहता मुक्ति का वरदान नहीं'

दिनकर के काव्य में कई जगह यह भाव प्राप्त होता है कि जिस प्रकार जीवन आकर्षक और मधुर है उसी प्रकार क्षणभंगुर है तथा शारीरिक सौंदर्य क्षणिक है। दिनकर द्वारा रचित निम्न पंक्तियाँ इसी भाव को दर्शाती हैं -

'मरते कोमल वत्स यहाँ बचती न जवानी परदेशी।
माया के मोहक वन की क्या कहूँ कहानी परदेशी।'

दिनकर के काव्य में प्रकृति के साथ मनुष्य की आत्मा की एकात्मकता है। प्रकृति को देखकर कवि उसके साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है। वह कह उठता है-

'कला के पारखी हो चांदनी के चाहने वालों?
हवा की साँस में जो दर्द है उसको समझते हो?
बिताई है कभी क्या पूर्णिमा की रात खेतों में?
खड़ी हरियाली को देखते, बोले बिना कुछ भी?
पहाड़ों को कभी क्या देखकर यह भाव जागा है,
तुम्हारी और उनकी रूह आपस में सहेली हैं।'

भावुकता

अन्य स्वच्छंदतावादी कवियों की भाँति दिनकर के कवि-मन में भी भावुकता का दर्शन होता है। दिनकर का मानना था कि 'भावुकता की तरंग पर चढ़कर ही क्रांति संभव होती है।' दिनकर के काव्य ने सामाजिक सरोकारों को भावुकता के साथ इस प्रकार से जोड़ लिया था कि समाज की सारी व्यवस्था, विडंबना उनकी अपनी हो गई थी। दिनकर शंकर के तांडव नृत्य को प्रतीकात्मक रूप में रखकर समाज के जड़ तथा निष्प्राण नियमों को ध्वस्त करने की बात करते हैं- 'गिरे दुर्ग जड़ता का ऐसा प्रलय बुला दो प्रलयंकर'। दिनकर काव्य का मूल उद्देश्य ही क्रांति का संगठन है। उन्होंने कविता को 'क्रांति धात्री' की संज्ञा देते हुए कहा था -

'क्रांतिधात्री कविते! जागो उठ
आडंबर में आग लगा दे
पतन, पाप, पाखंड जले
जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।'

दिनकर मनुष्य के पुरुषार्थ पर विश्वास करते हैं। उनकी दृष्टि में समाज की सबसे घातक रूढ़ि भाग्यवाद है। यह मानवता विरोधी है। भाग्यवाद पर विश्वास रखने के कारण ही भारत की दुर्दशा हो रही है। दिनकर का मानना है कि भाग्यवाद की यह अवधारणा कुछ लोगों द्वारा फैलाया गया वह प्रपंच है जिससे वे लोगों का शोषण करते हैं-

'भाग्यवाद आवरण पाप का
और शस्त्र शोषण का।
जिससे रखता दबा एक जन
भाग दूसरे जन का।'

बोध प्रश्न

- दिनकर के काव्य का मूल उद्देश्य क्या है?
- दिनकर के काव्य की कुछ विशेषताओं के बारे में बताइए।
- दिनकर की दृष्टि में सौंदर्य क्या है?

दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

दिनकर का काव्य-संसार मूल रूप से राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत है। वस्तुतः दिनकर का रचनाकाल भारतीय इतिहास का नवजागरण काल कहा जाता है। भारत में यूरोपियन समुदाय

के आने तथा उनके नए ज्ञान-विज्ञान के सम्मिश्रण से कई प्राचीन रूढ़ियाँ ध्वस्त हो गईं। भारत की सभ्यता और संस्कृति ने जड़ता का आवरण उतारकर एक नए रचनात्मक स्वरूप को अपनाना करना शुरू किया। इस बदलाव का प्रभाव कवियों, कलाकारों एवं रचनाकारों पर भी पड़ा। दिनकर का राष्ट्रवाद विवेकानंद के राष्ट्रवाद के बहुत समीप था। विवेकानंद को लगा था कि भारत के लोग कमजोर और बीमार हैं, इन्हें आध्यात्मिक ज्ञान की अपेक्षा रोटी और शारीरिक स्वास्थ्य की आवश्यकता ज्यादा है। 'कुरुक्षेत्र' में दिनकर ने विवेकानंद की यही भाषा बोलते नज़र आए हैं-

'सुकृत-भूमि वन ही न; महि यह
देखो बहुत बड़ी है
पग-पगपर साहाय्य-हेतु
दीनता विपिन्न खड़ी है।
इसे चाहिए अन्न, वसन, जल,
इसे चाहिए आशा,
इसे चाहिए सुदृढ़ चरण, भुज
इसे चाहिए भाषा।

दिनकर की राष्ट्रवादी दृष्टि उपनिवेशवाद से मुक्ति को ही अपना लक्ष्य समझती है। वस्तुतः दिनकर ने उपेनिवेशवाद और सामंतवाद के भयानक घृणित रूप को देखा था। उन्होंने देखा था कि दिन रात शारीरिक श्रम करने वाले मजदूर और किसान इतने मजबूर हैं कि वे न तो ठीक से अपना पेट भर पाते हैं और न ही तन ढक पाते हैं। 'रेणुका' में संकलित 'कविता की पुकार' में दिनकर ने इस गरीबी का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है -

'अर्धनग्न दंपति के घर में मैं झौंके बन जाऊँगी।
लज्जित हो न अतिथि सम्मुख वे, दीपक तुरत बुझाऊँगी।'

कविता की इन पंक्तियों में भावुकता की चरम सीमा है। यदि कहें कि दिनकर की राष्ट्रीय चेतना मानव-मुक्ति की मूल्यों से जुड़ी हुई है, तो गलत नहीं होगा।

बोध प्रश्न

- दिनकर राष्ट्रीय चेतना किन कविताओं में देखा जा सकता है?

दिनकर काव्य में काम और प्रेम

दिनकर की प्रतिभा बहुमुखी है। एक ओर वे उग्र राष्ट्रीय भावनाओं से भरी हुई कविताएँ लिखा करते थे, तो दूसरी ओर काम और प्रेम की कविताएँ। दिनकर की रचनाएँ मात्र सामाजिक क्रांति का सूत्र नहीं हैं, बल्कि वे मानसिक क्रांति का सूत्रपात भी करती हैं। रोमांटिक कविताएँ दो धरातल पर रची जाती हैं। पहली है - सामाजिक चेतना के आधार बिंदु पर लिखी जाने वाली दिव्य प्रेम को दर्शाने वाली कविताएँ और दूसरी वे कविताएँ, जो मानवीय सौंदर्य में प्रेम और जिज्ञासा की तलाश करती हैं। दिनकर पहली प्रकार की कविताओं के रचनाकार हैं। दिनकर के काव्य की स्त्री वासना और सौंदर्य की अनुगामिनी नहीं है, बल्कि वे मातृत्व को ही स्त्रीत्व का चरमोत्कर्ष मानती है। बीसवीं सदी के मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्राइड के अनुसंधानों से सभ्यता के इतिहास ने 'काम' को जिस नए रूप में देखा 'उर्वशी' उसीकी भावात्मक व्याख्या करती प्रतीत होती है। 'उर्वशी' की भूमिका में नर और नारी के संयुक्त व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए दिनकर लिखते हैं, 'नारी नर को छूकर तृप्त नहीं होती, न नर नारी के आलिंगन में संतोष मानता है। कोई शक्ति है जो नारी को नर और नर को नारी से अलग नहीं रहने देती, और जब वे मिल जाते हैं, तब भी उनके भीतर किसी ऐसी तृषा का संचार करती है, जिसकी तृप्ति शरीर के धरातल पर अनुपलब्ध है।' उन्होंने लिखा है -

'पहले प्रेम स्पर्श होता है, तदनंतर चिंतन भी।
प्रणय प्रथम मिट्टी कठोर है, तब वायव्य गगन भी।

वास्तव में दिनकर की सोच काम का विरोध है ही नहीं, बल्कि उनका मुख्य लक्ष्य सात्विक काम के मर्यादा की स्थापना करना रहा है। काम का विरोध वैसे संभव है भी नहीं, क्योंकि काम वास्तव में प्रकृति की मूल शक्ति है। प्रकृति स्वयं भी जन्मदात्री है। अतः वह काम के मूल तत्व से संयुक्त होकर परमपुरुष को एकात्म करती है तथा सृष्टि को उत्पन्न करती है। 'उर्वशी' में दिनकर ने लिखा है कि, 'जिस प्रकार भोजन का असली स्वाद उपवास के बाद मिलता है, उसी प्रकार शारीरिक सुख का असली स्वाद भी उन्हीं को प्राप्त होता है, जो ब्रह्मचर्य से होकर काम तक जाते हैं।' काम पाप नहीं है, वह पूजा की तरह पवित्र है। संभोग का क्षण उतना ही पावन होता है उतना ही नूतन होता है, जितना एक कविता की रचना का क्षण एक जीवन के लिया होता है। मूलतः दिनकर काव्य का प्रेम-दर्शन काम को आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करता है।

बोध प्रश्न

- प्रेम के संबंध में दिनकर की क्या मान्यता है?

17.3.4 दिनकर की काव्य-भाषा

छायावादोत्तर काल के रचनाकारों में संभवतः सबसे स्वच्छ तथा स्पष्ट भाषा दिनकर की रही। हालांकि कहीं-कहीं उनकी क्रांतिकारी भाषा शैली पर इकबाल और नजरुल का प्रभाव भी साफ तौर पर नजर आता है। प्रख्यात साहित्यकार कालरिज ने कहा था कि कविता सबसे ज्यादा आनंद तब देती है, जब हम उसे पूरी तरह न समझ कर मोटे तौर पर ही समझते हैं। कविता में अर्थ की कई परतें होती हैं। हर परत को पूरी तरह से समझने से ही आनंद बढ़ता है। कभी-कभी अर्थ को समझने में हम असमर्थ होते हैं। इससे कविता का आकर्षण और बढ़ जाता है। कविता साहित्य की निचोड़ है और उसे थोड़ा अस्पष्ट रहने में अधिक महिमा प्राप्त होती है। कालरिज द्वारा निर्धारित कविता के सभी गुण 'उर्वशी' में प्राप्त होते हैं -

'बालकों-सा मैं तुम्हारे वक्ष में मुँह को छिपाकर,
नींद की निस्तब्धता में डूब जाता हूँ।'

कवि यहाँ अपने भावों में यह व्यक्त करता है कि जब स्त्री-पुरुष आत्मा के ताल पर मिलते हैं, तो वे एक पल अथवा एक क्षण के लिए नहीं बल्कि अनंत जन्मों के लिए एक हो जाते हैं।

बोध प्रश्न

- दिनकर की काव्य-भाषा की विशेषता क्या है?

17.4 पाठ सार

राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर, 1908 को बिहार के एक साधारण किसान परिवार में हुआ। शैशव अवस्था में ही पिता की मृत्यु होने के बाद माँ ने अपनी कर्म शक्ति और इच्छा शक्ति द्वारा उनका पालन-पोषण किया तथा उन्हें उच्च शिक्षा दिलवाई। शिक्षा प्राप्त कर दिनकर जी ने बिहार सरकार में विभिन्न पदों पर नौकरी की, जहाँ उन्हें अपने विद्रोही व्यक्तित्व के कारण समस्याएँ भी झेलनी पड़ी। वे न तो किसी की अनुचित बात को सहन करते थे और न किसी की चमचागीरी करना पसंद था। सच तो यह है कि उनका पूरा व्यक्तित्व निराला की भाँति पौरुष और ओजस्विता से भरा हुआ था। उनके साहित्य में भी उनका यह तेजोदीप्त ओजस्वी व्यक्तित्व दिखाई देता है। 'कुरुक्षेत्र' और 'रश्मिरथी' जैसे ओजपूर्ण तथा 'उर्वशी' जैसे शृंगारिक काव्यों की रचना करने वाले महाकवि दिनकर के जीवन का सूर्यास्त 24

अप्रैल, 1974 को उस समय हुआ जब वे तिरुपति की यात्रा पर थे।

17.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. दिनकर का बचपन और यौवन अत्यंत संघर्षपूर्ण था।
2. केवल 12 वर्ष की आयु में महात्मा गांधी के प्रथम दर्शन और उनकी बातों ने दिनकर के मन में राष्ट्रीय चेतन के बीज बो दिया था।
3. दिनकर एक ओर तो राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रमुख कवियों में शामिल हैं तथा दूसरी ओर उन्हें प्रगतिवाद के भी प्रमुख रचनाकारों में गिना जाता है।
4. दिनकर की काव्य प्रतिभा बहुआयामी थी।
5. उन्होंने जहाँ एक ओर देश की स्वातंत्र्य चेतन को प्रेरित और मुखरित किया वहीं दूसरी ओर कामाध्यात्म का दर्शन प्रस्तुत करके स्त्री-पुरुष संबंध के शाश्वत प्रश्नों पर चिंतन भी किया।

17.6 शब्द संपदा

1. इच्छाशक्ति = सोच-समझकर निर्णय लेने की क्षमता
2. उपनिवेश = जीविका के लिए एक स्थान से हटकर कहीं दूर जाना
3. उपनिवेशवाद = उपनिवेश बनाने और उन्हें अपने अधीन रखने की नीति
4. एकात्म = अभिन्न, एक प्राण, एक हो जाना
5. कुशाग्र = अति तीक्ष्ण, जिसकी बुद्धि बहुत तेज हो
6. तृषा = प्यास, तृष्णा
7. सामंतवाद = वह शासन जिसके अंतर्गत जमींदारों को कृषि भूमि एवं किसानों से संबंधित अधिकार प्राप्त होते थे।

17.7 परीक्षार्थ

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. दिनकर के काव्य दर्शन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. दिनकर व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
3. दिनकर की काव्य यात्रा को उनके समय के देशकाल ने कैसे प्रभावित किया? स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. दिनकर के जन्म एवं पारिवारिक दशा पर प्रकाश डालिए।
2. दिनकर के काव्य में निहित राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए।
3. प्रेम के संबंध में दिनकर की मान्यताओं पर विचार कीजिए।
4. दिनकर की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. दिनकर को ज्ञानपीठ पुरस्कार किस रचना पर प्राप्त हुआ था? ( )

   (अ) हिमालय (आ) रेणुका (इ) उर्वशी (ई) इनमे से कोई नहीं

2. दिनकर की राष्ट्रीय चेतना के उदाहरण - ( )

   (अ) हुंकार (आ) कुरुक्षेत्र (इ) परशुराम की प्रतीक्षा (ई) सभी

3. साहित्य अकादमी से पुरस्कृत पुस्तक - ( )

   (अ) रेणुका (आ) कुरुक्षेत्र (इ) संस्कृति के चार अध्याय (ई) हुंकार

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

1. दिनकर की दृष्टि में ...... समाज की सबसे घातक और मानवता विरोधी रूढ़ि है।
2. दिनकर की राष्ट्रवादी दृष्टि ...... से मुक्ति को ही अपना लक्ष्य समझती है।
3. दिनकर ने ...... काव्य की भूमिका में नर और नारी के संयुक्त व्यक्तित्व का विश्लेषण किया है।
4. दिनकर ...... सौंदर्य को क्षणिक मानते हैं।

5. दिनकर की राष्ट्रीय चेतना ...... की मुक्ति की मूल्यों से जुड़ी हुई है।

III. सुमेल कीजिए -

1. सिमरिया गाँव	(अ) सरकार विरोधी कविता
2. 'ओ दुविधाग्रस्त शार्दूल बोल'	(आ) स्वच्छंदतावादी काव्य
3. 'रेणुका'	(इ) दिनकर का जन्म स्थान

17.8 पठनीय पुस्तकें

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' : पंडित शशिमोहन बहल, विनय श्रीवास्तव

इकाई 18 : रश्मिरथी

रूपरेखा

18.1 प्रस्तावना

18.2 उद्देश्य

18.3 मूल पाठ : रश्मिरथी

18.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

18.3.2 अध्येय कविता

18.3.3 विस्तृत व्याख्या

18.4 पाठ सार

18.5 पाठ की उपलब्धियाँ

18.6 शब्द संपदा

18.7 परीक्षार्थ प्रश्न

18.8 पठनीय पुस्तकें

18.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप जाना ही चुके हैं कि दिनकर की प्रतिभा बहुमुखी थे। वे न केवल अपने युग के प्रतिनिधि कवि थे बल्कि उन्हें 'राष्ट्रकवि' बनने का भी गौरव प्राप्त हुआ और उनके जैसा 'राष्ट्रकवि' पाकर भारत तथा हिंदी साहित्य दोनों आज भी गौरवान्वित अनुभव करता है। किसी भी देश का 'राष्ट्रकवि' बनने के लिए किसी भी साहित्यकार में कौन से गुण होने चाहिए? गेटे ने इस विषय में कहा है, 'राष्ट्रकवि उसे कहना चाहिए जिसे अपने देशवासियों के भीतर निहित शक्ति का ज्ञान हो और जो उन शक्तियों को सचेतन करने की दिशा में लगातार प्रयासरत रहता हो।' राष्ट्रकवि में कल्पना के साथ कर्मठता को भी प्रेरित करने की क्षमता होनी चाहिए। राष्ट्रकवि केवल अतीत की आराधना नहीं करते वरन् अपने व्यक्तित्व के बल पर भविष्य को भी प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।

दिनकर ने पराधीन भारत को जितने पास से देखा था, उतने ही पास से दिल्ली जाने के बाद स्वाधीन भारत की छवि को भी देखा और समझा। स्वाधीनता के बाद जब दिनकर दिल्ली आए तब उनके लेखन में न केवल परिवर्तन आया बल्कि उनकी लेखन शैली प्रौढ़ भी बन गई।

इस समय उन्होंने उर्वशी, कुरुक्षेत्र, रेणुका आदि अनेक रचनाओं को रचा जो न केवल उनके जीवन की महत्वपूर्ण रचनाएँ रहीं बल्कि हिंदी साहित्य को भी दिशा दिखाने वाली सिद्ध हुईं। 'रश्मिरथी' एक ऐसी ही रचना है। 'रश्मि' का अर्थ है 'प्रकाश' और 'रथी' का अर्थ है 'रथ'। 'रश्मि' का एक और अर्थ हो सकता है 'पुण्य'। यहाँ 'रश्मिरथी' का अर्थ है 'पुण्य' अथवा 'प्रकाश' के 'रथ' को खींचने वाला पुण्यात्मा अर्थात 'कर्ण'। कर्ण 'रश्मिरथी' खंडकाव्य का नायक है। कवि ने इस नायक के जीवन के द्वारा शिक्षा और समाज, वर्ण और समाज, भक्ति और समाज, सामाजिक नियम और समाज, पुरुषार्थ और समाज आदि के परस्पर संबंध और द्वंद्व को दर्शाया है। इस इकाई में आप दिनकर की 'रश्मिरथी' महाकाव्य के प्रथम सर्ग का अध्ययन करेंगे।

18.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- 'रश्मिरथी' कविता का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- 'रश्मिरथी' कविता की व्याख्या कर सकेंगे।
- 'रश्मिरथी' के काव्यगत सौंदर्य को जान सकेंगे।
- कर्ण के चारित्रिक विशेषताओं को जान सकेंगे।

18.3 मूल पाठ : रश्मिरथी

18.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

'रश्मिरथी' दिनकर के द्वारा रचित महाकाव्य है जिसे उन्होंने साथ सर्गों में विभाजित किया है। देखा जाए तो 'रश्मिरथी' का मूल विषय महाभारत की ही कहानी है, लेकिन इसमें और 'महाभारत' की विषय वस्तु में काफी अंतर है। 'रश्मिरथी' काव्य का नायक कर्ण है जबकि महाभारत के नायक श्रीकृष्ण थे। 'महाभारत' जहाँ धर्म की रक्षा की बात करता है, वहीं 'रश्मिरथी' काव्य इस संदेश को प्रतिस्थापित करता है कि परिवार, समाज, देश, विश्व कहीं भी धर्म की स्थापना तभी संभव है, जब यहाँ रहने वाले प्रत्येक मानव को मानवोचित अधिकार मिलेगा। मानव को पहचान उसके पौरुष, ज्ञान, सद्‌गुण आदि के कारण मिलना चाहिए न कि उसके जाति, कुल, गोत्र आदि के कारण।

दिनकर द्वारा रचित 'रश्मिरथी' खंडकाव्य में 7 सर्ग हैं। प्रथम सर्ग राजकुमारों के लिए आयोजित रणक्षेत्र से प्रारंभ होता है। जहाँ शिक्षा समाप्त होने के बाद सभी राजकुमार अपने-

अपने रणकौशल दिखाने के लिए एकत्रित हुए हैं। यहीं कर्ण का भी आगमन होता है। वह अर्जुन को ललकारता है, लेकिन कृपाचार्य कर्ण से उसकी जाति पूछकर उसे हतोत्साहित करते हैं। सप्तम सर्ग में खंडकाव्य का अंत युधिष्ठिर और कृष्ण के संवाद से होता है। युधिष्ठिर कर्ण की मृत्यु पर हर्ष प्रकट करते हैं किंतु भगवान उदास हो जाते हैं। उनका कहना है कि 'यह विजय चरित्र खोकर हुई है। जीत असल में कर्ण की हुई थी। यह भूल जाइए कि कर्ण हमारा शत्रु था। वह द्रोण और भीष्म समान आदर का पात्र हैं।' छात्रो! प्रस्तुत इकाई में आप 'रश्मिरथी' खंडकाव्य के प्रथम सर्ग की बीस पंक्तियों का अध्ययन करेंगे। चलिए, आगे बढ़ते हैं और 'रश्मिरथी' के प्रथम सर्ग का अध्ययन, विश्लेषण प्रारंभ करते हैं।

18.3.2 अध्येय कविता

'जय हो' जग में जले जहाँ भी, नमन पुनीत अनल को,
जिस नर में भी बसे, हमारा नमन तेज को, बल को।
किसी वृन्त पर खिले विपिन में, पर, नमस्य है फूल,
सुधी खोजते नहीं, गुणों का आदि, शक्ति का मूल।
ऊंच-नीच का भेद न माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,
दया-धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है।
क्षत्रिय वही, भरी हो जिसमें निर्भयता की आग,
सबसे श्रेष्ठ वही ब्राह्मण है, हो जिसमें ताप-त्याग।
तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं गोत्र बतला के,
पाते है जग में प्रशस्ति अपना करतब दिखला के।
हीन मूल की ओर देख जग गलत कहे या ठीक,
वीर खींच कर ही रहते हैं इतिहासों में लीक।
जिसके पिता सूर्य थे, माता कुंती सती कुमारी,
उसका पलना हुआ धार पर बहती हुई पिटारी।
सूत-वंश में पला, चखा भी नहीं जननि का क्षीर,
निकला कर्ण सभी युवकों में तब भी अद्‌भुत वीर।
तन से समरशूर, मन से भावुक, स्वभाव से दानी,
जाति-गोत्र का नहीं, शील का, पौरुष का अभिमानी।

ज्ञान-ध्यान, शस्त्रास्त्र, शास्त्र का कर सम्यक अभ्यास,
अपने गुण का किया कर्ण ने आप स्वयं सुविकास।

> **निर्देश :** 1. इस कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
> 2. इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

18.3.3 विस्तृत व्याख्या

'जय हो' जग में जले जहाँ भी, नमन पुनीत अनल को,
जिस नर में भी बसे, हमारा नमन तेज को, बल को।
किसी वृन्त पर भी खिले विपिन में, पर, नमस्य है फूल,
सुधी खोजते नहीं गुणों का आदि, शक्ति का मूल।

शब्दार्थ : जग = संसार। नमन = प्रणाम। पुनीत = पवित्र। अनल = आग। नर = मनुष्य। वृन्त = जन्म संबंध। विपिन = जंगल। सुधी = पता।

संदर्भ : ये पंक्तियाँ दिनकर द्वारा रचित काव्य 'रश्मिरथी' काव्य से उद्धृत हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियों में 'दिनकर' ने संसार किस गुण के सामने नतमस्तक होता है। सृष्टि के मूल में कौन सा गुण विद्यमान है? इन्हीं प्रश्नों का उत्तर दिया है।

व्याख्या : यह तो सबको ज्ञात है कि मानव का अस्तित्व भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश से मिलकर ही बना है। अग्नि को इन सबमें पवित्र माना जाता है क्योंकि उसमें तेज, पवित्रता, निर्भयता, ज्योतिकामना आदि गुण हैं। 'दिनकर' कहते हैं विश्व संसार में जहाँ जले पवित्र अग्नि उसे नतमस्तक होकर प्रणाम करते हैं। यह अग्नि केवल प्रकाश का ही प्रतीक नहीं है, बल्कि यह पौरुष का भी प्रतीक है। जिस नर में भी यह अग्नि पौरुष के बल के रूप में जल रहा है उस नर और उसके पौरुष को प्रणाम। जंगल में विभिन्न प्रकार के पेड़, पौधे, फलों, फूलों का आपसी संबंध इस कारण से अटूट बना रहता है क्योंकि उन सबके जन्म का कारण जंगल ही है, जिसने सबको बाँध के रखा है। हर उस फूल को प्रणाम जो जंगल के वक्ष में अपना अस्तित्व अपने पौरुष के द्वारा स्थापित करता है। अगर पौरुष का बल नर में होता है तो गुणों को खोजने की आवश्यकता नहीं पढ़ती, उनका विकास अपने आप होता ही है। तो तय यही है कि पौरुष की अग्नि सृष्टि के सभी प्राणियों को जीवंत रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

विशेषता : 1. पौरुष की तुलना 'अग्नि' के साथ की गई है।

2. सृष्टि के मूल में 'पौरुष की अग्नि' का महत्वपूर्ण स्थान है।

बोध प्रश्न

- कवि ने किसे नमन किया है?
- नर में बसे किन गुणों को कवि ने नमन किया है?
- 'पुनीत' शब्द का अर्थ क्या है?
- जंगल में खिले सभी फूलों का जंगल के साथ कैसा संबंध है?

ऊँच-नीच का भेद न माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,
दया-धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है।
क्षत्रिय वही, भरी हो जिसमें निर्भयता की आग,
सबसे श्रेष्ठ वही ब्राह्मण है, हो जिसमें तप-त्याग।

शब्दार्थ : भेद = तुलना। श्रेष्ठ = महान। क्षत्रिय = योद्धा। निर्भयता = वीरता। तप = तपस्या।

संदर्भ : ये पंक्तियाँ दिनकर द्वारा रचित काव्य 'रश्मिरथी' काव्य से उद्धृत हैं।

प्रसंग : ज्ञानी, क्षत्रिय, ब्राह्मण में किन गुणों का रहना आवश्यक है और प्राणी पूज्य कैसे बनता है? प्रस्तुत पंक्तियों का मूल विषय यही है।

व्याख्या : केवल मनुष्य शरीर धारण कर लेने से ही सद्‌गुणों का विकास नहीं होता है। मानवता को विकसित करने का प्रयास मनुष्य को सतत करते रहना होता है। ज्ञानी का धर्म है अपने ज्ञान से दूसरों को उपकृत करना। ज्ञानी अगर ऊँच-नीच का भेद करने लगेगा तो फिर उसे ज्ञानी कहलाने का कोई अधिकार नहीं रह जाता है। ठीक वैसे ही वही प्राणी पूज्य बन सकता है जिसमें दया, क्षमा, धर्मपालन की भावना रहती है। निर्भयता की आग जिस प्राणी में जलता है, वही क्षत्रिय कहलाने का अधिकारी बन पाता है। ब्राह्मण केवल एक वर्ण नहीं, यह पहचान है तप, त्याग, धैर्य आदि का। अर्थात, ब्राह्मणत्व को सही अर्थों में वही परिभाषित कर पाता है जिसने अपने हृदय को तप, त्याग आदि के द्वारा शुद्ध कर लिया हो। यह काम इतना आसान नहीं है, लेकिन निरंतर अभ्यास के द्वारा इस काम में सफलता प्राप्त की जा सकती है। जैसा कि कर्ण ने सफलता प्राप्त की। समाज ने पग-पग पर उसे लांछित करने का प्रयास किया। उसके मनोबल को समाप्त करने का प्रयास किया, लेकिन वह अपने लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ता ही गया।

विशेषता : प्रस्तुत पंक्तियों के द्वारा यह सिद्ध हो गया है कि ऊँच-नीच का भेद न मानने वाला ज्ञानी, दया-धर्म को अपनाने वाला पूज्य प्राणी, निर्भय व्यक्ति क्षत्रिय और तप-त्याग को स्वीकार

कर पाने वाला ही ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी बन पाता है।

बोध प्रश्न

- ज्ञानी में क्या गुण होना चाहिए?
- पूज्य प्राणी कौन कहला सकता है?
- निर्भयता की आग किसमें रहती है?
- तप-त्याग करने वाला क्या कहलाता है?

तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं गोत्र बतला के,
पाते हैं जग से प्रशस्ति अपना करतब दिखला के।
हीन मूल की ओर देख जग गलत कहे या ठीक,
वीर खींच कर ही रहते है इतिहासों में लीक।

शब्दार्थ : तेजस्वी = तेज युक्त। सम्मान = श्रद्धा। गोत्र = वंश संबंधित। प्रशस्ति = प्रशंसा। करतब= कारनामा। हीन = रिक्त। मूल = बुनियादी। लीक = रेखा।

संदर्भ : ये पंक्तियाँ दिनकर द्वारा रचित काव्य 'रश्मिरथी' काव्य से उद्धृत हैं।

प्रसंग : वीर पुरुष की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रस्तुत पंक्ति के द्वारा प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या : वैसे तो संसार व्यक्ति के कुल, गोत्र आदि के द्वारा उसकी पहचान को खोजता है लेकिन तेजस्वी व्यक्ति इन सब से दूर अपनी पहचान अपनी क्षमता के द्वारा बनाता है। वे अपने कर्म के द्वारा संसार में अपनी अलग पहचान बनाते हैं। कौशल का संबंध जन्म से नहीं वरन् कर्म के साथ होता है। वीर अपनी तलवार की नोक की तीक्ष्णता के द्वारा इतिहास के पन्नों को बदल देता है। संसार उसे देखकर क्या कह रहा है, यह सोचने के बजाय वह अपने कौशल को विकसित करने में अपना ध्यान केंद्रित करता है। तभी तो वह दिन भी आता है जब संसार वीर की वीरता के सामने नतमस्तक होता है। उसका जन्म किस कुल, गोत्र में हुआ है यह गौण बन जाता है। कहने का अर्थ यही है कि कर्म से बढ़कर कुछ नहीं है। जो मनुष्य अपने कर्म क्षमता को पहचान लेता है वह समय की धारा से विपरीत जाकर संसार को अपने सामने नतमस्तक होने को विवश कर देता है।

विशेषता : वीर अपनी वीरता के द्वारा अपना इतिहास स्वयं लिखता है। वीर अपने कुल, गोत्र को खोजता नहीं फिरता, वह अपने कर्म के द्वारा अपनी पहचान बनाता है। वह संसार की सोच को बदलने में सक्षम होता है।

बोध प्रश्न

- तेजस्वी क्या नहीं खोजता?
- वीर किसे बदल देता है?
- वीर अपनी पहचान कैसे बनाता है?
- राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रीय स्वाभिमान की चरम अभिव्यक्ति दिनकर की किस कविता में हुई है?

जिसके पिता सूर्य थे, माता कुंती सती कुमारी,
उसका पलना हुआ धार पर बहती हुई पिटारी।
सूत-वंश में पला चखा भी नहीं जननि का क्षीर,
निकला कर्ण सभी युवकों में तब भी अद्‌भुत वीर।

शब्दार्थ : धार = धारा। सूत = शूद्र। जननि = माँ। पिटारी = बक्सा। क्षीर = दूध।

संदर्भ : ये पंक्तियाँ दिनकर द्वारा रचित काव्य 'रश्मिरथी' काव्य से उद्‌धृत हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति का संबंध कर्ण के बचपन के साथ है।

व्याख्या : कर्ण कोई साधारण पुरुष नहीं था। वह वीर योद्धा तो था ही, साथ ही वह सती कुमारी कुंती और सूर्य देव का पुत्र भी था। पर, भाग्य का खेल इसी को कहते हैं। उसका पालन-पोषण शूद्र के घर में हुआ। उसे माँ का दूध तो नसीब हुआ ही नहीं, माँ का भी दुर्भाग्य कि अपने पुत्र को अपने गोद में खिलाने के स्थान पर नदी के धार पर बहती हुई पिटारी को उसका पालना बना देना पड़ा। इतना सब कुछ होने के बाद भी वीर की वीरता छिपी न रह सकी। युद्धाभ्यास के दौरान संसार को पता चल ही गया कि कर्ण की क्षमता किसी राजपुत्र से कम नहीं है। उसे माता-पिता, कुल-गोत्र के पहचान की भी आवश्यकता नहीं है। वह अपनी पहचान स्वयं बनाने में समर्थ है। कहने का अर्थ यह है कि व्यक्ति को केवल अपने कुल-गोत्र के कारण जो पहचान और सम्मान मिलती है वह तो क्षणिक का होता है लेकिन अपनी कर्मशक्ति के द्वारा जो व्यक्ति अपनी पहचान बनाता है वह सदैव के लिए अमर बन जाता है।

विशेषता : कर्ण के जीवन के महत्वपूर्ण पहलू की जानकारी प्राप्त हुई है।

बोध प्रश्न

- कर्ण के पिता कौन थे?
- कर्ण का पालना क्या बना?
- किस वंश में कर्ण का पालन-पोषण हुआ?

- संसार को क्या पता चला?

तन से समरशूर, मन से भावुक, स्वभाव से दानी,
जाति-गोत्र का नहीं, शील का, पौरुष का अभिमानी।
ज्ञान-ध्यान, शस्त्रार्थ, शास्त्र का कर सम्यक अभ्यास,
अपने गुण का किया कर्ण ने आप स्वयं सुविकस।

शब्दार्थ : तन = शरीर। दानी = दान करने वाला। सम्यक = संपूर्ण। सुविकास = अच्छे से विकसित करना। स्वयं = खुद।

संदर्भ : ये पंक्तियाँ दिनकर द्वारा रचित काव्य 'रश्मिरथी' काव्य से उद्धृत हैं।

प्रसंग : कर्ण के चारित्रिक विशेषता पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या : कर्ण ने अपने संपूर्ण चरित्र का विकास जिस प्रकार से अपनी मेहनत और लगन के द्वारा किया था वह सबके लिए करना संभव नहीं हो पाता है। वह बाहुबल के ज़ोर से वीरों का भी वीर राज्य था, मन फिर उसका बहुत कोमल था। उसे तिरस्कार का कष्ट पता था, तभी तो वह हृदय खोलकर दान करता था। जाति-गोत्र के खोज की उसको भूख नहीं थी, परंतु वह अपने पौरुष पर गर्व रखने वाला व्यक्ति था। ज्ञान-ध्यान, तप-शील का अभ्यास उसने किया था। कर्ण ने समाज के लांछनों को महत्व न देकर अपने चारित्रिक विकास को ही अपना लक्ष्य बना लिया था और इस लक्ष्य में उसे सफलता भी प्राप्त हुई। कहने का अर्थ यह है कि परिश्रम, लगन, स्वाभिमान के बिना मनुष्य के जीवन का कोई अर्थ ही नहीं है। कुल-गोत्र आदि तो समाज की संकीर्ण मानसिकता को दर्शाते हैं जो अपने को इस संकीर्णता से बाहर निकाल पाता है, वही 'रश्मि' के 'रथ' का सारथी बन पाता है।

विशेषता : कर्ण ने स्वयं को सामाजिक संकीर्णता से दूर रखकर कैसे अपने चरित्र का विकास किया इसका सुंदर विश्लेषण कवि ने किया है।

बोध प्रश्न

- कर्ण का मन कैसा था?
- कर्ण ने स्वयं को किससे दूर रखा?
- कर्ण को किसका अभिमान था?
- कर्ण स्वभाव से क्या था?

समीक्षात्मक टिप्पणी

रामधारी सिंह दिनकर का काल स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ समय बाद तक का है। इन दिनों देश की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के नव-निर्माण की रूपरेखा आटो बन गई लेकिन गरीब जनता की स्थिति बदतर होती जा रही थी। भारतीय पुनर्जागरण के क्षेत्र में दिनकर का महत्वपूर्ण स्थान था। दिनकर के काव्यों में राष्ट्रीयता कूट-कूटकर भरी हुई है। दिनकर ने जब काव्य रचना का प्रारंभ किया तब देश अंग्रेजों के अधीन था। जनता को जगाना तथा उन्हें अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित करना उस समय के कवियों का प्रमुख उद्देश्य था। दिनकर भी इससे अछूते नहीं रहे।

दिनकर मनुष्यों के बीच भेदभाव को नहीं स्वीकारते। उनकी दृष्टि में सभी समान हैं। उनका कहना है कि 'यह भूमि किसी की नहीं क्रीट है दासी।' वे यह मानते थे कि जब जनता एकजुट होकर शोषण के खिलाफ उठ खड़ी होगी तो कोई टिक नहीं सकते। अनीति के विरुद्ध क्रांति का बिगुल बजाना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने 'रश्मिरथी' में कर्ण के चरित्र के माध्यम से यह निरूपित किया है कि व्यक्ति के चरित्र से जाति का कोई संबंध नहीं होता। लेकिन देश में जाति व्यवस्था लोगों के नस-नस में समाई हुई है। कर्ण के चरित्र पर आधारित 'रश्मिरथी' में दिनकर ने जाति व्यवस्था पर प्रहार किया है। कर्ण उन तमाम व्यक्तियों का प्रतीक है जो अमानवीय जाति व्यवस्था आका शिकार हैं। कहने का अर्थ है कि वह तमाम उपेक्षित वर्गों का प्रतीक है। 'रश्मिरथी' का कर्ण कहता है -

मैं उनका आदर्श, कहीं जो व्यथा न खोल सकेंगे
पूछेगा जग, किंतु, पिता का नाम न बोल सकेंगे;
जिनका निखिल विश्व में कोई कहीं न अपना होगा,
मन में लिए उमंग जिन्हें चिर-काल कल्पना होगा।

'रश्मिरथी' की भूमिका में स्वयं दिनकर ने इस बात की पुष्टि की कि -

> "कर्ण-चरित्र के उद्धार की चिंता इस बात का प्रमाण है कि हमारे समाज में मानवीय गुणों की पहचान बढ़ने वाली है। कुल और जाति का अहंकार विदा हो रहा है। आगे, मनुष्य केवल उसी पद का अधिकारी होगा जो उसके अपने सामर्थ्य से सूचित होता है, उस पद का नहीं, जो उसके माता-पिता या वंश की देन है। इसी प्रकार, व्यक्ति अपने निजी गुणों के कारण जिस पद का अधिकारी है, वह

उसे मिलकर रहेगा, यहाँ तक कि उसके माता-पिता के दोष भी इसमें कोई बाधा नहीं डाल सकेंगे। कर्ण-चरित का उद्धार एक तरह से, नई मानवता की स्थापना का यही प्रयास है और मुझे संतोष है कि इस प्रयास में मैं अकेला नहीं, अपने अनेक सुयोग्य सहधर्मियों के साथ हूँ।"

बोध प्रश्न

- लोगों के नस-नस में क्या समाई हुई है?
- कर्ण किसके प्रतिनिधि हैं?
- कर्ण के चरित्र से दिनकर ने क्या निरूपित किया?
- दिनकर के काव्य में किस प्रवृत्ति को प्रमुख रूप से देखा अजय सकता है?

18.4 पाठ सार

दिनकर को राष्ट्रकवि का सम्मान प्राप्त है। उनका प्रसिद्ध काव्य 'रश्मिरथी' महाभारत के महारथी, योद्धा कर्ण के जीवन और आत्मसंघर्ष पर आधारित है। रश्मिरथी का अर्थ है किरणों के रथ का सवार अर्थात सूर्य, जो यहाँ सूर्यपुत्र कर्ण का प्रतीक है। किरणों का यह रथ कर्ण के कालजयी उज्ज्वल यश का भी सूचक है। इस खंड काव्य का प्रकाशन 1952 में हुआ था। इसमें 7 सर्ग हैं। इसमें कर्ण के चरित्र के सभी पक्षों का सजीव चित्रण किया गया है। 'रश्मिरथी' में दिनकर ने कर्ण को महाभारतीय कथानक से ऊपर उठाकर, नैतिकता और विश्वसनीयता की नई भूमि को खड़ा कर उसे गौरव से विभूषित कर दिया है। 'रश्मिरथी' में दिनकर ने सारे सामाजिक और पारिवारिक संबंधों को नए सिरे से जाँचा है। चाहे गुरु-शिष्य संबंधों के बहाने हो, चाहे अविवाहित मातृत्व और विवाहित मातृत्व हो, चाहे धर्म के बहाने हो, चाहे छल-प्रपंच के बहाने हो। 'रश्मिरथी' यह भी संदेश देता है कि जन्म-अवैधता से कर्म की वैधता नहीं होती।

समाज में संस्थागत हो चुके अन्याय के प्रति आक्रोश की अभिव्यक्ति के लिए दिनकर को ऐसे नायक की तलाश थी जो उदात्त चरित्र-संपन्न होने के अतिरिक्त अनिवार्यतः पराक्रमी हो। 'रश्मिरथी' में कर्ण को नायक बनाकर दिनकर ने अपने इसी लक्ष्य को पूरा किया है। महाभारत के कर्ण में उन्हें मानस परिकल्पित नायक का समरूप मिल गया।

ओजस्वी कविता की रचना में रमने वाले दिनकर का मन तेजस्वी कर्ण के व्यक्तित्व से सहज ही अभिभूत हो गया। युयुत्सा और संघर्ष कर्ण के व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे। कर्ण का दलित आत्मगौरव युवावस्था में अर्जुन को चुनौती देने के बहाने पूरी व्यवस्था के जड़ प्रतिमानों

को चुनौती देता है-

'तूने जो-जो किया, उसे मैं भी दिखला सकता हूँ।
चाहे तो कुछ नई कलाएँ भी सिखला सकता हूँ'।

'रश्मिरथी' एक ऐसी रचना है जिसके पौरुष के पुनीत अनल में जातिवाद, संप्रदायवाद जलकर खाक हो जाते हैं। यह काव्य दैववाद के खंडन की जगह मानवतावाद की स्थापना का पुण्य प्रयास है। इसमें नियतिवाद का विरोध और कर्मवाद का जयघोष है। मानव चाहे तो अपनी कर्मशक्ति के द्वारा पृथ्वी पर स्वर्ग उतार सकता है। मानवशक्ति का निवासस्थान वंश, कुल नहीं अपितु वीर पुरुषों का वक्षस्थल है। इस काव्य में उन्होनें संदेश दिया है कि 'चाहे धर्म धोखा दे या पुण्य ज्वाला बन जाए, लेकिन मनुष्य तब भी न कभी सुपथ से टल सकता है। विजय मानव का लक्ष्य है लेकिन विजय तिलक लिए कुपथ पर चलना पाप है'। 'रश्मिरथी' में भाग्यवाद की जगह कर्मवाद का शंखनाद है। देवराज इंद्र को चुनौती देते हुए कर्ण ने कहा-

'विधि ने क्या लिखा भाग्य में यह खूब जानता हूँ मैं,
बाहों को कहीं भाग्य से बलि मानता हूँ मैं,
महाराज, उद्यम से विधि का अंक उलट जाता है,
किस्मत का पासा पौरुष से हार पलट जाता है'।

'रश्मिरथी' समता और मानवता के धरातल पर खड़ा महाकवि दिनकर का युगधर्मी शंखनाद है जिसकी गूंज से विषमताओं और रूढ़ियों की बेड़ियाँ खुल जाती है और वसुंधरा पर कर्ण के सपनों के अनुसार एक नए समाज के सूर्योदय की संभावना बढ़ जाती है। आपने प्रस्तुत खंडकाव्य को पढ़ते समय पाया कि दिनकर ने कर्ण के जन्म की कथा पर तो प्रकाश डाला ही है, साथ ही इस विषय पर भी प्रकाश डाला है कि सृष्टि के मूल में है तेजोबल। जिस व्यक्ति को अपने तेजोबल का ज्ञान प्राप्त हो जाता है फिर वह संसार के संकीर्ण मानसिकता के जाल में नहीं फँसता वह अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करता है। कर्ण जो कि वीरों का वीर था, स्वभाव से दानी था। उसे अपने जन्म परिचय से कोई मतलब नहीं था। उसे अपने पौरुष का अभिमान था। अपने परिश्रम के द्वारा उसने अपने चरित्र का निर्माण किया था। कर्ण की छवि आज भी भारतीय जनमानस में एक ऐसे महायोद्धा की है जो प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़ता है। उसे जीवन में वह सब नहीं मिला जिसे पाने का वह अधिकारी था। उसे उसका अधिकार नहीं मिल सका क्योंकि समाज अपने नियमों को बदलने को तैयार नहीं था। कर्ण के बहाने दिनकर ने समाज को यही

संदेश दिया है कि समाज को यह ध्यान में रखना चाहिए कि उसके नियमों के कारण कोई अपने अधिकार से वंचित न रह जाए। लेकिन कर्ण ने वह सब प्राप्त किया जो एक योद्धा को मिलना चाहिए। ज्ञानी की पहचान उसके सहिष्णुता, पूज्य प्राणी की पहचान उसके दया-धर्म, क्षत्रिय की पहचान उसकी निर्भयता और ब्राह्मण की पहचान उसकी तप-त्याग से ही बनती है। 'रश्मिरथी' के नायक कर्ण का जीवन इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

18.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. महाभारत के महायोद्धा कर्ण का उज्ज्वल यश कालजयी है।
2. कर्ण को दिनकर ने ऐसे काव्य नायक के रूप में चित्रित किया है जो तेज और बल के पुनीत अनल से प्रज्वलित है।
3. कर्ण भारतीय वर्ण व्यवस्था के रूढ़ हो जाने से उत्पन्न विसंगतियों को ढोने वाले के एक निष्कलुष व्यक्ति के रूप में भी दिखाई देते हैं।
4. कर्ण का जीवन जाति और कर्म के संघर्ष में कर्म की विजय का प्रतीक है, लेकिन तत्कालीन सामाजिक रूढ़ियों ने उन्हें वैध अधिकारों से वंचित कर दिया।
5. कर्ण का व्यक्तित्व जाति और गोत्र से नहीं अपने शील और पौरुष से निर्मित व्यक्तित्व है।

18.6 शब्द संपदा

1. अभिभूत = आकर्षित
2. आक्रोश = क्रोध
3. उद्यम = कठिन परिश्रम
4. गौरव = सम्मान
5. प्रतिकूल = विपरीत परिस्थिति
6. युगधर्मी = समय के अनुसार
7. युयुत्सा = युद्ध की प्रबल इच्छा
8. लांछन = अपमान
9. वक्षस्थल = छाती
10. सुपथ = अच्छा रास्ता

18.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'रश्मिरथी' का मूल विषयवस्तु क्या है? स्पष्ट कीजिए।
2. 'रश्मिरथी' के काव्यगत सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।
3. 'रश्मिरथी' समता और मानवता के धरातल पर खड़ा महाकवि दिनकर का युगधर्मी शंखनाद है। इस कथन को पुष्ट कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. ऊँच-नीच का भेद न माने, ……जिसमें तप-त्याग। इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
2. किसी वृंत पर खिले विपिन में, …… शक्ति का मूल। इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
3. जिसके पिता सूर्य थे, …… धार पर बहती हुई पिटारी। इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. भारतीय वर्ण व्यवस्था के रूढ़ हो जाने से उत्पन्न विसंगतियों को ढोने वाले के एक निष्कलुष व्यक्ति कौन हैं? ( )

   (अ) कृष्ण (आ) सूर्य (इ) इंद्र (ई) कर्ण

2. रश्मि शब्द का अर्थ क्या है? ( )

   (अ) प्रकाश (आ) अंधकार (इ) हवा (ई) पानी

3. 'रश्मिरथी' में किसका शंखनाद है? ( )

   (अ) भाग्यवाद (आ) कर्मवाद (इ) प्रतीकवाद (ई) नियतिवाद

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

1. निर्भयता की आग .... में रहती है।

2. वीर अपने .... के द्वारा अपनी पहचान बनाता है।

3. कर्ण ने स्वयं को .... से अपने आपको दूर रखा।

III. सुमेल कीजिए -

1. पिता	(अ) ब्राह्मण
2. श्यामवती	(आ) माता
3. कुंती	(इ) सूर्य
4. तप-त्याग	(ई)पत्नी

18.8 पठनीय पुस्तकें

1. रश्मिरथी : रामधारी सिंह दिनकर

इकाई 19 : हरिवंशराय 'बच्चन' : एक परिचय

रूपरेखा

19.1 प्रस्तावना
19.2 उद्देश्य
19.3 मूल पाठ : हरिवंशराय 'बच्चन' : एक परिचय
19.3.1 जीवन परिचय
19.3.2 रचना यात्रा
19.3.3 रचनाओं का परिचय
19.3.4 हिंदी साहित्य में हरिवंशराय 'बच्चन' का स्थान एवं महत्व
19.4 पाठ सार
19.5 पाठ की उपलब्धियाँ
19.6 शब्द संपदा
19.7 परीक्षार्थ प्रश्न
19.8 पठनीय पुस्तकें

19.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! हरिवंशराय बच्चन हिंदी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार थे। वे हालावादी कवि के रूप में भी जाने जाते हैं। वे एक उत्तम कवि, कहानीकार के साथ-साथ अन्य साहित्यिक विधाओं के भी सर्जक थे। प्रेम और सौंदर्य, रहस्यवाद, व्यक्तिवाद, समाजवाद तथा मानवतावाद आदि उनके प्रिय विषय हैं।

सूफी साहित्य की विचारधाराओं से प्रभावित होकर बच्चन ने कविता में मस्ती को उड़ेल कर विविध प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक समरसता को स्थापित करने का प्रयत्न किया। हरिवंशराय बच्चन का साहित्यिक अत्यंत विस्तृत है। आप इस इकाई में हरिवंशराय बच्चन के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

19.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- डॉ. हरिवंशराय बच्चन के व्यक्तित्व से परिचित हो सकेंगे।

- हालावादी काव्यधारा से अवगत हो सकेंगे।
- 'बच्चन' की रचना यात्रा के विकास क्रम से परिचित हो करेंगे।
- उनकी मुख्य कृतियों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- हिंदी साहित्य में 'बच्चन' के स्थान एवं महत्व को जान सकेंगे।

19.3 मूल पाठ : हरिवंशराय 'बच्चन' : एक परिचय

19.3.1 जीवन परिचय

व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण परिस्थितियों पर निर्भर होता है। इसके पश्चात् भी प्रत्येक व्यक्ति अपने विशेष गुणों के कारण अपना व्यक्तित्व बना पाता है। हरिवंशराय बच्चन का जन्म 27 नवंबर, 1907 में हुआ। इनके पिता प्रताप नारायण श्रीवास्तव तथा माँ सरस्वती देवी थीं। पिता 'रामायण', 'गीता' तथा माता 'सूरसागर' का स्वरबद्ध पाठ किया करती थीं, जिसका हरिवंशराय बच्चन के व्यक्तित्व और विचारों पर स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। छायावादोत्तर कवियों में बच्चन जी अपनी विशेष काव्यात्मक छवि के कारण प्रसिद्ध हैं। बाल्यावस्था में इन्हें परिजन स्नेहवश 'बच्चन' कहकर बुलाते थे, जिसका अर्थ 'बच्चा' या 'संतान' होता है। आगे चलकर वे इसी 'बच्चन' उपनाम से प्रसिद्ध हुए।

आरंभिक शिक्षा कायस्थ पाठशाला में उर्दू और हिंदी से आरम्भ करते हुए इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से डब्ल्यू. बी. यीट्स के काव्य पर शोध करते हुए पीएचडी की उपाधि पूर्ण की। 1926 में श्यामा बच्चन से इनका विवाह हुआ, लेकिन क्षयरोग के कारण 1936 में श्यामा बच्चन का देहांत हो गया। बाद में उन्होंने पंजाबी रंगमंच के कलाकार एवं गायिका तेजी सूरी से 1941 में विवाह किया। उनकी दो संतानें हैं - अमिताभ बच्चन और अजिताभ बच्चन।

बच्चन जी ने अपने कार्यात्मक जीवन को 1942 से 1954 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी भाषा के अध्यापन से शुरू किया। कार्यात्मक जीवन के अनुभव का विस्तार मात्र अध्यापन तक सीमित नहीं रहा। वे 1955 में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ बने। हरिवंशराय बच्चन को उनके साहित्यिक एवं भाषिक अवदान के कारण 1966 में राज्यसभा के सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया था। 18 जनवरी, 2003 में उनका निधन हुआ।

बोध प्रश्न

- कवि बच्चन ने विदेश मंत्रालय में कौन सी भूमिका निभाई थी?

19.3.2 रचना यात्रा

बच्चन की आरंभिक रचनाएँ उनके अंतर्मुखी व्यक्तित्व के बाद भी स्पष्टतः वस्तुवादी हैं। कवि बच्चन के रचना संसार पर कई पुस्तकें लिखी गई हैं। उनकी रचना यात्रा को लेकर कई शोध, आलोचना आदि ग्रंथों का प्रणयन किया गया है, जैसे- अजित कुमार द्वारा संपादित 'बच्चन रचनावली', जो नौ खंडों में 1983 में प्रकाशित हुआ, साथ ही इनकी रचना 'गुरुवर बच्चन से दूर' तथा बिशन टंडन का 'हरिवंशराय बच्चन' आदि उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।

कवि बच्चन के साहित्य में विविध विशिष्टताओं का अवलोकन किया जा सकता है। प्रेम एवं सौंदर्य का मणिकांचन प्रयोग करते हुए इन्होंने अपनी रचना यात्रा को हालावादी सौंदर्य से आवेष्टित किया है। हालावादी दृष्टि आनंद के उस क्षण को अनुभूत करने में विश्वास रखती है, जिसमें मदिरापान के नशे में मानव कुछ पल के लिए सारी समस्याओं का विस्मरण करते हुए क्षणभंगुर सुख को स्थायी मान लेता है। वे स्वयं स्वीकार करते हैं कि मदिरा से उनका दूर-दूर तक कोई परिचय नहीं है। जब वे कहते हैं - 'इस पार प्रिये मधु है तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा?', तो प्रतीत होता है कि मानो इस स्वार्थी संसार को वे प्रेम नदी में डूबा देना चाहते हैं। वे अपनी मस्ती के संदेश में समस्त जगत को झूमा देना चाहते हैं। 'मधुशाला' में सामाजिक विषमता, भेद-भाव, द्वेष-भाव, पारिवारिक टूटन आदि का ओजपूर्ण शब्दों में खंडन किया गया है। हालावादी कविताओं में सूफीवाद की दार्शनिकता को देखा जा सकता है, जिसमें आत्मा को प्रेमी तथा परमात्मा को प्रेमिका मानते हुए अखिल ब्रह्माण्ड में उनकी ज्योति को व्याप्त बताया जाता है।

बोध प्रश्न

- हालावादी कवि किस सुख को स्थायी मान लेता है?
- हालावादी कवि ने परमात्मा को किस रूप में माना है?

मानवतावादी दृष्टिकोण के साथ साहित्य में बच्चन ने प्राणीमात्र के प्रति प्रेम भावना को प्रवाहित करने की कोशिश की है। मानवतावाद की प्रतिष्ठापना के साथ ही बच्चन जी व्यक्तिवाद को प्रथम स्थान प्रदान करते हैं। उनका मानना था कि एक-एक व्यक्ति के निजी अनुभव से ही संसृति को अनुभूत किया जा सकता है। वे जीवन में अथाह समस्याओं का भार प्यार से ही उतारना चाहते हैं।

हरिवंशराय बच्चन की हालावादी रचनाओं में रहस्यवाद का अनूठा समावेश देखा जा

सकता है। उनकी रचनाओं में संसार 'मधुशाला' है, जीवन 'मधुकलश' है, कल्पना 'साकी' तथा काव्य 'प्याला' है, जिसके नशे में मानवतावाद प्रस्फुटित होता है। कवि की वैयक्तिकता में भी समाज आरोपित रहता है।

हरिवंशराय बच्चन की रचनाओं में शुद्ध, साहित्यिक खड़ीबोली का प्रयोग अधिक हुआ है। साथ ही तद्भव, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दों का भी उन्होंने प्रचुरता से प्रयोग किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में गेयात्मकता को अत्यधिक महत्व दिया है। वे अपनी रचनाओं के अभ्यांतरिक सौंदर्यीकरण पर भी विशेष ध्यान देते हैं, जिसके लिए उन्होंने विविध अलंकारों का प्रयोग भी किया है।

हरिवंशराय बच्चन की हिंदी साहित्य को सबसे बड़ी देन छायावादी प्रणय भावना की आध्यात्मिकता के स्थान पर नैतिकता के दृढ़ बंधनों के विरुद्ध विद्रोह करते हुए कविता में मादकता, साक़ी, मैखाना, शराब आदि का खुलकर प्रयोग किया जाना है। कवि ने अपनी 'मधुशाला', 'मधुबाला' तथा 'मधुकलश' आदि कृतियों में हालावाद का मानो मैखाना ही खोल दिया है। बच्चन की इसी हालावादी राह पर कई अन्य कवि भी चले हैं। जगदम्बाप्रसाद मिश्र हितैषी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, पद्माकान्त मालवीय, नरेंद्र शर्मा अंचल आदि ने भी हालावादी परंपरा में रचनाएँ की। भारतीय स्वतंत्रता की लड़ाई के अंतिम पड़ाव तक पहुँचते-पहुँचते हालावादी कवियों की आत्मकेंद्रीयता ने मस्ती और प्रेम की अनुभूतियों के साथ ही व्यक्ति के जीवन संघर्ष को भी व्यक्त किया है। हालावादी कविताओं में प्रेम के साथ दर्द भी अनुस्यूत है, जो सांसारिक दुखों के परिमार्जन में सहायक होती हैं।

बोध प्रश्न

- बच्चन की हालावादी रचनाओं में संसार के लिए किस प्रतीक का प्रयोग हुआ है?
- बच्चन की रचनाओं में मानवतावाद कब प्रस्फुटित होता है?

19.3.3 रचनाओं का परिचय

हिंदी साहित्य में हरिवंशराय बच्चन की रचनाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कविताओं का करुण स्वर 'तेरा हार' (1929) काव्य संग्रह में सबसे पहले फूटता है। 'मधुशाला' (1935) में कवि उमर खैयाम की रुबाइयों से प्रभावित होकर अपने काव्य को एक नया मोड़ देते हैं। इस कृति से कवि हिंदी साहित्य में अमर हो जाते हैं, वे कहते हैं - 'मधुशाला मेरे चेतन, अचेतन, संस्कार, अनुभूति में संचित स्मृति-कल्पना, भय, आशा, निराशा, वेदना-संवेदना, हर्ष

विमर्श-संघर्ष और विद्रोह की एक भाव महौषधि है।' (क्या भूलूँ क्या याद करूँ - बच्चन, पृ. 279)। 'मधुबाला' (1936) में मदिरा के कुप्रभाओं को कवि ने जीवंत अभिव्यक्ति दी है। उनकी रचना 'इस पार-उस पार' में वर्तमान स्थितियों को चित्रित करते हुए भविष्य के संदर्भ में आशंका व्यक्त की गई है।

'मधुकलश' (1937) में कवि की अस्तित्ववादी भावना व्यक्त हुई है, इसमें युगीन समस्याओं का जीवंत दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। 'निशा निमंत्रण' (1938) में कवि का विरही मन सामने आया है। 'एकांत संगीत' (1939) तथा 'आकुल अंतर' (1943) में उनकी निराशा और आशा का द्वंद्व चित्रित हुआ है। 'सतरंगीनी' (1945) में दुःख-सुख के भावों का चित्रण हुआ है। 'बंगाल का काल' (1946) में अकाल से त्रस्त जनता के जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है, इसमें कवि गांधी दर्शन को छोड़ भुजबल को अपनाने का उल्लेख करते हुए हिंसा का समर्थन करने से भी नहीं चूकते हैं। 'हलाहल' (1946) काव्य में मधुशाला की मादकता के लोक से उतर कर कवि जीवन गरल के पान के लिए कटिबद्ध होते हैं।

'सूत की माला' (1948), 'खादी के फूल' (1948) कविताओं में महात्मा गांधी की मृत्यु के बाद के भारतीय राजनीतिक, सामाजिक स्थितियों का चित्रण किया है। 'मिलन यामिनी' (1950) में कवि की मानवीय भावनाओं की संवेदनापूर्ण सत्य की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है, इसमें कवि आनंद, मस्ती तथा आह्लादित रूप में सामने आते हैं। 'प्रणय-पत्रिका' (1955) में राग और शृंगार के वियोग पक्ष की प्रधानता है। 'आरती और अंगारे' (1958) कविता में कवि जीवन की वास्तविकताओं से प्रेरणा लेकर सर्जनरत होते हैं। 'धार के इधर-उधर' (1957) काव्य में कवि 'स्व' से इतर 'पर' की ओर उन्मुख होते हैं, इसमें स्वतंत्रता के बाद के सांप्रदायिक वैमनस्य को कलम के माध्यम से दूर करने की बात करते हैं ।

'बुद्ध और नाचघर' (1958) में कवि ने मुक्तक छंद में बुद्ध के सिद्धांतों से अनजान मानव को जगाने की कोशिश की गई है। 'त्रिभंगिमा' (1961) में लोक-धुन, आत्मिक धुन तथा मुक्त छंद के रूप में कवि की तीन तरह की भावनाएँ व्यक्त हुई हैं। 'चार खेमे चौसठ खूँटे' (1962) काव्य में कवि के विविध भाव व्यक्त हुए हैं, इसमें युवा शक्ति को जागरूकता के मशाल लेकर ध्येय की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी गई है। 'दो चट्टानें' (1965) काव्य में कवि की प्रौढ़ता स्पष्ट लक्षित होती है 'बहुत दिन बीते' (1967) काव्य में कवि की प्रगतिशीलता के दर्शन होते हैं, क्योंकि इसमें स्वार्थ, छल, ईर्ष्या, बनावटीपन, अजनबियत जैसे भावनाओं से युक्त कविताएँ देखी जा सकती

हैं।

'कटती प्रतिमाओं की आवाज़' (1968) काव्य में नए-पुराने मूल्यों के संघर्ष, रूढ़िवाद का विरोध तथा मानवीय मूल्यों का बिखराव चित्रित हुआ है। 'उभरते प्रतिमानों के रूप' (1969) में सामाजिक टूटन को समेटते हुए कवि ध्वंस में निर्माण की खोज करने की ओर आशान्वित हैं। 'जाल समेटा' (1943) में कवि की हालावादी भावना को विराम लग जाता है, यहाँ वे निर्वेद की अवस्था में पहुँच जाते हैं। हरिवंशराय बच्चन जी की काव्य रचनाओं के अतिरिक्त आत्मकथाएँ भी हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर है। उनकी आत्मकथा चार भागों में प्रकाशित हुई है - 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ'(1969), 'नीड़ का निर्माण फिर' (1970), 'बसेरे से दूर' (1977), 'दशद्वार से सोपान तक' (1985)।

बोध प्रश्न

- बच्चन की कृति 'निशा-निमंत्रण' किस वर्ष प्रकाशित हुई?
- 'बसेरे से दूर' कृति किस विधा में लिखी गई है?

19.3.4 हिंदी साहित्य में बच्चन का स्थान एवं महत्व

हिंदी साहित्य में सूरदास के विरह वर्णन में जब कृष्ण गोकुल छोड़ कर मथुरा जाते हैं, तो जो अचेतन अवस्था राधा और अन्य गोपियों की होती है वैसी ही मनःस्थिति हालावादी भावना में भी अनुभूत की जा सकती है। हालावादी कवियों की मान्यता है कि मानव जीवन में दुखों की जो कड़ुआहट होती है उसके समक्ष मदिरा की कड़ुआहट कुछ भी नहीं होती है। मदिरा के नशे में व्यक्ति अपने जीवन के दुःख-दर्द को भूल कर अचेतनता के क्षण का आनंद उठा सकता है। आलोचकों ने हालावादियों की भावना को आध्यात्मिकता के विरुद्ध विद्रोह तथा भोगवाद की प्रबलता माना है। क्योंकि मदिरापान के बाद उसके नशे में व्यक्ति उन्मादित होकर अपने जीवन के सारे गम भूल जाता है। हालावादी रचनाओं में व्यक्तिवाद की मुखरता को कवि हरिवंशराय बच्चन की कविताओं में देखा जा सकता है। कवि बच्चन की रचनाओं में रूढ़ियों के संदर्भ में कवि कहते हैं -

'विश्व तो चलता रहा है, थाम राह बनी बनाई
किन्तु इन पर किस तरह मैं - कवि चरण अपने बढ़ाऊ'

कवि की कृतियों में जीवन का कोई भी पक्ष छूटता नहीं हैं। अपने समय के क्षणवाद को कवि अपनी रचनाओं में बड़ी सुन्दरता के साथ उद्घाटित करते हैं। आज़ादी के पश्चात् भारतीय

तथा विश्व राजनीति को भी वे स्वर देते चलते हैं। वे कहते हैं - 'कल्पना सूरा और साकी, पीने वाला एकाकी।'

बच्चन के लिए उनकी हालावादी विचारधारा मनीषियों के ईश्वरीय कोटि की भावना के समान है। प्रकृति के विविध रूपों में भी वे उस परम सत्ता को अनुभूत करते हैं। अपने भावों को सरल, सम्प्रेषणीय बनाने के लिए वे प्रतीकों का प्रयोग करते हुए उसे प्रभावी अभिव्यक्ति देते हैं, तभी तो वे कहते हैं -

'मृदु भावों के अंगूरों की, आज बना लाया हाला,
प्रियतम अपने ही हाथों से, आज पिलाऊंगा प्याला
प्रियतम तू मेरी हाला है, मैं तेरा प्यासा प्याला
अपने को मुझमें भरकर तू, बनता है पीनेवाला ।'

कवि अपनी रचनाओं में आध्यात्मिकता को भी शब्दों में बांधते चलते हैं। वे तद्युगीन समाज की अनिश्चितता, संदिग्धता को स्वर देते हुए कहते हैं -

'इस पार प्रिय मधु है तुम हो , उस पार न जाने क्या होगा ?'

कवि की संदिग्ध भावनाओं में भी लयबद्ध, स्वच्छंद छंदों का प्रयोग किया गया है। कवि की कविताओं में प्रचलित नैतिकता का सर्वथा अभाव है, किन्तु आध्यात्मिकता के धरातल पर ईश्वर की सत्ता तक पहुँचने का मार्ग प्रेम पथ से ही मिल सकता है। बच्चन ने हिंदी साहित्य को विश्व के उत्तम साहित्यिक कोटि में स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कवि के गीतों में युगों तक अमर रहने की क्षमता है। उनके काव्य आस्था, आशा से युक्त है तो निराशा में भी डूबे प्रतीत होते हैं। किसी एक ही विषय से बद्ध होने के स्थान पर वे विविध भावों से युक्त सार्थक रचनाएँ करते हैं।

कवि के साहित्यिक अवदानों के लिए समय-समय पर उन्हें विविध पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया गया। 'दो चट्टानें' कविता के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' (1968) प्रदान किया गया। उनकी अन्य महत्वपूर्ण रचनाओं के लिए 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' (1968), एफ्रो एशियाई सम्मेलन का 'कमल पुरस्कार' (1968), बिड़ला फाउंडेशन द्वारा चार आत्मकथात्मक कृतियों के लिए 'सरस्वती सम्मान' (1991) तथा भारत सरकार द्वारा 1976 में 'पद्म भूषण' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

बोध प्रश्न

- कवि बच्चन को 'दो चट्टानें' काव्य संग्रह के लिए किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया?
- 'कमल पुरस्कार' बच्चन को किसकी ओर से प्रदान किया गया?

डॉ. हरिवंशराय बच्चन को छायावादोत्तर काल में 'व्यक्तिवादी गीति कविता' का प्रमुख रचनाकार माना जाता है। इन्होंने प्रेम और मस्ती को व्यंजित करने वाली कविताएँ रचने के लिए 'हाला' (मदिरा) का प्रतीकवत प्रयोग किया। इसलिए इन्हें हालावादी कवि भी कहा जाता है और 'हालावाद के प्रवर्तक' के रूप में याद किया जाता है। दरअसल व्यक्तिवादी गीति कविता बड़ी हद तक छायावाद के निकट है। इस कविता की दृष्टि छायावाद की भाँति ही रोमानी है और यथार्थ जगत के प्रति इनकी प्रतिक्रिया अत्यंत भावात्मक है। निजी सुख-दुख के आवेग के कारण इस कविता में तीव्र आत्म-संपृक्ति और उत्तेजना मिलती है। सौंदर्य, प्रेम, उल्लास और विषाद की अनुभूति इसका मूल कथ्य है। आलोचकों ने माना है कि इस काव्य की केंद्रीय वृत्ति लौकिक प्रेम है। उसमें छायावाद जैसी रहस्यात्मकता नहीं है। जैसा कि कहा जा चुका है, डॉ. हरिवंशराय बच्चन इस कविता धारा के सर्वोत्तम कवि हैं।

प्रिय छात्रो! अब तक आप यह समझ चुके होंगे कि बच्चन की कविता मुख्य रूप से आत्म अनुभूतिपरक है। उन्होंने स्वानुभूति से उपजे सुख-दुख, सौंदर्य और प्रेम के उन्मुक्त गीत गाए हैं। लेकिन जैसा कि डॉ. रामदरश मिश्र ने लिखा है, बच्चन का स्वर केवल यहीं तक सीमित नहीं है। वे सामाजिक विसंगतियों और विद्रोह को भी व्यक्त करते हैं।

> "किंतु ऐसा लगता है विद्रोह या सामाजिक सत्य-चित्रण बच्चन के स्वभाव में नहीं अंटते। इसके लिए जिस सामाजिक जीवन-भोग और बौद्धिक यथार्थवादी दृष्टि की आवश्यकता होती है, वह बच्चन या इस धारा के किसी कवि में नहीं है। बच्चन के गीत जहाँ अपनी सहज भाषा और अनुभूति की निश्छलता के करा गीतिकाव्य को नई गरिमा प्रदान करते हैं, वहाँ कहीं-कहीं उत्तेजना, भाषा के स्पाटपन, शब्दों, बिंबों के अपव्यय तथा स्फीति के कारण बहुत प्रभावहीन भी सिद्ध होते हैं। ××× अपनी धारा के अन्य कवियों से बच्चन इस बात में अलग हैं कि जहाँ और लोगों ने बाद में अपने को दुहराया है, वहाँ बच्चन ने निर्मम भाव से अपनी जानी-पहचानी दुनिया को छोड़कर यथार्थ की नई दुनिया में प्रवेश किया है आर उसके अनुकूल भाषा की तलाश की है।" (हिंदी साहित्य का इतिहास, सं. नगेंद्र, पृ. 600)

19.4 पाठ सार

'हालावाद' के प्रवर्तक कवि हरिवंशराय बच्चन हिंदी साहित्य में छायावादी विचारधारा के बाद मस्ती तथा अल्हड़पन को लेकर रचनाएँ प्रस्तुत करते हैं। उनके व्यक्तित्व की विविधता उनकी रचनाओं में प्रकट होती है। उमर खैयाम की रुबाइयों को बच्चन ने हृदय की गहराइयों में उतारते हुए अनुदित किया है, जो हालावादी भावनाओं के साथ साहित्य में प्रकट हुई। कवि की कृतियों में अपनी संस्कृति, परंपराओं के प्रति आदर भाव के साथ ही रूढ़ियों के विरुद्ध विरोध की भावना भी अभिव्यक्त हुई है। उनकी 'मधुशाला' में रूढ़ियों को सीधे-सीधे अंगूठा दिखाया गया है। 'मधुबाला' में सरल प्रेमभाव की अभिव्यक्ति पाठकों के मन को मोह लेती है। कभी-कभी कवि जब परिस्थितियों से निराश हो उठता है तो 'मधुकलश' लेकर प्रस्तुत होता है।

जीवन सदैव एक सा नहीं होता है। बच्चन की रचनाओं में अधिकांशतः एक ही रस परिलक्षित हुआ है। किन्तु कभी-कभी जब हाला का नशा उतर जाता है तो कवि 'दो चट्टानें' जैसी ओजपूर्ण कृति की रचना करते हैं। वे कहते हैं -

'उद्घाटन नए से पुराने का होता है।
सृजन पुराने का नए से होता है।
एही क्रम कर अथ - इति कहूँ नाही।'

कवि की रचनाओं में मात्र देश-कालगत घटनाएँ ही नहीं है, अपितु दुनिया में घटित घटनाओं को भी चित्रित किया गया है, जैसे सात्र के नोबल पुरस्कार ठुकराने का विषय हो। कवि की रचनाएँ, व्यक्तित्व, भाषा, शैली आदि पाठकों को सहज ही अपनी ओर खींचती है। बच्चन की रचनाओं में उनकी व्यक्तिवादिता अहंमयता की श्रेणी में पहुँच जाती है। बच्चन के हालावाद का हाल अकबर के 'दीन ए इलाही' की तरह सिद्ध हुआ, जो उनके साथ ही सिमट कर रह गया।

19.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. डॉ. हरिवंशराय 'बच्चन' उत्तर-छायावाद में प्रेम और मस्ती के काव्य के उन्नायकों में प्रमुख हैं।
2. बच्चन के काव्य का मुख्य स्वर है - माधकता। इस माधकता का स्रोत 'हाला' होने के कारण इसे हालावाद भी कहा गया है।
3. 'हाला' बच्चन के साहित्य में सांसारिक रूढ़ियों के भय से मुक्ति का माध्यम है।

4. बच्चन के साहित्य में व्यक्तिवाद और रोमांस क्रमशः सामाजिक चेतना और यथार्थ की ओर प्रस्थान करते हैं।

19.6 शब्द संपदा

1. अखिल = संपूर्ण
2. अनुस्यूत = परस्पर मिला हुआ
3. अवदान = योगदान
4. अवलोकन = ध्यानपूर्वक देखना
5. ओजपूर्ण = वीरतापूर्ण
6. कृतित्व = रचनात्मक कार्य
7. क्षणभंगुर = अस्थायी
8. क्षयरोग = साँस का संक्रामक रोग
9. गह्वर = गहरा स्थान या गड्ढा
10. निर्वेद = ग्लानि
11. परिमार्जन = सुधार करना
12. प्रणयन = साहित्यिक लेखन
13. प्रस्फुटित = विकसित होना
14. ब्रह्माण्ड = संपूर्ण विश्व
15. भोगवाद = मौजमस्ती में जीने का सिध्दांत
16. मणिकांचन = रत्न और स्वर्ण का मेल
17. मनोनीत = चुना हुआ
18. मूर्धन्य = सर्वश्रेष्ठ
19. विस्मरण = भूल जाना
20. संदिग्धता = भ्रम में होने की अवस्था
21. सूफ़ी = मुस्लिम संत
22. हालावाद = मदिरावाद

19.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. हरिवंशराय बच्चन के व्यक्तित्व पर विस्तृत प्रकाश डालिए।
2. हिंदी साहित्य में हालावादी काव्यधारा का विवेचन कीजिए।
3. हरिवंशराय बच्चन की रचना यात्रा का उल्लेख कीजिए।
4. हिंदी साहित्य में हरिवंशराय बच्चन के स्थान का निर्धारण कीजिए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. हालावादी काव्य का क्या अर्थ है?
2. हरिवंशराय बच्चन के व्यक्तित्व का परिचय दीजिए।
3. बच्चन की रचना यात्रा पर प्रकाश डालिए।
4. हिंदी साहित्य में बच्चन के स्थान एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I . सही विकल्प चुनिए -

1. इसमें कौन सी रचना बच्चन की नहीं है? ( )

    (अ) निशा निमंत्रण (आ) नीड़ का निर्माण (इ) कामायनी

2. 'बच्चन रचनावली' कितने खंडों में लिखी गई है? ( )

    (अ) आठ खंड (आ) नौ खंड (इ) दस

3. हरिवंशराय बच्चन की पहली कविता कौन सी है? ( )

    (अ) तेरा हार (आ) नीड़ का निर्माण (इ) दो चट्टानें

4. मधुशाला किस वाद से प्रभावित रचना है? ( )

    (अ) सूफीवाद (आ) मार्क्सवाद (इ) प्रयोगवाद

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. हरिवंशराय बच्चन के पिता का नाम .... था।
2. हालावाद के अनुसार ईश्वर की सत्ता तक पहुँचने का मार्ग ....से ही मिल सकता है।
3. 'मधुकलश' काव्य संग्रह का प्रकाशन.................. में हुआ।
4. सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' कवि बच्चन को .... प्राप्त हुआ।
5. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' कवि बच्चन की .... विधा की रचना है।

III. सुमेल कीजिए -

1. निशा निमंत्रण (अ) कहानी
2. 'दशद्वार से सोपान तक' (आ) कविता
3. अग्निपथ' (इ) आत्मकथा

19.8 पठनीय पुस्तकें

1. छायावादी कवियों की गीत दृष्टि : उपेंद्र
2. बच्चन - व्यक्तित्व और कृतित्व : कृष्णचंद्र पांडेय
3. गद्यकार बच्चन : जीवन प्रकाश जोशी
4. बच्चन - व्यक्ति और कवि : सं. बांके बिहारी भट्नागर
5. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास : नगेंद्र
6. हिंदी कविता के प्रमुख वाद : आदित्य प्रचण्डिया

इकाई 20 : रवि और रात

रूपरेखा

20.1 प्रस्तावना
20.2 उद्देश्य
20.3 मूल पाठ : रवि और रात
20.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय
20.3.2 अध्येय कविता
20.3.3 विस्तृत व्याख्या
20.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन
20.4 पाठ सार
20.5 पाठ की उपलब्धियाँ
20.6 शब्द संपदा
20.7 परीक्षार्थ प्रश्न
20.8 पठनीय पुस्तकें

20.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! हिंदी साहित्य के हालावादी कवि हरिवंशराय बच्चन के विचार अपने युग के अन्य कवियों से बिलकुल हटकर होने के कारण बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। हरिवंशराय बच्चन का जन्म 27 नवंबर, 1907 में हुआ। इनके पिता प्रताप नारायण श्रीवास्तव तथा माँ सरस्वती देवी थीं। कवि ने अपनी ‘मधुशाला’, ‘मधुबाला’ तथा ‘मधुकलश’ आदि कृतियों के माध्यम से हालावादी विचारधारा की स्थापना की।

प्रायः साहित्यकार के रचना कर्म का उद्देश्य अपने युग के समस्त परिवेशगत एवं परिस्थितिजन्य विषमताओं का संतुलन करना होता है। भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात् जब जनता कल्पना के आकाश से यथार्थ की धरती पर उतरी तो ऐसे में मध्यवर्ग अधिक अकुलाया हुआ था। मध्यम वर्ग के व्याकुल हृदय को कवि बच्चन ने जीवंत अभिव्यक्ति दी। ‘निशा निमंत्रण’ (1938) में संकलित 13-13 पंक्तियों का गेयात्मक कविताएँ हरिवंशराय के कलम से मानो बोल उठी हो। ‘आ रही रवि की सवारी’ तथा ‘भीगी रात विदा अब होती’ नामक कविता में अनुभूतियों का

सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

बच्चन की गेय शैलीयुक्त कविताओं में सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त हुआ है। इन कविताओं में कवि की अनुभूति एवं अभिव्यक्ति पक्ष का सशक्त रूप दृष्टिगत होता है। प्रस्तुत पाठ में बच्चन के काव्यात्मक विशेषताओं को उनकी उक्त कविताओं के माध्यम से अवलोकन किया जा सकता है। पाठ का शीर्षक 'रवि और रात' आशा और निराशा, अच्छे और बुरे, सुख और दुःख के भावों का प्रतीक है। इस पाठ में पहली कविता में प्राकृतिक बिंबों तथा प्रतीकों की सुंदर प्रस्तुति हुई है, तो दूसरी कविता में प्रकृति के माध्यम से जीवन में दुःख के जाने और सुख के आने की सहज बिंब उपस्थित है।

20.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- डॉ. हरिवंशराय बच्चन की काव्यगत विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
- अध्येय कविताओं में व्यक्त प्रकृति की सुंदर छटाओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- अध्येय कविताओं के माध्यम से कवि के जीवन दर्शन से परिचित हो सकेंगे।
- कवि के मूल्य-चिंतन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

20.3 मूल पाठ : रवि और रात

20.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

हरिवंशराय का काव्य संग्रह 'निशा निमंत्रण' का प्रकाशन 1938 ई. में हुआ। हिंदी साहित्य के हालावादी कवि इस संग्रह में छायावादोत्तर कवियों की तरह प्रकृति चित्रण करते हुए मानवीय व्यवहार को दर्शाते हैं। सुगठित गीतिशैली में 13-13 पंक्तियों में कवि की सघन अनुभूति की अभिव्यक्ति हुई है। 'निशा निमंत्रण' में संग्रहित कविता 'आ रही रवि की सवारी' तथा 'भीगी रात विदा अब होती' के माध्यम से कवि ने जीवन के मर्म को समझाने की कोशिश की है। कवि के अनुसार सबका अपना-अपना समय होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि राजा से रंक और रंक से राजा बनने में अधिक समय नहीं लगता है। इसीलिए कविता के माध्यम से कवि सदैव प्रयत्नरत रहने के लिए प्रेरित करते हैं। कवि ने समय को सबसे अधिक सशक्त माना है। उन्होंने सबको एक समान माना है। उदाहरण के लिए कवि ने पहली कविता में दार्शनिक भाव अपनाया है, तो दूसरी कविता में आशावादिता के भावोद्गार प्रस्तुत किए है।

'आ रही रवि की सवारी' कविता के माध्यम से कवि उदयाचल दिवाकर का वर्णन करते हुए उन्हें दिन का राजा बताते हैं। वे प्राकृतिक उपादानों के द्वारा सूर्य को उदार राजा का स्थान देते हैं, क्योंकि सूर्य रात के अँधेरे को पार कर जब उदित होता है, तो कवि सूर्य के विजय की प्रसन्नता में नहीं बल्कि चंद्रमा को उदास देख कर दुखी हो जाते हैं। उन्हें चाँद लुटा हुआ सा प्रतीत होता है। इसे देख कर कवि उदास हो जाते हैं। समय के परिवर्तनशील स्वरूप को देख कर कवि प्रकृति का सुंदर चित्र प्रस्तुत करते हैं। दूसरी कविता 'भीगी रात विदा अब होती' कविता में कवि ने समय के अकल्पनीय परिवर्तन को एक नई दृष्टि से चित्रित किया है। कवि ने रात को एक आभाहीन, क्लांत स्त्री के रूप में चित्रित किया है, जो थक कर रोती हुई जा रही है। कवि कहते हैं कि उसके दुःख से प्रकृति के अन्य उपादानों को मानो कोई फर्क नहीं पड़ता है। वर्तमान सामाजिक परिवेश भी इसी प्रकार संवेदनहीन होता जा रहा है। कवि कहते हैं, जो रात प्रकृति में शीतलता का संचार कर रही थी, अब वही सूर्य के आगमन की खुशियाँ मना रही है। इस कविता का सबसे बड़ा सौंदर्य कवि उस समय चित्रित करते हैं, जबकि सूरज स्वयं अपने हाथ बढ़ा कर पुष्पों के आँसू पोछने लगते हैं। इस प्रकार कवि परिवर्तनशील प्रकृति का मनोरम चित्रण करते हैं।

20.3.2 अध्येय कविता

1. आ रही रवि की सवारी

आ रही रवि की सवारी।
नव-किरण का रथ सजा है,
कलि-कुसुम से पथ सजा है,
बादलों - से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी।
आ रही रवि की सवारी।

विहग, बंदी और चारण,
गा रहे हैं कीर्ति-गायन,
छोड़कर मैदान भागी, तारकों की फ़ौज सारी ।
आ रही रवि की सवारी ।

चाहता, उछलूँ विजय कह,
पर ठिठकता देखकर यह
रात का राजा खड़ा है, राह में बनकर भिखारी।
आ रही रवि की सवारी।

2. भीगी रात विदा अब होती

भीगी रात विदा अब होती।
रोते-रोते रक्त नयन हो,
पीत बदन हो, छाया तन हो,
पार क्षितिज के रजनी जाती, अपना अंचल छोर निचोती।
भीगी रात विदा अब होती।

प्राची से ऊषा हँस पड़ती,
विहगावलियाँ नौबत झड़ती,
पल में निर्मम प्रकृति निशा के रोदन की चिंता खोती।
भीगी रात विदा अब होती।

हाथ बढ़ा सूरज किरणों के
पोंछ रहा आँसू सुमनों के,
अपने गीले पंख सुखाते तरू पर बैठ कपोत-कपोती।
भीगी रात विदा अब होती।

निर्देश : 1. इन कविताओं का सस्वर वाचन कीजिए।
2. इन कविताओं का मौन वाचन कीजिए।

20.3.3 विस्तृत व्याख्या

आ रही रवि की ....सवारी।

शब्दार्थ : अनुचर = अनुयायी, पोशाक = परिधान, धारी = धारण करना, विहग = पक्षी, बंदी चारण = वंश कीर्ति गाने वाली जाति, ठिठकना = सहसा रुक जाना, राह = रास्ता, क्षितिज =

दृष्टिसीमा, रजनी = रात, छोर = किनारा, विहगावलिया = पक्षियों का समूह, नौबत = बधाई, निर्मम = कठोर, निशा = रात्रि, कपोत-कपोती = नर और मादा कबूतर।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश प्रसिद्ध हालावादी कवि हरिवंशराय बच्चन की कविता 'आ रही रवि की सवारी' से उद्‌धृत है। यह उनके काव्य संग्रह 'निशा निमंत्रण' से ली गई है।

प्रसंग : 'आ रही रवि की सवारी' कविता में कवि हरिवंशराय बच्चन ने प्रकृति के सुंदर, सजीव प्रतीकों के माध्यम से राजा का प्रजा के प्रति व्यक्त होने वाले भाव को प्रकट किया है। जहाँ कविता में सूर्योदय होने पर पुष्प प्रसन्न हो उठते हैं, बादल सूर्यकिरणों के स्वर्णिम वस्त्र से शोभित होकर अपने राजा का स्वागत करने लगते हैं। पक्षी कलरव करते हुए मानो सूर्य के आगमन की ख़ुशी में गायन कर रहे हों । रात का राजा चंद्रमा अपने तारों की फौज़ लेकर मानो लुटा-पिटा जा रहा है। कवि की इन्हीं संवेदनाओं की अभिव्यक्ति प्रस्तुत कविता में हुई है।

व्याख्या : 'आ रही रवि की सवारी' कविता में कवि हरिवंशराय बच्चन ने सूर्योदय के सुंदर दृश्य का चित्रण किया है। वे कहते हैं रात के अँधेरे को दूर करने वाला सूर्योदय अत्यंत मनोहारी लग रहा है। प्रकृति के अलग-अलग उपादान सूर्य के आगमन की प्रसन्नता अपने-अपने ढंग से व्यक्त करते हैं। सूर्योदय होते ही आकाश से धरती तक का दृश्य अत्यंत मनोरम बन जाता है। दिन के राजा के आने का स्वागत करते हुए प्रकृति नवकिरणों का रथ सजा कर तथा समस्त पथ में पुष्प खिलकर वातावरण को अधिक सुवासित कर रहे हैं। जो बादल अब तक चंद्रमा के प्रकाश में दूधिया वस्त्र पहने शांति का संदेश दे रहे थे, वे अब स्वर्णिम किरणों के वस्त्र धारण किए हुए दिन के राजा के अनुचर बने हुए से प्रतीत हो रहे हैं।

कवि कह रहे हैं कि जैसे राजा की यशोगाथा का गायन बंदी और चारण कवि करते हैं, वैसे ही पक्षी चारों ओर कलरव करते हुए मानो सूर्य की कीर्तिगाथा गा रहे हैं। सफलता-असफलता, जय-पराजय, जीत-हार होने पर सदा पराजित पक्ष के सैनिक मैदान छोड़कर निराश मन से वापस जाने लगते हैं। चंद्रमा अब तक जो रात का राजा बन कर अमृत वर्षा करते हुए जगत प्राणियों के मन को शीतलता प्रदान कर रहे थे, अब वे सूर्य के आने पर भागने की तैयारी कर रहे हैं ।

कवि सूर्य के उत्थान और चंद्रमा के पतन के दृश्य के माध्यम से समय के परिवर्तनकारी स्वरूप को बताते हैं। कवि का भी मन करता है कि वह भी सूर्य के आगमन की प्रसन्नता में उछले, किंतु चंद्रमा को सामने ही उदास, लाचार, भिखारी की तरह खड़ा देख कर वे स्वयं को संयमित

कर लेते हैं।

इस कविता के माध्यम से कवि यह कहना चाहते हैं कि समय सदैव एक समान नहीं रहता। जीवन में कभी जय, तो कभी पराजय का सामना करना पड़ता है। अच्छा-बुरा समय सभी के जीवन में आता-जाता रहता है। मानव को अपने जीवन में लक्ष्य से कभी नहीं चूकना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात कवि यह कहना चाहते हैं कि सृष्टि में सब का अपना-अपना महत्व होता है। इसलिए हमें अपने कार्य को पूरे मनोयोग के साथ करना चाहिए। सूरज रात के अंधकार रुपी संकट को पार करके उदित होता है। जो चंद्रमा अपने आकर्षक रश्मियों से सबको अपने मायाजाल में बाँध कर रखता है, वही उगते सूरज की आभा को देख कर अपना अस्तित्व छिपाने लगता है। सफलतम व्यक्तियों के स्वागत में दुनिया उसके सामने नतमस्तक हो जाती है। अतः कवि कहते हैं कि सृष्टि में सबका अपना-अपना समय होता है। प्रकृति में फूल, पत्ते, नदियाँ, जीव-जंतु तथा समस्त प्राणियों का अपना महत्व होता है। मानव को किसी की भी अवहेलना किए बिना अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए हमेशा लगे रहना चाहिए तथा सही समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

बोध प्रश्न

- रवि की सवारी के स्वागत में पथ किस प्रकार सजा है?
- रवि के आगमन पर कीर्ति गायन कौन गा रहे हैं?
- कवि ने बादलों की उपमा किससे दी है?
- रात के राजा कवि को किसकी भांति प्रतीत होते हैं?
- कवि ने दिन के राजा का अनुचर किसे कहा है?

भीगी रात विदा ....अब होती।

शब्दार्थ : नयन = आँख। क्षितिज = वह स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं। रोदन = रोना।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश प्रसिद्ध हालावादी कवि हरिवंशराय बच्चन की कविता 'भीगी रात विदा अब होती' से उद्धृत है।

प्रसंग : प्रस्तुत कविता में कवि रात्रि को स्त्री के रूप में कल्पित करते हैं, जो प्रातः होने पर कांतिहीन होकर अपने क्षितिज की ओर जा रही है। दूसरी ओर ऊषा हंसते हुए आ रही है। प्रकृति के इन उपादानों के माध्यम से कवि ने जीवन की क्षणिकता को बताया है। साथ ही कवि इस

बात की ओर भी इंगित कर रहे हैं कि सफल, समर्थ तथा सक्षम व्यक्ति को हमेशा अपने से कमजोर पक्ष के साथ संवेदनशीलता का परिचय देना चाहिए। प्रकृति के माध्यम से बच्चन जी ने संसार के व्यवहार को चित्रित करते हुए कहा है कि जो वातावरण अब तक रात्रि के दुःख में दुखी था, वही अब सूर्य के आने की प्रसन्नता में निमग्न है।

व्याख्या : कवि हरिवंशराय बच्चन कहते हैं कि रात्रि रूपी स्त्री की आँखें रोते-रोते लाल हो गई है। वह रात्रि पर्यंत चल-चल कर थक चुकी है, जिसके कारण उसका मुख पीला पड़ गया है तथा शरीर श्यामल हो गया है। वह चुपचाप अपना सिर झुकाए अनंत आकाश के पार अपने आंचल को निचोड़ते हुए चली जा रही है। क्योंकि वह अब तक रात्रि की रानी बनी समस्त धरा पर अपनी कला बिखेर रही थी, किंतु अब उसके वैभव का साम्राज्य समाप्त हो चुका था। अपने एकछत्र साम्राज्य के पतन पर वह रोये जा रही है और अपने आँसुओं को अपने आँचल से पोछती हुई निचोड़ती जा रही है। उस स्त्री के अश्रुकण प्रकृति में ओस की बूँदें बनकर बिखरी हुई हैं।

कवि जीवन के पतन तथा उत्थान को सम दृष्टि से देखने के लिए प्रेरित करते हैं। वे कहते हैं कि प्रकृति रात्रि के पतन में तथा उसके जाने के दुःख में दुखी होकर रजनी को अब तक सांत्वना दे रही थी। ऐसे ही समय में पूर्व दिशा से ऊषा हँसते हुए आने लगती है, जिसे देख कर पक्षियों के झुंड अपने-अपने स्वर में गा उठते हैं। प्रकृति भी सांसारिक कलाओं की परिवर्तनशीलता को देखते हुए अपना व्यवहार बदलती रहती है। ऊषा को पूर्व दिशा से हँसते हुए आते देख कर तुरंत बधाइयाँ गाने लगती है। अब प्रकृति को रात्रि की उदासी विस्मृत हो जाती है।

कविता के अंतिम चरण में कवि बच्चन कहते हैं कि रात्रि के अँधेरे को चीरकर सूर्य जब अपने समस्त तेज के साथ आता है तो वह अपनी सफलता पर इतराता नहीं है बल्कि वह एक सहिष्णु तथा संवेदनशील राजा की भाँति अपने किरणों के हाथ बढ़ाकर स्वयं पुष्पों के आँसू पोछने लगता है। पेड़ पर बैठे कबूतर युगल अपने भीगे पंख सुखाकर उड़ने के लिए तत्पर होने लगते हैं। कवि सृष्टि की निरंतरता को बताते हुए प्रकृति का सुंदर मानवीकरण करते हैं।

बोध प्रश्न

- कवि ने उक्त कविता में किसकी विदाई का चित्रण किया है?
- क्षितिज के पार कौन जा रही है?
- पूर्व दिशा की ओर से कौन हँसते हुए आ रही है?

- पक्षीगण किसके आने की ख़ुशी में गा रहे हैं?
- सूर्य किसके आँसू पोछते हैं?
- प्रकृति को कवि ने निर्मम क्यों कहा है?

20.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

'रवि और रात' शीर्षक से प्रस्तुत पाठ के अंतर्गत डॉ. हरिवंशराय बच्चन के दो गीत सम्मिलित हैं - 1. 'आ रही रवि की सवारी' और 2. भीगी रात विदा अब होती।' ये दोनों गीत उनके 'निशा निमंत्रण' नामक काव्य संग्रह से उद्धृत हैं। कवि ने प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से संसार के परिवर्तनमय स्वरूप को विश्लेषित किया है। उन्होंने जीवन में उत्थान और पतन की स्थिति में समदृष्टि को अपनाने की प्रेरणा दी है। समाज में वंचितों को स्नेहपूर्वक अपनाने का दृश्य कवि रवि के माध्यम प्रस्तुत करते हैं। सफलता के उन्माद में प्रायः लोग पराजित पक्ष की अवहेलना कर देते हैं। किंतु रवि अपनी सफलता में यह नहीं भूलते कि रात इस सृष्टि पर अब तक अपना साम्राज्य स्थापित किए हुए था। एक सच्चा विजेता वही होता है जो अपने प्रतिपक्ष के सम्मान की रक्षा करते हुए उससे उदारता का व्यवहार करता है। जहाँ कवि 'आ रही रवि की सवारी' कविता में रवि के स्वागत में पुष्पों को पथ की सजावट करते हुए, बादलों को स्वर्ण किरणों का पोशाक पहने उनका अनुचर तथा तारों को चंद्रमा का सैनिक बताते हुए चित्रण करते हैं। वहीं दूसरी कविता 'भीगी रात विदा अब होती' कविता में रात्रि को स्त्री के रूप को कल्पित करते हुए रवि की उदारता को रेखांकित करते हैं।

'हिंदी साहित्य का इतिहास' (सं. डॉ. नगेंद्र) में यह लक्षित किया गया है कि डॉ. बच्चन का आरंभिक जीवन कष्टों और अभावों में बीता। उन्हें असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण जेल यात्रा भी करनी पड़ी। इसका परिणाम यह हुआ कि इनकी कविता हालावाद के बावजूद जीवन से पूरी तरह विमुख नहीं हो सकी। डॉ. तरकनाथ बाली के शब्दों में -

> "इन (बच्चन) के 'मधुशाला', 'मधुबाला' और 'मधुकलश' काव्य संग्रहों में उमर खैयाम 'रुबाइयों' का प्रभाव लक्षित होता है। किंतु 'मधुशाला' में डूबा हुआ यह कवि सामाजिक विषमता से अनजान नहीं है। उसने एक ओर तो उद्दाम यौवन की लालसा को अपनाया है और दूसरी ओर उसी स्तर पर सामाजिक संवेदना को भी मुखर करने का प्रयास किया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि कवि ठोस यथार्थ को पूरी तरह से ग्रहण नहीं कर पाया। हाँ, जीवन की विषमताओं

को एक सामान्य अनुभूति के स्तर पर सुलझाने का प्रयास उसने अवश्य किया है।" (हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 544)

अंततः यह कहा जा सकता है कि 'निशा निमंत्रण' से लिए गए दोनों गीत 'आ रही रवि की सवारी' और 'भीगी रात विदा अब होती' हालावादी कवि के सकारात्मक चिंतन से उत्पन्न हैं, हाला कि खुमारी से नहीं।

बोध प्रश्न

- बच्चन जी के बारे में तारकनाथ बाली ने क्या कहा?

20.4 पाठ सार

प्रातः होने पर जव रवि की सवारी निकलती है तो उनका रथ नई-नई किरणों से सजा हुआ है। रवि के आगमन की ख़ुशी में पुष्प एवं कलियाँ पूरे मार्ग को सुवासित किए हुए हैं। यहाँ तक कि रवि के अनुचर बादल भी रवि किरणों के स्वर्ण वस्त्र पहने हुए हैं। पक्षी विविध स्वर में रवि की विजय गाथा गाने लगते हैं। चंद्रमा की पराजित तारों की सेना मैदान छोडकर भाग रही है। यह दृश्य देख कर उल्लास में कवि भी उछलना चाहते हैं, लेकिन आभाहीन चंद्रमा को देखकर उनका मन सृष्टि के परिवर्तनशील स्वभाव से उदास हो उठता है।

कवि हरिवंशराय बच्चन ने 'भीगी रात विदा अब होती' कविता में रात को एक स्त्री की गरिमा से युक्त बताते हुए भी सृष्टि की निस्सारता पर कटाक्ष किया है। कवि ने रवि की उदारता को चित्रित करते हुए प्रकृति के माध्यम से सृष्टि के व्यवहार परिवर्तन को बताया है। रात्रि के सहचर, जो रात्रि के विषाद में डूबे रहते हैं, पुष्प पर ओस के कण उसके दुःख में दुखी होते हैं। किंतु सूर्य के आगमन होते ही दृश्य बदल जाता है। कबूतर युगल अपने गीले पंख से ओस के कण झाड़ रहे हैं, ऐसे में रवि अपने किरण रुपी हाथों से फूलों के अश्रुकण पोछते हुए अपने कोमल स्नेह की लालिमा फ़ैलाने लगते हैं। इस प्रकार 'रवि और रात' हरिवंशराय बच्चन की अति प्रेरक कविता सिध्द होती है।

20.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. 'निशा निमंत्रण' के गीत अंधकार पर प्रकाश की विजय के माध्यम से मृत्यु पर जीवन की विजय को प्रकट करती हैं।

2. इस काव्य संग्रह की रचनाओं में कवि का वह आंतरिक संघर्ष प्रकट हुआ है जिसका संबंध निराशा से निकलकर आशा की ओर जाने से है।
3. बच्चन के साहित्य में यह विश्वास अनेक प्रकार से व्यक्त हुआ है कि जीवन और जगत का यथार्थ 'निर्माण' है, 'ध्वंस' नहीं।
4. हालावाद की सीमित चारदीवारी के बाहर बच्चन का काव्य सकारात्मक संघर्ष की प्रेरणा देने वाला काव्य है।

20.6 शब्द संपदा

1. अकुलाया	=	बेचैन होना
2. अनुभूति	=	अनुभव
3. आभाहीन	=	जिसमें तेज न हो
4. उत्थान	=	उठना या उठाना
5. उपादान	=	अपने लिए कुछ प्राप्त करना
6. कलरव	=	पक्षियों की मधुर आवाज़
7. क्लांत	=	उदासी, थकान
8. जन्य	=	जन्म लेने वाला
9. दर्शाना	=	बतलाना
10. नतमस्तक	=	सिर झुकाना, नम्र होना
11. निरूपण	=	अच्छी तरह समझाना
12. पतन	=	गिरने की प्रक्रिया
13. भावोद्गार	=	विचार व्यक्त करना
14. मर्म	=	रहस्य
15. रंक	=	गरीब
16. साक्षी	=	गवाही देने वाला

20.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. हरिवंशराय बच्चन की काव्यदृष्टि पर प्रकाश डालिए।
2. हिंदी साहित्य के आधुनिककालीन कवियों में हरिवंशराय बच्चन का स्थान निर्धारित कीजिए।
3. 'रवि और रात' कविता में चित्रित प्रतीक व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।
4. सृष्टि की परिवर्तनशीलता को कवि ने किस तरह से रूपायित किया है? विस्तार से चर्चा कीजिए।

खंड (आ)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'आ रही रवि की सवारी' कविता का भाव स्पष्ट कीजिए।
2. 'बीती रात विदा अब होती' कविता के मूल भाव पर प्रकाश डालिए।
3. रवि के आने पर प्रकृति का व्यवहार किस प्रकार परिवर्तित होता है। स्पष्ट कीजिए।
4. ऊषा का व्यवहार रजनी की उदासी में निमग्न प्रकृति के प्रति कैसा था? चर्चा कीजिए।
5. 'रवि और रात' की प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए।

खंड (स)

I . सही विकल्प चुनिए -

1. हरिवंशराय बच्चन का जन्म किस प्रदेश में हुआ था? ( )

   (अ) महाराष्ट्र (आ) मध्य प्रदेश (इ) उत्तर प्रदेश

2. रवि की सवारी आने पर पथ किससे सजा हुआ था? ( )

   (अ) रंगोली से (आ) पुष्पों से (इ) बन्दनवारो से

3. सूर्य के आने पर मैदान छोड़कर कौन भागने लगते हैं? ( )

   (अ) तारों की फौज़ (आ) पक्षी (इ) चंद्रमा

4. रात्रि को बच्चन ने किस रूप में कल्पित किया है? ( )

(अ) उदास स्त्री (आ) अल्हड़ बालिका (इ) प्रसन्न स्त्री

5. प्राची से कौन हंसते हुए आ रही थी? ( )

(अ) ऊषा (आ) निशा (इ) रात

6. रजनी के रोदन की चिंता पल में कौन खो देता है? ( )

(अ) पुष्प (आ) नदियाँ (इ) प्रकृति

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. नवकिरण का ....सजा है।
2. बादलों ने ....की पोशाक पहनी है।
3. सूर्य की कीर्ति गाथा ....गा रहे हैं।
4. कवि को चंद्रमा ....की तरह प्रतीत होता है।
5. सुमनों के आँसू ....पोछ रहा था।

III सुमेल कीजिए -

1. आ रही (अ) विदा अब होती
2. भीगी रात (आ) सुमनों के
3. पोंछ रहा आँसू (इ) रवि की सवारी

20.8 पठनीय पुस्तकें

1. छायावादी कवियों की गीत दृष्टि : उपेंद्र
2. बच्चन - व्यक्तित्व और कृतित्व : कृष्णचंद्र पांडेय
3. बच्चन - व्यक्ति और कवि : सं. बांके बिहारी भट्नागर
4. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास : नगेंद्र
5. निशा निमंत्रण : हरिवंशराय बच्चन

इकाई 21 : केदारनाथ अग्रवाल : एक परिचय

रूपरेखा

21.1 प्रस्तावना

21.2 उद्देश्य

21.3 मूल पाठ : केदारनाथ अग्रवाल : एक परिचय

21.3.1 जीवन परिचय

21.3.2 रचना यात्रा

21.3.3 रचनाओं का परिचय

21.3.4 हिंदी साहित्य में केदारनाथ अग्रवाल का स्थान एवं महत्व

21.4 पाठ सार

21.5 पाठ की उपलब्धियाँ

21.6 शब्द संपदा

21.7 परीक्षार्थ प्रश्न

21.8 पठनीय पुस्तकें

21.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! केदारनाथ अग्रवाल (1911-2000) आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख हस्ताक्षरों में से एक हैं। उनका रचनाकाल किसी भी दूसरे कवि के मुक़ाबले बहुत विस्तृत और विविधतापूर्ण है। अनेक काव्यांदोलनों के बीच उनका आना-जाना रहा है। छायावाद से शुरू करके वे प्रगतिवाद, नई कविता, अकविता और समकालीन कविता तक आए। आधुनिक युग के कवियों को प्रायः अनेक वादों के खाँचों में रखकर देखा जाता है। प्रयोगवाद और प्रगतिवाद ऐसे ही दो वाद हैं। केदारनाथ अग्रवाल को बहुधा प्रगतिवाद से जोड़कर देखा जाता है और उनके प्रगतिशील होने को कई विद्वानों द्वारा बड़ा महत्व दिया जाता था, किंतु आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी सरीखे इतिहासकारों ने मत दिया है कि केदार बाबू का काव्य प्रगतिवाद की अकेली उपलब्धि है। छात्रो! हम इस विचारधारा को अवश्य देखेंगे किंतु पहले केदार जी का जीवन परिचय और उनके विपुल कृतित्व के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे। पृष्ठभूमि में उनका युग और मान्यताएँ भी रहेंगी। इतने बड़े कवि को देखने, परिचय प्राप्त करने और फिर परखने का काम

आसान नहीं होगा। वे जितने सहज हैं उतने ही कठिन भी हैं। तो आइए, 'निश्छल कवि की सहज कविता का संसार जो अपनी सादगी में भी रहस्यपूर्ण है तो सहजता में भी असाधारण' (ज्योतिष जोशी के शब्द) उसे देखें, समझें और गुनें।

21.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- केदारनाथ अग्रवाल के जीवन, साहित्यिक व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- केदारनाथ अग्रवाल की युगीन पृष्ठभूमि को जान सकेंगे।
- यह भी जान लेंगे कि वे प्रगतिशील कवि के साथ साथ और किस प्रकार के कवि हैं।
- यह भी बता सकेंगे कि केदारनाथ अग्रवाल कवि और रचनाकार के रूप में भाषा, शैली और संवेदना के उच्च पद और स्तर पर हैं।
- केदारनाथ अग्रवाल के लेखन पर तर्कपूर्ण और विशेषाधिकार से अपना मत व्यक्त कर सकेंगे।

21.3 मूल पाठ : केदारनाथ अग्रवाल : एक परिचय

21.3.1 जीवन परिचय

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1 अप्रैल, 1911 को बांदा जिले के बबेरू तहसील के कमासिन नामक गाँव में हुआ था। उनकी माँ का नाम घसिट्टो और पिता का नाम हनुमान प्रसाद था। पिता कला प्रेमी और कवि-हृदय थे तथा उपनाम से कविता भी लिखते थे। उनका एक काव्य संग्रह 'मधुरिमा' के नाम से प्रकाशित भी हुआ था। कविता उनके घर में पहले सी थी। चौपाल में आल्हा, मैदान में रामलीला, स्कूल में पद्माकर और जयदेव पढ़कर बालक केदार की कवि-मानसिकता बनी। कविता उनके मन में पैठ गई। केदार बाबू का बचपन इसी छोटे से गाँव में बीता और प्राथमिक शिक्षा का प्रारंभ भी कमासिन गाँव में ही हुआ। कक्षा तीन तक गाँव में पढ़ने का बाद वे रायबरेली आ गए। फिर पिता के कटनी जाने पर कक्षा छह की पढ़ाई कटनी में हुई। कटनी में एक साल रहने के बाद ये अपने पिता के साथ जबलपुर चले गए और 1927 में इलाहाबाद। इलाहाबाद में रह कर उन्होंने पहले बी.ए. किया और फिर कानून पढ़ने के लिए कानपुर आ गए। 1938 में लॉ की डिग्री ले कर बांदा लौटे और वकालत करने लगे।

केदार जी का विवाह बहुत छोटी उम्र में ही हो गया था ('गया ब्याह में युवती लाने/प्रेम ब्याहकर संग में लाया।) वे जब कक्षा 7 में थे तब विवाह हुआ और इंटर में आते आते वे एक

कन्या के पिता भी बन चुके थे। केदार जी का अगाध पत्नी-प्रेम उनकी कविताओं में भी व्याप्त है। पत्नी पार्वती देवी के काम में तो वे सदा हाथ बंटाते ही थे, उनके लिए कविता भी लिखते रहे। 'हे मेरी तुम' और 'जमुन जल तुम' शृंखला की कविताएँ इसका प्रमाण हैं। कहा जाता रहा है कि केदारनाथ अग्रवाल ने हिंदी में परकीया प्रेम के स्थान पर दाम्पत्य प्रेम की प्रतिष्ठा की। गृहस्थ जीवन में रोमांस के सूक्ष्म अनुभव को कविता के शिल्प में प्रस्तुत किया।

बोध प्रश्न

- केदारनाथ अग्रवाल ने हिंदी में परकीया प्रेम के स्थान पर किसकी प्रतिष्ठा की?

केदार बाबू के घर का वातावरण पूर्ण रूप से ग्रामीण परिवेश का था। केदार जी का परिचय इस परिवेश से बालपन में ही प्रगाढ़ हो गया और अपने चारों ओर फैली गरीबी को देखकर वे बहुत क्षुब्ध होते थे। "इस परिचय का उनके बालपन पर ऐसा अमिट प्रभाव पड़ा कि बाद में जब उनका कवि प्रकट हुआ तब यह दुख-दर्द और संघर्ष, हाड़ तोड़ मेहनत, अमीरी की ओढ़ी हुई ठसक की तुलना में गरीबी की सहजता, निर्मलता आदि उनकी कविता में हज़ार-हज़ार कंठों से फूट पड़ी" (केदारनाथ अग्रवाल, सं. अजय तिवारी)।

बोध प्रश्न

- केदारनाथ अग्रवाल पर बचपन में चारों ओर फैली गरीबी का क्या प्रभाव पड़ा?

केदार बाबू अपने परिवेश से जीवन भर चिपटे रहे। बाहर शिक्षा ग्रहण की और फिर बांदा आ गए। कभी यश या धन कमाने के लिए शहर या सत्ता की ओर मुड़कर नहीं देखा। अपने कस्बाई मिज़ाज पर आंच न आने दी। प्रगतिशीलता का दम भरा और बार बार यही कहा कि वे कतई प्रयोगवादी नहीं है। डॉ. रामविलास शर्मा ने अपने कवि मित्र के लिए कीट्स, वर्ड्सवर्थ, शैले आदि अंग्रेजी कवियों को रेखांकित किया और कालिदास और विशेष रूप से वाल्मीकि की ओर उन्मुख किया। विशेष रूप से प्रकृति चित्रण में पश्चिम के कुछ आधुनिक कवियों से भी उन्होंने अपना कुछ-न-कुछ संबंध रखा है। केदार बाबू ने नेरुदा और कीट्स की कुछ कविताओं का अनुवाद भी किया था। रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक ' प्रगतिशील काव्यधारा और केदारनाथ अग्रवाल' में इस बात पर बहुत बल दिया है कि प्रगतिशील साहित्य और वाम पंथी विचारधारा युक्त साहित्य के लिए केदार बाबू का योगदान महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण अवश्य है किंतु आपको यह कभी न भूलना चाहिए कि विचारधारा का आग्रह केदार के कवि-व्यक्तित्व को उतनी दूर तक निर्मित कर सका जितना कि रचनात्मक संवेदनशीलता ने उसे बनाया और एक

स्पृहणीय पहचान दी।

केदार बाबू पेशे से वकील थे, पर वकालत उतनी न चलती थी। यह बात वे अपने अभिन्न मित्र डॉ. रामविलास शर्मा को एक पत्र में लिखते हैं, “वकालत बिगड़ रही है, पेशे से बे-पेशा हो रहा हूँ। देखो ये खर्चे कब तक चलते रहेंगे। इधर खर्चे ही खर्चे हैं। नाती की शादी में बहुत कुछ लगेगा” (मित्र-संवाद)। 1975 में लिखी एक कविता में वे कहते हैं - कुछ नहीं किया मैंने अदालत में/ सिवाय बकवास के/” वे वकालत को अपने लिए ‘बे-पेशा’ मानते रहे। हाँ, वकालत ने उन्हें व्यवस्था को करीब से देखने का मौका दिया और वे भी ‘राग-दरबारी’ उपन्यास के लेखक श्रीलाल शुक्ल के समान व्यवस्था पर व्यंग्य करने में निपुण हो गए।

बोध प्रश्न

- केदारनाथ अग्रवाल व्यवस्था पर व्यंग्य करने में निपुण कैसे हुए?

साहित्यकार बाबू केदारनाथ अग्रवाल का व्यक्तित्व बहुत ही सहज, सरल व सादगी भरा था। घमंड या अहंकार उन्हें छू तक न गया था। पढ़ा लिखा हो या बे-पढ़ा-लिखा हो सबको वह समान स्नेह और आदर देते थे। किसी को भी वह अपने ‘छोटेपन’ का अहसास नहीं होने देते थे। उम्र का बुजुर्गियत का, विद्वत्ता का, कविताई का और आभिजात्य का कोई अहं उनमें लेश मात्र भी नहीं था। क्योंकि उन्होंने अपना बड़प्पन उतार कर धर दिया था- “वहाँ/ उस मुरदा अजायब घर में,/ जहाँ/ मरणोपरांत धार दी जाती है/ बड़े-बड़ों के बड़प्पन की उतारने।” (के. ना. अग्रवाल ‘प्रतिनिधि कविताएँ’ पृ. 110, सं. अशोक त्रिपाठी)। समग्रतः अशोक त्रिपाठी ही के शब्दों में कहा जा सकता है कि केदारजी का पूरा जीवन लगभग सीधी पगडंडी-सा था। इस पगडंडी में कहीं-कहीं दूब की कोमल हरियाली थी, कहीं-कहीं कुछ छोटे-मोटे गड्ढे और कहीं निचाट मैदान। वह न तो राजमार्ग था, न ही पेंचदार घुमावदार गली और न नदी नालों वाला बीहड़ रास्ता। दो-चार घटनाओं को छोड़कर उनके जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव नहीं था। 28 जनवरी, 1996 को पत्नी का देहावसान ही शायद कवि के जीवन का सबसे दुखपूर्ण समय रहा और अपनी जीवन-शक्ति से उन्होंने ऐसे कठिन समय में खुद को संभाला -

दुख ने मुझको जब जब तोड़ा
मैंने अपने टूटेपन को कविता की ममता से जोड़ा
जहाँ गिरा मैं कविताओं ने मुझे उठाया,
हम दोनों ने वहाँ प्रात का सूर्य उगाया।

इस प्रकार घर के साहित्यिक माहौल, गाँव के श्रमशील जीवन, प्रकृति से अदम्य प्रेम और समाज के प्रति अटूट संवेदना के द्वारा केदार बाबू का व्यक्तित्व और कृतित्व निर्मित होता चला गया। मार्क्सवाद से परिचय होने पर उनका जन-कवि रूप और अधिक परवान चढ़ा। उनकी कविता में जनगान के साथ-साथ जनसंघर्षों की अनुगूँज भी सुनाई दी। उनकी एक काव्य पंक्ति है- यह जन मारे नहीं मरेगा। नामवर सिंह ने केदार बाबू के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हुए लिखा है," केदार जी का व्यक्तित्व जूझना जानता था, झुकना नहीं; इनके सम्पूर्ण साहित्य में जीवन की आस्था सुदृढ रूप से परिलक्षित होती है। आधुनिकता के हल्ला-बोल के आगे कवि केदार की प्रगतिवादी विचारधारा कभी नहीं डिगी। वह कविता में जीवन बोते रहे।"

मृत्यु तो शरीर की होती ही है (मरना होगा यह निश्चित है /नहीं जनता कोई कैसे?- 'फूल नहीं रंग बोलते हैं')। अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से अलंकृत कवि केदारनाथ अग्रवाल अपनी यश-काया को छोड़कर 90 वर्ष की परिपक्व आयु में 22 जून, 2000 को चल बसे। आज जब आप उनके किसी छाया चित्र को देखेंगे तो उनका छोटा कद, लंबी नाक, गोरा रंग, दाढ़ी-मूँछ विहीन मुख, आँखों में स्नेह तथा पैनापन एवं बच्चों की निश्छलता वाला व्यक्तित्व मन-मुकुर में फिर से कौंध जाएगा।

बोध प्रश्न

- केदार बाबू अपने लिए वकालत को 'बेपेशा' क्यों कहते हैं?
- केदारनाथ अग्रवाल के व्यक्तित्व की सादगी से क्या तात्पर्य है?
- मार्क्स और प्रगतिवाद का कवि केदारनाथ पर क्या प्रभाव पड़ा?

21.3.2 रचना यात्रा

केदारनाथ अग्रवाल की करीब ढाई दर्जन कृतियों में 23 कविता-संग्रह, एक अनूदित कविताओं का संकलन, तीन निबंध संग्रह, एक उपन्यास, एक यात्रा-वृत्तांत, एक साक्षात्कार संकलन और एक पत्र संकलन हैं। उनका पहला काव्य-संग्रह 'युग की गंगा' देश की आजादी से पहले मार्च 1947 में प्रकाशित हुआ। उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, हिंदी संस्थान पुरस्कार, तुलसी पुरस्कार आदि से सम्मानित किया गया था।

केदारनाथ अग्रवाल आधुनिक हिंदी कविता के मूर्धन्य कवियों में से एक हैं। 1933 से 1997 तक का उनका सुदीर्घ रचनाकाल किसी को भी मंत्रमुग्ध कर सकता है। उन्होंने छायावाद के समय से कविता लिखना शुरू किया और उनकी रचना यात्रा में प्रगतिवाद, नई कविता,

अकविता तथा समकालीन कविता जैसे अनेक काव्यांदोलन आए गए हुए। प्रयोगवाद को भी वे छूकर अछूते निकले। केदार बाबू ने अपनी लेखन यात्रा का आरंभ बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक में किया। प्रारंभ में इन्होंने प्रेम और सौंदर्य की कविताएँ लिखीं लेकिन धीरे धीरे युग के यथार्थ से जुड़ कर उनके प्रेम ने व्यापकता ग्रहण कर ली और वे श्रमशील जनता से जुड़े। किसान और मजदूर, प्रकृति और मनुष्य उनकी कविता के प्रमुख आधार बनते चले गए। कवि केदार की रचना यात्रा का यदि कोई गहराई से अध्ययन करे तो वह भारत के साहित्यिक जगत में प्रगतिशील कविता के विकास का अध्ययन भी करता चला जाएगा। यद्यपि केदार की कविता का एक निश्चित भूगोल और स्थानीयता के रूप में बांदा जनपद के इर्द-गिर्द की केन नदी के किनारे की जमीन है, पर कविता देश-काल की सीमाओं का अतिक्रमण करके सार्वभौम और सार्वजनीन हो गई है। 'किसानी संवेदना का कवि' कहकर डॉ. शिवकुमार मिश्र इनके कवि-कर्म को सराहते हैं और विश्वनाथ प्रसाद मिश्र केदार की कविता को 'प्रकृति के साहचर्य में मुक्ति की तलाश' कहकर रेखांकित करते हैं।

बोध प्रश्न

- केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में क्या देखा जा सकता है?
- विश्वनाथ प्रसाद मिश्र केदार की कविता को क्या कहकर रेखांकित करते हैं?

यह सही है कि वे ग्राम्य-जीवन के कवि हैं। प्रकृति और श्रमिक उनकी कविता में बार बार आते हैं। पर इसके अतिरिक्त भी उनका कवि-साम्राज्य है। वे जीवन के हर कोने को कविता में छूते हैं। साधारण और आम लोगों को असाधारण और खास बनाकर वे अपनी काव्य क्षमता का परिचय देते हैं। परिवार और उसकी संवेदना कवि की रग-रग में समाई है। प्रकृति और परिवार का एक साथ चित्रण करती कुछ पंक्तियाँ देखें -

धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है।

अग्रवाल जी की भाषा यथार्थ और छायावाद की भाषा से मिलती जुलती है। वे अपने आपको चाहे छायावाद से मुक्त पाते थे, उनकी भाषा उतनी मुक्त नहीं दिखाई देती। उनके काव्य में छायावाद की तरह प्रकृति और मनुष्य का समीकरण नहीं साहचर्य है। प्रकृति की विराटता के स्थान पर यहाँ विलक्षणता है। क्योंकि यहाँ 'फूल नहीं रंग बोलते हैं'।

केदारनाथ अग्रवाल जितने सहज हैं उतने ही कठिन कवि भी हैं। सहजता उन्हें लग

सकती है जो भारतीय ग्राम्य जीवन, कृषि संस्कृति और सचमुच के भारत से वास्ता रखते हैं। गाँव और गाँव के जीवन से जिनका संबंध पुस्तकों और रजतपटों तक सीमित है, उनके लिए वे कठिन कवि हैं, तथा आक्रामक भी; क्योंकि वे किसानों के प्रतिनिधि हैं और ठेठ ग्राम्य-जीवन से लेकर श्रमिक संसार की समग्रता ही उनकी मुख्य काव्यवस्तु है। इसका मतलब यह नहीं है कि इस कवि से जीवन का कोई कोना छूट गया हो। सच तो यह है कि इस कवि से जीवन का कोई कोना छूट गया हो। सच तो यह है कि इस कवि ने जीवन के उन सभी पक्षों को अभिव्यक्ति दी है जो हम सभी से साथ अनुस्यूत हैं। क्या प्रेम, क्या शृंगार, क्या वियोग, क्या दुख, क्या सुख, क्या दैन्य, क्या श्रम से पस्त जीवन, क्या टूटती आकांक्षाओं में दम तोड़ते सपने, क्या क्रूर व्यवस्था के पाखंड, क्या प्रजातंत्र का खोखला खेल और इन सबसे अलग प्रकृति के समग्र उपादानों पर न्योछावर कवि की अनुभूति की वह अप्रतिम मानवी संसक्ति; जो जीवन को नई चेतना से अनुप्राणित कर देती है। (केदारनाथ अग्रवाल रचना संचयन (2014) : भूमिका से - ज्योतिष जोशी)

बोध प्रश्न

- केदारनाथ अग्रवाल एक साथ ही सहज और कठिन कवि कैसे हैं?

केदार बाबू की कविता में कल-कल बहती नदियों का प्रवाह है। उनकी कविता में सारी धरती और सारा आकाश है। खेत है, खलिहान है और है किसान। कारखाने, कचहरी, कुदाल और दराँती के कवि केदार का मन प्रकृति, चिड़िया, नदी और पर्वत में भी खूब रमता रहा है। वे त्रिलोचन और नागार्जुन के समान इस धरती के कवि हैं। वे मनुष्य और मानवता के कवि हैं। केदार बाबू ने एक बार कहा था कि वे नई कविता के विरोधी नहीं, उसके उन सब तत्वों के विरोधी हैं जो उसे कविता नहीं, 'मस्तिष्क की विकृति' और 'युगविशेष की एकांगी आकृति' बना देते हैं।

केदारनाथ अग्रवाल ने अपने एक निबंध 'कविता संवेदनशील वस्तुवत्ता है' में अपने काव्यचिंतन की ओर संकेत करते हुए लिखा है, "अलंकारों की सजावट कविता को पूरी तरह कृत्रिम और हृदयहीन बना देती है। कवि की आत्मपरकता विलुप्त हो जाती है। कविता ममताविहीन होकर केवल जड़ाऊ कंगन बन जाती है। न स्पर्श करती है, न इंद्रियबोध जगाती है। जीवन की जीवंतता से रहित वह जीवन का अंश नहीं बनती।"

आचार्य रामस्वरुप चतुर्वेदी का मत है कि केदार बाबू का काव्य प्रगतिवाद की अकेली

उपलब्धि है। केदारनाथ अग्रवाल को बहुधा प्रगतिवाद से जोड़कर देखा जाता है और उनके प्रगतिशील होने को कई विद्वानों द्वारा बड़ा महत्व दिया जाता था। इसको भी यहाँ आपको विचारकर देखना चाहिए। 'प्रगतिवाद' शब्द प्रगति+वाद, दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ उन्नति या विकास है। इसी से 'प्रगतिशील' बना और इस विचारधारा को 'प्रगतिवाद' कहा गया। प्रगतिवाद उस 'वाद' को कह सकते हैं जिसमें मानव को उसकी वास्तविक स्थिति से परिचित कराकर उसके उत्थान का मार्ग सुझाया जाता है। 1936 के आसपास 'प्रगतिशील' आंदोलन ने देश में वही प्रभाव डाला जैसा मध्यकाल में भक्ति आंदोलन ने किया था।

हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद का विकास दलितों, शोषितों, किसानों और मजदूरों की पीड़ा की गाथा को लेकर हुआ। मार्क्सवादी विचारधारा ने इसे सैद्धांतिक आधार दिया। प्रगतिवाद और मार्क्सवाद को एक ही सिक्के के दो पहलू कह सकते हैं। केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी काव्य चेतना के सशक्त कवि हैं। वे जीवन का साहित्य रचकर ख्याति प्राप्त कर सके और उनको जीवन की पहचान मार्क्सवाद ने कराई। केदार जी के साहित्यिक जीवन का प्रारंभ ऐसे युग में हुआ जब अंग्रेजों की गुलामी से देश को आज़ाद कराने के लिए गांधी जी और अन्य नेताओं के नेतृत्व में देश आंदोलित था। आर्थिक रूप से देश की स्थिति ठीक न थी। साहित्य में छायावादी कविता की जगह प्रगतिशील कविता लेने लगी थी। देश की आज़ादी के बाद देश को राजनीतिक आज़ादी तो मिली किंतु आर्थिक और सामाजिक बदलाव ने गति न पकड़ी। जनता के दुख दूर न हो सके। 1962, 1965, 1971 के युद्धों ने देश की अर्थ व्यवस्था को बहुत अधिक प्रभावित किया। साहित्य में प्रगतिवादी आंदोलन के बाद व्यक्तिवादी कविता लिखने का दौर चला जिसे 'प्रयोगवाद' नाम मिला।

बहुत से कवि प्रयोगवादी हो गए। किंतु नागार्जुन, त्रिलोचन और केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील बने रहे। केदार बाबू प्रगतिवादी रहे अवश्य किंतु वे रूढ़िवादी और कट्टर प्रगतिशीलता के पक्ष में कभी न रहे। उनकी कविता में केवल संघर्ष नहीं बल्कि वे जीवन और प्रकृति के कवि हैं। उनकी ऐतिहासिक चेतना और राजनीतिक कविताएँ 'कहें केदार खरी खरी' आदि संग्रहों में है। सामाजिक यथार्थ और श्रम सौंदर्य का चित्रण कवि ने 'छोटे हाथ' जैसी मार्मिक कविताओं में किया है। कवि इस कविता में कहता है कि सुंदर मुख, सुंदर हाथों से कम करने वाले किसान लाल कमल के समान हैं। हाथ का काम में लगना जैसे कमल का खिलना है -

छोटे हाथ
सवेरा होते
लाल कमल से खिल उठते हैं
करनी करने को खिल उठते हैं
करनी करने को उत्सुक हो
धूप हवा में हिल सकते हैं।

बोध प्रश्न

- किसानी संवेदना का क्या अर्थ है?
- प्रयोगवाद और प्रगतिवाद में क्या अंतर है?

21.3.3 रचनाओं का परिचय

प्रारंभ में केदार बाबू की रचनाएँ माधुरी, हंस, नया साहित्य एवं पारिजात आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। 1930 से कविता लिखना शुरू किया पर पहला काव्य संग्रह 1947 में आया। 'युग की गंगा' (1947) काव्य संग्रह की कुल 52 कविताओं में राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ का चित्रण है। इसी में 'चंद्रगहना से लौटती बेर' तथा 'बसंती हवा' जैसी क्लासिक कविताएँ भी हैं। उसी वर्ष 1947 में एक दूसरा काव्य संग्रह 'नींद के बादल' भी आया था जिसमें नींद के बादल रात के जादू के बाद दिन के लाल सवेरे के साथ ओझल हो जाते हैं। छायावादी रुझान की इन कविताओं में प्रकृति प्रेम सर्वोपरि है। प्रकृति कवि के लिए आत्मीया-जैसी है। 'मैं घूमूँगा केन किनारे, मैं बैठा हूँ केन किनारे' और 'हँसकर कहा सुमन ने उससे' आदि कुछ उदाहरण हैं। कवि की कविता में बच्चे हैं, चिड़िया है, वृक्ष हैं, माँ है और मित्र हैं। 'लोक और आलोक' (1957) कविता संग्रह में कवि कह उठता है, "हम मानवतावादी/ हम कवि हैं जनवादी। कवि प्रकृति चित्रण में भी जन को ले आता है और जन में प्रकृति रहती ही है। इस संग्रह का एक गीत आपको आज भी गाने के लिए मजबूर कर देगा, "माँझी न बजाओ बंशी मेरा तन झूमता है।"

पुरस्कृत और प्रतिनिधि कविता संग्रह 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' (1965) में 237 कविताएँ हैं और कवि की मार्क्सवादी मान्यताएँ और सुदृढ़ होकर नियमों से अनुशासित होकर व्यक्त हुई हैं, "मुक्त देश के नवोन्मेष के जन-मानस की हो कर धारा...।" 'आग का आईना' (1970) 160 कविताओं को लेकर आया और इसकी कविताएँ सामाजिक क्रांति का अस्त्र बनकर प्रस्तुत हुईं। गुलमेहंदी (1978) संग्रह की कविताएँ आदमी को आदमी से जोड़ने के लिए हैं और कवि की

अनुभूति और चिंतन की परिचायक हैं। निराला जी पर लिखी कविता यहाँ है - मरण में भी हृदय झंकृत, शीश उन्नत किए अपने ...।" 'पंख और पतवार' (1979) में केदार की कुछ कविताएँ फिल्म-जगत पर भी हैं। 'मार प्यार की थापें' (1981) की 66 कविताएँ कवि की साम्यवादी दृष्टि को रेखांकित करती हैं।

1977 में देश ने एक नई पार्टी का शासन देखा, पर कवि ने कोई खास बदलाव आया न देखकर कहा, "नाच रहे पहले के / वही वही भालू /... प्रगतिशील कवि ने नेताओं के इस आचरण के प्रति जनता को सचेत करने के लिए अपनी भर कुछ किया। 'बंबई का रक्त स्नान' में जन भाषा और जन-शैली का समागम है। 'हे मेरी तुम' (1981) की 61 कविताएँ पत्नी के प्रति प्रेम का उद्गार हैं। 'कहे केदार खरी खरी' (1983) की 101 रचनाएँ मजदूरों, गरीबों, शोषितों, दीन-हीन दलितों की गहरी पीड़ा को शब्द बद्ध करती हैं। इनमें 1947 से 1977 का युग बोलता है- मुझे प्राप्त है जनता का स्वर/ वह स्वर मेरी कविता का स्वर...।" 'अपूर्वा' (1984), 'बोले बोलअबोल' (1985), 'जो शिलाएँ तोड़ते हैं' (1986), 'आत्म गंध' (1988), 'अनहारी हरियाली' (1990), 'खुली आँखें कुले डैने' (1993), 'वसंत में प्रसन्न हुई पृथ्वी' (1996) और 'छोटे हाथ' (2007) आदि अनेक संकलनों की अनेक कविताएँ कवि केदारनाथ अग्रवाल का जो कवि-चित्र आपके सामने अंकित करती हैं वह आपको जीवनभर के लिए मंत्र मुग्ध कर देगा। कविताएँ अनेक हैं, पर एक कविता है जो आपको यहाँ दी जा रही है। इस कविता में क्या है, जरा विचारें-मैंने उसको / जब जब देखा/ लोहा देखा/ लोहा जैसा /तपते देखा/ गलते देखा/ढलते देखा/ मैंने उसको/ गोली जैसा/चलते देखा।"

कवि केदारनाथ अग्रवाल की कविता ही इतना प्रभावित कर देती है कि उनके कथा साहित्य और अन्य लेखन पर आपका भी ध्यान कम ही जाएगा। पर यहाँ इसका उल्लेख अवश्य करेंगे। कवि केदार का भारतीय नारी जीवन पर आधारित 'पतिया' (1985) नामक उपन्यास पढ़कर आपको लगेगा कि उनके अंदर एक कवि और समालोचक से साथ साथ सहृदय प्रगतिशील कथाकार भी बैठा है। अपने रूस के संस्मरण में कवि रूस के बाहरी जीवन से अति प्रभावित दिखते हैं। अपने निबंधों। पुस्तकों की भूमिकाओं और साक्षात्कारों आदि में कवि केदार विचारशील साहित्यकार के रूप में आपको दिखाई देंगे। एक निबंध में कवि ने भाषा पर जो कहा है वह आपको उनके गद्य का गहराई से परिचय करा देगा - कोई भी भाषा जीवन से दूर रहकर, सौदामिनी की तरह चमक कर मनुष्यों की भाषा नहीं हो सकती, भले ही वह कवियों

की भाषा हो जाए और कुछेक उसे सँवारते रहें।"

केदारनाथ अग्रवाल और उनके अभिन्न मित्र डॉ. रामविलास शर्मा से बीच वर्षों जो पत्र व्यवहार होता रहा उसको भी आपको देखना चाहिए। 'मित्र संवाद' के नाम से प्रकाशित इन पत्रों में आपको दुनिया जहान की बातें मिलेंगी। ये पत्र सच्ची मित्रता, निष्ठा, निश्छलता, सहजता और परस्पर विश्वास की जीती जागती मिसाल हैं।

देश की आजादी के दो दिन बाद (17-7-1947) भी देश की आजादी के बारे में जिक्र न करते हुए केदार जी अपनी पत्नी के बारे में अपने मित्र को लिखते हैं, "मेरा रौब तो मेरी बीबी भी नहीं मानती तब तुम और दूसरे लोग क्यों मानेंगे। कहती हैं इन किताबों को बाहर रख कर आया करो। आँखें बहुत फालतू नहीं हैं। भैया चुप रह जाता हूँ। घर की आग बड़ी बुरी हो सकती है।"

शमशेर बहादुर सिंह केदार की प्रतिभा की सबसे बड़ी विशेषता उनकी 'सहज सजगता' को मानते हुए कहते हैं कि प्रकृति और समाज के आईने में जब वह सौंदर्य के दर्शन करते हैं तो वह उसमें उसी तरह मगन हो जाते हैं जैसे तैराक नदी में कूदकर या परिंदे हवा में नाचकर। कवि के इस उत्साह और आनंद में पाठक सदैव एक सहज अनारोपित मर्यादा का अनुभव करता है । शमशेर बहादुर सिंह के शब्दों में, "उनके छंद में एक ठेठपन मिलेगा, जो ठोस अनुभवों का तेवर लिए हुए होता है।उसकी वाणी में एक कस-बल है जो बुंदेलखंड का ही नहीं, उसका तो है ही; हर स्वस्थ मेहनतकश नौजवान का भी है।"

बोध प्रश्न

- 'मित्र संवाद' क्या है?
- 'साम्यवादी दृष्टि' से आप क्या समझते हैं?
- 'पतिया' उपन्यास की मुख्य विशेषता क्या है?

21.3.4 हिंदी साहित्य में केदारनाथ अग्रवाल का स्थान एवं महत्व

केदारनाथ अग्रवाल हिंदी साहित्य की प्रगतिवादी विचारधारा के श्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। उनकी कविता ने जनसाधारण के जीवन को प्रतिबिंबित ही नहीं किया बल्कि नई जिंदगी के लिए उनको मार्ग भी दिखाया। कवि नागार्जुन ने केदार नाथ अग्रवाल के योगदान पर अपनी कविता में लिखा है-

जन-गण-मन के जाग्रत शिल्पी

तुम धरती के पुत्र, गगन के तुम जामाता
नक्षत्र के स्वजन कुटुंबी, सगे बंधु तुम, नद नदियों के ।
वास्तव में केदार जन-गण-मन के जाग्रत

वे प्रगतिवादी कवि हैं पर अपने रास्ते पर चलकर। कवि केदारनाथ अग्रवाल की कविता का मूल स्वर संघर्ष का है। प्रगतिशीलता का संबंध विचारों से है। इन विचारों में मुख्य तत्व साम्राज्यवाद और पूँजीवाद का विरोध और मजदूर-किसान का समर्थन रहा है। कवि ने स्वयं कहा है, "मैं कविता मार्क्सवादी जीवन-दर्शन से प्रभावित होकर लिखता हूँ और इसलिए लिखता हूँ कि मुझे वह जीवन- दर्शन आदमी बनाता है।" कवि प्रयोग के क्षेत्र में भी रुचि लेता है पर एक सीमा तक। 'मैंने उसको जब जब देखा' कविता इसी कारण प्रयोगवादी के साथ साथ प्रगतिशील भी है। वे मार्क्स के अनुसार नया समाज, नई अर्थ व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था बनाने की खातिर लिखते हैं-

मगन मस्त चोला/ बनाओ-बनाओ
दियों की दिवाला/ हियों में जलाओ।

वे हिंदी कविता के प्रमुख व्यंग्यकार हैं। व्यंग्य की विभिन्न शैलियों को अपनाकर उन्होंने सामाजिक एवं आर्थिक पाठ, भृष्ट नेताओं आदि पर करारा व्यंग्य किया है।केदारजनकवि हैं। आम जन की कविता करने वाले आम जन हैं। वे साधनहीन, सुखहीन, पदहीन और दिशाहीन जनसामान्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।

बोध प्रश्न

- केदारनाथ अग्रवाल कैसा समाज बनाना चाहते हैं?
- 'मस्त मगन चोला' जैसी काव्य पंक्तियों में कवि क्या संकेत करते हैं?

21.4 पाठ सार

आपने इस विस्तृत और गंभीर पाठ में केदारनाथ अग्रवाल के विशद लेखन और काव्यात्मक प्रतिभा के बारे में पढ़ा। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व निश्चय ही आपको भी प्रभावित करेगा।

केदारनाथ अग्रवाल हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि हैं जिन्हें प्रायः प्रगतिशील काव्यांदोलन से जोड़कर देखा जाता है। यह सही है कि वे आजादी के पूर्व से लेकर बीसवीं शताब्दी के अंत तक लेखन कार्य करते रहे और छायावाद से लेकर कई वादों से होकर गुजरे। उनकी राजनीतिक दृष्टि

मार्क्सवाद से प्रभावित है।

नागार्जुन, त्रिलोचन और केदारनाथ अग्रवाल की एक कवि त्रयी बनती है। एक दूसरे मार्क्सवादी आलोचक और प्रयोगवादी कवि डॉ रामविलास शर्मा के अभिन्न मित्र केदार नाथ जी ने देश की दयनीय दशा को देखकर राजनीतिक कविताएँ खूब लिखीं। किंतु उनका मन प्रकृति में ही लगता है। प्रकृति, प्रेम और श्रम पर आपने जमकर लिखा है। केदारनाथ अग्रवाल की कविता का मुख्य भाव प्रेम है। इस प्रेम में प्रकृति। मनुष्य, पशु, पक्षी, नदी, नाला, पोखर, पहाड़, खेत, खलिहान, बाग-बगीचे आदि सब आते हैं। आपकी काव्य भाषा सरल, सहज, और संप्रेषणीय है।

'जन' और 'जनता' को केंद्र में रखकर कविता रचने वाले केदार मानव जगत के बिंबों और प्रतीकों से रचना बनाते हैं। उनकी कविता में एक विशेष प्रकार की स्थानीयता और आंचलिकता है। बुंदेलखंड और वहाँ की धरती और लोग उनकी रचनाओं में एक विशेष ताजगी और आत्मीयता भरते हैं। मार्क्सवाद और प्रगतिवाद से प्रभावित लेखन करने वालों के नगण्य हो जाने के बाद आज भी यह कहा जा सकता है कि केदार बाबू का काव्य प्रगतिवाद की अकेली उपलब्धि है।

हिंदी के यशस्वी कवि-साहित्यकार केदारनाथ अग्रवाल ने अपनी कविताओं, निबंध, कहानी, संस्मरण, उपन्यास आदि से एक ऐसा मानवतावादी और प्रगतिवादी दर्शन प्रस्तुत किया है। वे समाज में समता और समानता लाने वालों के साथ है। वे शोषण विहीन समाज की स्थापना का स्वप्न साकार करना चाहते हैं और उन्हें विश्वास है कि परिस्थितियाँ अवश्य बदलेगी। कविता में प्रसन्न होने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अशोक वाजपेयी ने लिखा है कि केदारनाथ अग्रवाल एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपनी कविता में प्रसन्न होने का साहस दिखाया है और आदमी की प्रसन्नता को भी बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में कविता का एक मूल विषय मानने का जोखिम उठाया है।

21.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. केदारनाथ अग्रवाल को आम तौर पर प्रगतिशील या प्रगतिवादी कवि माना जाता है।
2. उनका रचना काल छायावाद से शुरू होकर प्रगतिवाद, नई कविता, अकविता और समकालीन कविता तक को भेदता है।
3. केदारनाथ अग्रवाल को सहजता में असाधारणता का उदाहरण माना जाता है।

4. उन्हें किसानी संवेदना का कवि कहा जाता है।

5. उनकी कविता को प्रकृति के साहचर्य में मुक्ति की तलाश का पर्याय माना जाता है।

6. पत्नी प्रेम की कविताओं के लिए केदारनाथ अग्रवाल को विशेष सम्मान प्राप्त है।

21.6 शब्द संपदा

1. आंचलिकता = आंचलिक होने की अवस्था या भाव, किसी अंचल या क्षेत्र की रहन-सहन और सांस्कृतिक विशेषताएँ, जो मूल सामासिक संस्कृति का हिस्सा होते हुए भी अलग दिखती हैं; क्षेत्रीयता।
2. आभिजात्य = ऊँचे कुल का, कुलीनता, उच्च कुल में पैदा होने का घमंड
3. दाम्पत्य = पति-पत्नी और उनका आपसी संबंध
4. परकीया = अपने पति की उपेक्षा कर परपुरुष से प्रेम करनेवाली स्त्री
5. प्रतिबिंबित = जिसका प्रतिबिंब पड़ता हो, जिसकी परछाईं पड़ती हो, जिसका आभास मिलता हो ।
6. बेपेशा-पेशा = जीविकोपार्जन का साधन, धंधा, काम (जैसे-वह किस पेशे में लगा है) । 'बे' उपसर्ग से इसका विपरीत अर्थ होगा - जो किसी ढंग के पेशे में न लगा हो। (देखें - रोजगार-बेरोजगार)
7. स्पृहणीय = प्राप्त करने योग्य, वांछनीय

21.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. केदारनाथ अग्रवाल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
2. "केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवाद की एकमात्र उपलब्धि हैं।" इस कथन की विवेचना कीजिए।
3. "केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में प्रकृति और प्रेम का साम्राज्य है।" उदाहरण देकर इस वक्तव्य की व्याख्या कीजिए।
4. खेत खलिहानों का कवि कहने से क्या तात्पर्य है? क्या केदारनाथ अग्रवाल को खेत खलिहानों का कवि कहा जा सकता है?

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. केदारनाथ अग्रवाल के जीवन और कृतित्व पर उनके ग्रामीण परिवेश का प्रभाव कहाँ तक पड़ा?
2. 'मित्र संवाद' का उल्लेख करते हुए केदारनाथ अग्रवाल के जीवन में उसके महत्व को प्रतिपादित कीजिए।
3. 'दाम्पत्य प्रेम' से आप क्या समझते हैं? किस प्रकार से केदारनाथ अग्रवाल दाम्पत्य प्रेम के कवि हैं, समझाकर लिखिए।
4. किसानी संवेदना के कवि के रूप में केदारनाथ अग्रवाल का परिचय प्रस्तुत कीजिए।
5. प्रगतिशील कवि के रूप में केदारनाथ अग्रवाल के योगदान का आकलन कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. केदारनाथ अग्रवाल को मुख्यतः किस वाद से जोड़ा जा सकता है – ( )

    (अ) प्रयोगवाद (आ) छायावाद (इ) प्रगतिवाद (ई) समाजवाद

2. मित्र-संवाद में केदार बाबू के मित्र हैं – ( )

    (अ) राम विलास शर्मा (आ) अजय त्रिपाठी (इ) श्रीलाल शुक्ल (ई) इनमें से कोई नहीं

3. कवि केदार नहीं है – ( )

    (अ) ग्राम्य जीवन के कवि (आ) हताशा के कवि

    (इ) प्रकृति और प्रेम के कवि (ई) परिवारिक संवेदना के कवि

4. केदारनाथ अग्रवाल नहीं हैं – ( )

    (अ) कथाकार (आ) निबंधकार (इ) पत्र लेखक (ई) इतिहासकार

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. केदारनाथ अग्रवाल का जीवन .... सा था ।
2. 'मित्र-संवाद' दो मित्रों .... और .... बीच पत्रव्यवहार है ।
3. केदार नाथ अग्रवाल ने हिंदी में परकीया प्रेम के स्थान पर .... की प्रतिष्ठा की ।
4. केदारनाथ अग्रवाल का काव्य .... की अकेली उपलब्धि है।

III. सुमेल कीजिए -

1. राम स्वरूप चतुर्वेदी	(अ) मित्र संवाद
2. हनुमान प्रसाद	(आ) प्रगतिवाद
3. पार्वती देवी	(इ) मधुरिमा
4. रामविलास शर्मा	(ई) हे मेरी तुम
5. कार्ल मार्क्स	(उ) हिंदी साहित्येतिहास

21.8 पठनीय पुस्तकें

1. आधुनिक कवि केदार नाथ अग्रवाल
2. केदारनाथ अग्रवाल रचना संचयन : सं. ज्योतिष जोशी
3. के. ना. अग्रवाल 'प्रतिनिधि कविताएँ': सं. अशोक त्रिपाठी
4. संचयिता - केदारनाथ अग्रवाल : सं. अशोक त्रिपाठी
5. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी

इकाई 22 : बसंती हवा

रूपरेखा

22.1 प्रस्तावना

22.2 उद्देश्य

22.3 मूल पाठ : बसंती हवा

22.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

22.3.2 अध्येता कविता

22.3.3 विस्तृत व्याख्या

22.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

22.4 पाठ सार

22.5 पाठ की उपलब्धियाँ

22.6 शब्द संपदा

22.7 परीक्षार्थ प्रश्न

22.8 पठनीय पुस्तकें

22.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! केदारनाथ अग्रवाल आधुनिक कवि हैं। उनका परिचय आप इससे पहली इकाई में प्राप्त कर चुके हैं। वे जीवन और प्रकृति के कवि हैं। उनकी कविताओं में धूप, नदी, बादल, पेड़-पौधे, चना, गेहूँ, अलसी, बाजरा, पत्थर, पहाड़ और हवा सब कुछ हैं और बिलकुल नई तरह से हैं। जीवंत प्रकृति चित्रण करते हुए कवि केदार अपने पाठकों को अपने साथ हवा की तरह बहा ले जाते हैं। इस इकाई में आप उनकी वह कविता पढ़ने जा रहें हैं जो उनके नाम से जुड़ गई है। आपने पिछली इकाई में भी ध्यान दिया होगा कि केदारनाथ अग्रवाल को समूची धरती से प्रेम है। वे अपनी प्रकृतिपरक कविताओं में बुंदेलखंड की धरती की सौंधी महक भरकर लाते हैं। कवि प्रकृति को अनेक रूपों में प्रस्तुत करता है। एक कविता में केन नदी एक नौजवान ढीठ लड़की बन जाती है तो दूसरी कविता में वह गति और वेग का पर्याय बन जाती है। 'बसंती हवा' गति और वेग की कविता है। कवि वसंती हवा का मानवीकरण करके ऐसे प्रस्तुत करता है, जैसे वह कोई नटखट कन्या हो। यह भी आप देखेंगे कि बसंती हवा अपना परिचय स्वयं दे रही है

और वह भी बड़ी बेबाकी और चतुराई से। भाषा इतनी सरल, सहज और प्रभावशाली है कि 10 वर्ष का बालक भी इसे पढ़े तो सस्वर गायन करने लग जाए। बसंती हवा के रूप में यह जो उछलती कूदती मुग्धा सी अल्हड़ नायिका है, वह छायावादी स्वच्छंदता और प्रगतिवादी स्वाधीनता के बीच से कैसे सर्र से सरपट हो जाती है, यह भी आपको ध्यान में रखना होगा।

22.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- प्रकृति का मानवीकरण और उसके सौंदर्य को अनुभव और अभिव्यक्त कर सकेंगे।
- भाव, विचार, छंद, लय, शब्द और अर्थ की दृष्टि से कविता का पाठ कर सकेंगे।
- जीवन और लोक से कविता को जोड़कर देख सकेंगे।
- बसंती हवा कविता के पदों की संदर्भ, प्रसंग सहित व्याख्या कर सकेंगे।

22.3 मूल पाठ : बसंती हवा

22.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

कवि केदारनाथ अग्रवाल प्रेम और प्रकृति के प्रगतिवादी कवि कहे जाते हैं। उनकी कविताएँ सरल किंतु अर्थगर्भित होती हैं। बसंती हवा उनका एक लंबा प्रगीत है। इस कविता में बसंती हवा का अपनी मस्त गति से बहना ऊपरी तौर पर है लेकिन जैसे ही आप इस कविता को पढ़ते जाएँगे हवा बदलती चली जाती है। वह एक अल्हड़ बाला का रूप धारण कर लेती है। बसंती हवा का झूमना, खेलना, नाचना, गाना धीरे-धीरे एक चंचल लड़की का आकार ले लेता है। वह आँखों के सामने नाचने लगती है। बसंती हवा के माध्यम से कवि ने जिस कृषि चेतना और ग्राम्य संस्कार के सौंदर्य का चित्रण किया है, वह हिंदी में अब कम दिखाई देता है। इस कविता का स्वर और अंदाज़ बहुत आत्मीयतापूर्ण है। इस गीत में अनेक फसलों, फूलों और अनाजों का उल्लेख हुआ है, उसका भी आपको कविता पाठ के समय ध्यान रखना होगा। यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि धीरे धीरे ये शब्द प्रयोग में कम होते जा रहे हैं। यहाँ यह भी आपको ध्यान रखना होगा कि 'ऋतु' या 'मौसम' छह माने जाते हैं। ये हैं - वसंत/बसंत (अंग्रेजी में इसे 'स्प्रिंग सीजन' कहते हैं।), ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर। मार्च से शुरू होकर प्रत्येक ऋतु लगभग दो महीने तक होती है। वसंती या बसंती हवा इस प्रकार से मार्च से अप्रैल महीने तक बहने वाली हवा हुई।

22.3.2 अध्येता कविता

हवा हूँ, हवा मैं बसंती हवा हूँ।
सुनो बात मेरी - अनोखी हवा हूँ।
बड़ी बावली हूँ, बड़ी मस्तमौला।
नहीं कुछ फिकर है, बड़ी ही निडर हूँ।
जिधर चाहती हूँ, उधर घूमती हूँ,
मुसाफिर अजब हूँ।
न घर-बार मेरा, न उद्देश्य मेरा,
न इच्छा किसी की, न आशा किसी की,
न प्रेमी न दुश्मन, जिधर चाहती हूँ
उधर घूमती हूँ।
हवा हूँ, हवा मैं बसंती हवा हूँ!

जहाँ से चली मैं जहाँ को गई मैं -
शहर, गाँव, बस्ती, नदी, रेत, निर्जन,
हरे खेत, पोखर, झुलाती चली मैं।
झुमाती चली मैं!
हवा हूँ, हवा मैं बसंती हवा हूँ।

चढ़ी पेड़ महुआ, थपाथप मचाया;
गिरी धम्म से फिर, चढ़ी आम ऊपर,
उसे भी झकोरा, किया कान में 'कू',
उतरकर भगी मैं, हरे खेत पहुँची -
वहाँ, गेंहुँओं में लहर खूब मारी।
पहर दो पहर क्या, अनेकों पहर तक
इसी में रही मैं!
खड़ी देख अलसी लिए शीश कलसी,

मुझे खूब सूझी -
हिलाया-झुलाया गिरी पर न कलसी!
इसी हार को पा, हिलाई न सरसों,
झुलाई न सरसों,
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ!

मुझे देखते ही अरहरी लजाई,
मनाया-बनाया, न मानी, न मानी,
उसे भी न छोड़ा -
पथिक आ रहा था, उसी पर ढकेला;
हँसी ज़ोर से मैं, हँसी सब दिशाएँ,
हँसे लहलहाते हरे खेत सारे,
हँसी चमचमाती, भरी धूप प्यारी;
बसंती हवा में, हँसी सृष्टि सारी!
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ!

निर्देश : 1. इस कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
2. इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

22.3.3 विस्तृत व्याख्या

हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ।
सुनो बात मेरी -
अनोखी हवा हूँ।
बड़ी बावली हूँ,
बड़ी मस्तमौला।
नहीं कुछ फिकर है,

बड़ी ही निडर हूँ।
जिधर चाहती हूँ,
उधर घूमती हूँ,
मुसाफिर अजब हूँ।
न घर-बार मेरा,
न उद्देश्य मेरा,
न इच्छा किसी की,
न आशा किसी की,
न प्रेमी न दुश्मन,
जिधर चाहती हूँ
उधर घूमती हूँ।
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ!

शब्दार्थ : मस्तमौला = बेफिक्र, अपने मन की करने वाला।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'बसंती हवा' शीर्षक कविता का अंश हैं।

प्रसंग : इन पंक्तियों में बसंती हवा के इधर उधर अपने मन के अनुसार घूमते फिरते रहने का वर्णन है।

व्याख्या : कवि बसंती हवा के बारे में बताता है। वह अपने मन से जो चाहता है वह करती है। जहाँ चाहती है वहाँ घूमती फिरती है। उसका कोई घर-बार नहीं, न कोई इस तरह घूमने फिरने के पीछे मकसद ही है। कोई काम नहीं है और न ही उसे कोई उम्मीद और चाहत है। उसका कोई दुश्मन और कोई दोस्त भी नहीं। वह अपनी मर्जी की मालिक है। बेफिक्र है। वह अपने नाम की तरह ही हवा हो जाती है। यहाँ बसंत के मौसम में बेफिक्री से बहने वाली हवा को किसी जवान लड़की की तरह बेफिक्र दिखाया गया है।

काव्यगत विशेषता : इन पंक्तियों के छोटे-छोटे पद गेय (गाकर सुनाने के लिए) हैं। घर-बार, आशा-इच्छा, प्रेमी-दुश्मन आदि शब्दों के जोड़े बड़े प्रभावशाली और सुंदर हैं। मानवीकरण अलंकार है।

बोध प्रश्न

- अपनी किन विशेषताओं के कारण वसंती हवा स्वयं को 'अजब मुसाफिर' बताती है?
- बसंती हवा के लिए यहाँ कितने विशेषणों का प्रयोग किया गया है?

जहाँ से चली मैं
जहाँ को गई मैं -
शहर, गाँव, बस्ती,
नदी, रेत, निर्जन,
हरे खेत, पोखर,
झुलाती चली मैं।
झुमाती चली मैं!
हवा हूँ, हवा मै
बसंती हवा हूँ।

शब्दार्थ : पोखर = छोटा तालाब निर्जन = जन रहित, जहाँ कोई इंसान नहीं रहता।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'बसंती हवा' शीर्षक कविता का अंश हैं।

प्रसंग : यहाँ कवि बसंती हवा के घर से निकलते ही उसके बेफिक्री से आगे बढ़ते जाने का शब्द-चित्र प्रस्तुत करता है।

व्याख्या : बसंती हवा बह रही है। कवि अपने शब्दों के द्वारा उस हवा का वर्णन कर रहा है। इस वर्णन की विशेषता यह है कि यह बसंती हवा खुद अपनी कहानी कह रही लगती है। वह कह रही है कि मैं जहाँ से चलकर जहाँ तक गई उसका कोई ओर-छोर या आर- पार नहीं है। वह झूमते हुए मस्ती से ऐसे चली जा रही है जैसे झूल रही हो और वह एक ही जगह ठहरती भी नहीं है। वह तो शहर, गाँव और बस्ती से निकलकर ऐसे स्थान पर भी पहुँच जाती है जहाँ कोई आदमी या इंसान नहीं दिखाई देता। नदी और उसके रेत को छूते हुए आगे बढ़कर वह हरे-भरे खेतों और छोटे छोटे ताल-तलैया या तालाबों को खुश करते हुए खुशी खुशी आगे बढ़ती चली जाती है। बार बार बसंती हवा का अपने को 'हवा' कहना ध्यान देने लायक है। इससे उसके 'वेग' या तेजी का पता चलता है।

काव्यगत विशेषता : इस पद में कवि ने गाँव के खेतों में तालाबों और नदियों को पार करती

बसंती हवा का अच्छा चित्र पेश किया है। मानवीकरण अलंकार है।

बोध प्रश्न

- बसंती हवा कहाँ कहाँ जाती है?
- “हवा हूँ, हवा मैं” बार बार कहने का क्या तात्पर्य है?

चढ़ी पेड़ महुआ,
थपाथप मचाया;
गिरी धम्म से फिर,
चढ़ी आम ऊपर,
उसे भी झकोरा,
किया कान में 'कू',
उतरकर भगी मैं,
हरे खेत पहुँची -
वहाँ, गेंहुँओं में
लहर खूब मारी।
पहर दो पहर क्या,
अनेकों पहर तक
इसी में रही मैं!
खड़ी देख अलसी
लिए शीश कलसी,
मुझे खूब सूझी -
हिलाया-झुलाया
गिरी पर न कलसी!
इसी हार को पा,
हिलाई न सरसों,
झुलाई न सरसों,
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ!

शब्दार्थ : झकोरा = हवा का झोंका। अलसी = एक प्रकार का पौधा। कलसी = छोटा कलसा (कलश) या घड़ा। पहर= प्रहर, कुछ समय।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'बसंती हवा' शीर्षक कविता का अंश हैं।

प्रसंग : यहाँ बसंती हवा का बेफिक्र और बेलौस स्वभाव का सुंदर चित्रण है। उसकी हरकतें ऐसी हैं कि लगता है यह हवा नहीं कोई अल्हड़ लड़की है जो शैतानी किए जा रही है।

व्याख्या : बसंती हवा बेरोकटोक आगे बढ़ती जा रही है। वह खेतों से होती हुई अब महुआ के पेड़ पर चढ़ जाती है। पेड़ पर धपाधप धमाचौकड़ी मचाकर वह धम से नीचे गिर पड़ती है। फिर आम के पेड़ पर चढ़ जाती है। उसे अपने झोंके से खूब हिलाती है। जैसे शैतान बच्चे कान में 'कूं' की आवाज करके भाग जाते हैं। फिर वह आम की पकड़ में न आते हुए आगे लहलहाते खेतों की तरफ भाग खड़ी होती है। पहले गेहूं की खेतों में खूब उछल-कूद करती है। वहाँ उसका मन लगता है इसलिए एक दो पहर या थोड़े बहुत वक्त में ही वहाँ से नहीं निकल आती। वह वहाँ कुछ देर ठहरती है। उसके बाद उसे पास ही अलसी का खेत दिखाई देता है।

अलसी के पौधे इस प्रकार लहराते दिखाई देते हैं मानो वे अपने सिर पर कलसी या घड़ा रख कर खड़े हों। उन्हें इस तरह खड़ा देखकर हवा को शैतानी सूझती है, वह उसे अपनी तेज हवा के झोंके से अस्त-व्यस्त कर देती है। उसके सिर से वह कलसी जैसे गिरने को ही हो जाती है। पर वह गिरती नहीं बस खूब हिलती है। बसंती हवा को अलसी की कलसी को गिरा न सकने का बहुत मलाल होता है। वह दुखी होकर आगे बढ़ती है और फिर आगे सरसों के खेत में जाकर उसे ज़ोर से हिलाती डुलाती नहीं। मन मारकर आगे बढ़ जाती है। बसंती हवा का झोंका अपनी मस्त चाल से आगे बढ़ जाता है।

काव्यगत विशेषता : यहाँ कवि ने बंसती हवा को एक बेफिक्र लड़की की तरह पेश किया है, इसलिए मानवीकरण अलंकार है। यहाँ उसका मस्ती करना और अलसी से हार कर निराश हो जाने का वर्णन खूब अच्छा लगता है।

बोध प्रश्न

- किस चीज से हारकर बसंती हवा ने सरसों को नहीं हिलाया डुलाया?
- कवि ने बसंती हवा की किन किन अटखेलियों का वर्णन किया है?

मुझे देखते ही

अरहरी लजाई,
मनाया-बनाया,
न मानी, न मानी,
उसे भी न छोड़ा -
पथिक आ रहा था,
उसी पर ढकेला;
हँसी ज़ोर से मैं,
हँसी सब दिशाएँ,
हँसे लहलहाते
हरे खेत सारे,
हँसी चमचमाती
भरी धूप प्यारी;
बसंती हवा में
हँसी सृष्टि सारी!
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ!

शब्दार्थ : पथिक = राहगीर, पथ या रास्ते पर चलने वाला। सृष्टि = निर्माण, रचना, उत्पत्ति, पैदाइश, कायनात।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'बसंती हवा' शीर्षक कविता का अंश हैं।

प्रसंग : इस कवितांश में दूसरे अंशों की तरह ही केवल बसंती हवा ही 'लड़की' की तरह दिखाई नहीं देती, दूसरी फसलें भी वैसी ही हैं। फसलें तो क्या धूप और सारी सृष्टि ही खुश है।

व्याख्या : बसंती हवा के इस तरह बेफिक्र होकर उछल कूद मचाने की वजह से चारो ओर खुशी का माहौल है। खेत में खड़ी अरहर अपनी तरफ बसंती हवा को आते देखकर शर्म से निगाह नीची कर लेती है। आंखे झुका लेती है। पर बसंती हवा ने उसे भी न छोड़ा। कोई राहगीर उस वक्त वहाँ से गुजर रहा था। बसंती हवा ने अरहर को अपने जबर्दस्त वेग से ऐसा धक्का दिया कि वह बेचारी उस पर जा गिरी। अरहर की मासूमियत और मजबूरी देखकर बसंती हवा को बहुत

हँसी आई।उसके ज़ोर से हँसने से चारो तरफ खुशियाँ बिखर गईं। सारी कायनात खुशी से झूम उठी। खेत खलिहान खुश हो गए। चमचमाती धूप चहकने लगी। चारों तरफ बसंती हवा ने खुशियाँ ही खुशियाँ बिखेर कर रख दी।

काव्यगत विशेषता : बसंती हवा के साथ साथ ही खेत-खलिहान, धूप, फसल और सब कुछ खुशी से झूम उठे। मानवीकरण अलंकार का यहाँ भी प्रयोग करके कवि ने अपनी कविता में चार चाँद लगा दिए हैं।

बोध प्रश्न

- वसंती हवा ने ऐसा क्या कर दिखाया कि सारी सृष्टि ही हँस पड़ी?
- बसंती हवा के चलने पर कौन कौन हँसने लगे?

22.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

आपको यह पता है कि छह ऋतुओं में से एक वसंत या बसंत में बहने वाली हवा 'बसंती हवा' अपने आप में बहुत अनोखी है। वसंत को ऋतुओं का राजा कहा जाता है। बसंती हवा इसी कारण से सबको प्रिय है ही। कवि की इस कविता में शब्दों के स्तर पर भी यही तो कहा गया है कि बसंती हवा बावली, निडर और मस्त है। उसे किसी बात की चिंता या फिक्र नहीं। वह एक मुसाफिर की तरह जहाँ चाहे वहाँ घूमती है और जिससे चाहे छेड़खानी करती चलती है। उसकी बेलौस हरकतों को देखकर सारे खेत, चमचमाती धूप और पूरी सृष्टि हँसने लग जाती है। पर अर्थ के स्तर पर इस कविता में कुछ और भी विशेषताएँ हैं जो इसे बार बार पढ़ने के लिए आकर्षित करती हैं।

प्रकृति चित्रण की दृष्टि से जब आप इस कविता को देखते हैं तो सबसे पहले यह पाते हैं कि यहाँ कवि के द्वारा बसंती हवा का मानवीकरण किया गया है। यह बात बिलकुल स्पष्ट है। पर इसके अतिरिक्त और क्या है जो इस कविता को एक क्लासिक कविता के रूप में स्थापित कर देती है।ऐसी सरलता कि कक्षा छह के विद्यार्थी भी पढ़ते हैं। इतनी अर्थवत्ता कि बी.ए. और एम.ए. के विद्यार्थी ही नहीं बड़े बड़े विद्वान भी कविता को बार बार पढ़ते हैं और इसके काव्य सौंदर्य पर मुग्ध हो जाते हैं। 'बसंती हवा' कविता में प्रकृति और परिवेश का आपसी संबंध और संवाद है। कवि केदार यहाँ छायावादी कवि के समान आत्मविभोर होकर अपने आवेग को शब्द बद्ध नहीं कर रहा। उसके लिए 'बसंत' केवल सौंदर्य नहीं है।

केदारनाथ अग्रवाल के द्वारा रचित यह गीत वास्तव में उनके नाम का पर्याय बन गया है।

बसंती हवा केवल वसंत ऋतु में बहने वाली शीतल मंद सुगंध मलय समीर नहीं है, वह मानो कोई अल्हड़ बाला है जो मस्त-मौला तो है ही खिलंदड़ी भी कम नहीं है। बसंती हवा में जिस संसार और ग्रामीण पृष्ठभूमि और ग्राम्य संस्कार का चित्रण है वह हिंदी कविता में इस तरह पहले कभी नहीं देखा गया था। प्रकृति के साथ ऐसा तादात्म्य और साहचर्य स्थापित करना अपने आप में अभूतपूर्व है। कविता के माध्यम से पाठकों को उस उल्लास और उत्साह का अनुभव कराना किसी कालिदास के बस की ही बात थी।

केदारनाथ अग्रवाल की कविता में यह वर्णन परोक्ष है। इसका आभास होता है। लगता है वसंत कुमारी का एक रूप-स्वरूप पाठक के मानस-पटल पर उभर रहा है। वह किसी चंचल हिरनी की तरह मस्ती भरी चली जा रही है। लगेगा आप कोई हिंदी फिल्म देख रहें हैं और नायिका पंजाब के खेतों में घूम रही है और पाठक के रूप में आप किसी नायक के समान मंत्रमुग्ध होकर रह गए हैं। जहाँ जहाँ वसंती हवा जाती है आपके नयन भी उसका पीछा करते हैं। यह कमाल है कवि की लेखनी का कि मानवीकारण 'अलंकार' मात्र रहकर नहीं बैठ जाता वह साकार हो जाता है। आपको तो याद न होगा पर अपने दादा जी की सहायता से "पतली कमर है" (गीतकार : शैलेंद्र, फिल्म : बरसात) गाने का पूरा अंतरा आप आज भी सुन सकते हैं-

मैं चंचल मदमस्त पवन हूँ, झूम झूम हर कली को चूमूँ।
बिछड़ गई मैं घायल हिरनी, तुमको ढूँढू बन बन घूमूँ।

केदारनाथ अग्रवाल प्रकृति को सैलानी की नहीं, किसान की नजर से देखते हैं। वे अपने लिए नहीं बल्कि 'जन' के लिए लिखते हैं। प्रकृति चित्रण करती कविताएँ प्रायः सभी कवि लिखते हैं। लेकिन उनका प्रकृति से संबंध अलग-अलग होता है। स्वतंत्रता और स्वच्छंदता जन जीवन में दिखाई न देने के कारण छायावादी कवि उसे प्रकृति की उन्मुक्तता में खोजते थे। किंतु स्वतंत्र भारत के स्वतंत्र कवि मानव को प्रकृति के और अधिक पास ले आते हैं।

छायावादी कवि के समान केदार नाथ अग्रवाल प्रगतिवादी कवि के समान समाज को हर समय साधते रहे हैं। छायावादी कविता और प्रगतिवादी कविता दोनों में "प्रकृति" है। किन्तु छायावाद में उसका समाज से कोई विशेष लेना देना नहीं, प्रगतिवादी कवि उसे सामाजिक संबंधों से ओतप्रोत करता है। बसंती हवा में 'हवा' मामूली हवा नहीं है। वह तो फागुन के महीने में हुडदंग मचाती, कर्मठ और बेलौस मानवी बन जाती है। इसी कारण तो केदारनाथ अग्रवाल लोक-कवि और लोक के कवि हैं। इसी कारण वे प्रगतिशील कवियों में भी अलग पहचाने जाते

हैं।

केदारनाथ अग्रवाल ने बसंती हवा को जीवंत करने के लिए जीवन से जोड़ा है क्योंकि कवि की आस्था और कवि का विश्वास बाह्य जगत से प्रकृति को एकाकार करने का रहा है। कवि ने “फूल नहीं रंग बोलते हैं” में लिखा है, “मैंने प्रकृति को चित्र रूप में देखा है, उसके संपर्क में जीने के लिए मुझे संघर्ष नहीं करना पड़ा। अतएव प्रकृति का मेरा निरूपण चित्रोपम निरूपण है। उसमें कलाकारिता है। शब्दों का सौंदर्य है। ध्वनियों की धारा है। कहीं कहीं क्लासकीय अभिव्यक्ति है। ‘बसंती हवा’ में अवश्य गति और वेग है।”

बसंत की प्रकृति एक ऐसे मदमस्त संत या औघड़ की है जो राग-विराग, सुख-दुख, जय-पराजय आदि जीवन के द्वंद से प्रभावित नहीं होता। अपना रास्ता खुद बनाता है और उस पर चलते हुए बाधाओं को अलमस्त होकर पार करता चला जाता है। बसंती हवा भी बस कुछ ऐसी ही है।

22.4 पाठ सार

‘बसंती हवा’ शीर्षक से लिखी गई केदारनाथ अग्रवाल की इस कविता में प्रकृति का सुंदर चित्रण है। छह ऋतुओं में से एक ‘वसंत’ में बसंत की हवा का बहना एक सामान्य बात है। पर इस कविता में यह हवा एक बावली, निडर, मस्तमौला, बेफिक्र बाला (कन्या) के समान घूम रही है। वह घूमते घूमते शहर, गाँव, बस्ती, नदी, रेत, निर्जन, हरे खेत, पोखर आदि को लांघते हुए चलती चली जाती है। कभी वह महुआ के पेड़ पर चढ़ती-उतरती-गिरती है और कभी वह आम के पेड़ पर चढ़कर बच्चों की तरह उसके कानों में ‘कू’ की आवाज करके भाग जाती है। वह गेहूँ के खेत में जाती है और देर तक अपने आपको लहराती है। अलसी की खड़ी फसल को हिलाती है पर हार कर आगे बढ़ खेत में से निकलते हुए अरहर को एक पथिक पर ही अपने ज़ोर से ढकेल देती है। इस चंचल हवा की शैतानियों को देखकर लहलहाते खेत, चमकती धूप और सारी धरती खिलखिला उठती है। बसंती हवा से सारा संसार आनंदित हो जाता है। केदारनाथ अग्रवाल की यह कविता प्रकृति चित्रण के लिहाज से अनमोल और बेजोड़ है।

22.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. केदारनाथ अग्रवाल प्रकृति को सैलानी की नहीं किसान की नजर से देखते हैं।

2. ‘बसंती हवा’ में मानवीकारण के माध्यम से कवि ने सांकेतिक अर्थ का चमत्कार दिखाया है।
3. इस कविता में प्रकृति और परिवेश का आपसी संबंध और संवाद प्रकट हुआ है।
4. केदारनाथ अग्रवाल की ‘बसंती हवा’ वस्तुतः कर्मठ और बेलौस किशोरी है।
5. गति और वेग इस कविता की मुख्य आकर्षण शक्ति है।

22.6 शब्द संपदा

1. अर्थवत्ता = पदों, वाक्यों, शब्दों आदि की वह अवस्था जिसमें वे विशिष्ट अर्थ या आशय से युक्त होते हैं।
2. आत्मविभोर = जो अपनी ही सुंदरता या गुणों से अभिभूत हो; आत्ममुग्ध।
3. उन्मुक्तता = खुलापन, स्वतंत्रता, आज़ादी।
4. क्लासकीय = आदर्श और संतुलित, श्रेष्ठ
5. तादात्म्य = दो चीज़ों का परस्पर अभिन्न होने का भाव; अभेद मिश्रण या संबंध; अभिन्नता।
6. परोक्ष = प्रत्यक्ष का विलोम परोक्ष है। परोक्ष का मतलब है जो सीधे से न हो या न किया जाए।
7. मानवीकरण = प्रकृति या जड़ पदार्थों में मनुष्य के गुणों का आरोप करके चेतन के समान उनकी चेष्टाओं का चित्रण मानवीकरण कहलाता है।
8. मुग्धा = अल्हड़ और सदा खुश रहने वाली कन्या।
9. साहचर्य = साथ साथ रहने का भाव

22.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. बंसती हवा का परिचय अपने शब्दों में दीजिए।
2. अपना परिचय देती हुई ‘बसंती हवा’ अपनी किन-किन विशेषताओं का उल्लेख करती है?
3. प्रकृति के मानवीकरण की दृष्टि से ‘बसंती हवा’ कविता की व्याख्या कीजिए।
4. “बसंती हवा में ‘हवा’ मामूली हवा नहीं है।” इस कथन का निहितार्थ स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. बसंत ऋतु की किन किन फसलों की ओर कवि ने संकेत किया है?
2. बसंती हवा एक चित्र-कविता है। क्यों? और कैसे?
3. बसंती हवा कविता के आधार पर गाँव और खेत खलिहानों का वर्णन कीजिए।
4. केदारनाथ अग्रवाल "बसंती हवा" कविता के द्वारा क्या संदेश देना चाहते हैं?

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. बसंती हवा का यह गुण नहीं बताया गया है – ( )

   (अ) मस्त मौला (आ) लज्जाशील (इ) बावली (ई) चंचल

2. बसंती हवा किसे 'मनाती- बनाती' है? ( )

   (अ) गेंहू की बाली को (आ) अरहर को (इ) पथिक को (ई) आम की डाली को

3. बसंती हवा ने किसको भी नहीं छोड़ा? ( )

   (अ) पथिक को (आ) पोखर को (इ) सरसों को (ई) मंदिर के पुजारी को

4. केदारनाथ अग्रवाल बसंती हवा को किस नज़र से देखते हैं? ( )

   (अ) सैलानी (आ) किसान (इ) कवि (ई) इनमें से कोई नहीं

5. बसंती हवा में प्रयोग किया गया प्रमुख अलंकार है- ( )

   (अ) विशेषीकरण (आ) चित्रीकरण (इ) मानवीकरण (ई) राष्ट्रीयकरण

6. "हँसी ज़ोर से मैं" में "मैं" कौन है? ( )

   (अ) सृष्टि (आ) दिशाएँ (इ) बसंती हवा (ई) खेत

7. बसंती हवा का प्रमुख स्वर क्या है? ( )

   (अ) प्रसन्नता और उल्लास (आ) आशा-निराशा

   (इ) भोग-विलास (ई) नश्वरता और मरण

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. केदारनाथ अग्रवाल प्रेम और प्रकृति के .... कवि कहे जाते हैं।
2. छायावादी कविता और प्रगतिवादी कविता दोनों में .... का चित्रण है ।

3. बसंती हवा कविता में अपना .... स्वयं दे रही है।

4. बसंती हवा में कवि ने .... अलंकार का अधिक प्रयोग किया है।

5. अरहर बसंती हवा को देखकर ....।

6. बसंती हवा .... के कान में कूं करके भाग खड़ी होती है।

7. बसंती हवा सारे संसार में .... भर देती है।

III. सुमेल कीजिए -

1. पेड़	(अ) कलसी
2. अरहर	(आ) लहलहाते
3. अलसी	(इ) महुआ
4. खेत	(ई) लजाई

22.8 पठनीय पुस्तकें

1. केदारनाथ अग्रवाल रचना संचयन : सं. ज्योतिष जोशी

2. केदारनाथ अग्रवाल संचयिता : सं. अशोक त्रिपाठी

इकाई 23 : शमशेर बहादुर सिंह : एक परिचय

रूपरेखा

23.1 प्रस्तावना

23.2 उद्देश्य

23.3 मूल पाठ : शमशेर बहादुर सिंह : एक परिचय

23.3.1 जीवन-परिचय

23.3.2 व्यक्तित्व

23.3.3 काव्य की प्रेरणाएँ

23.3.4 रचना-यात्रा एवं कृतियाँ

23.3.5 काव्य की प्रमुख कथ्यगत विशेषताएँ

23.3.6 काव्य-भाषा और शिल्प

23.3.7 छायावादोत्तर हिंदी कविता में शमशेर का महत्व

23.4 पाठ सार

23.5 पाठ की उपलब्धियाँ

23.6 शब्द संपदा

23.7 परीक्षार्थ प्रश्न

23.8 पठनीय पुस्तकें

23.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! 'छायावादी' कविता अपनी ऐतिहासिक भूमिका का निर्वाह करने के बाद, जब ढलान की ओर बढ़ने लगी, तो हिंदी कविता के क्षेत्र में युगांतर उपस्थित होने की गूँज सुनाई दी। इस परिवर्तन की व्यवस्थित और स्पष्ट सूचना सबसे पहले छायावाद की 'वृहतत्रयी' के एक स्तंभ, सुमित्रानंदन पंत के सन् 1936 ई. में प्रकाशित 'युगांत' संग्रह में अनुभव की गई। पंत ने अपने 'युगवाणी' और 'ग्राम्या' शीर्षक काव्य-संग्रहों के माध्यम से नवीन काव्य-परिवर्तन की मजबूत नींव भी रखी। छायावादोत्तर हिंदी कविता में पहला महत्वपूर्ण पड़ाव 'प्रगतिवाद' था। आगे चल कर 'प्रयोगवाद' की शुरूआत हुई, जिसका प्रारंभ सन् 1943 में प्रकाशित 'तारसप्तक' शीर्षक सात कवियों की कविताओं के संग्रह से माना जाता है। प्रयोगवाद की ही परिणति 'नई

कविता’ के रूप में सामने आई। छायावादोत्तर कविता के महत्वपूर्ण कवियों में अज्ञेय, मुक्तिबोध, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, शमशेर बहादुर सिंह, गिरिजा कुमार माथुर, धर्मवीर भारती, भवानी प्रसाद मिश्र आदि हैं। इनमें से शमशेर ऐसे कवि माने जाते हैं, जो प्रगतिवाद के साथ भी कुछ दूर चले, किंतु उनका उल्लेखनीय योगदान नई कविता के क्षेत्र में है।

23.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- शमशेर बहादुर सिंह के जीवन, काव्य-प्रेरणाओं और साहित्य से परिचित हो सकेंगे।
- शमशेर के काव्य पर विचारधाराओं व काव्य-कला आंदोलनों के प्रभाव को जान सकेंगे।
- शमशेर के काव्य् के कथ्य और शिल्प-विधान की जानकारी उपलब्ध कर सकेंगे।
- छायावादोत्तर कविता के स्वरूप की सामान्य समझ विकसित कर सकेंगे।
- पाठ-लेखन में प्रयुक्त काव्यशास्त्रीय एवं आलोचना की शब्दावली का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

23.3 शमशेर बहादुर सिंह : एक परिचय

23.3.1 जीवन-परिचय

शमशेर बहादुर सिंह का जन सन् 1911 में देहरादून (वर्तमान में उत्तराखंड राज्य की राजधानी) में हुआ था। वे बाबू तारीफ सिंह और श्रीमती प्रभुदेई की संतान थे। उनके पैतृक-गाँव का नाम ‘एलम’ है, जो उत्तर प्रदेश के मुजफ्फ़रनगर जनपद में है। शमशेर की प्रारंभिक शिक्षा देहरादून में ही हुई। इसके पश्चात उनकी पढ़ाई-लिखाई उत्तर प्रदेश के गोंडा नगर में हुई, जहाँ उनके पिता जी कलक्टरी में ‘चीफ रीडर’ के पद पर कार्य करते थे। वहाँ से उन्होंने हाईस्कूल और इंटर की परीक्षाएँ उत्तेर्ण कीं। सन् 1933 में उन्होंने इलाहाबाद से बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की और वहीं से सन् 1938 में एम.ए. पूर्वार्ध की परीक्षा में सफल हुए, किंतु जीवन-संघर्ष में घिरा होने के कारण एम.ए. उत्तरार्ध की परीक्षा नहीं दे सके।

शमशेर बहादुर सिंह ने सन् 1938-39 की अवधि में ‘रूपाभ’ पत्रिका में सहायक के रूप में कार्य किया। सन् 1941-42 के काल में उन्होंने बनारस से प्रकाशित ‘कहानी’ पत्रिका के संपादकीय विभाग में कार्य किया। उन दिनों कवि त्रिलोचन भी उस पत्रिका के संपादन से जुड़े थे। सन् 1946 में शमशेर मुंबई चले गए, जहाँ उन्होंने ‘नया साहित्य’ पत्रिका का संपादन किया। सन् 1948 से 54 की अवधि में वे ‘माया’ पत्रिका के सहायक संपादक रहे। इसके अतिरिक्त

उन्होंने 'नया पथ' और 'मनोहर कहानियाँ' आदि में भी कार्य किया। सन् 1965 से 77 के बीच शमशेर दिल्ली विश्वविद्यालय में 'उर्दू-हिंदी कोश' परियोजना से जुड़े रहे। उसमें उन्होंने हिंदी संपादक के रूप में कार्य किया। वे सन् 1981 से 85 तक विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में 'प्रेमचंद सृजन पीठ' के अध्यक्ष रहे। अपने हाईस्कूल के दिनों में शमशेर अपने कुछ साथियों के साथ एक हस्त-लिखित पत्रिका भी निकालते थे, जिसका रंगीन मुखपृष्ठ वे स्वयं ही तैयार करते थे। शमशेर ने सन् 1978 में रूस (तत्कालीन सोवियत संघ) की साहित्यिक-यात्रा भी की थी।

शमशेर बहादुर सिंह को उनके साहित्यिक योगदान के लिए अनेक पुरस्कार प्रदान किए गए, जैसे- साहित्य अकादमी पुरस्कार (1977), तुलसी पुरस्कार (1977) और मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार (1987)।

सन् 1993 में हिंदी के महत्वपूर्ण कवि, शमशेर बहादुर सिंह की जीवन-यात्रा पूरी हुई।

बोध प्रश्न

- शमशेर के पैतृक गाँव का नाम क्या है?
- शमशेर किन पत्रिकाओं के संपादन से जुड़े थे?

23.3.2 व्यक्तित्व

शमशेर बहादुर सिंह के व्यक्तित्व का निर्माण अंतर्मुखी प्रवृत्तियों से हुआ था तथा उसके विकास में भावनाओं और विचारों के पारस्परिक द्वंद्व की बड़ी भूमिका थी। वे बाह्य भौतिक जीवन-यथार्थ से आभ्यंतर में उतरते जाने वाले व्यक्ति थे। शमशेर प्रेम, प्रकृति और रोमानियत को सर्वाधिक महत्व देते थे। वे इन्हीं के संदर्भ में वैचारिक स्थितियों का मूल्यांकन भी करते थे। वे मानते थे कि "काव्य-कला समेत जीवन के सारे व्यापार एक लीला ही हैं- और यह लीला मनुष्य के सामाजिक जीवन के उत्कर्ष के लिए निरंतर संघर्ष की ही लीला है।" (चुका भी हूँ नहीं मैं - आभार ज्ञापन)। शमशेर के व्यक्तित्व में संकोच-तत्व भी आजीवन बना रहा। इसी के चलते वे अपने समकालीन लेखकों से मिलने तक में पीछे रहते थे। वे भावुक भी बहुत थे। यह भावुकता उन्हें अपनी माँ से मिली थी। सामाजिक और जनता के संघर्षों से भी शमशेर का गहरा लगाव था, किंतु वह अधिकतर उनके विचारों तथा कविताओं तक ही सीमित रहा। शमशेर को संगीत और चित्रकला में अत्यधिक रुचि थी, जिन्होंने उनके जीवन, व्यक्तित्व और काव्य को प्रभावित किया। चित्रकला के संबंध में उन्होंने स्वीकार किया है कि "बंगाल स्कूल ऑफ पेंटिंग से भी प्रभावित था। मैं मानता हूँ, आर्ट फॉर आर्ट्स सेक नहीं होनी चाहिए।" (कवियों का कवि शमशेर

(एक लंबा इंटरव्यु : शमशेर के साथ), पृ. 226) वे स्वाधीनता को जीवन के लिए अनिवार्य मानते थे, इतनी अधिक कि इसी कारण उन्होंने कभी सरकारी नौकरी नहीं की।

बोध प्रश्न

- शमशेर कैसे व्यक्ति थे?
- शमशेर को किस्से गहरा लगाव था?

23.3.3 काव्य की प्रेरणाएँ

शमशेर के काव्य-व्यक्तित्व के विकास के मूल में अनेक प्रेरणाएँ थीं। बचपन में उनके पिता प्रति दिन रामायण का पाठ करते थे, जिससे आकर्षित होकर वे भी रामायण-पाठ करने लगते थे। शमशेर अपनी माँ से बहुत प्रभावित थे, विशेषकर उनकी सांस्कृतिक शिक्षाओं और सेवा-भाव के कारण। उनके नाना फारसी के विद्वान थे। शमशेर ने भी बचपन में उर्दू पढ़ी थी। वे अपने जीवन के प्रारंभिक दिनों में ही इकबाल से प्रभावित हो गए थे और फानी व हाली को भी उन्होंने खूब पढ़ा था। वे जफर अली खाँ के लेखन के संपर्क में भी आए थे और उर्दू मर्सिये भी उन्होंने खूब पढ़ डाले थे। शमशेर ने मूलत: उर्दू में ही लेखन की शुरुआत भी की थी। ग़ज़ल कहने में शमशेर को महारत हासिल थी। इसी के बाद वे हिंदी कविता के क्षेत्र में आए। एक समय वे अंग्रेजी कवि टेनिसन को अपना आदर्श मानने लगे थे। आगे चल कर शेक्सपियर, ब्रेतां, एजरापाउंड, इलियट, मैरियन मूर आदि ने उन्हें प्रभावित किया। सन् 1933 के लगभग शमशेर ने अपनी अंग्रेजी कविताओं का एक संग्रह तैयार किया था, किंतु मुद्रण का पैसा न जुटा पाने के कारण उसका प्रकाशन नहीं करवा सके। अपने इलाहाबाद के जीवन में शमशेर का निकट संपर्क केदारनाथ अग्रवाल, नरेंद्र शर्मा, हरिवंशराय बच्चन, सुमित्रानंदन पंत, बालकृष्ण राव, मोहन राकेश आदि से हुआ। बचपन में ही कविता के जो संस्कार उनमें पड़ गए थे, वे इलाहाबाद आने पर तेजी से विकसित हुए। बनारस में उन्होंने शिवदान सिंह चौहान के साथ कार्य किया, जिनके कारण वे मार्क्सवादी दर्शन से परिचित हुए। मुक्तिबोध से भी शमशेर का निकट का परिचय था। वे मुक्तिबोध की कविता से गहरे रूप में प्रभावित थे। उन्हीं दिनों महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि वे मानने लगे- "शमशेर साहब अव्वल तो शागिर्द निराला के हैं- वह अस्ल में निराला और पंत की ही टेक्नीक का जरा खास ढंग से 'निखरा' और 'आगे बढ़ाया हुआ' रूप है।" (उदिता अभिव्यक्ति का संघर्ष (सीधे अपने पाठक से), पृ.103)। शमशेर के भीतर चित्रकला के संस्कार जगाने का कार्य उनके मामा, दर्शन सिंह ने किया। वे

अच्छे पेंटर थे और शमशेर ने उनके बनाए चित्रों को देख कर जीवन के प्रारंभिक चरण में ही अपने भीतर कला का आवेश अनुभव करना प्रारंभ कर दिया था। बाद में उन्होंने रणदाचरण उकील से तथा स्कूल ऑफ आर्ट में विधिवत रूप में चित्रकला का ज्ञान भी प्राप्त किया। शमशेर कला को, जीवन को देखने का माध्यम मानते थे। इसका प्रभाव उनके काव्य में देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- शमशेर किन-किन से प्रभावित थे?
- शमशेर के अनुसार जीवन को देखने का माध्यम क्या है?

23.3.4 रचना-यात्रा एवं कृतियाँ

शमशेर बहादुर सिंह सन् 1933 में इलाहाबाद आने के समय उर्दू में गज़लें कहने और अंग्रेजी में कविताएँ रचने लगे थे। उसी के कुछ बाद उन्होंने हिंदी में काव्य-रचना का अभ्यास भी प्रारंभ किया। सन् 1937 में जब वे दुबारा इलाहाबाद आए, तो उन्होंने अपना अधिक ध्यान हिंदी में काव्य-रचना की साधना पर केंद्रित किया। धीरे-धीरे उनकी कविताएँ हंस, कल्पना, लहर, कवि, प्रतीक, नया प्रतीक आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगीं, जिससे उनकी काव्य-रचना-यात्रा आगे बढ़ी। उनकी 'यूनानी वर्णमाला का कोरस' कविता साक्षात्कार पत्रिका में छपी थी।

शमशेर की कविताओं के पुस्तकाकार प्रकाशन का प्रारंभ सन् 1951 में अज्ञेय के संपादन में प्रकाशित 'दूसरा सप्तक' नामक काव्य-संग्रह से हुआ। इसमें सात कवि हैं, उन्हीं में से एक शमशेर भी हैं। इसमें शमशेर की इक्कीस कविताएँ संकलित की गई हैं, जिनमें एक रुबाई और कुछ शेर हैं। दूसरा सप्तक में शमशेर की एक 'शरीर स्वप्न' शीर्षक कविता हैं, जिसमें पुरुष का नख-शिख शैली में चित्रण है। उस काल में यह नितांत नवीन प्रयोग था, जो उन्हें अपने समकालीन कवियों में अलग पहचान देता है। सन् 1959 में शमशेर की छत्तीस कविताओं का संग्रह 'कुछ कविताएँ' प्रकाशित हुआ। यह उनका प्रथम स्वतंत्र काव्य-संग्रह है और सभी कविताओं का चयन जगत शंखधर द्वारा किया गया है। सन् 1961 में 'कुछ और कविताएँ' शीर्षक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ। इसमें उनचास कविताएँ हैं, जिनका चयन स्वयं कवि द्वारा ही किया गया। शमशेर के इस संग्रह में छह गज़लें संकलित हैं, जिनमें से तीन उनके प्रिय कवि, नईम के लिए हैं। सभी गज़लें उर्दू गज़ल के अनुशासन का अनुसरण करती हैं। 'यह चयन' शीर्षक

भूमिका में कवि ने हिंदी और उर्दू भाषाओं के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है, “हर भाषा की जान होता है, मुहावरा। और मुहावरे हिंदी-उर्दू दोनों के बिल्कुल एक हैं। उर्दू का समुन्नत गद्य-पद्य मैं खड़ी बोली की ही निधि समझता हूँ।” (पृ. 6)। सन् 1975 में शमशेर का ‘चुका भी हूँ नहीं मैं’ शीर्षक संग्रह प्रकाशित हुआ। कविताओं का चयन और संग्रह का नामकरण कवि के आग्रह पर जगत शंखधर ने किया है। इसमें शमशेर की पचास कविताएँ संकलित हैं, जिनमें मुक्तिबोध, त्रिलोचन और मोहन राकेश पर केंद्रित कविताएँ भी हैं। उल्लेखनीय है कि सन् 1977 में ‘चुका भी हूँ नहीं मैं’ काव्य-संग्रह के लिए शमशेर को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया था। सन् 1980 में ‘इतने पास अपने’ काव्य-संग्रह का प्रकाशन हुआ, जिसमें शमशेर की तेंतीस कविताएँ संकलित हैं। सन् 1980 में ही उनका ‘उदिता अभिव्यक्ति का संघर्ष’ शीर्षक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ। इसके प्रारंभ में ‘यह संस्करण’ शीर्षक भूमिका है, जबकि संग्रह के अंत में ‘सीधे अपने पाठकों से’ शीर्षक वह भूमिका है, जिसे 1949 में तब लिखा गया था, जब इस संग्रह के प्रकाशन की योजना बनी थी। इसमें कवि ने अनेक विषयों पर अपने विचार टिप्पणियों के रूप में दिए हैं, जिन्हें उप-शीर्षक दिए गए हैं और सभी को जोड़ कर भूमिका का रूप दे दिया गया है। सन् 1981 में शमशेर की अड़तीस कविताओं का ‘बात बोलेगी’ शीर्षक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में उस कालावधि की अनेक रचनाएँ हैं, जब शमशेर मार्क्सवादी दर्शन की ओर आकर्षित हुए थे। सन् 1988 में ‘काल तुझसे होड़ है मेरी’ शीर्षक संग्रह का प्रकाशन हुआ, जिसमें कवि शमशेर की तेंतीस कविताएँ संकलित हैं। चयन का कार्य रंजना अरगड़े द्वारा किया गया है। इस संग्रह में मदर तेरेसा, नागार्जुन और प्रभाकर माचवे के साथ ही उर्दू की प्रसिद्ध कथाकार रजिया सज्जाद जहीर के बारे में भी कविता है। इसी के साथ ‘यूनानी वर्णमाला का कोरस’ तथा ‘मणिपुरी काव्य-साहित्य की एक विहंगम नन्हीं-सी झाँकी’ शीर्षक कविताएँ हैं, जिन्हें शमशेर के काव्य-शिल्प संबंधी प्रयोगों का अद्भुत उदाहरण माना जा सकता है। उनका एक काव्य-संग्रह ‘टूटी हुई बिखरी हुई’ शीर्षक से भी प्रकाशित हुआ।

बोध प्रश्न

- शमशेर की किस कविता में पुरुष का नख-शिख शैली में चित्रण है?
- शमशेर को किस काव्य-संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया था?

23.3.5 शमशेर के काव्य की प्रमुख कथ्यगत विशेषताएँ

शमशेर बहादुर सिंह ने दूसरा सप्तक में प्रकाशित अपने वक्तव्य में कहा है, “कविता में हम

अपनी भावनाओं की सच्चाई खोजते हैं।" (पृ. 79)। यही शमशेर के काव्य की मूल विशेषता भी है। वे कविता की रचना को कला का संघर्ष मानते थे और उसे समाज के संघर्ष से जोड़ कर देखते थे। शमशेर के लिए 'कला-चेतना', 'जीवन-सत्य' और 'सौंदर्य' अति महत्वपूर्ण तत्व थे, जिन्हें वे साधना के लिए अनिवार्य मानते थे- यह साधना काव्य, संगीत और चित्र की साधना थी। उन्हीं के शब्दों में "अपनी कला-चेतना को जगाना और उसकी मदद से जीवन की सच्चाई और सौंदर्य को अपनी कला में सजीव से सजीव रूप देते जाना : इसी को मैं 'साधना' समझता हूँ।" (दूसरा सप्तक, पृ. 80)। यह शमशेर के काव्य-वैभव को समझने की कुंजी कही जा सकती है।

बोध प्रश्न

- शमशेर के काव्य की मूल विशेषता क्या है?
- शमशेर कविता की रचना को क्या मानते थे?
- शमशेर के काव्य-वैभव को समझने की कुंजी क्या है?

शमशेर के स्वभाव, विभिन्न विचारधाराओं और कला-दर्शनों से संपर्क तथा सामाजिक बोध ने मिल कर उनके काव्य में रोमान और यथार्थ का द्वंद्व उत्पन्न कर दिया था। यह विशेषता दूसरा सप्तक में प्रकाशित उनकी कविताओं में भी देखी जा सकती है और बाद की रचनाओं में भी। जैसे 1945 में रचित 'मूंद लो आँखें' का एक अंश-

मूंद लो आँखें
        शाम के मानिंद।
जिंदगी की चार तरफें
        मिट गई हैं।
बंद कर दो साज के पर्दे।
        चाँद क्यों निकला उभर कर...?
घरों में चूल्हे
        पड़े हैं ठंडे।
                क्यों उठा यह शोर?
                किसके लिए यह शर?
                (कुछ और कविताएँ, पृ. 72)

शमशेर की दूसरा सप्तक में प्रकाशित कविताओं में से एक है, 'घिरते आकाश को', जिसमें

कहा गया है-

घिरते आकाश को ताकता हताश :
गहरे नभ में चाँद खोता जाता है;
अंधकार
चुप-चुप हँसता आता सब ओर।

इसमें कवि के सूक्ष्म और बिंबधर्मी सौंदर्यबोध के दर्शन किए जा सकते हैं। शमशेर की सौंदर्य-चेतना से भरी कविताओं में एक विलक्षण बात यह है कि कवि स्वयं और अपने पाठक, दोनों के साथ सौंदर्य के पार जाकर उसकी असीमता का अनुभव करना चाहता है। वे अपनी 'सौंदर्य' शीर्षक कविता में स्पर्श को संबोधित करते हुए कहते हैं-

ओ स्पर्श!
मुझे क्षमा करना
कि तुम मुझी में होकर मुझी से परे हो।
ओ माध्यम!
क्षमा करना
कि मैं तुम्हारे पार जाना चाहता रहा हूँ।

(चुका भी हूँ नहीं मैं, पृ. 9)

बोध प्रश्न

- शमशेर की सौंदर्य-चेतना से भरी कविताओं में क्या विलक्षणता है?
- शमशेर कविता की रचना को क्या मानते थे?

शमशेर के काव्य में प्रेम व्यक्ति के जीवन में रचे-बसे जीवन-तत्व के समान है। प्रेम का संयोग पक्ष हो या वियोग पक्ष, दोनों ही स्थितियों में वह अनंत अनुभवों से साक्षात्कार कराता है। ये अनुभव शायद ही कहीं मांसलता के शिकार हुए हों, अधिकांशत: तो कवि ने प्रेमानुभवों से जीवनी-शक्ति के सरस रूप ही उपलब्ध किए हैं। इसीलिए वह अकिंचन से अकिंचन अवस्था में भी प्रेम करना चाहता है। कवि ने 'प्रेम' शीर्षक कविता में कहा है-

द्रव्य नहीं कुछ मेरे पास
फिर भी मैं करता हूँ प्यार

रूप नहीं कुछ मेरे पास
        फिर भी मैं करता हूँ प्यार
सांसारिक व्यवहार न ज्ञान
        फिर भी मैं करता हूँ प्यार
शक्ति न यौवन पर अभिमान
        फिर भी मैं करता हूँ प्यार
कुशल कलाविद् हूँ न प्रवीण
        फिर भी मैं करता हूँ प्यार
केवल भावुक दीन मलीन
        फिर भी मैं करता हूँ प्यार।

(काल तुझसे होड़ है मेरी, पृ. 97)

बोध प्रश्न

- शमशेर ने 'प्रेम' शीर्षक कविता के माध्यम से क्या कहना चाहते हैं?

शमशेर की 'भारत की आरती', 'सत्यमेव जयते', 'मैं भारत गुण गौरव गाता' आदि कविताएँ राष्ट्रीय चेतना प्रधान कविताएँ हैं। इनमें भारत के सनातन सांस्कृतिक वैभव का गुणगान भी है, स्वतंत्रता की देवी के प्रति निष्ठा भी है, राष्ट्र-निर्माण की प्रेरणा भी है और चुनौतियों को स्वीकार करने का साहस भी। पंद्रह अगस्त, उन्नीस-सौ सैंतालीस को कवि ने कहा-

भारत की आरती
देश-देश की स्वतंत्रता देवी
आज अमित प्रेम से उतारती।

(दूसरा सप्तक, पृ. 98)

और भारत पर चीन के आक्रमण के अवसर पर लिखा-

माओ,
शिव-लोक में चीनी दीवार न उठाओ!
वहाँ सब कुछ गल जाता है
सिवाय सच्चाई की उज्ज्वलता के!
असत्य कहीं नहीं है!

शक्ति आकार में नहीं,

सत्य में है!

हमारी शक्ति

सत्य की विजय

(चुका भी हूँ नहीं मैं, पृ. 43)

शमशेर के काव्य में अनेक विचारधाराओं और कला आंदोलनों के प्रभाव को दर्शाने वाली कविताएँ मिलती हैं। उनकी 'सींग और नाखून', 'शिला का खून पीती थी वह जड़', 'एक नीला दरिया बरस रहा है', 'कठिन प्रस्तर' आदि कविताओं पर सुररियलिज्म का प्रभाव माना जाता है। इनमें जीवन-यथार्थ की जमीन से कवि के आभ्यंतर की यात्रा है। बच्चन सिंह के अनुसार, "वे भीतर और भीतर घुसते जाते हैं, यहाँ तक कि अचेतन मन की सीमाओं में भी प्रवेश कर जाते हैं।" (हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, पृ. 435)। कई बार अनुभव होता है कि जैसे कवि अपने स्वप्न-अनुभवों की प्रतीकों और बिंबों में अभिव्यक्ति कर रहा है, जबकि उस स्वप्न का आधार वास्तविक है। उदाहरण के लिए-

एक नीला दरिया बरस रहा है

और बहुत चौड़ी हवाएँ हैं

मकानात हैं मैदान

किस कदर ऊबड़-खाबड़

मगर

एक दरिया

और हवाएँ

मरे सीने में गूंज रही हैं। (चुका भी हूँ नहीं मैं, पृ. 9)

अपनी काव्य-यात्रा के पहले चरण में ही शमशेर का परिचय मार्क्सवाद से भी हुआ था। मार्क्स के विचारों ने एक ओर उनमें आवेश जगाया, तो दूसरी ओर उन्हें किसानों-मजदूरों के शोषण को समझ कर उसके प्रतिकार का मार्ग खोजने की प्रेरणा भी मिली। इन दोनों ही प्रभावों के दर्शन उनकी कविताओं में होते हैं-

वाम वाम वाम दिशा,

समय साम्यवादी। (दूसरा सप्तक, पृ. 102)

एक- जनता का
दुख एक्।
हवा में उड़ती पताकाएँ
अनेक।
दैन्य दानव्। क्रूर स्थिति।
कंगाल बुद्धि : मजूर घर भर्।
एक जनता का- अमर वर :
एकता का स्वर्।
- अन्यथा स्वातंत्र्य इति। (कुछ और कविताएँ, पृ. 4)

शमशेर बहादुर सिंह के काव्य पर बिंबवाद का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। यह कहना उचित होगा कि शमशेर के काव्य में अनुभूति और सौंदर्य की जो गहरी और व्यापक अभिव्यक्ति है, उसे सहज-स्वाभाविक रूप देने में बिंबों ने उनकी भारी सहायता की है। दूसरे, उनकी रंगों के संसार में विचरण करने की प्रवृत्ति ने भी उनके काव्य में बिंबधर्मिता का समावेश किया है। विजयेंद्र स्नातक शमशेर के काव्य में एक बिंबालोक को पहचानते हैं और कहते हैं, “चित्रकला के प्रति प्रेम होने के कारण उन्होंने अपनी कविताओं में भी चित्रात्मक बिंब प्रस्तुत किए हैं।...... उनकी काव्यानुभूति बिंब की नहीं, बिंबालोक की है।” (हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 357-58)। उनकी ‘किरण रेखा तिलक’ कविता में प्रस्तुत एक बिंब देखा जा सकता है-

किरण रेखा
तिलक;
रश्मि बादल
बाल
सजे घन।
श्वास में है
एक स्वर्णिम जाल।
स्वप्न-
अल्कापुरी। (चुका भी हूँ नहीं मैं, पृ. 27)

बोध प्रश्न

- शमशेर की कविताओं में बिंबधर्मिता का समावेश कैसे हुआ?
- शमशेर कविता की रचना को क्या मानते थे?

रंजना अरगड़े ने शमशेर के काव्य में प्राप्त बिंबों को उनके काव्य के सौंदर्य से जोड़ कर देखा है। वे कहती हैं, "बिंबों का जो संसार उनकी रचनाओं में प्रकट हुआ है, उससे उनकी कविताओं का सौंदर्य व्यक्त होता है। उनके रचना-संसार में शाम, समुद्र, दिवस, सूर्य, आकाश, क्षितिज, नदी, धूप, लहरें, किरणें, बादल इत्यादि बिंबात्मक अभिव्यक्ति पाते हैं।" (कवियों का कवि शमशेर, पृ. 47)।

शमशेर की 'सौंदर्य', 'गोया वो,' 'हवा सी एकदम पतली', 'सूना पथ है उदास झरना', 'टूटी हुई बिखरी हुई', 'नील शिखर पर', 'शाम की मटमैली खपरैल' आदि अनेक कविताएँ उनके काव्य पर प्रतीकवाद के प्रभाव को सूचित करती हैं। उनकी कविताओं के अधिकांश प्रतीक प्रकृति से ग्रहण किए गए हैं, किंतु वे सामान्य दैनंदिन जीवन को भी प्रतीक चुनने के स्रोत के रूप में महत्व देते हैं। प्रतीकों के प्रयोग के संदर्भ में शमशेर के काव्य की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वे व्यक्ति और समाज के सत्य को पहले अपने मानसिक परिवेश का हिस्सा बनाते हैं, उसके बाद प्रतीकों में जो कविता प्रकट होती है, वह कवि के निजी मनोजगत की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति लगने लगती है। उन्होंने स्वयं कहा है- "मैं सदा ही अपने मानसिक परिवेश को चित्रित करता रहा हूँ। परिवेश के साथ-साथ उसके माहौल को भी 'अपने पास' 'इतने पास अपने' खींचता रहा हूँ कि मेरा अंदरूनी व्यक्तित्व, अंदरूनी कवि और चित्रकार, अपने अक्स को उसमें उतरने से बाज नहीं रख सके।" (काल, तुझसे होड़ है मेरी (सीधी सी बात है) , पृ. 8)।

इन सब विशेषताओं के बावजूद शमशेर के काव्य में रोमानियत का रंग कभी फीका नहीं पड़ा। वह उनके काव्य-परिवर्तन के प्रत्येक मोड़ पर उनके साथ रही। स्वयं शमशेर ने माना है, कि "मेरी असली जमीन तो रोमानी थी, रोमानी ही बनी रही.....।" (उदिता अभिव्यक्ति का संघर्ष)।

बोध प्रश्न

- प्रतीकों के संदर्भ में शमशेर के काव्य की क्या विशेषता है?

23.3.6 काव्य-भाषा और शिल्प

शमशेर की काव्य-भाषा को दुरूह और अपारदर्शी कहा गया है। बच्चन सिंह के शब्दों में,

“भाषा कुछ अधिक अपारदर्शी है। अत: उनकी रचना अन्यों की तुलना में संप्रेषण की समस्याएँ अधिक खड़ी करती है।” (हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, पृ. 435)। शमशेर की भाषा पर उर्दू-फारसी की काव्य-भाषा परंपरा के साथ ही संगीत और चित्रकला में उनकी गहन रुचि का विशेष प्रभाव है, इस कारण वे ध्वन्यात्मक और अक्सर पेंटिंग के रंगों जैसी शब्दावली का विशेष प्रयोग काते हैं। उनके बिंब भी एक-एक कर न होकर परस्पर अत्यधिक गुँथे हुए होते हैं। इस कारण भी उनकी भाषा में अर्थ की पकड़ में थोड़ी परेशानी होती है, लेकिन यदि पाठक उनकी मन: स्थिति से निकटता स्थापित कर ले, तो फिर शमशेर की काव्य-भाषा आनंद देने लगती है। जहाँ तक शिल्प का प्रश्न है, शमशेर ने मुक्त छंद के रचना-शिल्प के साथ ग़ज़ल, रुबाई, सॉनेट आदि के शिल्प में कविताएँ रची हैं। विशेष बात यह, कि उनके काव्य-शिल्प में कॉमा, डैश और शब्दों की वर्तनी के बीच भी खाली स्थान देकर विशेष-विशेष अर्थों को प्रकट करने का महत्व है। उदाहरण के लिए उनकी ‘मणिपुरी काव्य साहित्य की एक विहंगम नन्हीं-सी झाँकी’ कविता का एक अंश देखा जा सकता है-

आज तक
‘नौङ् – दा   लाइरेन’
आज   तक
‘पा   ख ङ् – बा’
की याद
मणिपुरियों के
मन – मस्तिष्क में
हरी है
आज तक ।

(काल तुझसे होड़ है मेरी, पृ. 87)

शमशेर ने काव्य-शिल्प के नए-नए प्रयोग किए हैं और वे कभी किसी शिल्प या फॉर्मेट में बंधे नहीं हैं। वे कहते थे, “मेरे कवि ने कभी किसी ‘फार्म’, शैली या विषय का सीमा बंधन स्वीकार नहीं किया।” (कुछ और कविताएँ)।

बोध प्रश्न

- शमशेर की काव्य-भाषा के संबंध में दो विशेष बातें बताइए।

23.3.7 छायावादोत्तर हिंदी कविता में शमशेर का महत्व

छायावादोत्तर हिंदी कविता के क्षेत्र में आर्थिक और सामाजिक चेतना की दृष्टि से प्रगतिवादी कविता का आंदोलन प्रारंभ हुआ, तो आधुनिकतावादी चेतना की दृष्टि से प्रयोगवाद और नई कविता आंदोलन प्रचलित हुए। शमशेर इस संपूर्ण परिवर्तन में उपस्थित रहे। विशेष रूप से उनका अवदान नई कविता को अनेक ऐसी विशेषताओं से संपन्न बनाने में रहा, जो उन्हें कवियों की पंक्ति में विशिष्ट बनाती हैं। शमशेर और उनके समानधर्मा कवियों का मूल्यांकन करते हुए नामवर सिंह ने कहा है- "शमशेर, अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, भवानी प्रसाद मिश्र और त्रिलोचन में एक दूसरे से भिन्न अपनी स्वतंत्र विशेषताएँ ऐसी हैं, जो नई कविता के छंद, संगीत, शब्द-योजना, प्रतीक-विधान तथा कथन-भंगिमा के विविध पक्षों में कुछ न कुछ नई चीज़ें जोड़ती हैं।" (इतिहास और आलोचना, पृ. 56)। निस्संदेह, शमशेर छायावादोत्तर हिंदी कविता के विशिष्ट कवि हैं।

बोध प्रश्न

- किस दृष्टि से शमशेर को छायावादोत्तर हिंदी कविता के विशिष्ट कवि कह सकते हैं?

23.4 पाठ सार

सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और साहित्यिक परिस्थितियों तथा आधुनिक-चेतना के जीवन व समाज पर पड़ने वाले प्रभाव के परिणामस्वरूप हिंदी की छायावादोत्तर कविता में अनेक परिवर्तन देखने को मिले। इनमें प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता नामक काव्यांदोलनों का ऐतिहासिक महत्व है। ध्यान देने योग्य है कि मार्क्सवादी विचारधारा ने प्रगतिवादी आंदोलन को जन्म दिया था, जिसने आर्थिक व सामाजिक शोषण का विरोध किया और क्रांतिकारी सामाजिक-चेतना को कविता का विषय बनाया। सन् 1943 में अज्ञेय के संपादन में प्रकाशित 'तारसप्तक' से प्रयोगवाद का प्रारंभ माना जाता है, जिसने व्यक्ति चेतना की उन्मुक्त अभिव्यक्ति के लिए नवीन राहों की तलाश की। प्रयोगवाद की ही परिणति नई कविता आंदोलन के रूप में हुई, जिसने आधुनिकतावादी मूल्यों पर केंद्रित अनुभवों एवं व्यक्ति-स्वातंत्र्य को अभिव्यक्ति का विषय बनाया। शमशेर बहादुर सिंह, अज्ञेय, मुक्तिबोध, त्रिलोचन, गिरिजा कुमार माथुर, भवानी प्रसाद मिश्र, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती आदि ने छायावादोत्तर कविता, विशेष रूप से नई कविता के मान-मूल्यों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शमशेर (1911-1993) अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' में संग्रहीत हैं और उसी में

उनकी कविताएँ पहली बार पुस्तकाकार प्रकाशित हुईं। उसके पश्चात उनके 'कुछ कविताएँ', 'कुछ और कविताएँ', 'चुका भी हूँ नहीं मैं', 'इतने पास अपने', 'उदिता अभिव्यक्ति का संघर्ष', 'बात बोलेगी', 'टूटी हुई बिखरी हुई' और 'काल तुझसे होड़ है मेरी' काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए। 'चुका भी हूँ नहीं मैं' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। शमशेर को बचपन में उनके पिता जी रामायण सुनाते थे, उनके नाना फारसी के विद्वान थे, उनकी माँ सांस्कृतिक चेतना युक्त थीं और उनके मामा चित्रकार थे- इन सभी का प्रभाव उनके भीतर काव्य-संस्कार जगाने वाला सिद्ध हुआ। आगे चल कर उन पर इकबाल और निराला जैसे कवियों का विशेष प्रभाव पड़ा। शमशेर ने उर्दू में काव्य-रचना प्रारंभ की थी। बाद में वे हिंदी में आए। उनके काव्य की मूल प्रकृति रोमानी है और उसमें मार्क्सवादी विचारधारा तथा सुररियलिज्म, प्रतीकवाद, बिंबवाद आदि का प्रभाव देखा जा सकता है। संगीत और चित्रकला के प्रभाव के कारण उनके काव्य में संगीतात्मक तथा पेंटिंग जैसी बिंबधर्मी शब्दावली मिलती है। शमशेर ने काव्य-शिल्प के अनेक प्रयोग किए हैं, लेकिन वे कभी किसी फार्मेट में बंध कर नहीं रहे। कथ्य और शिल्प, दोनों ही दृष्टियों से शमशेर ने नई कविता को विशेष रूप से समृद्ध बनाया।

23.5 पाठ की उपलब्धियाँ

नई कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर शमशेर बहादुर सिंह पर केंद्रित इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. शमशेर का व्यक्तित्व अंतर्मुखी प्रवृत्तियों से निर्मित था।
2. वे प्रेम, प्रकृति और रोमानियत को महत्व देने वाले कवि थे।
3. वे स्वाधीनता को जीवन के लिए अनिवार्य मानते थे। इसीलिए उन्होंने कभी सरकारी नौकरी नहीं की।
4. शमशेर साहित्य और कला को एक-दूसरे का पूरक मानते थे।
5. भावनाओं की सच्चाई शमशेर के काव्य की मूल विशेषता है।
6. स्वभाव, विचारधारा, कला-दर्शन और सामाजिक बोध की विविधता के कारण शमशेर के काव्य में रोमान और यथार्थ का द्वंद्व दिखाई देता है।
7. शमशेर की कुछ कविताओं पर अति यथार्थवाद का प्रभाव भी दिखाई देता है।

23.6 शब्द संपदा

काव्यशास्त्रीय एवं आलोचना की शब्दावली

1. कथ्य = जो कहा गया हो, किसी रचना में कही या चित्रित की गई मूल बातें।
2. काव्य-शिल्प = छंद, अलंकार, रचना-पद्धति, निर्धारित नियम-अनुशासन आदि (रचने के) उपकरणों का वह व्यवस्थित रूप, जिनसे काव्य का बाह्य स्वरूप निर्धारित होता है।
3. कृतित्व = किया गया कार्य, लेखक द्वारा रचा गया साहित्य, लेखक की रचनाएँ।
4. कोरस = नाटक के प्रारंभ में अभिनेताओं का एक दल ऐसा सह-गान करता है, जिसमें उस नाटक के कथ्य के पीछे छिपी मूल भावना होती है। इसका प्रयोग नाटक के अन्य अंकों में भी किया जाता है- इसी सह-गान या दगान को कोरस कहते हैं। गायक-दल को भी कोरस ही कहा जाता है।
5. ग़ज़ल = शाब्दिक अर्थ, 'प्रेमिका से वार्तालाप'। एक काव्य-विधा, जिसे मूलत: फारसी काव्य में प्रयोग किया गया, वहाँ से वह उर्दू और हिंदी में आई। इसमें दो-दो चरणों की इकाइयाँ होती हैं, जिन्हें 'शेर' कहा जाता है। पाँच से ग्यारह शेरों से ग़ज़ल बनती है, प्रत्येक शेर में स्वतंत्र भाव होता है। ग़ज़ल का पहला शेर 'मत्ला', जबकि अंतिम शेर 'मक्ता' (इसमें शायर का नाम होता है) कहलाता है।
6. छायावाद = हिंदी में पहले विश्वयुद्ध से दूसरे विश्वयुद्ध के बीच के काल में प्रचलित एक काव्य-आंदोलन, जिसके कवि अदृश्य रहस्यमयी-सत्ता को उसी प्रकार अनुभव करते थे, जैसे मोती में छाया का साक्षात्कार किया जाता है। छायावादी काव्य में भावना, कल्पना, प्रेम, प्रकृति आदि रोमानी काव्य-मूल्यों तथा सांस्कृतिक-चेतना व मानव-स्वाधीनता का प्रभाव महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 'छायावाद' नामकरण का श्रेय मुकुटधर पांडेय को दिया जाता है।
7. नख-शिख = नख (नाखून) से शिख (शिखा) तक। किंतु यह साहित्य में नायक-नायिका के सौंदर्य-वर्णन की एक पद्धति है, जिसमें कवि संपूर्ण दैहिक-सौंदर्य का चित्रण या वर्णन करता है।

8. प्रगतिवाद = हिंदी की छायावादोत्तर कविता में प्रचलित एक आंदोलन, जिसका आधार मार्क्सवादी विचारधारा है। यह वर्ग-संघर्ष की अवधारणा को मानता है और शोषक तथा शोषित के संघर्ष में शोषित वर्ग के प्रति सक्रिय सहानुभूति रखता है। आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक शोषण का विरोध, साम्राज्यवाद का विरोध, रूढ़ियों का विरोध, जनभाषा का प्रयोग और साम्यवादी समाज की स्थापना के लिए साहित्य की रचना प्रगतिवाद की प्रमुख विशेषताएँ हैं। ' प्रगतिवादी आंदोलन' को 'प्रगतिशील आंदोलन' भी कहा गया है।

9. प्रतीकवाद = सन् 1850 से 1880 के बीच फ्रांस में प्रचलित एक काव्यांदोलन, जिसके उन्नायकों में मलार्मे, चार्ल्स बोदलेयर, एडहर एलन पो आदि का नाम लिया जाता है। प्रतीकवाद अनुभूति के प्रत्येक क्षण को अप्रतिम मानता है और सामान्य भाषा के बदले कविता में ऐसी भाषा का प्रयोग करता है, जो प्रतीक बहुल होती है। वह प्रत्यक्ष रूप से जो प्रस्तुत करती है, उसका उद्देश्य उसे प्रकट करना होता है, जो पाठक के सामने नहीं, बल्कि अप्रत्यक्ष होता है। प्रतीकवादी इसे 'विशिष्ट भाषा' कहते हैं।

10.प्रस्तावना = मूल कथ्य को सामने लाने के पूर्व उसकी प्रृष्ठभूमि बताना, कहना या लिखना। नाटक की प्रस्तुति के पूर्व नट-नटी द्वारा उस नाटक के बारे में अभिनय पूर्वक सूचित करना।

11.बिंबवाद = बिंबवाद पश्चिमी साहित्य में सन् 1912 के काल में उभरा ऐसा आंदोलन है, जो मानता है कि अंत:करण की अनुभूतियों को संप्रेषित करने के लिए कविता में ऐंद्रिय संवेदन अनिवार्य हैं। यह तभी संभव है, जब कवि अभिव्यक्ति के लिए बिंब को सर्वोच्च महत्व प्रदान करे। बिंब को अभिव्यक्ति का सर्वोच्च और अनिवार्य तत्व मानने के कारण ही इसे बिंबवाद कहा गया। इस आंदोलन में एजरा पाउंड द्वारा संपादित 'सम इमेजिस्ट पोयट्स' काव्य-संग्रह का ऐतिहासिक स्थान है।

12.मार्क्सवाद = यह कार्ल मार्क्स के विचारों पर आधारित है, जिसकी पृष्ठभूमि में

'इतिहास की भौतिक व्याख्या' और 'द्वंद्वात्मक भौतिकवाद' की अवधारणा मुख्य है। मार्क्स मानते थे कि मनुष्य आदिम साम्यवाद, दास-युग, सामंतवादी व्यवस्था से निकल कर पूँजीवादी व्यवस्था में आ चुका है। इसमें वर्ग-संघर्ष चल रहा है, जिसके भीतर से समाजवाद आएगा और तब साम्यवाद का आगमन होगा। साम्यवाद में राजनैतिक व्यवस्था ध्वस्त हो जाएगी, किसी प्रकार का शोषण नहीं होगा और उत्पादन के साधनों पर सभी का समान अधिकार होगा। साहित्य की रचना इसी को लक्ष्य मान कर की जानी चाहिए।

13.मुखपृष्ठ = किसी पत्रिका अथवा पुस्तक के सबसे ऊपर वाले पृष्ठ (जिल्द-पृष्ठ) को उसका मुखपृष्ठ कहा जाता है। इसे कवर-पेज भी कहते हैं।

14.मूल्यांकन = किसी स्थिति, विचार, व्यक्ति या वस्तु का मूल्य आँकना। साहित्य में किसी रचना का महत्व एक निर्धारित कसौटी पर उसके गुणों और कमियों को कसने के बाद ही स्थिर किया जा सकता है।

15.रुबाई = फारसी और उसके बाद उर्दू कविता में प्रयुक्त चार चरणों वाला एक छंद विशेष, जिसमें एक तगण, एक यगण, एक सगण और एक मगण का प्रयोग किया जाता है। रुबाई में सानुप्रासिकता होती है।

16.रोमानियत = रोमानियत का संबंध पश्चिम के स्वच्छंदतावादी आंदोलन 'रोमांटसिज्म' से है। उसी की विशेषताओं से निर्मित प्रवृत्ति को रोमानियत माना जाता है। इन विशेषताओं में आत्मनिष्ठता, स्वच्छंद कल्पना, प्रकृति को सचेतन सत्ता स्वीकार करके उसके माध्यम से भावनाओं को व्यक्त करना, उन्मुक्त प्रेम, रूढ़ मान्यताओं का विरोध, भाषा के लोकोन्मुखी रूप को मान्यता आदि हैं।

17.संपादक = किसी कार्य को संपन्न करने वाला, किसी पत्रिका अथवा अन्य लेखकों की रचनाओं को पुस्तकाकार प्रकाशित करने की योजना को अंतिम रूप देने वाला।

18.संप्रेषण = सामान्य अर्थ है, भेजना या अपनी बात दूसरे तक पहुँचाना। काव्य में ऐसा गुण होना आवश्यक है, जिससे उसका कथ्य पाठक या श्रोता तक

सहजता से पहुँच सके। इस गुण को संप्रेषणीयता का गुण कहा जाता है। आलोचना में एक 'संप्रेषण सिद्धांत' भी है।

19.सार = किसी रचना के कथ्य की मूल बातें।

20.सुररियलिज्म = प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात फ्रांस में कला और साहित्य में विकसित 'सुररियलिज्म' को 'अतियथार्थवाद' नाम दिया गया है। सन् 1924 में आंद्रे ब्रेतों ने इसका घोषणापत्र जारी किया था। अतियथार्थवाद की मान्यता है कि चेतन की अपेक्षा अवचेतन मन (व्यक्ति के बाह्य संसार की अपेक्षा आंतरिक संसार) में उसके यथार्थ का बड़ा भाग छिपा रहता है, अंत: कला और साहित्य में उसी की खोज करके अभिव्यक्ति की जानी चाहिए। अतियथार्थवादी लेखन को 'स्वत: प्रेरित लेखन' अथवा 'स्वत: चालित लेखन' कहा जाता है।

21.सॉनेट = इतालवी कविता में प्रयुक्त एक रचना-पद्धति। सॉनेट में चौदह चरण होते हैं, जिनमें विशेष कथ्य का फैलाव रहता है। अंत की ओर बढ़ते हुए कुछ चरणों में या तो कथ्य के विरोधी विचार होते हैं या उसका समाहार दिया जाता है।

सामान्य शब्दावली

1. अंतर्मुखी = बाहर की अपेक्षा अपने ही भीतर डूबे रहने का स्वभाव
2. अकिंचन = जिसके पास कुछ न हो, निर्धन।
3. अपारदर्शी = जिसके आर-पार न देखा जा सके।
4. अवचेतन = आंशिक चेतना युक्त, मन के तीन भागों में से एक, जिसे मनोविज्ञान में 'सबकांशस' कहा जाता है।
5. आभ्यंतर = अंतरमन का, भीतरी।
6. उद्देश्य = लक्ष्य; वह, जिसे हम पाना या करना चाहते हैं।
7. कलाविद = कला का ज्ञान रखने वाला।
8. गोया = मानो, जैसे कि। गोया कि।
9. चेतना = ज्ञानात्मक जाग्रति या मनोवृत्ति, अनुभव करने या जागने की दशा या शक्ति।

10.तरफें = तरफ का बहुवचन। तरफ अर्थात ओर, पक्ष, दिशा।

11.दैनंदिन = प्रति दिन का, रोजाना का, नित्यप्रति संबंधी।

12.द्वंद्व = दो परस्पर विरोधी व्यक्तियों या पक्षों या स्थितियों या भावों या वस्तुओं के बीच तनाव, खिंचाव, संघर्ष, युद्ध। मल्लयुद्ध या कुश्ती।

13.परिणति = रूपांतरित होना, परिवर्तित हो जाना।

14.प्रवृत्ति = वह विशेषता, जिससे स्वभाव का निर्माण होता है, आसक्ति, झुकाव।

15.प्रेरणा = कार्य करने का उत्साह देना, कार्य में लगने की इच्छा को जगाना।

16.महारत = निपुणता, कौशल।

17.मानिंद = समान, तुल्य।

18.मुद्रण = छपाई का कार्य, किसी वस्तु पर स्याही से कोई अक्षर या आकृति अंकित करना।

19.युगांतर = युग बदलना, दूसरा युग आना।

20.वियोग = अलग होना, विच्छेद, मिलन का अभाव।

21.विहंगम = किसी संपूर्ण दृश्य, स्थिति या वस्तु का सामान्य रूप। जब दृश्य, स्थिति या वस्तु को उड़ते हुए विहग (पक्षी) के समान देखा जाता है, तो उसे विहंगम दृष्टि कहते हैं।

22.वैकल्पिक = वे वस्तुएँ या विचार, जिनमें से किसी को अपनी इच्छानुसार चुनने का विकल्प या सुविधा हो।

23.व्यक्तित्व = विशेष प्रवृत्तियों, गुणों, विचारों आदि से मिल कर बनी किसी व्यक्ति की स्वतंत्र सत्ता, जो उसे अन्य से भिन्न सिद्ध करती है।

24.संपदा = धन, ऐश्वर्य, वैभव आदि।

25.संयोग = मिलन, मिलना, जुड़ना। अकस्मात कुछ होने या घट जाने की स्थिति।

26.संस्कार = परिष्कार, सुधार। वे विशेषताएँ, जो सामाजिक अर्थ में व्यक्ति के व्यवहार को और साहियिक अर्थ में कवि-कर्म को निर्धारित करती हैं।

27.स्वातंत्र्य = स्वतंत्रता।

23.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. शमशेर के काव्य की कथ्यगत विशेषताएँ लिखिए।
2. शमशेर के कृतित्व का परिचय दीजिए।
3. शमशेर के काव्य पर विचारधाराओं और कला-मान्यताओं के प्रभाव का मूल्यांकन कीजिए।
4. 'छायावादोत्तर हिंदी कविता के विशिष्ट कवि शमशेर' विषय पर एक लेख लिखिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. शमशेर की काव्य-प्रेरणा पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. छायावादोत्तर कविता में शमशेर के महत्व का मूल्यांकन कीजिए।
3. 'बिंबवाद और शमशेर की कविता' विषय पर विचार कीजिए।
4. शमशेर के काव्य-शिल्प का परिचय दीजिए।
5. शमशेर के मार्क्सवाद से प्रभावित काव्य की विशेषताएँ लिखिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. शमशेर के अनुसार जीवन को देखने का माध्यम क्या है? ( )

   (अ) कला (आ) कविता (इ) संगीत (ई) प्रेरणा

2. शमशेर को किस काव्य संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया था? ( )

   (अ) कुछ कविताएँ (आ) कुछ और कविताएँ

   (इ) चुका भी नहीं मैं (ई) काल तुझसे होड़ है मेरे

3. इसमें एक शमशेर की राष्ट्रीय चेतना प्रधान कविता नहीं है। ( )

   (अ) भारत की आरती (आ) सत्यमेव जयते

   (इ) नील शिखर पर (ई) मैं भारत गुण गौरव गाता

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. शमशेर की काव्य-भाषा को दुरूह और.... कहा गया है।
2. .... कहने में शमशेर को महारत हासिल थी।
3. .... की ही परिणति 'नई कविता' के रूप में सामने आई।
4. शमशेर प्रेम, प्रकृति और.... को सर्वाधिक महत्व देते थे।

III. सुमेल कीजिए -

1. दूसरा सप्तक	(अ) 1988
2. बात बोलेगी	(आ) 1961
3. काल तुझसे होड़ है मेरी	(इ) 1981
4. कुछ और कविताएँ	(ई) 1943

23.8 पठनीय पुस्तकें

1. कवियों का कवि शमशेर : रंजना अरगड़े
2. इतिहास और आलोचना : नामवर सिंह
3. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह
4. हिंदी साहित्य का इतिहास : विजयेंद्र स्नातक

इकाई 24 : बात बोलेगी

रूपरेखा

24.1 प्रस्तावना

24.2 उद्देश्य

24.3 मूल पाठ : बात बोलेगी

24.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

24.3.2 अध्येय कविता

24.3.3 विस्तृत व्याख्या

24.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

24.4 पाठ सार

24.5 पाठ की उपलब्धियाँ

24.6 शब्द संपदा

24.7 परीक्षार्थ प्रश्न

24.8 पठनीय पुस्तकें

24.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! प्रगतिवादी आंदोलन से प्रभावित होने वाले कवियों में शमशेर बहादुर सिंह का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने शिवदान सिंह चौहान और अमृत राय के संपर्क में आकर मार्क्सवाद का परिचय प्राप्त किया था। शमशेर का स्वभाव अंतर्मुखी था और वे मूलत: रोमानी काव्य-प्रकृति वाले कवि थे। इस कारण वे जल्दी ही 'प्रयोगवाद' और उससे आगे 'नई कविता' आंदोलन की ओर बढ़ गए। इसके बावजूद, उनके विचारों में मार्क्सवाद हमेशा बना रहा और वे मनुष्य की मुक्ति के लिए संघर्ष का समर्थन करते रहे। शमशेर ने प्रगतिवाद से जुड़ाव के काल में अनेक श्रेष्ठ प्रगतिवादी कविताएँ भी रचीं। इनमें उनकी बात बोलेगी, अम्न का राग, त्रिलोचन को, 'य' शाम, वाम वाम वाम दिशा आदि की गणना की जा सकती है। इन कविताओं के बिना प्रगतिवाद का इतिहास पूरा नहीं होता।

24.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- बात बोलेगी कविता के कथ्य की व्याख्या से परिचित हो सकेंगे।
- इस कविता के विचारधारागत तथा ऐतिहासिक महत्व को जान सकेंगे।
- इस कविता के काव्य-शिल्प का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- श्रमिक और अभावग्रस्त जनता की मुक्ति में एकता की भूमिका पहचान सकेंगे।
- शमशेर की काव्य-यात्रा के एक चरण की जानकारी उपलब्ध कर सकेंगे।

24.3 मूल पाठ : बात बोलेगी

24.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

'बात बोलेगी' शमशेर की सबसे महत्वपूर्ण प्रगतिवादी कविता मानी जाती है। यह पहली बार सन् 1951 में अज्ञेय के संपादन में 'दूसरा सप्तक' शीर्षक संग्रह में प्रकाशित हुई। उसके बाद इसे शमशेर के 1961 में प्रकाशित 'कुछ और कविताएँ' संग्रह में स्थान दिया गया। 'बात बोलेगी' मार्क्सवादी विचारधारा के आलोक में श्रमिकों की यथार्थ दशा का चित्रण तो करती ही है, इससे आगे इस कविता का मूल कथ्य उनकी शोषण-मुक्ति का आह्वान है। न केवल श्रमिक, बल्कि निर्धनता और अभावों से घिरी आम जनता की मुक्ति का स्वर भी इस कविता में है। इस प्रकार, 'बात बोलेगी' कविता का रचना-कैनवस प्रगतिवादी कविता के रचना-कैनवस का विस्तार करता है।

24.3. 2 अध्येय कविता

बात बोलेगी,
        हम नहीं।
भेद खोलेगी
        बात ही।

सत्य का मुख
        झूठ की आँखें
        क्या देखें!

सत्य का रुख
        समय का रुख है :

अभय जनता को
सत्य ही सुख है,
सत्य ही सुख।

दैन्य दानव; काल
भीषण; क्रूर
स्थिति; कंगाल
बुद्धि; घर मजूर।

सत्य का
क्या रंग? ---
पूछो
एक संग।
एक---जनता का
दुख एक।
हवा में उड़ती पताकाएँ
अनेक।
दैन्य दानव। क्रूर स्थिति।
कंगाल बुद्धि : मजूर घर भर।
एक जनता का--- अमर वर :
एकता का स्वर।
--- अन्यथा स्वातंत्र्य-इति।

निर्देश : 1. इस कविता का सस्वर वाचन कीजिए। 2. इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

24.3.3 विस्तृत व्याख्या

बात बोलेगी,
हम नहीं।

भेद खोलेगी

बात ही।

शब्दार्थ : बात = कहने के भीतर छिपा हुआ कथ्य या मंतव्य। बोलना = कहना, व्यक्त करना, प्रकट करना, प्रतीकात्मक अर्थ - भाषा, वाणी। भेद = रहस्य, छिपा हुआ मंतव्य। खोलना = स्पष्ट प्रकट करना, सामने लाना, परदा हटा देना ।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश कवि शमशेर की 'बात बोलेगी' कविता से लिया गया है। यह कविता सन् 1945 में रची गई थी।

प्रसंग : इन पंक्तियों में तत्कालीन मिल मालिकों के साथ ही उस काल की शासन-सत्ता के दमन और शोषण का शिकार श्रमिकों की मन:स्थिति और उनके निश्चय को प्रकट किया गया है।

व्याख्या : उन्नीस-सौ पैंतालीस के काल में श्रमिक तत्कालीन पूँजीवादी एवं सामंती व्यवस्था और शासन में अपने न्यूनतम अधिकारों से भी वंचित थे। उन्हें इस प्रकार अभावग्रस्त बना कर छोड़ दिया गया था कि वे अपनी स्थिति का बयान करने योग्य भी नहीं रह गए थे। लेकिन एक सीमा के बाद श्रमिक अपनी वाणी में से डर-भय को निकाल फेंकने का निश्चय करते हैं। वे ऐसी वाणी का प्रयोग करना चाहते हैं, जिसमें निर्भय होकर उनकी स्थिति प्रकट करने और शोषकों की आँखों में आँखें डाल कर उनके अधिकारों का दावा करने की शक्ति हो। वे कहते हैं कि अब असहाय-निरुपाय श्रमिकों की निर्भय वाणी ही उनकी यथार्थ जीवन-दशाओं को भी बेलाग ढंग से प्रस्तुत करेगी और वही उनकी प्रतिनिधि बन कर उनके लिए संघर्ष भी करेगी।

काव्यगत विशेषताएँ :

1. श्रमिकों के जीवन-यथार्थ के साथ ही उनके भीतर छिपी जिजीविषा का संकेत भी किया गया है।
2. बात और भेद शब्दों का प्रतीकात्मक प्रयोग किया गया है।
3. 'बात बोलेगी' में मानवीकरण अलंकार है।
4. लक्षणा शब्दशक्ति का प्रयोग है।
5. काव्य-भाषा में मित-कथन, सपाटबयानी और जीवंतता है।

बोध प्रश्न

- व्याख्येय पंक्तियाँ किस कविता से संबंध रखती हैं?
- श्रमिकों की दशा कैसी थी?

- श्रमिकों ने क्या निश्चय किया?
- श्रमिकों की वाणी क्या करेगी?

सत्य का मुख
झूठ की आँखें
क्या देखें!

सत्य का रुख
समय का रुख है :
अभय जनता को
सत्य ही सुख है,
सत्य ही सुख।

शब्दार्थ : सत्य = जो किसी भी संदेह के परे वास्तविक है। झूठ = जो असंदिग्ध रूप से वास्तविक न हो, मायावी हो। रुख = पक्ष, गति-दिशा। समय = काल, दशाएँ। अभय = डर न होना, जिसने अपने भय को जीत लिया हो।

संदर्भ : व्याख्या हेतु प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध छायावादोत्तर कवि, शमशेर द्वारा रचित 'बात बोलेगी' कविता से ली गई हैं। इस कविता की रचना सन् 1945 में हुई थी।

प्रसंग : प्रस्तुत अंश की पहली तीन पंक्तियों में श्रमिकों की स्वयं अपने से ही की गई जिज्ञासा है, उसके बाद निर्भय श्रमिक और जनता के लिए सत्य की महत्ता को स्थापित किया गया है।

व्याख्या : दमन और शोषण की चक्की में पिसते रहने के बावजूद अपने भीतर मुक्ति की भावना और साहस का संचार करने वाले श्रमिक अपने से ही जिज्ञासा करते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए! वे क्या देखें, किसे महत्व दें! अपने जीवन-सत्य, अपनी वास्तविक दशा पर ध्यान दें अथवा आश्वासनों और घोषणाओं की आड़ में जो झूठ उनके सामने परोस दिया गया है, उसे देखें! संदेह के परे अपनी वास्तविकता पर भरोसा करें या असत्य पर विश्वास करें!

यह श्रमिक-जीवन की भयावह समस्या है। इस समस्या के समाधान में ही उनकी जीवन-स्थियों के बदलने की संभावना और मुक्ति छिपी हुई है। इस जिज्ञासा का रहस्य समझ में आते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि सत्य का रूप और पक्ष ही अपने समय का असली रूप और पक्ष होता

है। झूठ का रूप मायावी होता है, उसकी आँखों में असत्य चकाचौंध रहती है, अंत: वह भ्रम के संसार में ले जाकर धोखे से मार डालता है। पूँजीवाद श्रमिकों और साधारण जनता के साथ यही कर रहा है। इसीलिए जो श्रमिक निर्भय हो चुके हैं, जो जनता अपने भीतर के संशय को निकाल चुकी है, उसके लिए सत्य ही सुख का स्रोत है। उसे सत्य को, अपने काल की सच्चाई को ही देखने का साहस जुटाना चाहिए और सत्य पर ही विश्वास करके अपने सुख-संतोष के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

काव्यगत विशेषताएँ :

1. श्रमिकों और सामान्य जनता की मन: स्थिति का द्वंद्व दर्शाया गया है।
2. सत्य और असत्य पर विचार करके सत्य और काल की वास्तविकता का महत्व दर्शाया गया है।
3. अपने भीतर के भय से मुक्ति पाने वाली जनता का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, इसी में श्रमिक-जनता का लक्ष्य भी छिपा है।
4. अंतिम पंक्तियों में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
5. लक्षणा शब्दशक्ति का प्रयोग है।

बोध प्रश्न

- झूठ की आँखों में क्या रहता है?
- सत्य के रुख को कवि ने कैसा बताया है?
- अभय जनता का सुख किसमें है?
- झूठ कैसे मार डालता है?

दैन्य दानव; काल
भीषण; क्रूर
स्थिति; कंगाल
बुद्धि; घर मजूर

शब्दार्थ : दैन्य = दीनता, निर्धनता, अशक्त हो जाने पर आने वाली आत्महीनता का भाव। दानव= मनुष्येतर प्राणियों के रूप में कल्पित प्राणी, जो निर्दयी, कठोर, अन्यायी, हिंसक और डरावना होता है। भीषण = भयानक, डरावना। क्रूर = निर्दयी, कठोर व्यवहार करने वाला। कंगाल = निर्धन, जिसके पास कुछ भी न रहा हो। बुद्धि = सही और गलत तथा सत्य और असत्य

का निर्णय करने वाली शक्ति, सचेत और ज्ञानवान बनाने वाली शक्ति। मजूर = मजदूर, श्रमिक।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश हिंदी के विशिष्ट कवि शमशेर की 'बात बोलेगी' कविता से उद्‌धृत किया गया है। यह कविता सन् 1945 में रची गई थी।

प्रसंग : ये पंक्तियाँ श्रमिक के जीवन की समस्याओं के साथ ही उसकी परिस्थितियों का सच्चा चित्र भी खींचती हैं।

व्याख्या : कवि ने श्रमिक की दशा का चित्रण करते हुए बताया है कि उसे निर्धनता के दानव ने अपने पंजे में दबा रखा है। जैसे दानव किसी को पकड़ कर कुचल देता है, उसी प्रकार अभाव श्रमिक के जीवन को पीसे डाल रहे हैं। श्रमिक का समय, उसकी दशा और उसे चारों ओर से घेर कर रखने वाली परिस्थितियाँ भयानक रूप धारण किए हुए हैं। वे क्रूर हैं, कठोर हैं, अन्यायी हैं, उसकी न्यूनतम आवश्यकताओं तक की पूर्ति में बाधक हैं।

एक ओर श्रमिक की ऐसी भयानक दशा है, दूसरी ओर उसकी बुद्धि में भी कुछ नहीं आ रहा है। चारों ओर से समस्याओं से घिरा होने के कारण उसकी बुद्धि, उसकी सोचने-समझने की, निर्णय करने की शक्ति सही रूप में कार्य नहीं कर रही है। जैसे उसकी आर्थिक दशा कंगाली का शिकार है, वैसे ही उसकी बुद्धि भी विचार-विवेक की दृष्टि से कंगाल हो गई है। वह कुछ सोच नहीं पा रहा है। ऊपर से समस्या यह है कि पूरा का पूरा परिवार ही मजूर है, संपूर्ण परिवार मजदूरी पर ही निर्भर है। यह कोढ़ में खाज जैसा है। श्रमिक की ऐसी अकल्पनीय रूप से भयानक दशा है।

काव्यगत विशेषताएँ :

1. श्रमिक जीवन और उसके परिवार का नग्न यथार्थ चित्रित हुआ है।
2. आर्थिक के साथ ही वैचारिक दशाओं को भी दर्शाया गया है।
3. 'दैन्य दानव' में रूपक अलंकार है।
4. 'मजूर' लौकिक भाषा के प्रति कवि की सजगता का प्रतीक है।
5. लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग किया गया है।

बोध प्रश्न

- दैन्य दानव श्रमिक के जीवन को कैसे प्रभावित कर रहा है?
- श्रमिक की बुद्धि क्यों काम नहीं कर रही है?
- श्रमिक की कैसी दशा है?

- श्रमिक की दशा को कोढ़ में खाज जैसा क्यों बताया गया है?

सत्य का
        क्या रंग? ---
पूछो
        एक संग।

एक---जनता का
        दुख : एक
हवा में उड़ती पताकाएँ
        अनेक।

शब्दार्थ : जनता = लोगों का वह समूह, जो किसी राजा द्वारा शासित न होकर लोकतांत्रिक अथवा ऐसी किसी राजनैतिक प्रणाली के अंतर्गत शासित होता है, जो व्यक्ति विशेष के अधिकार में नहीं होती। पताका = ध्वजा, झंडा ।

संदर्भ : व्याख्येय पंक्तियाँ 'बात बोलेगी' कविता से ली गई हैं। यह कविता सन् 1945 में हिंदी के प्रख्यात कवि, शमशेर द्वारा रची गई थी।

प्रसंग : इस काव्यांश में कवि ने अपने कथ्य का विस्तार किया है और श्रमिक-वर्ग के साथ साधारण जनता को जोड़ा है। वह इनसे एक होकर शोषकों के लिए चुनौती बन जाने का आह्वान करता है।

व्याख्या : कवि बहुत शक्तिशाली ढंग से श्रमिक-जनता का आह्वान करता है कि वह एक होकर, एक स्वर में आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक शोषण करने वालों के सामने सच के लिए सवाल खड़े करे। वह उनसे पूछे कि सत्य का क्या रंग है। जिन परिस्थितियों में शोषण हो रहा है, उनका वास्तविक रूप क्या है। शोषकों के इरादों का सच क्या है। वे श्रमिक-जनता को धोखा देकर, श्रमिकों के विरुद्ध बल का प्रयोग करके अपने स्वार्थ क्यों पूरे कर रहे हैं।

श्रमिक-वर्ग को और साधारण जनता को चाहे कितने खानों में, कितने वर्गों में, कितनी श्रेणियों में बाँट दिया जाए, उसके जीवन की चाहे कितनी ही विचारधाराओं के अनुसार अलग-अलग व्याख्या की जाए, लेकिन श्रमिकों और साधारण जनता का दुख एक है, एक समान है,

उसका रूप एक जैसा है, वास्तविक परेशानियाँ एक जैसी हैं। संपूर्ण श्रमिक-वर्ग और साधारण जनता का दुख है- उसकी निर्धनता, अधिकारहीनता, शोषण, स्वाभाविक जीवन जीने की सुविधाओं का अभाव, रहने, खाने और रोजगार के अवसरों का न होना। जनता की समस्या है, मानव के रूप में जीवन व्यतीत करने के लिए अनिवार्य अधिकारों का अभाव। यह आक्रोश का विषय है कि जीवन की सच्चाई के धरातल पर समान होते हुए भी, श्रमिक-वर्ग और साधारण जनता के जीवन-यथार्थ की व्याख्या करने वाली अनेक विचारधाराएँ आकाश में असंख्य पताकाओं की भाँति उड़ रही हैं। वे तरह-तरह से श्रमिकों और जनता को बाँट कर देख रही हैं, हर टुकड़े की अलग-अलग परिभाषा कर रही हैं। कवि के अनुसार शोषण और अभावों की मार झेलती इस समानधर्मा जनता को एक होकर, एक साथ, समवेत स्वर में शोषकों के समक्ष प्रश्न खड़े करने होंगे, ताकि शोषण का अंत हो सके।

काव्यगत विशेषताएँ :

1. कवि ने श्रमिक-वर्ग और साधारण जनता को संगठित होकर सत्य के लिए संघर्ष करने का आह्वान किया है।
2. 'एक---जनता का दुख एक', कह कर कवि ने समानधर्मा जनता को विभाजित करके अपने स्वार्थ पूरे करने वाली शोषक शक्तियों को चुनौती दी है।
3. 'पताका' जैसी प्रतीकात्मक शब्दावली का प्रयोग किया है।
4. लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग प्रभावशाली है।

बोध प्रश्न

- कवि किसे एक संग मिल कर पूछने को कह रहा है?
- 'सत्य का रंग' से कवि का क्या अभिप्राय है?
- हवा में कौन-सी पताकाएँ उड़ रही हैं?
- किसके दुख एक हैं और क्यों?

दैन्य दानव। क्रूर स्थिति।
कंगाल बुद्धि : मजूर घर भर।
एक जनता का--- अमर वर :
एकता का स्वर।
--- अन्यथा स्वातंत्र्य इति।

शब्दार्थ : अमर = जो मर न सके, जो मृत्यु के परे हो। वर = वरदान, देवता आदि को प्रसन्न करने के बाद प्राप्त फल या कृपा। स्वर = ध्वनि, आवाज। स्वातंत्र्य = स्वतंत्रता । इति = अंत होना, समाप्त हो जाना।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी के विशिष्ट कवि शमशेर द्वारा रचित 'बात बोलेगी' कविता से ली गई हैं। इसकी रचना सन् 1945 में की गई थी।

प्रसंग : इन पंक्तियों में कवि ने श्रमिक जीवन की त्रासदियों का चित्रण किया है तथा समस्त जनता के लिए एकता की आवश्यकता प्रतिपादित की है।

व्याख्या : कवि ने कहा है कि निर्धनता रूपी दानव श्रमिक के जीवन को कुचल कर नष्ट-भ्रष्ट कर रहा है। उसकी दशा बहुत कष्ट भरी और कठोर हो गई है। परिस्थितियाँ अति क्रूर हैं, उनमें शोषण और दमन के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, अत: श्रमिक का जीवन असहाय बन गया है। दैन्य-दानव और क्रूर स्थितियों ने मिल कर श्रमिक की बुद्धि को भी कंगाल बना दिया है। उसके विवेक और विचार करने की शक्ति को कुंद कर दिया है। श्रमिक का पूरा परिवार ही श्रम के बदले जीवन यापन करने को बाध्य है। यही कारण है कि श्रमिक के सामने शोषित बने रहने की बेबसी को छोड़ कर कुछ नहीं बचा है।

कवि विचार करता है कि श्रमिक-वर्ग और साधारण जनता की समस्याएँ एक जैसी हैं, अत: वह एक जनता है। इस दमित-शोषित जनता को एकता के सूत्र में बंध कर अपने शोषण के विरुद्ध संघर्ष करना होगा। समान जीवन-दशाओं वाली और एकता में बंधी इस जनता का अमर वर है, एकता का स्वर। इस स्वर को निर्भय होकर गुंजाना होगा। यदि ऐसा न हुआ, तो जनता की स्वाधीनता, उसके अधिकार पूर्वक जीने की स्वतंत्रता का अंत हो जाएगा।

काव्यगत विशेषताएँ :

1. श्रमिक के जीवन और उसके परिवार के यथार्थ को समझाया गया है।
2. शोषण भरी दशाओं के श्रमिक की बुद्धि और विवेक पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाया गया है।
3. श्रमिक-वर्ग और साधारण जनता की एकता को उसके लिए अमर वर की संज्ञा दी गई है।
4. रूपक अलंकार का प्रयोग है।
5. भाषा में मितव्ययिता और संप्रेषणशीलता का गुण विद्यमान है।

बोध प्रश्न

- एक जनता से क्या अभिप्राय है?

- एक जनता का अमर वर क्या है और उसे पाकर क्या करना होगा?
- यदि जनता में एकता न हुई, तो क्या होगा?
- श्रमिक की बुद्धि कंगाल क्यों हो गई है?

24.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

'बात बोलेगी' कविता सन् 1945 में रची गई थी। इसके रचयिता छायावादोत्तर हिंदी कविता के प्रमुख कवि शमशेर बहादुर सिंह हैं। वे मुख्य रूप से 'नई कविता आंदोलन' के रोमानी और बिंबधर्मी कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं, किंतु शिवदान सिंह चौहान और अमृत राय के प्रभाव में मार्क्सवाद के संपर्क में आए थे तथा सन् 1936 में अस्तित्व में आए प्रगतिवादी आंदोलन से जुड़ गए थे। उन दिनों वे 'वाम वाम वाम दिशा/समय साम्यवादी' कहने लगे थे। यह वही काल था, जब कवि की कलम से बात बोलेगी कविता निकली थी।

'बात बोलेगी' कविता को शमशेर की सर्वश्रेष्ठ प्रगतिवादी रचना कहा जाता है। इस कविता पर मार्क्सवाद की नारेबाजी का आरोप नहीं लगाया जा सका, बल्कि इसे श्रमिक वर्ग के शोषित जीवन-यथार्थ का सच्चा चित्रण और उसकी मुक्ति के लिए एकता का आह्वान करने वाली आदर्श रचना माना गया। कविता का रचना-काल प्रगतिवाद के उत्कर्ष का काल था। राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र के साथ ही आर्थिक क्षेत्र की जीवन-स्थितियों का विश्लेषण मार्क्सवादी दृष्टि से किया जा रहा था। स्वाधीनता निकट आते जाने के वातावरण में यह भी सोचा जा रहा था कि भारत की श्रमिक और निर्धन जनता का आर्थिक भविष्य कैसा होगा। यह भी, कि मजूरों और अन्य शोषित लोगों को स्वयं अपने भविष्य के लिए संघर्ष की रूपरेखा किस प्रकार बनानी चाहिए। बात बोलेगी कविता में इन समस्त परिस्थितियों का प्रभाव देखा जा सकता है।

कविता के प्रारंभ में ही कवि 'बात' को यह जिम्मेदारी देता है कि अब वही बोलेगी। सोचना स्वाभाविक है कि क्या बात पहले नहीं बोलती थी? इस प्रश्न में ही यह तथ्य छिपा हुआ है कि श्रमिक-वर्ग बोलता तो पहले भी था, लेकिन उसकी भाषा में अधिकार की चेतना कमजोर थी। अब कवि उसी बात को एक ऐसे वक्ता का रूप देना चाहता है, जिसकी वाणी में मजूर-बिरादरी के अधिकार का दावा हो, जो शोषकों की आँखों में आँख़ें डाल कर शोषण का विरोध कर सके। श्रमिक वर्ग की जीवन-दशा न्यूनतम सुविधाओं तक के अभाव से जूझ रही है, निर्धनता का दानव तांडव मचा रहा है- ऐसे में शोषकों द्वारा फैलाई गई झूठ की माया के जाल में नहीं

फँसा जा सकता, ऐसे में केवल सत्य पर ध्यान देना होगा। सबसे बड़ी बात श्रमिक-वर्ग के साथ ही साधारण जनता भी है, जो समान रूप से समस्याओं का सामना करती है। ये दोनों मिल कर एक समानधर्मा जनता बनाते हैं। इससे शोषक और स्वार्थी वर्ग भय खाते हैं और इस जनता के बीच भेदभाव पैदा करने के षड्यंत्र रचते हैं। इसके लिए तरह-तरह की विचारधाराएँ, अवधारणाएँ और मान्यताएँ आकाश में पताका की भाँति उड़ने लगती हैं। कविता सावधान करती है और यह स्थापित करती है कि श्रमिक-वर्ग और अभावग्रस्त साधारण लोग मिल कर एक जनता का निर्माण करते हैं। इसी जनता को एक होकर, एक साथ, एक स्वर में शोषक सत्ता को चुनौती देनी होगी। यही जीवन और स्वाधीनता को बनाए रखने का एक मात्र उपाय है।

कथ्य की दृष्टि से 'बात बोलेगी' न केवल शमशेर के, बल्कि अपने समय के समग्र प्रगतिवादी काव्य की कथ्य-चेतना का प्रतिनिधित्व करती है। इसके कथ्य को एक जनता की परिकल्पना ने बहुत विस्तार प्रदान कर दिया है। इसी प्रकार दमित-शोषित जनता को निहित स्वार्थी वर्गों द्वारा विभाजित करके कमजोर बनाने के लिए प्रयोग की जाने वाली विचारधाराओं की, हवा में उड़ती पताकाओं ने कथ्य में एक ही साथ यथार्थ के अनेक रूप प्रस्तुत कर दिए हैं। कहा जा सकता है कि शमशेर ने प्रगतिवादी आंदोलन के प्रभाव में जो कविताएँ रची हैं, उनमें 'बात बोलेगी' उनकी विशिष्ट कविताओं की कोटि में स्थान पा गई है। रंजना अरगड़े ने कहा है- "शमशेर की प्रगतिशील रचनाओं में सबसे महत्वपूर्ण है, उनकी कविता 'बात बोलेगी'। इस कविता में शमशेर ने मजदूर की वास्तविक स्थिति को अंकित किया है, साथ ही समाज एवं लोगों की परिस्थिति को दर्शाया है।" (कवियों का कवि शमशेर, पृ. 139)।

भाषा और काव्य-शिल्प की दृष्टि से भी 'बात बोलेगी' शमशेर की प्रतिनिधि कविताओं में से एक है। सबसे पहले भाषा की मितव्ययिता हमारा ध्यान खींचती है। इसकी भाषा के ढाँचे में से न कोई शब्द हटाया जा सकता है, न किसी नए शब्द को जोड़ा जा सकता है और न ही स्थानापन्न शब्दावली का प्रयोग सुझाया जा सकता है। सपाटबयानी, यथार्थ-दृष्टि और सहज कथन-भंगिमा ने मिलकर इस कविता की भाषा को रचा है। भाषा के स्तर पर किसी प्रकार की दुरूहता भी इस कविता में नहीं दिखती। 'बात बोलेगी' यह संकेत भी करती है कि शमशेर का काव्य शिल्प सहज रूप से प्रयोगधर्मी है। मुक्त छंद में रचित इस कविता में 'अर्थ की लय' प्रभावित करती है। 'पताका' को प्रतीक बनाने के साथ ही, उसे जिस प्रकार मुहावरे में ढाल कर प्रयोग किया गया है, उससे कविता गहन अर्थवती हो गई है और उसमें शिल्प-चमत्कार भी

उत्पन्न हो गया है। अपने काव्य-शिल्प-स्वभाव के अनुसार शमशेर ने व्याकरण चिह्नों को काव्यत्व-वृद्धि का माध्यम बना कर कविता में संप्रेषणीयता के साथ-साथ काव्य-प्रभाव का समावेश भी कर दिया है।

24.4 पाठ सार

हिंदी के ख्यातनामा कवि शमशेर बहादुर सिंह की काव्य-यात्रा का पहला चरण प्रगतिवादी कविताओं से विशेष रूप से जुड़ा हुआ है। इसके अंतर्गत ही 'बात बोलेगी' शीर्षक कविता की रचना की गई। यह कविता सबसे पहले 'दूसरा सप्तक' में सन् 1945 में संकलित हुई, उसके बाद 1961 में कवि के 'कुछ और कविताएँ' नामक संग्रह में छपी। 'बात बोलेगी' कविता मार्क्सवादी विचारधारा के प्रभाव में रची गई है। इसका कथ्य दैन्य-दानव, क्रूर स्थितियों, भीषण काल और कंगाल बुद्धि का शिकार होने को अभिशप्त श्रमिक वर्ग तथा इसी प्रकार की परिस्थितियों के पंजों में असहाय बनी साधारण जनता को केंद्र में रख कर निर्मित किया गया है। कवि इन दोनों को 'एक जनता' मानता है और इनके बीच एकता की अनिवार्यता प्रतिपादित करता है। इस जनता को अपने-अपने ढंग से परिभाषित करने के लिए अनेक विचारधाराएँ पताकाओं की भाँति लहरा रही हैं। उनका लक्ष्य शोषण से मुक्ति न होकर श्रमिकों और साधारण जनता को भिन्न-भिन्न चश्मों से देखना है। कवि 'एक जनता' को इस विचार-षड्यंत्र के प्रति सावधान करता है। वह आह्वान करता है कि यह 'एक जनता' एक साथ मिल कर एक ही स्वर में शोषक सत्ता के विरुद्ध चुनौती बन कर खड़ी हो जाए।

'बात बोलेगी' कविता कथ्य के साथ ही काव्य-शिल्प की दृष्टि से भी शमशेर के प्रयोगधर्मी रचना-स्वभाव को पुष्ट करती है। इसमें भाषा की मितव्ययिता, सपाटबयानी, संप्रेषणीयता, प्रतीकों और बिंबों का प्रयोग तथा मुक्त छंद का वैभव दिखाई देता है। पूरी कविता में अर्थ की लय का सौंदर्य प्रभावित करता है।

'बात बोलेगी' शमशेर की समस्त प्रगतिवादी कविताओं का प्रतिनिधित्व करती है। इसी के साथ यह अपने काल की जनता की यथार्थ जीवन-स्थितियों की सच्चाई भी प्रस्तुत करती है। 'बात बोलेगी' को कथ्य की दृष्टि से प्रगतिवादी काव्यांदोलन के कथ्य को विस्तार देने वाली कविता मानना उचित है।

24.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. 'बात बोलेगी' शमशेर की प्रतिनिधि प्रगतिवादी कविता है।
2. इस कविता का मूल कथ्य शोषण से श्रमिकों की मुक्ति का आह्वान है।
3. यह कविता सावधान करते हुए यह स्थापित करती है कि मजदूर वर्ग और अभावग्रस्त साधारण लोग मिलकर शोषक सत्ता को चुनौती दे सकते हैं।
4. कम शब्दों में अधिक अर्थ भरना क्या होता है, 'बात बोलेगी' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

24.6 शब्द संपदा

काव्यशास्त्रीय और समालोचना शब्दावली :

1. अर्थ की लय = यह 'नई कविता आंदोलन' की मूल मान्यताओं में से एक है। इसके अनुसार, जिस प्रकार संगीत में स्वर और शब्द की लय होती है, उसी प्रकार कविता में 'अर्थ की लय' अनिवार्य है। यह कविता के भीतर अर्थ के साथ रहती है। अर्थ की लय की अवधारणा जगदीश गुप्त ने प्रस्तुत की है।
2. कथ्य = जो कहा गया हो, किसी रचना में कही या चित्रित की गई मूल बातें।
3. काव्य-शिल्प = छंद, अलंकार, रचना-पद्धति, निर्धारित नियम-अनुशासन आदि (रचने के) उपकरणों का वह व्यवस्थित रूप, जिनसे काव्य का बाह्य स्वरूप निर्धारित होता है।
4. नई कविता आंदोलन = नई कविता काव्य-क्षेत्र में नई सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के आलोक में नए मनुष्य की प्रतिष्ठा का अंदोलन है। यह नया मनुष्य किसी महानता के भुलावे में नहीं रहता, बल्कि अपनी सीमित क्षमताओं को पहचाहना है और अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। नई कविता का मूल आधार आधुनिकता है। नई कविता में 'शब्द की लय' के स्थान पर 'अर्थ की लय' को महत्व दिया जाता है।

5. पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार = जहाँ एक ही शब्द अथवा शब्द-समूह की एकाधिक बार आवृत्ति होती है, किंतु अर्थ समान ही रहता है, वहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार होता है।

6. पूँजीवाद = पूँजीवाद एक ऐसी व्यवस्था का नाम है, जिसके केंद्र में पूँजी होती है। वह आर्थिक संबंधों के साथ-साथ सामाजिक संबंधों को भी निर्धारित करती है। समाज दो वर्गों में बँट जाता है- एक पूँजीपति वर्ग, और दूसरा मजदूर वर्ग। इन दोनों के बीच जो संघर्ष होता है, उसे वर्ग-संघर्ष कहा जाता है। पूँजीवाद का उदय आदिम साम्यवाद, दास-युग और सामंतवादी युग के बाद हुआ।

7. प्रगतिवाद = हिंदी की छायावादोत्तर कविता में प्रचलित एक आंदोलन, जिसका आधार मार्क्सवादी विचारधारा है। यह वर्ग-संघर्ष की अवधारणा को मानता है और शोषक तथा शोषित के संघर्ष में शोषित वर्ग के प्रति सक्रिय सहानुभूति रखता है। आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक शोषण का विरोध, साम्राज्यवाद का विरोध, रूढ़ियों का विरोध, जनभाषा का प्रयोग और साम्यवादी समाज की स्थापना के लिए साहित्य की रचना प्रगतिवाद की प्रमुख विशेषताएँ हैं। 'प्रगतिवादी आंदोलन' को 'प्रगतिशील आंदोलन' भी कहा गया है।

8. प्रयोगवाद = प्रयोगवाद के नाम से ही पता चलता है कि यह कविता में 'प्रयोग' को महत्व देता है। लेकिन प्रयोगवादी कवि प्रयोग को साध्य न मान कर साधन मानते हैं। वे प्रयोग की सहायता से जीवन के भावों और विचारों को प्रकट करने की नई राहों की तलाश करना चाहते हैं। प्रयोगवाद ने समाज के स्थान पर व्यक्ति को महत्व देने को अपना लक्ष्य बनाया। प्रयोगवाद का प्रारंभ सन् 1943 में अज्ञेय के संपादन में प्रकाशित 'तारसप्तक' से माना जाता है।

9. मानवीकरण अलंकार = जहाँ किसी बेजान वस्तु पर मानवी-भावना का आरोप किया जाता है, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

10.मुक्त छंद = जहाँ कोई कविता छंद के परंपरागत बंधनों को अस्वीकार करके रची

जाती है, लेकिन अपनी आंतरिक लय के कारण छंद जैसा ही आनंद देती है, वहाँ मुक्त छंद होता है।

11. रूपक अलंकार = जहाँ उपमेय पर उपमान का अभेदारोप किया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

12. लक्षणा शब्दशक्ति = शब्द का मुख्यार्थ बाधित होने की अवस्था में, जहाँ उसी से जुड़ा लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है, वहाँ लक्षणा शब्दशक्ति होती है।

13. शब्दशक्ति = शब्द के भीतर विद्यमान वह शक्ति, जो उसके अर्थ को प्रकट करती है, शब्दशक्ति कहलाती है।

14. प्रेषीयता = मुख्य शब्द है, संप्रेषण, जिसका अर्थ है, भेजना या अपनी बात दूसरे तक पहुँचाना। काव्य में ऐसा गुण होना आवश्यक है, जिससे उसका कथ्य पाठक या श्रोता तक सहजता से पहुँच सके। इसी गुण को संप्रेषणीयता का गुण कहा जाता है। आलोचना में एक 'संप्रेषण सिद्धांत' भी है।

15. सामंतवाद = सामंतवाद को आदिम साम्यवाद और दास-युग के बाद की अवस्था माना जाता है। यह भूमि पर सामंतों और बड़े भूमिपतियों का अधिकार होने के फलस्वरूप अस्तित्व में आया। इसमें भूमि पर खेती करने वाले किसान भूमि के स्वामी न होकर सामंतों और अन्य भूपतियों के दास होते हैं।

सामान्य शब्दावली :

1. अवधारणा = तथ्य, विचार और तर्क के आधार पर निर्धारित किया गया अभिमत।
2. अस्तित्व = किसी के भीतर विद्यमान वह चेतना, जो उसके 'होने' को प्रमाणित करती है, विद्यमान होना।
3. आक्रोश = असंतोष और बेचैनी भरा क्रोध।
4. आह्वान = बुलाना, प्रेरणार्थक पुकार।
5. कुंद = प्रभाव या कार्य-क्षमता कम हो जाना, पुष्प विशेष।
6. जिजीविषा = जीने की इच्छा।
7. जिज्ञासा = जानने की इच्छा।

8. त्रासदी = भय और आतंक उत्पन्न करने वाली स्थिति।

9. द्वंद्व = लड़ाई, झगड़ा, खींचतान।

10. प्रतिनिधि = किसी की ओर से कार्य करने वाला।

11. प्रयोगधर्मी = जिसका स्वभाव प्रयोग में विश्वास रखता हो।

12. बे लाग = बिना किसी लाग-लपेट के।

13. मायावी = चालाकी के जाल में फँसाने वाला, छली-फरेबी।

14. मित-कथन = कम शब्दों में कही गई बात।

15. मितव्ययिता = कम खर्च करने का भाव।

16. लौकिक भाषा = लोक-समाज में प्रचलित भाषा। श्रमिक = शारीरिक श्रम के बदले जीविका कमाने वाला।

17. षड्यंत्र = किसी को हानि पहुँचाने के लिए छिप कर किया गया कार्य।

18. सपाटबयानी = बिना छिपाए सीधे-सीधे कहना, बिना घुमाए-फिराए कहना।

19. समवेत स्वर = एक साथ मिल कर उत्पन्न किया गया स्वर।

20. स्थानापन्न = किसी अन्य के स्थान पर प्रयुक्त।

मुहावरे :

1. आँखों में आँखें डालना = चुनौती देना।

2. कोढ़ में खाज होना = एक मुसीबत के रहते दूसरी मुसीबत आना।

24.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'बात बोलेगी' कविता पर एक समीक्षात्मक लेख लिखिए।
2. 'बात बोलेगी' कविता की पृष्ठभूमि समझाइए और उसका मूल कथ्य लिखिए।
3. 'बात बोलेगी' कविता का सामान्य परिचय दीजिए और उसके काव्य-शिल्प पर विचार कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'बात बोलेगी' कविता की रचना का क्या उद्देश्य है?
2. 'बात बोलेगी' कविता के कथ्य पर विचार कीजिए।
3. 'बात बोलेगी' कविता का महत्व लिखिए।
4. 'बात बोलेगी' कविता में 'एक जनता' का क्या अभिप्राय है?
5. दैन्य दानव; काल/ भीषण; क्रूर/ स्थिति; कंगाल/ बुद्धि; घर मजूर। इन पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. 'बात बोलेगी' कविता पहली बार किस संग्रह में प्रकाशित हुई? ( )

   (अ) तार सप्तक (आ) दूसरा सप्तक (इ) तीसरा सप्तक (ई) नई एकांकी

2. 'दत्य दानव' में कौन सा अलंकार है? ( )

   (अ) उपमा (आ) रूपक (इ) उत्प्रेक्षा (ई) मानवीकरण

3. अभय जनता के लिए सुख का स्रोत क्या है? ( )

   (अ) असत्य (आ) सत्य (इ) अनास्था (ई) आस्था

4. 'बात बोलेगी' कविता में एक जनता का अमर वर क्या है? ( )

   (अ) एकता का स्वर (आ) स्वतंत्रता का स्वर

   (इ) निर्भयता का स्वर (ई) सभी

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. 'बात बोलेगी' कविता को शमशेर की श्रेष्ठ .... रचना कहा जाता है।
2. 'बात बोलेगी' कविता में ...... की लय का सौंदर्य प्रभावित करता है।
3. 'बात बोलेगी' कविता सन् ...... में रची गई थी।

III. सुमेल कीजिए-

1. दैन्य	(अ) भीषण
2. काल	(आ) बुद्धि

3. क्रूर	(इ) दानव
4. कंगाल	(ई) स्थिति

24.8 पठनीय पुस्तकें

1. बात बोलेगी : शमशेर बहादुर सिंह
2. कवियों का कवि शमशेर : रंजना अरगड़े

MAULANA AZAD NATIONAL URDU UNIVERSITY

PROGRAMME: B.A (HINDI)

III – SEMESTER EXAMINATION

TITLE & PAPER CODE : मध्यकालीन एवं आधुनिक हिंदी काव्य BIHN301CCT

TIME: 3 HOURS TOTAL MARKS: 70

सूचनाएँ :-

यह प्रश्न पत्र तीन भागों में विभाजित हैं- भाग -1, भाग -2 और भाग - 3 प्रत्येक प्रश्न के उत्तर निर्धारित शब्दों में दीजिए।

भाग – 1

निम्न लिखित सभी प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में देना अनिवार्य हैं। 10X1=10

1. मध्यकालीन काव्य किसे कहते हैं ?
2. भक्तिकाल की समय सीमा क्या है ?
3. 'भ्रमरगीत' के रचनाकार कौन है ?
4. सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म कब हुआ?
5. 'दिनकर' को ज्ञानपीठ पुरस्कार किस रचना पर प्राप्त हुआ था ?
6. 'बात बोलेगी' किसकी रचना है ?
7. 'जलियाँ वाला बाग़ में बसंत' किस विधा की रचना है ?
8. 'कबीर वाणी के डिक्टेटर थे' यह कथन किस का है ?
9. मैथिलीशरण गुप्त किस युग के कवि हैं ?
10. 'पद्मावत' किस कवि की रचना है ?

भाग – 2

निम्न लिखित आठ प्रश्नों में से किन्ही पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दो सौ शब्दों में देना अनिवार्य है। **5X6 =30**

1. 'भक्तिकाल हिंदी साहित्य के इतिहास का स्वर्ण काल है' सिद्ध कीजिए।
2. शमशेर के कृतित्व का परिचय दीजिए।
3. 'बात बोलेगी' कविता का महत्त्व लिखिए ।
4. सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
5. बिहारी सतसई पर लिखी गई टीकाओं के नाम लिखते हुए चर्चा कीजिए ।
6. तुलसी की रामभक्ति पर टिपण्णी लिखिए ।
7. रैदास के शिक्षा पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए ।
8. संत कवियों में कबीर के स्थान को बताइए ।

भाग- 3

निम्न लिखित पाँच प्रश्नों में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पाँच सौ शब्दों में देना अनिवार्य है। **3X10=30**

1. दिनकर की काव्य यात्रा को उनके समय के देशकाल ने कैसे प्रभावित किया ? स्पष्ट कीजिए।
2. खेत खलिहानों का कवि कहने से क्या तात्पर्य है ? क्या केदारनाथ अग्रवाल को खेत खलिहानों का कवि कहा जा सकता है ?
3. छायावादोत्तर कविता में शमशेर के महत्त्व का मूल्यांकन कीजिए।
4. हिंदी साहित्य में इहरी के महत्त्व पर विचार कीजिए।
5. सूरदास द्वारा चित्रित कृष्ण के लोकरंजक स्वरुप का वर्णन कीजिए।

*****